॥ श्रीः ॥

भारतभ्रमण.

(पाँच खण्डोंमें)

तृतीय खण्ड ।

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित ।

जिसमें
भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तानके तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध
स्थानोंके भूतकालिक और वर्त्तमान कालके
वृत्तान्त पूर्ण रीतिसे लिखे गये हैं ।

वही
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
खेतवाड़ी ७ वीं गली खम्बाटा लैन,
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६९, शक १८३४.

भारत-भ्रमणके तृतीय खण्डका सूचीपत्र।

॥ इति भारत-भ्रमण तृतीय खण्डका सूचीपत्र ॥

॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥

भारतभ्रमण.

तृतीय खण्ड.

पहला अध्याय।

(सूबे बिहारमें) आरा, दानापुर, पटना और बांकीपुर।

आरा।

शम्भुचरन सिरं नाइकै, 'साधुचरनपरसाद'।
तृतिय खण्ड 'भारत-भ्रमन' बरनत हैं अविवाद ॥

मेरी तीसरी यात्रा सन् १८९२ ई० के अकतूबर (संवत् १९४९ के कार्त्तिक) में मेरी जन्मभूमि चरजपुरासे प्रारम्भ हुई।

चरजपुरासे १२ मील दक्षिण 'ईष्टइण्डियनरेलवे' का बिहिया स्टेशन है। मैं बिहियामें रेलगाड़ीमें सवार हो, उससे १४ मील पूर्व आराके स्टेशन पर उतरा। बिहार प्रदेशके पटना विभागमें शाहाबाद जिलेका सदरस्थान और जिलेका प्रधान कसवा (२५ अंश, ३३ कला, ४६ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ४२ कला, २२ विकला पूर्व देशान्तरमें) रेलवे स्टेशनसे एक मील उत्तर और गंगासे ६ मील दक्षिण आरा एक छोटा शहर है। स्टेशनसे पश्चिमोत्तर एक सराय है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय आरामें ४६९०५ मनुष्य थे; अर्थात् २३४२६ पुरुष और २३४७९ स्त्रियां। इनमें ३३२५३ हिन्दू, १३०८६ मुसलमान, ४०६ जैन, ५६ क्रस्तान और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २२ वां और बङ्गालमें १४ वां शहर है।

शहर रौनकदार है। इसका चौक भी अच्छा है। मकान ईंटों और मट्टीके बने हैं। शहरके उत्तर दीवानी और पश्चिम एक तालाबके समीप मैदानमें कलक्टरी और फौजदारी सुन्दर कचहरियाँ बनी हुई हैं कलक्टरीसे पश्चिम दीवारसे घेरा हुआ मुसलमानोंका बहुत बड़ा मौलाबाग, जिसमें एक उत्तम ताजिया रक्खी हुई है, और पूर्व गवर्नमेण्ट स्कूल है। स्कूलसे पूर्व शहरके मध्यमें डील साहबका बड़ा तालाब दीवानी कचहरीसे उत्तर गांगी नदी पर काठका पुल और शहरके भीतर जेलखाना और अस्पताल है। जजकी कोठीके पास वह दो मञ्जिला मकान है, जिसमें सन् १८५७ के बलवेके समय कई एक यूरोपियनोंने थोड़े सिक्ख सिपाहियोंके साथ बड़ी बहादुरीसे आत्मरक्षाकी थी। जजकी कोठीसे १ मील दूर एक सुन्दर छोटा गिर्जा है। बाबू बाजारके एक मन्दिरमें बुढ़वा महादेवनामक मोटे शिवलिङ्ग हैं वहाँ सावन मासमें प्रति सोमवारकी रात्रिमें रोशनी, नाच, शिवका शृङ्गार और पूजन होता है। बहुत दर्शक लोग आते हैं। इसके अतिरिक्त आरेमें कई एक छोटे देव-मन्दिर और जैन मन्दिर हैं। शहरसे एक मीलसे अधिक पूर्व सोनकी नहर है जो डेहरी-घाटसे निकल कर साठ मील पर आरासे पूर्वोत्तर गंगा नदीमें मिली है।

शाहाबाद जिला—यह पटना विभागके दक्षिण पश्चिमका जिलाहै इसके उत्तर पश्चिमोत्तर प्रदेशके गाजीपुर और बलिया जिले और बिहारमें सारन जिला पश्चिम पश्चिमोत्तर देशमें मिर्जापुर-बनारस और गाजीपुर जिले दक्खिन लोहरदङ्गा जिला और पूर्व पटना जिलाहै। जिलेके उत्तरीय सीमापर गङ्गा और सरयू; पश्चिमी सीमापर कर्मनाशा और पूर्वी सीमापर सोन नदी बहती है। जिलेके पूर्वोत्तर कोनके पास सोन नदी और चौसाके निकट कर्मनाशा नदी गङ्गामें मिलगई है। जिलेका क्षेत्रफल ४३६५ वर्गमील और सदर स्थान आरा है।

शाहाबाद जिला स्वभाविक रीतिसे दो विभागोंमें बटा है। उत्तरीय भागमें, जो जिलेके क्षेत्रफलका तीन चौथाई है, उपजाऊ भूमिमें खेती होती है और आम, महुआ इत्यादि फलदार वृक्ष बहुत हैं। और दक्षिणीय भागमें विन्ध्य पहाड़का सिलसिला, जिनमेंसे इस जिलेमें आठ सौ वर्गमील है, फैला है। प्लेटूकी साधारण ऊँचाई समुद्रके जलसे १५०० फीट है। बनोंमें लाही बहुत होती है। सोनके किनारोंपर और जहाँ तहाँ मैदानोंमें कंकड़ निकाले जाते हैं। कायमूर पहाड़ेयोंके पत्थरसे इमारतें, चक्कियां चाक, ऊख पेरनेके कोल्हू, इत्यादि चीज बनती हैं और पहाड़ियोंमें स्लेट आदि कई प्रकारके पत्थर मिलते हैं। जिलेके दक्खिनी पहाड़ी भागमें बाघ, तेंदुये, भालू, सूअर और अनेक प्रकारके हिरनें आदि बनैले जीव रहते हैं और उत्तरीय भागमें कई एक नहरें फैली हुई हैं। और जिलेमें बहुतसी छोटी २ नदियाँ बहती हैं। सहसरामके पास सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्रके पुत्र रोहिताश्वके नामसे रोहितासगढ़ नामक पुराना किला है। इसकी वर्तमान इमारतको बङ्गालके सूबेदार राजा मानसिंहने सन् १६४४ ई० में बनवाया था। लगभग ४ मील पूर्वसे पश्चिम तक और ५ मील उत्तरसे दक्खिन तक गढ़की निशानियां देखनेमें आती हैं। इस जिलेके ब्रह्मपुर, बक्सर, जखनी, घुसारिया, सिनहा, गड़हनी, कस्तरदोनवार, धमार, मसाढ़ और गुप्तेश्वरमें समय समयपर मेले होते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २०४२१२२ और सन् १८८१ ई० में १९६४९०९ मनुष्य थे; अर्थात् १८१७८८१ हिन्दू, १४६७३२ मुसलमान, २७६ क्रस्तान

और २० दूसरे। जातियोंके खानेमें २१३३०८ ब्राह्मण, २०७१९५ राजपूत, १५२८४६ कोइरी, ११९०१० चमार, ९०१५५ दुसाध, ६८४२७ कान्दु, ६६३४१ कुर्मी, ६२८१२ कहार, ५९०७५ भुइँहार, ४७८३६ तेली, ४६९९४ कायस्थ, ३४५६८ बनिआँ थे; शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय इस जिलेके कसबे आरामें ४६९०५, सहसराममें २२७१३, डुमरांवमें १८३८४, बक्सरमें १५५०६, जगदीशपुरमें १२४७५, और भभुआमें १०२१६, और भोजपुर, नासरीगंज और भगेनेमें १०००० से कम मनुष्य थे।

इतिहास–सन् १८५७ ई० के बलवेके समय ता० २४ जुलाईको लगभग २००० सिपाही बागी होकर दानापुरसे आराको चले। उन्होंने जगदीशपुरके बाबू कुँवरसिंहके आधीन लगभग ८००० हथियारबन्द गाँववालोंके साथ ता० २७ जुलाईको आराके जेलखानेके सम्पूर्ण कैदियोंको छोड़ दिया, खजानेको लूट लिया और सरकारी फौजपर आक्रमण किया। बहुतसे युरोपियन लड़के और स्त्रियां पहलेही बाहर भेज दी गई थीं, केवल १२ अङ्गरेज और ३ चार दूसरे क्रस्तान कसबेमें थे। पटनेके कमिश्नरने ५० सिक्खोंको सहायताके लिये ओरसे भेज दिया था। उसके पश्चात् जो ३३० यूरोपियन दानापुरसे चले, वे रास्तेमें प्रायः सब मारे गये। आराके यूरोपियन और सिपाहियोंने ईष्टइन्डियन रेलवे कम्पनीके दो मकानोंको, जिनमेंका २० गज लम्बा दो मंजिला मकान प्रधान था, तुरतही किलाबन्दीकर उसमें सब सामान रख लिया। जब यूरोपियन और सिक्ख लोग दो मंजिले मकानमें चले गये, तब बागी लोग कसबेमें लूट पाट करनेके पीछे मिस्टर बोलीको छोटी गढ़ीको चले, किन्तु एक सरकारी तोपकी बाढ़ दगनेपर वे छितर बितर हो गये। इसके पश्चात् बलवाइयोंने एक सप्ताह तक कई एक प्रकारसे कई बार उनपर आक्रमण किया, किन्तु उनके पास तोप नहीं थी, इसलिये ये लोग उनको मार न सके। अगस्तके आरम्भमें दानापुरसे भेजे हुए २६० पैदल ६० गोलन्दाज और ४ तोपोंके साथ आराके पास पहुँचे। ता० २ अगस्तको तोपकी सनसनाहट दूरसे सुनकर बागी लोग जहाँ तहाँ भागने लगे। सूर्य्यास्तके पहलेही सब लोग भाग गये। ता० ३ अगस्तको सरकारी पल्टन घेरे हुए लोगोंसे आमिली। बाबू कुँवरसिंहका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके पहले खण्डमें डुमराव और आजमगढ़के वृत्तान्तमें लिखा है।

दानापुर।

आरासे पूर्व ८ मील कोइलवरका पुल और २४ मील दानापुरका रेलवे स्टेशन है।

कोइलवरमें सोन नदीपर जो नर्मदाके निकासके पास अमरकण्टक पर्वतसे निकलकर ४६४ मील दक्खिनसे उत्तरको बहनेके उपरान्त कोइलवरसे कई मील उत्तर हल्दी छपराके निकट गंगामें मिली है, ४७२६ फीट लम्बा रेलवेका पुल है। उसमें १५० फीट लम्बे २८ दरवाजे हैं। पुलके पाये ३२ फीट पानीके नीचे और भूमिमें और ३५ फीट पानीसे ऊपर हैं। पुलके नीचेकी तहमें आदमी और गाड़ी चलती हैं और ऊपर रेलवेकी दोहरी लाइन है। यह पुल सन् १८६२ ई० में ४३३३३३४ रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ।

कोइलवरके पुलसे १६ मील पूर्व दानापुरका बड़ा रेलवे स्टेशन है । स्टेशन पर गाड़ी देरतक ठहरती है । रेलवेसे उत्तर विहारके पटने जिलेमें फौजी छावनीका स्थान गंगाके दाहिने आर्थत् दक्षिण दानापुर एक कसबा है । जिसको दीनापुर भी कहते हैं ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय दानापुर कसवे और इसकी छावनीमें ४४४१९ मनुष्य थे; अर्थात् २१८९३ पुरुष २२५२६ स्त्रियां । इनमें ३२२८३ हिन्दू, १०६२४ मुसलमान, १४९१ क्रस्तान, १७ यहूदी और ४ जैन थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९१ वां और बंगालमें १७ वाँ शहर है ।

रेलवे स्टेशनसे ३$\frac{1}{2}$ मील दूर पटना विभागकी फौजी छावनी फैली हुई है । उसमें एक बैटेलियन अर्थात् पलटन पैदल गोरोंकी और एक रेजीमेंट बंगाल पैदलकी रहती हैं । सन् १८८३ ई० में ३ यूरोपियन और एक देशी पैदल शाही आरटिलरीके २ बैटरियोंके साथ था । एक ६ मीलकी सड़क दानापुरसे बांकीपुरकी सिविल कचहरियों तक गई है उसके किनारोंपर लगातार छोटे बड़े मकान बने हैं । वास्तवमें गंगा और रेलवेके बीचमें दानापुर, बांकीपुर और पटना लगातार एकही पतला शहर है ।

सन् १८५७ की जुलाईमें ३ रेजीमेंट, जो दानापुरमें थी, बागी होकर आराको चली गई; पीछे दानापुरसे यूरोपियन सेना आराकी रक्षाके लिये भेजी गई ।

पटना और बांकीपुर ।

दानापुरके रेलवे स्टेजनसे पूर्व ६ मील बांकीपुरका रेलवे जंक्शन और १२ मील पटना शहरका रेलवे स्टेशन है । विहार प्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२५ अंश, ३७ कला, १५ बिकला, उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, १२ कला, ३१ बिकला, पूर्व देशान्तरमें) गंगाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर पूर्व जाफरखाँके बागसे पश्चिम बांकीपुरकी शहरतली तक ९ मीलकी लम्बाई और औसतमें दो मीलकी चौड़ाईमें पटना शहर फैला हुआ है । पुरानी किलाबन्दी, जो शहरको घेरती थी अब नहीं है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पटने और बांकीपुरमें १६५१९२ मनुष्य थ अर्थात् ८२००८ पुरुष और ८३१८४ स्त्रियां । इनमें १२४५०६ हिन्दू, ४००७७ मुसलमान, ५४१ क्रस्तान, ५९ जैन और ९ बौद्ध थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १५ वां, बंगालमें दूसरा और विहारमें पहला शहर है ।

शहरके मकान ईटे और मट्टीसे बने हुए हैं । एक चौड़ी सड़क पूर्वसे पटनेके पश्चिम दरवाजे होकर बांकीपुर होती हुई पश्चिम दानापुर गई है । दूसरे रास्ते तंग और टेढ़े हैं । चौकसे ५ मील पश्चिम बांकीपुरकी सिविलियन कचहरी तक चौड़ी सड़कपर ट्रामगाड़ी चलती है । दीघा, बांकीपुर और पटनेके बीचमें पटना नहर है, जो सन् १८७७ में खुली । प्रधान सड़कोंपर रातमें लालटैनकी रोशनी होती है । एक धर्मशाला पटनेके रेलवे स्टेशनसे थोड़ा पश्चिम और दूसरी चौकके निकट है । पटने शहरमें गोपीनाथ, बड़ी पटनदेवी छोटी पटनदेवी और हरिमन्दिर ये ४ मन्दिर प्रधान हैं । गुलजारबागमें अफीमके गोदाम और रोमनकाथेलिक चर्चके सामने एक कबरगाह है, जिसमें मीरकासिम द्वारा मारे हुए लोग

दफन किये गये थे। उसके ऊपर पत्थर और ईंटसे बना हुआ एक स्तम्भ खड़ा है। दूसरा यूरोपियन कबरगाह शहरके पश्चिम है। पश्चिमकी शहरतलीमें शाहअरजानीका जो सन् १०३२ हिजरी (सन् १६२२ ई०) में मरा था, बड़ा दरगाह है। वहां प्रति वर्ष एक बड़ा मेला होता है। मेला ३ दिनों तक रहता है। उसमें लगभग ५००० मनुष्य आते हैं। दरगाहके पासके करबलेमें मुहर्रमके दिन बहुतसे लोग एकत्र होते हैं और सम्पूर्ण शहरके ताजिये दफन किये जाते हैं। करबलेके पास एक साधुका बनवाया हुआ एक तालाब है। पटनेकी मसजिदोंमें शेरशाहकी मसजिद सबसे पुरानी है। पीरबहोरकी दरगाहभी मुसलमानोंकी पूजाका स्थान है, जिसको बने हुए २५० वर्ष हुए। शहरके आस पास गुलाब चुलानेके लिये गुलाबके बहुतेरे बाग लगे हुए हैं।

बांकीपुरमें हिन्दुस्तानमें सबसे बड़ी अफयूनकी कोठी है, वहां बिहारके १२ जिलोंसे अफयून आता है। पटना कालिज ईंटोंसे बनी हुई बहुत सुन्दर इमारत है; इसको किसी वाशिन्देने अपने रहनेके लिये बनवाया था। गवर्नमेन्टने इसको खरीदकर कचहरी बनाई; सन् १८५७ ई० में कचहरी दूसरी बनी। सन् १८६२ में इसमें कालिज स्थापित हुआ। इनके अतिरिक्त बांकीपुरमें सिविल कचहरियां, मेडिकल कालिज, नारमलस्कूल, बिहार नेशनल कालिज, खैराती अस्पताल, पबलिक लाइब्रेरी, इत्यादि दर्शनीय वस्तु हैं। सिविल कचहरी और अफीमकी कोठीके बीचमें प्रतिवर्ष सावन मासमें प्रति सोमबारको सोमवारी मेला होताहै, जिसमें बहुत सी चीजें बिक्रीके लिये आती हैं और महादेवके मन्दिरमें बड़ा उत्सव होता है।

पटनेमें कारोबारके प्रधान स्थान मारुगञ्ज, मन्सूरगञ्ज, किला महल्ला, मिरचाइगञ्जके साथ चौक, महराजगञ्ज; सादिकपुर, अलावक्सपुर, गुलजारबाग और कर्नैलगञ्ज हैं। पटना शहर जिलेमें प्रधान तिजारती बाजार और नीलकी तिजारतका प्रसिद्ध स्थान है। तेलके बीज, नमक, सज्जी, चीनी, गुड़, गेहूँ, रहर, चना, चावल, इत्यादि वस्तु दूसरे शहरोंसे पटनेमें आती हैं और कई प्रकारकी चीज शहरसे दूसरे शहरोंमें जाती हैं। मारुगञ्ज सबसे अधिक आमदनीकी जगह है। कर्नैलगञ्जमें बहुत सी तिजारती चीजें बङ्गाल और बिहारके जिलोंसे नावपर आती हैं। सादिकपुर और महराजगञ्जमें तेलके बीजका बाजार है। मिरचाईगञ्जसे सटा हुआ चौक है, जिसमें मारवाड़ियोंकी कपड़े आदिकी दुकानें देखनेमें आती हैं। चौकसे पूर्व किलेके महल्लेमें रूई, बांस और लकड़ीकी तिजारत होती है। सन् १८८३–८४ में बांकीपुर और दानापुरके साथ पटनेकी सौदागरीकी आमदनीकी कीमत ३८९२१८४० रुपये और रफतनीकी कीमत ६६०३५७९० रुपये थी।

गुरुगोविन्दसिंहका मन्दिर—यह मन्दिर चौकके पास एक गलीके बगलमें हरिमन्दिर करके प्रसिद्ध है। मन्दिरके फाटकके दालानमें मार्बुलके ४ जोड़े खम्भे लगे हुए हैं। बड़े आँगनमें एक उत्तम बरामदा बना है उसमें पूर्व और पश्चिम दालान और बाहर चारोंओर सुन्दर ओसारे बने हैं। पूर्वके दालानमें गुरु गोविन्दसिंहकी २ जोड़ी चरणपादुका और पश्चिम वालेमें सुन्दर सिंहासन पर ग्रन्थ साहब अर्थात् नानकशाही लोगोंकी धर्म्म पुस्तक रक्खी हुई हैं। पुस्तकोंको दुशाले ओढ़ाये जाते हैं और चंवर डुलाये जाते हैं। मन्दिरसे उत्तर बहुत ऊँचा निशान है। पूस सुदी सप्तमी गुरु गोविन्दसिंहका जन्म दिन है, उस दिन वहाँ बड़ा उत्सव होता है। फूलबङ्गला बनता है और बड़ी रोशनीकी जाती है। हरिमन्दिरके महन्त

बाबासुमेरसिंहजी हैं जो व्रजभाषाके अच्छे कवि हैं । उसी स्थानपर सिक्खोंके नवगुरु तेग बहादुरकी पत्नी गुजरीदेवीके गर्भसे संवत् १७२३ (सन् १६६६ ई०) में पूस सुदी सप्तमी को गुरु गोविन्दसिंहका जन्म हुआ था । उन्होंने अपने मतवालोंको सिंहकी पदवी दी और एक दूसरा ग्रन्थ बनाया, जो दसवें गुरुका ग्रन्थ कहलाता है । और आज्ञा दी कि हमारे पश्चात् अब कोई दूसरा गुरु नहीं होगा, सब लोग अबसे ग्रन्थ साहबको गुरु समझेंगे जो किसीको कुछ पूछना होगा, वे उसीमें देख लेवेंगे । गुरु गोविन्दसिंहके जीवनका बड़ा भाग युद्धमें बीता, उन्होंने संवत् १७६५ कार्त्तिक सुदी पंचमी (सन् १७०८ ई०) को हैदराबादके राजके नदेड़में मुसलमानोंसे लड़कर संग्राममें अपने प्राणका विसर्जन किया, वहाँ गुरु गोविन्दसिंहकी संगति बनी हुई है ।

पटनदेवी—हरि मन्दिरसे दक्षिण ओर एक गलीके बगलमें छोटी पटनदेवीका मन्दिर है । आँगनके पूर्व और पश्चिम दोहरी और उत्तर तथा दक्षिण एकहरी दालान और चारों कोनोंपर चार कोठरियां हैं । पूर्वके दालानमें १२ खम्भे लगे हुए आसनमें महाकाली महालक्ष्मी और महासरस्वतीकी तीन मूर्त्तियां स्थित हैं ।

चौकसे ३ मील पश्चिम महाराजगञ्जमें बड़ी पटनदेवीका मन्दिर है । लोग कहते हैं कि पार्वतीके पटके गिरनेसे वहां पाटनदेवी हुई और इस शहरका नाम पटना पड़ा ।

गोलघर—बांकीपुरके रेलवे स्टेशनसे १$\frac{3}{4}$ मील उत्तर ऊँचे गुम्बजकी शकलकी ईंटोंसे बनी हुई गोलघर नामक इमारत, जो सन् १७८४ ई० में अकालके समय गल्ले रखनेके लिये बनी थी, देखने लायक है । इसकी दीवार १२ फीट मोटी; गोलाई नेवके पास ४२६ फीट; ऊंचाई मध्यमें ९० फीट और भीतरका व्यास १०९ फीट है । चारोंओर चार दरवाजे और सिरेपर १०$\frac{3}{4}$ फीट गोलाकार चबूतरा है । ऊपर चढ़नेके लिये बाहरसे दो सीढ़ियां, जिनके बगलमें रुकावटके लिये दीवार बनी है, बनी हुई हैं । लोग कहते हैं कि नैपालके सर जंगबहादुर छोटे घोड़ेपर चढ़कर बाहरकी सीढ़ियोंसे इसके सिरेपर चढ़ गये थे । गोल घरमें १३७००० टन गल्ला अंट सकता है ।

पटना जिला—इसका क्षेत्रफल २०७९ वर्गमील है । इसके उत्तर गङ्गा नदी, बाद सारन मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा जिले पूर्व मुंगेर जिला; दक्षिण गया जिला और पश्चिम सोन नदी, जो शाहाबाद जिलेसे इसको अलग करती है, बहती है । जिलेके दक्षिण भागमें पहाड़ियां हैं । जिलेमें जङ्गल नहीं है । जिलेके दक्षिण पूर्वके भागमें लगभग १००० फीट ऊँची राजगृहकी पहाड़ियां और अनेक गर्म झरने हैं ।

पटना जिलेमें गङ्गा और सोन प्रधान नदी हैं । पुनपुन नदीसे छोटी २ नहर निकली हैं । पुनपुन नदी नौबतपुर तक पूर्वोत्तरको बहकर; वहाँसे पूर्व झुककर फतहाके पास गङ्गामें मिलगई है । उसकी लम्बाई इस जिलेमें ५४ मील है । बिहारकी पहाड़ीमें मकान बनाने योग्य पत्थरकी खान है ।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १७७०२२४ और सन् १८८१ ई० में १७५६८५६ मनुष्य थे; अर्थात् १५४१०६१ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान, ३५८८ कृस्तान, ३२ जैन, १६ ब्राह्मो, १४ यहूदी, १ पारसी और १३ दूसरे । जातियोंके खानेमें २१७८४५ अहीर, १९४२२२ कुर्मी १२१३८१ भूमिहार, ९९९७६ दुसाध, ८६७३८

कोइरी, ८५८२४ कहार, ६४३३२ राजपूत, ५६६८७ चमार, ५२८८० तेली, ४७०४१ ब्राह्मण थे, और शेषमें दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पटना जिलेके पटने शहरमें १६५१९२, बिहारमें ४७७२३, दानापुरमें ४४४१९, बाढ़में १२२६३, और खगौल, मुकामा, फतुहा, महम्मदपुर, वैकुण्ठपुर और रसूलपुरमें १०००० से कम मनुष्य थे।

सूबे बिहार—बङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके आधीन बिहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये चार सूबे हैं। इनमेंसे सूबे बिहारका प्रधान शहर पटना है। सूबे बिहारके उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य, पूर्व सूबे बंगाल; दक्षिण छोटा नागपुरके जिले और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश है। सूबे बिहारमें पटना और भागलपुर दो विभाग हैं,—पटना विभागमें पटना, गया, शाहाबाद, सारन, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, और दरभंगा ये ७ जिले और भागलपुर विभागमें भागलपुर, मालदह, पुर्निया, मुंगेर और संथाल परगना ये ५ जिले हैं।

यह देश साधारण तरहसे चिपटा है। मुंगेर जिले और देशके दक्षिण-पूर्वमें जहाँ राजमहल और संथाल सिलसिले हैं, पहाड़ियां हैं। इस सूबेमें सबसे ऊँची पहाड़ी जिसकी ऊँचाई केवल १६२० फीट है, गया जिलेमें स्थित है। सूबेके मध्य होकर गङ्गा नदी बहती है, जिससे इस सूबेके प्रायः बराबर दो भाग हो गये हैं। उत्तरसे सरयू, गंडक, कोसी और महानन्दा और दक्षिणसे सोन नदी आकर गङ्गामें मिली हैं। इस सूबेमें कई एक नहर खेतोंको पटाते हैं और नील और अफीम बहुत होती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सूबे बिहारका क्षेत्रफल ४४१३९ वर्ग मील था। इसमें ७७४०७ कसबे और गाँव, ३५२०८९६ मकान और २३१२७१०४ मनुष्य थे। अर्थात् ११३८५८३६पुरुष और११७४१२६८स्त्रियां। इनमें१९१६९३२७हिन्दू, ३३१२६९७ मुसलमान६३३८६६आदि निवासीइत्यादि,१०९५४क्रस्तान,१३२ बौद्ध,१४ सिक्ख,५०यहूदी और २४ जैन। जातियोंके खानेमें २६४२९५७ ग्वाला, ११६६५९३ राजपूत, ११२४३६१ कोइरी १०७३६४३ ब्राह्मण, १०५२५६४ दुसाध, ९८५०९८ भूमिहार, ८८२११३ चमार, ७९०५२३ कुर्मी, ६३२०२९ तेली, ५३१४२३ कान्दू, ५३१९०४ धानुक,४६८३०५ कहार, ४१९५२१ तान्ती और तंतवा, ३९३५३७ बनिया, ३९२६२२ मलाह, ३५८०६८ कायस्थ, ३४०७१७ नाई, ३८३७४० कुम्भार, २५२९१४ लोहार; शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। आदि निवासियोंमें ५५९६२० सन्थाल, ११९९५ कोल थे। बिहार भारतवर्षमें सबसे घनी आबादीका देश है। इसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय प्रति वर्गमीलमें औसत ५२४ मनुष्य थे।

प्राचीन कालमें मगधके राजाओंके आधीन सूबे बिहार था, जो उस समय भारतवर्षमें प्रबल राजा थे। सन् ईस्वीकी चौथी सदीके पहिलेसे पाँचवीं सदीके पीछे तक उनका राज्य था। तेरहवीं सदीके आरम्भमें बिहार देश मुसलमानोंके आधीन होकर बंगालके नव्वाबके अधिकारमें हुआ। सन् १७६५ में ईष्टइन्डियन कम्पनीने दीवानीके साथ सूबे बिहारको पाया। सूबे बिहारके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	शहर और कसबे	जिला	जन-संख्या.
१	पटना बाँकीपुर	पटना	१६५१९२
२	गया	गया	८०३८३
३	दरभङ्गा	दरभङ्गा	७३५६१
४	भागलपुर	भागलपुर	५९१०६
५	छपरा	सारन	५७३५२
६	मुङ्गेर	मुङ्गेर	५७०७७
७	मुजंफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९२
८	बिहार	पटना	४७७२३
९	आरा	शाहाबाद	४६९०५
१०	दानापुर	पटना	४४४१९
११	बेतिया	चंपारन	२२७८०
१२	सहसराम	शाहाबाद	२२७१३
१३	हाजीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
१४	डुमराव	शाहाबाद	१८३८४
१५	जमालपुर	मुङ्गेर	१८०८९
१६	सीवान	सारन	१७७०९
१७	मधुवनी	दरभङ्गा	१७५४४
१८	बक्सर	शाहाबाद	१५५०६
१९	पुर्निया	पुर्निया	१४५५५
२०	इङ्गलिशबाजार	मालदह	१३८१८
२१	रिविलगंज	सारन	१३४७३
२२	मोतीहारी	चम्पारन	१३१०८
२३	लालगंज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
२४	जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
२५	बाढ़	पटना	१२३६३
२६	टिकारी	गया	११५६३
२७	साहेबगंज	सन्थालपरगना	११२९२
२८	रोसरा	दरभङ्गा	१०८८७
२९	भभुआ	शाहाबाद	१०२१६

इतिहास—पुराणके लेखानुसार शिशुनागवंशके राजा अजातशत्रुके पोते उदयाश्वने पाटली पुत्र (पटना) को, जिसको कुसुमपुर भी (पुष्पपुर) कहते थे, बसाया । (भारत-भ्रमण इसी खण्डके तीसरे अध्यायकी प्राचीन कथामें देखो) अजातशत्रु बौद्धमत नियत करने वाले गौतमबुद्धके समयमें था । गौतमबुद्धका देहान्त सन् ई० के ५४३ वर्ष पहले हुआ था । चन्द्रगुप्तने मगध या बिहारके नन्द खान्दानको, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र

थी, विनाश करके सन् ई० से ३१६ वर्ष पहले एक राज्य नियत कर २४ वर्ष तक गंगाके मैदानमें राज्य किया। उसी समय चीनके मेगेस्थनीजने शहरको देखा था। उसने लिखा था कि सिन्ध नदीसे १०००० इसटाडिया (११४९ मील) दूर गंगा और एरानोबो (सोन) के सङ्गमके निकट खाईसे घेरा हुआ ६४ फाटकोंसे सुशाभित हिन्दुस्तानकी राजधानी पालीवोथरा (पटना) है। उसके कथनानुसार शहरका घेरा २४ मीलका होता है। चीनके दूसरे यात्री हुएंत्सङ्गने सन् ६३७ ई० में इस शहरको देखकर लिखा है कि पुराना शहर, जो कुसुमपुर कहलाता है, उजड़ पुजड़ गया है, किन्तु नया शहर पाटलीपुत्र ११$\frac{3}{4}$ मीलके घेरेमें है।

मुसलमानोंके राज्यके आरम्भमें इस देशका सूवेदार विहार शहरमें रहता था। अकबरने पटनेको अपने अधिकारमें किया औरङ्गजेबने अपने पुत्र आजमको पटनेका सूवेदार बनाया। तबसे पटनेका अजीमाबाद नाम पड़ा। सन् १७६३ ई० में मुर्शिदाबादके नव्वाब मीर कासिमकी सेनाने लगभग २०० अङ्गरेज और २००० सिपाहियोंको पटनेके पास मारडाला। उनकी यादगारमें एक स्तंभ बना हुआ है। सन् १८५७ की जुलाई में दानापुरमें ७ वीं, ८ वीं और ४० वीं देशी पैदलके सिपाही बागी हो गये। वे लोग जब नावों पर सवार होकर चले; तब अङ्गरेजोंने स्टीमरके गोलोंसे उनको मारा, जिससे बहुतेरे मरे और बहुतेरे डूब गये, किन्तु आधेसे अधिक बागी सोन पार होकर शाहाबाद जिलेमें चले गये।

बांकीपुर जंक्शनसे 'ईष्ट इण्डियन रेलवे' की लाइन ४ तरफ गई है। तीसरे दरजेका महसूल फी मील २$\frac{1}{2}$ पाई है।

(१) बांकीपुरसे पश्चिम कुछ दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

६ दानापुर।
२२ कोइलवर-पुल।
३० आरा।
४४ बिहिया।
५३ रघुनाथपुर।
६३ डुमराव।
७३ वक्सर।
९५ दिलदारनगर जंक्शन।
१३१ मुगलसराय जंक्शन।

दिलदारनगर जंक्शनसे उत्तर थोड़ा पश्चिम १२ मील गाजीपुरके इस पार तारीघाट; मुगलसरायसे पश्चिम २० मील चुनार ४० मील मिरजापुर, ४५ मील बिन्ध्याचल, ९१ मील नयनी जंक्शन और ९५ मील इलाहाबाद और पश्चिमोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' के पास ७ मील बनारस, ४६ मील जौनपुर, १२६ मील अयोध्या, १३० मील फैजाबाद जंक्शन १९२ मील बाराबंकी जंक्शन और २०९ मील लखनऊ जंक्शन है।

(२) बांकीपुरसे उत्तर, थोड़ा पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

६ दीघाघाट।

दीघाघाटसे गंगाके बायें किनारे पर पलेजाघाट तक बोट जाती आती है। पलेजाघाटसे पश्चिम 'बंगाल नार्थवेष्ट रेलवे' पर २९ मील छपरा, ६७ मील सिवान

और १४१ मील गोरखर जंक्शन और पलेजासे पूर्वोत्तर ६ मील सोनपुर और ७० मील मुजफ्फर-पुर जंक्शन है।

(३) बांकीपुरसे दक्षिण गया ब्रेंच—
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन।
८ पुनपुन।
२८ जहानाबाद।
५७ गया।

(४) बांकीपुरसे पूर्व—
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन—
६ पटना शहर।
२८ बखतियारपुर।
३९ बाढ़।
५६ मोकामा जंक्शन।
७६ लक्षीसराय जंक्शन।

लक्षीसरायसे कार्ड लाइन पर ६१ मील वैद्यनाथ जंक्शन, १३० मील आसनसोल जंक्शन, १४१ मील रानीगञ्ज और १८७ मील खाना जंक्शन और लुप लाइन होकर २५ मील जमालपुर जंक्शन ५८ मील भागलपुर, १०४ मील साहेबगञ्ज और २४८ मील खाना जंक्शन है। खाना जंक्शनसे दक्षिण ८ मील बर्दवान और ७५ मील कलकत्तेके इस पार हवड़ा है।

दूसरा अध्याय।

(सूबे बिहारमें) गया, बोध गया, टिकारी और बिराट नगर।

गया।

बाँकीपुरसे ८ मील दक्षिण पुनपुन गाँवका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे $\frac{1}{2}$ मील उत्तर पुनपुन नदी बहती है जहाँ गयाके यात्री बालूकी एक वेदी बनाकर पिण्डदान करके गया जाते हैं।

पुनपुन स्टेशनसे ४९ मील और बाँकीपुर जंक्शनसे ५७ मील दक्षिण (२४ अंश ४८ कला ४४ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ३ कला १६ विकला पूर्व देशान्तरमें) बिहार प्रदेशके पटना विभागमें जिलेका सदर स्थान और प्रधान कसबा गया नामक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय गयामें जो साहबगंजके साथ एक म्युनिसिपलिटी बनी है, ८०३८३ मनुष्य थे अर्थात् ४०८९३ पुरुष और ३९४९० स्त्रियां। इनमें ६३०४६ हिन्दू, १७१४७ मुसलमान, १०५ क्रस्तान और ८५ जैन थे। मनुष्य संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ३६ वाँ, बङ्गाल में ५ वाँ और बिहारमें दूसरा शहर है।

गया २ हिस्सोंमें विभक्त है, अर्थात् साहबगंज और पुरानी गया। दोनों फल्गु नदीके बायें अर्थात् पश्चिम किनारेपर हैं। साहबगंजमें रेलवे स्टेशन, यूरोपियन और देशी लोगोंकी कोठियां और स्टेशनसे करीब १ मील दक्षिण-पूर्व सिविल कचहरियाँ हैं। साहबगंज तिजारती जगह है, वहाँकी सड़क चौड़ी और मकान दो मंजिले तीन मञ्जिले बने हैं। उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिर्जा, पबलिक लाइब्रेरी, तैरनेका हम्माम, और घोड़दौड़की सड़क है। गयामें काले और सफेद पत्थरके प्याले पथलौटी आदि वस्तु बहुत सुन्दर बनती हैं।

रेलवे स्टेशनसे १½ मील पूर्वोत्तर पुरानी गयाके उत्तरका फाटक और २ मील फल्गूके बायें विष्णुपदका मन्दिर है। पुरानी गयाका खास शहर, जिसमें गयावालोंके मकान हैं, फल्गू नदीके पश्चिम किनारेपर उत्तरसे दक्षिण ¾ मील लम्बा और पूर्वसे पश्चिम ¼ मील चौड़ा है। उसके चारों दिशाओंमें ४ फाटक हैं। मकान पुराने ढाचेके चौमंजिले पञ्च मंजिले तक बने हैं। उत्तरके फाटकसे दक्षिणके फाटक तक गच कीहुई एक सड़क है। ऊँची नीची भूमिपर शहर बसा है। जगह जगह पथरीली जमीन है। फलगूके किनारेपर ब्रह्मनी घाट, गायत्री घाट, बकुआ घाट, सोमर घाट, जिह्वालोल, गदाधर घाट आदि हैं।

पश्चिम फाटकसे बाहर एक सड़क उत्तरसे दक्षिण गई है जिसके पश्चिम बगलपर पश्चिम फाटकसे कुछ दक्षिण रामसागर महल्लेमें करीब १८५ गज लम्बा और इससे आधेसे अधिक चौड़ा रामसागर नामक तालाब है। जिससे दक्षिण चान्दचौरा बाजार है।

गयासे पूर्व फल्गूके दहिने किनारेपर नगकूट पहाड़ी; दक्षिण–पश्चिम भस्मकूट (जिसको लोग मुरली पहाड़ी कहते हैं इसके शिरपर एक मन्दिर देख पड़ता है) और ब्रह्मयोनिकी पहाड़ी; उत्तर साहबगंजके बाद रामशिला पहाड़ी और पश्चिमोत्तर प्रेतशिला पहाड़ी देख पड़ती है।

गया श्राद्धके लिये भारतवर्षमें प्रधान है। वहाँ प्रतिदिन श्राद्ध करनेके लिये यात्री पहुँचते हैं, किन्तु आश्विन मासका कृष्णपक्ष गया श्राद्धका सर्व प्रधान है। उस समय भारत-वर्षके प्रत्येक विभागोंके लाखों यात्री गयामें आते हैं। और धनी लोग गयावाल पण्डोंको बहुत दक्षिणा देते हैं। गयाके पण्डोंमें बड़ेबड़े धनी हैं। आश्विनके बाद पौष और चैत्रके कृष्ण-पक्षमें भी बहुत यात्री गयामें पिण्डदान करते हैं।

श्राद्धके स्थान और विधि—(१) पूर्णिमाके दिन फल्गु नदीमें एक वेदीपर खीरका श्राद्ध, तर्पण और पण्डाकी चरण पूजा होती है। फल्गू नदी गयाके पूर्व बहती हुई दक्षिणसे उत्तरको गई है। फल्गूका विशेष माहात्म्य नगकूट और भस्मकूटसे उत्तर और उत्तर-मानससे दक्षिण है। नगकूटसे दक्षिण फल्गुका नाम महाना है। गयासे ३ मील दक्षिण नीलांजन नदी दहिनेसे आकर महाना नदीमें मिली है। संगमसे करीब १ मील दक्षिण सरस्वतीके मन्दिरतक इस नदीका नाम सरस्वती है। मधुश्रवा नामक एक छोटी नदी दक्षिण-पश्चिमसे आकर गयाके दक्षिण महाना (फल्गू) नदीमें मिली है, जिसकी धारा बरसातके बाद फल्गूसे अलग होकर गदाधरके मन्दिरके नीचे बहती है। वर्षाकालके अतिरिक्त दूसरी ऋतुओंमें फल्गू नदीमें पानी नहीं रहता, परन्तु बालू खोदनेपर साफ पानी मिल जाता है। नदीमें पानी रहने परभी लोग बालू हटाकर स्वच्छ पानी लेजाते हैं विष्णुपदके पूर्व फल्गूके दहिने किनारेपर नगकूट पहाड़ी, बाँये किनारेपर भस्मकूट पहाड़ी और विष्णुपदसे लगभग १ मील उत्तर उत्तरमानस नामक सरोवर है।

(२) कृष्ण प्रतिपदाके दिन ५ वेदीपर पिंडदान करना होता है, रामशिला, रामकुण्ड, प्रेतशिला, ब्रह्मकुण्ड और कागबलि। रामशिला और रामकुण्ड–विष्णुपदके मन्दिरसे करीब २ मील साहबगञ्जके पासही उत्तर फल्गूके पश्चिम किनारेपर रामशिला पहाड़ी है, जिसके पूर्व बगलके नीचे दीवारसे घेरा हुआ ब्रह्मकुण्डसे बहुत बड़ा रामकुण्ड नामक तालाब है। यात्री गण प्रेतशिलासे लौटनेपर इसके किनारे एक वेदीका पिंडदान करते हैं और पीछे

रामशिलाक ऊपर पिंडदान होता है। तालावके दक्षिण एक शिवमन्दिर और पश्चिम रामशिलाके बगलपर २० सीढ़ीके ऊपर टेकारीकी रानीका बनवाया हुआ एक सुन्दर विशाल मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण, जानकी और हनूमान आदि देवता स्थित हैं। मन्दिरके दक्षिण एक धर्मशाला है। ३४० सीढी लांघनेपर रामशिलाके शिरपर आदमी पहुँचता है। उसके मध्यमें पत्थरके ढोकोंसे वना हुआ एक शिवमन्दिर है, जिसके जगमोहनमें एक चरणचिह्न बना है। मन्दिरके दक्षिण एक ओसारे और उत्तर एक मन्दिरमें ३ पुरानी बौद्धमूर्त्तियां देखनेमें आती हैं, जिनमेंसे एक स्त्री और दो चतुर्भुज पुरुष हैं। लोग कहते हैं कि पहले रामशिलाका नाम प्रेतशिला था, जब रामचन्द्र यहां आये, तबसे इसका नाम रामशिला हुआ है।

प्रेतशिला और ब्रह्मकुण्ड—रामशिलासे ४ मील पश्चिम प्रेतशिला एक पहाड़ी है। पत्थरके टुकड़ोंकी पक्की सड़क बनी है। सवारीके लिये एक्के और वग्गी और पहाड़ियोंपर चढ़नेके लिये खटोली मिलती हैं। प्रेतशिलाके पासही उत्तर २४ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा ब्रह्मकुण्ड नामक तालाव है। झरनेका पानी कुण्डमें गिरता है। चारों बगलोंपर पानी तक पक्की सीढ़ियां बनी हैं। कुण्डके पास एक मन्दिर और दो तीन पण्डेके ओसारे हैं, जिनके उत्तर झरनेके पानीकी बावली है, जिसका जल ब्रह्मकुण्डमें गिरताहै। ब्रह्मकुण्डमें स्नान तर्पण करनेके उपरांत वहां पिण्डदान करके प्रेतशिलापर जाना होता है। ब्रह्मकुण्डसे ३६० सीढ़ियोंके ऊपर चढ़नेपर यात्री प्रेतशिलाके सिरपर पहुँचते हैं, जहां एक आंगनके तीन बगलोंपर ओसारे और पूर्व वगलपर आगेकी तरफ एक मण्डप है। मण्डप और पश्चिमके ओसारेमें कई पुरानी बौद्ध मूर्त्तियां हैं। वहां पिण्डदान करना होता है। कहते हैं कि पूर्व समयमें प्रेतशिलाका नाम प्रेत पर्वत था; जब रामचन्द्रके आनेपर प्रेतशिलाका नाम रामशिला हुआ। तब प्रेतपर्वतको प्रेतशिला लोग कहने लगे।

कागबलि—रामशिलासे करीब २०० गज दक्षिण सड़कके पश्चिम बगलपर घेरी हुई जमीनके भीतर एक वट वृक्ष है। वहां एक वेदीके केवल तीन पिण्ड दिये जाते हैं। कागबलि; यमबलि और श्वानबलि। इस दिन प्रेतिया ब्राह्मण (१) रुपया लेताहै और यात्रियोंको दूसरे दिनोंसे अधिक परिश्रम होता है।

(३) कृष्णपक्षकी द्वितीयाको उत्तर मानस, उदीची, कनखल, दक्षिण मानस और जिह्वालोल इन ५ वेदियोंपर पिण्डदान होता है। इनको पञ्चतीर्थी कहते हैं।

उत्तर मानस—विष्णुपदसे करीब १ मील उत्तर सिविल कचहरियोंसे २०० गज पूर्व उत्तर मानसनामक महल्लेमें रामशिला वाली सड़कके पूर्व बगलपर करीब ५० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा उत्तर मानस नामका तालाब है। उसके चारों बगलोंपर नीचेतक पक्की सीढ़ियां हैं। तालाबके पूर्व और दक्षिण चहार दीवारी, पश्चिम धर्मशाला और उत्तर एक शिखरदार मन्दिर है; जिसमें उत्तरार्क नामक सूर्य्य और शीतला आदि देवीकी मूर्तियाँ स्थित हैं। मन्दिरके आगे पूर्व लम्बा जगमोहन है, जिससे मन्दिरमें अँधेरा रहता है। मन्दिरसे उत्तर पीपलकी जड़के पास पितामहेश्वर महादेवका बहुत छोटा मन्दिर है। तालावके पश्चिमोत्तर कोनेके पास सड़कके पश्चिम मौनेश्वर महादेवका मन्दिर है। इसमें भी लम्बा जगमोहन होनेके कारण अँधेरा रहता है। दक्षिणकी

दीवारमें पार्वतीजी; पश्चिमकी दीवारमें सूर्य्य नारायण और गणेशजी और लक्ष्मीजीकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। लोग कहते हैं कि ब्रह्मा उत्तर मानसमें श्राद्ध करके इसी स्थानसे मौनव्रत धारणकर सूर्य्यकुण्ड तक गये, इसी लिये सम्पूर्ण यात्री उत्तर मानसमें पिण्डदान करनेके पश्चात् मौन होकर सूर्य्यकुण्डपर जाते हैं।

उदीची, कनखल और दक्षिण मानस विष्णुपदके मन्दिरसे करीब १७५ गज उत्तर ९५ गज लम्बा और ६० गज चौड़ा दीवारसे घेरा हुआ सूर्य्यकुण्ड तालाव है। बगलोंपर पत्थरकी पुरानी सीढ़ियाँ लगी हैं। कुण्डके उत्तरका हिस्सा उदीची, मध्य हिस्सा कनखल, और दक्षिण हिस्सा दक्षिण मानस तीर्थ कहा जाता है। तीनों स्थानों पर तीन वेदीके ३ पिण्डदान होते हैं सूर्य्यकुण्डके पश्चिम गुम्बजदार अन्धेरे मन्दिरमें पुराने ढंगकी सूर्य्य-नारायणकी चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है जिसको दक्षिणार्क कहते हैं। जगमोहन पुराने ढाचेका आगेकी तरफ लम्बा है।

जिह्वालोल—सूर्य्यकुण्डसे करीब ८० गज दक्षिण फल्गूके किनारेपर जिह्वालोल तीर्थ है, वहाँ मैदानमें एक पीपलका वृक्ष और एक ओसारा है, जहाँ पिण्डदान होता है।

गदाधरजी—विष्णुपदसे ३० गज पूर्वोत्तर फल्गूके किनारेपर पूर्व मुखका शिखर-दार गदाधरजीका मन्दिर है। अन्धेरेमें गदाधरजीकी चतुर्भुज मूर्ति चबूतरे पर खड़ी है। मन्दिरके आगे तेहरा जगमोहन है। पूर्ववाले जगमोहनमें करीब एक गज ऊँची दोनों भुजाओंको नीचे लटकाये हुए एक मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग रामचन्द्र कहते हैं। इसके दहिने हाथके नीचे एक पुरुषकी और बायें हाथके नीचे एक स्त्रीकी छोटी मूर्ति और इसके बायें दूसरी जगह तीन मुखवाली एक चतुर्भुज मूर्ति है। पंचतीर्थीके पिण्डदान होजानेके पीछे पञ्चामृतसे गदाधरजीको स्नान कराया जाता है। मन्दिरके पूर्व गदाधर घाट पर पत्थरकी २९ सीढ़ियाँ बनी हैं गदाधरजीके मन्दिरसे उत्तर शिखरदार मन्दिरमें करीब ३ हाथ ऊँची गयाश्री देवीकी अष्टभुजी मूर्ति खड़ी है।

(४) कृष्ण तृतीयाके दिन तीन वेदी पर पिण्डदान होता है,—मतङ्गवापी, धर्मा-रण्य और बोधगया। गयासे ६ मील दक्षिण बोधगया तक पक्की सड़क है. परन्तु सरस्वती मतंगवापी और धर्मारण्य होकर जानेवाले यात्रियोंको ७ मीलका रास्ता पड़ता है। गयासे करीब ३ मील जाने पर पक्की सड़क छूटजाती है। वहाँसे पैदल अथवा खटोलीपर एक मीलसे अधिक पूर्व दक्षिण जाने पर सरस्वती नदी मिलती है। फल्गूके दोनो तरफ बालूका मैदान है। सरस्वती नदीमें स्नान और तर्पण होता है। किनारे पर लगभग ४ गज ऊँचा सरस्वतीका मन्दिर है। जिसमें यात्री सरस्वतीका दर्शन करते हैं। मन्दिरके भीतर और बाहर कई बौद्धमूर्तियाँ देखनेमें आती हैं। मन्दिरके उत्तर एक चबूतरे पर एक जोड़ा चरण चिह्न और १६ शिवलिङ्ग हैं जिनमेंसे दो में चारोंओर एक एक मूर्तियाँ बनी हैं। ऐसे लिङ्ग बोधगयाके मन्दिरके पास बहुत देख पड़ते हैं। पहले सरस्वतीके मन्दिरके चारों तरफ मकान थे, अब तक भी एक तरफ खड़ा है।

मतंगवापी—सरस्वतीसे १ मीलसे अधिक दक्षिण मतंगवापी नामकी छोटी बावली है। कुछ दूर चौड़ी राह और कुछ दूर पगडण्डी मिलती है। वापीके उत्तर बगलमें सीढ़ियां और पश्चिमोत्तर दीवारके भीतर ४ मन्दिर खड़े हैं, जिनमेंसे दो मामूली कदके नए शिव

मन्दिर और दो छोटे पुराने मन्दिर हैं। जिनमेंसे एकमें मतंगेश्वर शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित हैं। वहाँ कई बौद्धमूर्तियाँ देखनेमें आती हैं। वहाँ वापीके किनारे पर पिण्डदान होता है।

धर्मारण्य—मतंगवापीसे ३/४ मील पूर्व-दक्षिण धर्मारण्य स्थानकी एक छोटी बारहदरीमें यूप कूप नामक एक कूँआं है, वहाँ पिण्डदान करके पिण्डोंको इसी कूपमें लोग डाल देते हैं। मेलेके समयमें पानीके ऊपरतक पिण्ड होजाते हैं। बारहदरीके दक्षिण-पूर्व एक छोटा मन्दिर है, जिसके भीतरकी मूर्त्तिको लोग धर्मराज अर्थात् युधिष्ठिर कहते हैं। मन्दिरके दक्षिण 'रहट कूप' नामक कूँआ है। कोई कोई पुत्रकामनाके लिये वहां पिण्डदान करता है, और नारियल फूल कूपमें डालकर पूजा करता है। कूपके दक्षिण छोटा मन्दिर है, जिसके भीतरकी मूर्त्तिको लोग भीम कहते हैं। धर्मारण्यमें कई बौद्ध मूर्त्ति देख पड़ती हैं। मतङ्ग-वापीसे वहाँतक पगडंडी राह है।

बोधगया—धर्मारण्यसे १ मीलसे अधिक पश्चिम बोधगयाका प्रसिद्ध मन्दिर है। फल्गू नदी लांघनेके समय दोनों तरफ बालू मिलती है। मन्दिरके उत्तर एक चबूतरे पर पीपलका पुराना वृक्ष है, जिसके पास पिंडदान होता है। प्रेतशिलाकी यात्राके सिवाय दूसरे दिनोंकी यात्रासे इस दिन यात्रीको अधिक परिश्रम होता है (बोधगयाका वृत्तान्त अन्यत्र देखो)

(५) कृष्ण चतुर्थीके दिन दो वेदीपर पिण्डदान होता है,—ब्रह्म सरोवर और काग बलि—गयाके दक्षिण फाटकसे लगभग ३५० गज और बैतरनी तालावसे ६५ गज दक्षिण सड़कके पश्चिम किनारेपर १२५ गज लम्बा और ९ गज चौड़ा ब्रह्म सरोवर एक तालाव है। पूर्व और उत्तर बगलोंपर सीढ़ियाँ बनी हैं। तालाबके जलमें दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास पूर्व तरफ झुकी हुई पत्थरकी गदा खड़ी है। ब्रह्म सरोवरमें स्नान तर्पण और पिण्डदान करके उसकी परिक्रमा करनी होती है। तालावके पश्चिमोत्तर कोनेसे २० गज उत्तर वट वृक्षके पास कागबलि, यमबलि और श्वानबलि तीन पिण्ड दिये जाते हैं। वृक्षके चबूतरेके पूर्वोत्तर कोनेके पास एक छोटी बारहदरीमें एक चौकोना कुण्ड है, जिसमें तीनों पिण्ड डाल दिये जाते हैं सरोवरके पश्चिमोत्तर कोनेसे ४८ गज पश्चिम एक छोटे मन्दिरके भीतरकी दीवारमें पत्थर खोदकर तारक ब्रह्म बनाये गये हैं, जिनका दर्शन करना होता है ब्रह्म सरोवरसे करीब १३० गज पश्चिम एक चबूतरेके मध्यमें एक ऊँची वेदीपर केलेकी छोटी झाड़ीके बीच एक गजसे कम ऊँचा आम्रका वृक्ष है, जिसको यात्री लोग पानीसे सींचते हैं। पुराना वृक्ष गिर गया है।

(६) कृष्णपक्षकी पंचमीको तीन वेदीपर खीरका पिण्डदान होता है—सोलह वेदी-वाले मण्डपमें रुद्रपद और ब्रह्मपदके पास और विष्णुपदके मन्दिरमें विष्णुपदके निकट विष्णु-पदके वर्तमान मन्दिर और सोलह वेदीके मण्डपको इन्दौरकी महारानी अहिल्या बाईने बनवाया, जिसका राज्य सन् १७६५ से सन् १७९५ ई० तक था।

विष्णुपदका मन्दिर—गया शहरके दक्षिण-पूर्व फल्गू नदीके पास गयाके सब मन्दिरोंमें प्रधान और सबोंसे उत्तम विष्णुपदका विशाल मन्दिर पूर्व मुखसे खड़ा है। मन्दिर काले पत्थरसे बना हुआ भीतरसे आठ पहला है। कलस, ध्वजा और ध्वजाके स्तम्भपर सोनेका मुलम्मा हुआ है। किवाड़ोंमें चाँदीके पत्तर लगे हैं। मन्दिरके मध्यमें विष्णुका एक चरणचिह्न शिलापर

उखड़ा है। उसके हौदेके चारों तरफ चाँदीका पत्तर लगा है। दीवारके ताकोंमें कई एक दवमूर्त्तियाँ स्थित हैं। मन्दिरके आगे १८ गज लम्बा और १७ गज चौड़ा ४२ खूब सूरत खम्भे लगे हुए काले पत्थरका बना हुआ गुम्बजदार उत्तम जगमोहन है। बीचका हिस्सा छोड़कर इसके चारों बगल दो मञ्जिले हैं। गुम्बजके ऊपर सोनहुला कलश लगा है। नीचे बड़ा घण्टा लटकता है। जगमोहनमें मन्दिरके दोनों बगलोंपर २ छोटी कोठरी हैं। दक्षिण-वालीमें मन्दिरका खजाना और उत्तरवालीमें कनकेश्वर शिवलिङ्ग स्थित हैं। शिवके आगे मार्बुलका नन्दी है। जगमोहनके आगे ४ स्तम्भोंसे बना हुआ छोटे मण्डपमें बड़ा घण्टा लटकता है, जिसके पास एक छोटी कोठरीमें काले पत्थरसे बनी हुई गरुड़की मूर्ति है।

सोलह वेदी नामक मण्डप—जगमोहनके पूर्व-दक्षिणके कोनेके पास कोनेके पूर्व और दक्षिण ३७ चौकोने स्तम्भ लगे हुए काले पत्थरसे बने हुए सोलह वेदियोंका मण्डप है। वेदियोंके पास या उनके पासके खम्भेपर वेदियोंके नाम लिखे हुए हैं।

(७, ८ और ९) कृष्णपक्षकी ६ से ८ तक तीन दिनमें सोलह वेदीके मण्डपमें १४ स्थानोंपर और उनके पासके छोटे मण्डपमें दो स्थानोंपर कुल १६ वेदोके पिण्डदान होते हैं (१) कार्त्तिक पद (२) दक्षिणाग्नि (३) गार्हपत्याग्नि (४) आहवनीयाग्नि (५) सातत्याग्नि (६) आवसथ्याग्नि (७) सूर्य्यपद (८) चन्द्रपद (९) गणेशपद (१०) दधीचपद (११) कण्वपद (१२) मतङ्गपद (१३) क्रौंचपद (१४) इन्द्रपद (१५) अगस्त्यपद और (१६) कश्यपपद। अष्टमीके दिन सोलहवेदीके मण्डपमें एक स्थानपर दूधसे गजकर्ण तर्पण होता है। नियत दिनपर बहुत भीड़ होती है। बहुत लोग मण्डपमें किसी स्थानपर या उसके आस पासके मैदान और ओसारोंमें वेदियोंके स्थान मानकर पिण्डदान करते हैं।

विष्णुपदके मन्दिरसे ३ गज दक्षिण गयाके पण्डा बिहारीलाल मेहरवारका बनवाया हुआ जगन्नाथजीका मन्दिर है। मन्दिरके दक्षिण–पश्चिम और उत्तर दालान और धर्मशाला बनी हैं। वहाँ जगह जगह बहुत पुरानी बौद्ध मूर्त्तियाँ हैं, जिनको बहुत लोग हिन्दूके देवता जानते हैं। मन्दिरसे उत्तर एक छोटे मन्दिरमें नारायणके बायें लक्ष्मी और दहिने अहिल्या बाईकी मूर्त्तियाँ हैं। तीनों प्रतिमा मार्बुलकी बनी हुई हैं।

(१० कृष्णपक्षकी ९ को २ वेदियोंपर पिण्डदान होता है,—रामगयामें और सीता-कुण्डपर ; पिछले स्थानपर माता, पितामही और प्रपितामहीको केवल तीनहीं बालूके पिण्ड दिये जाते हैं। और वहाँ सौभाग्य दानकी विधि है।

सीताकुण्ड और रामगया—विष्णुपदके मन्दिरके सामने पूर्व फल्गू नदीके दूसरे पार अर्थात् पूर्व किनारेको सीताकुण्ड कहते हैं। नगकूट पहाड़की नेवके पास चार पांच सीढ़ीके ऊपर एक छोटे मन्दिरमें जानकीजी, दशरथजीको पिण्डदान देती हैं। पिण्डलेनेके लिये दशरथजीका हाथ निकला है। मान्दिरसे पश्चिम इससे लगा हुआ एक दूसरा मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण और जानकीकी मूर्त्ति सुशोभित हैं। मन्दिरके दक्षिण नायकजी गयावालका बनवाया हुआ शिव मन्दिर है। मान्दिरके ताकमें सूकर भगवान्की मूर्त्ति स्थित है। सीताजीके मन्दिरसे करीब २५ गज पूर्व एक छोटे मन्दिरमें कोई देवता हैं, जिसके पूर्वके मन्दिरमें मार्बुलकी ३ मूर्त्ति हैं। मध्यमें नृसिंहजी, उनके दहिने महावीरजी और बायें सूर्य्य। इस मन्दिरसे पूर्व राम, लक्ष्मण और जानकी हैं। इन मन्दिरोंके सामने रास्तेके उत्तर

एक आङ्गनके चारों तरफ कई छोटे मन्दिर और कमरे हैं। एकमें काष्ठमय जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा; दूसरेमें मार्बुलके महावीरजी और तीसरेमें धातुविग्रह राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा कृष्ण आदि हैं। राम मन्दिरके ईशान कोनपर रास्तेके सामने शिलामें खोदा हुआ एक शिवलिङ्ग है, जिसको रामनाथमहादेव कहते हैं महादेवके पास फल्गूके जलके पास तक२४सीढी बनी हैं। सीढ़ियोंके सिरेके पास करीब १२ गज लम्बा और ८ गज चौड़ा आंगन है, जिसके ३ बगलोंपर दीवार और पश्चिम बगल ओसारा है ओसारेमें राम जानकीकी पुरानी मूर्त्तियोंके आगे भूमिपर शिला निकली हुई है, जो भरताश्रमकी वेदी कही जाती है। उसी स्थानपर रामगयाका पिण्ड दान होता है। आंगनमें मतङ्ग ऋषिका बड़ा चरण चिह्न बनाया गया है। वहाँ भी बौद्ध मूर्त्तियोंके समान बहुत मूर्त्तियाँ देख पड़ती हैं। पर्वतके सिरपर गयावालके बनवाये हुए एक छोटे मन्दिरमें छोटे स्तम्भके समान महावीरजी हैं।

(११) कृष्णपक्षकी दशमीके दिन गयाशिरमें और गयाकूपमें पास दो वेदीका पिण्ड दान होता है;—

गयाशिर—विष्णुपदके मन्दिरसे लगभग ५० गज दक्षिण गयाशिर नामक स्थान है, वहाँ दक्षिण मुखके ओसारेके आगे थोड़ी भूमि है। ओसारेमें एक छोटा चौकोना कुण्ड है, जिसमें बहुतेरे लोग पिण्डदानके पीछे पिण्डोंको डाल देते हैं। ओसारेके पश्चिमकी दीवारमें एक स्त्री और माला लिये हुए एक पुरुषकी मूर्त्ती बनी है।

गयाकूप—विष्णु पदके मान्दिरसे करीब १०० गज दक्षिण-पश्चिम और गयाशिरसे पश्चिम करीब १८ गज लम्बे और १० गज चौड़े एक आँगनमें गया कूप है। आँगनके तीन बगलों पर दीवार और पश्चिम तरफ ओसारा है। कूपके पश्चिम पीपलका मोटा वृक्ष है। कोई कोई यात्री अकाल-मृत्युसे मरे हुए प्रेतोंको एक नारियल पर आवाहन करके इस कूपमें छोड़ देते हैं नारियल छोड़नेवालेको १¾ रुपया वहाँ देना पड़ता है यात्री लोग पिण्डदान होनेके पीछे पिण्डोंको गयाकूपके पाटनपर डाल देते हैं।

(१२) कृष्णपक्षकी ११ को ३ वेदियोंपर पिण्डदान होता है—मुण्डपृष्ठा, आदिगया और धौतपद। उस दिन खोवे या गुड़ तिल अथवा सिंगहाड़ेके आटे आदि फलाहारी वस्तुओंके पिण्ड बनाए जाते हैं। कोई कोई आटेका भी पिण्डदान करता है।

मुण्डपृष्ठा—गयाकूपसे करीब ५० गज पश्चिम ऊँची भूमिपर एक आंगनमें पूर्व मुखकी छोटी कोठरी है। उसमें १२ भुजावाली मुण्डपृष्ठा देवीकी मूर्ति स्थित है। मन्दिरके पास चारों तरफ आंगनमें पिण्डदान होताहै।

आदिगया—मुण्डपृष्ठासे दक्षिण-पश्चिम आदिगया है वहाँ शिलापर पिण्डदान होता है। उससे पश्चिम एक आंगन है, जिससे पश्चिम ५ सीढ़ी नीचे उतरनेपर दूसरा आँगन मिलता है। उससे पश्चिम ३ सीढ़ी नीचे उतरने पर एक छोटी कोठरीमें प्रवेश करना होता है, जिसमें शिला काटकर ५ बेडौल मूर्त्ती बनी हैं, जिनमें आदि गदाधर प्रधान हैं।

धौतपद—आदिगयासे दक्षिण-पश्चिम और गयाके दक्षिण फाटकसे दक्षिण-पूर्व एक ओसारेमें करीब ३½ हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी उजली शिला भूमि पर निकली हुई है वहीं पिण्डदानकी वेदी है। भीड़ होनेपर इसके आसपास लोग पिण्डदान करते हैं।

(१३) कृष्णपक्षकी १२ के दिन ३ वेदियोंपर पिण्डदान होता है,—भीमगया, गोप्रचार और गदालोल।

भीमगया—वैतरनीके पश्चिमोत्तरके कोनेसे करीव ८० गज पश्चिम भीमगया है। वहाँ एक घेरेके भीतर भी शिलापर पिण्डदान करना होता है। घेरेमें दक्षिण मुखके ओसारेमें ३ हाथ गड़हा भीमके अँगूठेका चिह्न है। दक्षिण तरफकी कोठरीमें भीमसेनकी मूर्त्ति है। भीमगयासे लगभग ११५ गज पश्चिम दक्षिण भस्मकूट नामक ऊँची भूमिपर करीव ४६ सीढ़ियोंके ऊपर पुराने ढाचेके जनार्दन भगवान्का शिखरदार मन्दिर है, जिसके आगे पूर्व तरफ एकही द्वारवाला जगमोहन बना है। जगमोहनके भीतर ऊँचे १६ स्तम्भ लगे हैं। मन्दिरके भीतर भगवानकी चतुर्भुज मूर्त्ति खड़ी है उसके दोनों हाथोंके नीचे एक एक छोटी मूर्त्ति हैं। जगमोहनके आगे करीव ३ गज ऊँचे ३ शिवमन्दिर बने हुए हैं। जनार्दनके मन्दिरसे थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम पुराने ढाचेका मङ्गलादेवीका छोटा मन्दिर है जिसमें मङ्गलेश्वर शिवलिङ्ग और एकहीमें ५ लिङ्गस्वरूप मङ्गलादेवी हैं। वहाँ कई बौद्ध मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं और ओसारानुमा एक धर्मशाला बनी है।

गोप्रचार—मङ्गलादेवीके मन्दिरसे दक्षिण नीचेकी ओर ३२ सीढ़ियाँ गई हैं, उसके दहिने बगलपर गोप्रचार स्थान है। वहाँ एक आँगनके ३ तरफ दीवार और उत्तर ओर दालानके आगे ओसारा है, जिसमें भूमि पर शिला निकली हुई है। शिलापर गौओंके छोटे बड़े खुरोंके बहुत चिह्न हैं लोग कहते हैं कि इस स्थानपर ब्रह्माने गोदान किया था, इस शिलापर और इसके आसपास पिण्डदान होता है।

गदालोल—अक्षयवटसे दक्षिण गदालोल नामक कच्चा तालाव है, जिसमें सब जगह पानी नहीं रहता। इसके उत्तर किनारे पर ओसारानुमा दो छोटी धर्मशाला हैं। दक्षिण-पश्चिम हिस्सेके जलमें छोटे पतले खम्भेके समान गदा खड़ी है। यात्री लोग धर्मशालाओंमें पिण्डदान करके गदाका दर्शन करते हैं।

(१४) कृष्ण पक्षकी १३ को फल्गूमें स्नान करके दूधका तर्पण और सन्ध्या समय ४५ वेदियोंके ४५ दीपदान फल्गूके किनारे या कुछ किनारे पर और कुछ विष्णुपद आदि प्रख्यात मन्दिरोंके पास लोग करते हैं।

(१५) कृष्ण पक्षकी १४ को वैतरनीमें तर्पण होता है। वहाँ गोदानकी विधि है गयाके दक्षिण फाटकसे १३० गज दक्षिण और ब्रह्म सरोवरसे ६५ गज उत्तर सड़कके पश्चिम किनारे पर १३० गज लम्बा और इससे आधा चौड़ा वैतरनी नामक तालाव है। पश्चिम और पूर्व बगलोंपर जगह जगह सीढ़ियाँ बनी हैं।

(१६ वें दिन) अमावास्याके दिन अक्षयवटके पास पिण्डदान होता है और पण्डे लोग अपने अपने यात्रियोंको सुफल देते हैं। वहाँ शय्यादानकी विधि है।

अक्षयवट—ब्रह्म सरोवरसे करीव २५० गज पश्चिम मङ्गला देवीसे २०० गज दक्षिण पश्चिम और गदालोलसे उत्तर सड़कके उत्तर बगलपर अक्षयवट नामक वटवृक्ष है। १८ सीढ़ियोंको लाँघनेपर ३० गज लम्बे और २८ गज चौड़े पत्थरके फरसपर अक्षयवट मिलता है जिसके उत्तर पुरानी चालका पूर्व मुख वटेश्वर शिवका मन्दिर है। उसके आगेकी दीवार में नागरी अक्षरका पुराना लेख है। अक्षयवटके पूर्वोत्तर एक दूसरा वटवृक्ष है। फरशके

पश्चिमोत्तर कोनेके पास दक्षिण मुखकी एक खूबसूरत दालान और पूर्व बगलपर एक आँगनके चारोंओर दालान हैं, जिनकी छत फर्शके बराबर है। पूर्वकी छतपर एक बैठक उत्तरवाली पर खूबसूरत दालान बनी है। फर्शसे पश्चिम उससे लगा हुआ ३० गज लम्बा और १६ गज चौड़ा दो हिस्सेमें दूसरा फरश है। उनमेंसे उत्तरवाले हिस्सेके उत्तर तरफ अक्षयवट वालेफरसकी दालानसे लगी हुई उसीके समान सुन्दर दालान और दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक छोटी बैठक है। अक्षयवटसे पश्चिम रुक्मिणी तालाब और उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वर-का मन्दिर है। मन्दिर पुरानी चालका है। शिवलिङ्ग अर्घेके साथ करीब १ गज ऊँचा है। लिङ्गके पूर्व बगलपर एक मुख बना हुआ है।

गयाके पिण्डदानकी विधि–पूर्णिमासे अमावास्यातक १६ दिनोंमें ४५ वेदियोंके पिंड-दान समाप्त हो जाते हैं,जो सीताकुण्डकी नवीन वेदीके साथ ४६ वीं होती है। नियत दिनोंके सिवाय दूसरे दिनभी यात्री वेदियोंपर पिण्डदान करते हैं। बहुतेरे लोग दोहीचार दिनोंमें सम्पूर्ण वेदियोंपर पिण्डदान करदेते हैं। कुछ लोग मुख्य मुख्य वेदियोंपर पिण्डदान करके चले जाते हैं। आश्विन आदि श्राद्धके मुख्य महीनोंमें प्रतिदिन बहुतेरे यात्री आते हैं। कृष्णपक्षकी पंचमीसे बहुतेरे लोग सुफल कराके जाने लगते हैं। प्रत्येक वेदीपर १ पिता, २ पितामह, ३ प्रपितामह, ४ माता, ५ प्रमाता, ६ वृद्धप्रमाता, ७ मातामह, ८ प्रमातामह, ९ वृद्धप्रमातामह १० मातामही, ११ प्रमातामही और १२ वृद्धप्रमातामहीके नामसे १२ पिण्ड दिये जाते हैं। जिसका नाम नहीं मालूम रहता, उसके लिये 'यथानाम' कहना होता है। इसके पीछे पिता कुल, माता-कुल, श्वसुर-कुल, गुरुकुल, आदि लोगोंको और नोकरको भी पिण्ड दिये जाते हैं।

(१७वें दिन) शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाके दिन गायत्री घाटपर दही अक्षतका पिण्डदान होकर गयाश्राद्धका काम समाप्त होता है। विष्णुपदके मन्दिरसे करीब २ मील उत्तर फल्गू नदीमें गायत्री घाट है। नीचेसे ऊपरतक उसमें६८सीढी लगी हैं ११ सीढ़ियोंके ऊपर गायत्री देवीका छोटा मन्दिर है। मन्दिरके आगेकी दीवारपर लेख है,जिससे जान पड़ता है कि संवत्१८५६ के भादों सुदी १५ को दौलतराव माधवजी सेन्धियाके पोते सेठ खुशहालचन्दकी स्त्री गयामें श्राद्धकरनेको आई, तब उसने गायत्री घाट और इस मन्दिरको बनवाया। गायत्रीके मन्दिरसे उत्तर एक गयावालका बनवाया हुआ राधाकृष्णका मन्दिर है, उससे उत्तर एक छोटे हातेमें लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और गायत्री घाटसे उत्तर ब्रह्माणी घाटपर फल्गवीश्वर शिवका मन्दिर है। दक्षिण तरफ एक दूसरे मन्दिरमें सूर्यनारायणकी चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग गयादित्य कहते हैं।

संकटा देवी और प्रपितामहेश्वर–विष्णुपदके मन्दिरसे करीब ३३० गज दक्षिण लखनपुरामें पूर्व मुखके ओसारेके पीछे २ कोठरी हैं। दक्षिणकी कोठरीमें भैरव और सिंहके सहित संकटा देवीकी चतुर्भुज मूर्त्ति और उत्तरवाली कोठरीमें प्रपितामहेश्वर शिवलिङ्ग हैं। देवीके पास बहुतेरी बौद्ध मूर्त्तियोंके समान पुरानी मूर्त्तियां और शिवलिङ्गके पास बहुतेरे नए शिवलिङ्ग हैं।

अनेक देवमन्दिर—गयासे पश्चिम गृद्धकूट पहाड़ीके पश्चिम छोटे मन्दिरोंमें गृद्धेश्वर महादेव, ऋणमोचन महादेव और पापमोचन महादेव हैं। पापमोचनसे दक्षिण गोदावरी-नामक छोटा तालाब है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्त्ति स्थित हैं।

ब्रह्मयोनि—अक्षयवटसे ३०० गज पश्चिम-दक्षिण जानेपर सड़क छूटकर पगडण्डी मिलती है, जिससे ½ मील पश्चिम-दक्षिण जानेपर पहाड़ीपर चढ़नेके लिये सीढ़ी मिलती है। उससे उत्तर पहाड़ीकी जड़के पास छोटे मन्दिरमें गौपर सवार पञ्चमुखवाली सावित्री देवीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे सावित्रीकुण्ड नामक छोटा पोखरा है। १६३ सीढ़ी लांघने पर खुला हुआ कमरा मिलता है। ३६० सीढ़ियोंके ऊपर एक ढोकेके नीचे रुद्रयोनि; ४०० सीढ़ियोंके ऊपर विष्णुकुण्डनामक बावली, जिसमें जानेको पतली सीढ़ियाँ हैं और ४५० सीढ़ियोंके ऊपर एक चौक है। चौकके मध्यमें ऊँचे चबूतरेपर एक शिवलिङ्ग और पश्चिम पत्थरके ढोकोंके नीचे ब्रह्मयोनि है, जिससे होकर कोई कोई यात्री निकलते हैं। गवालियरके महाराज जयाजी रावने इन सीढ़ियोंको बनवाया, जिनके ऊपर गचका काम है। चौकसे ११ सीढ़ियोंके ऊपर दोहरा ओसारा मिलता है, जिसके पीछेके मन्दिरके ताकोंमें ४ पुरानी बौद्ध मूर्त्तियाँ हैं। एकके आगे गौपर सवार पञ्चमुखी सावित्रीकी मूर्त्ति है। ओसारेमें २ चरण चिह्न हैं, जिनके पास महाराज जयाजी रावका नाम खोदा हुआ है वहाँ मेलेके समय कोई पुजारी स्त्री या पुरुष रहता है। यात्री बहुत कम जाते हैं।

गया जिला—गया जिलेका क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला; पूर्व मुङ्गेर जिला; दक्खिन और दक्षिण-पूर्व लोहरदङ्गा जिला और पश्चिम सोन नदी, बाद शाहाबाद जिला है। गयाकी दक्षिणी सीमाकी पहाड़ियाँ विन्ध्यका एक भागहैं उनमें जङ्गल लगे हैं और बनैले जन्तु रहते हैं। देश साधारण प्रकारसे समतल है; किन्तु स्थान २ में पहाड़ियाँ देख पड़ती हैं। ऊँची पहाड़ियाँ जङ्गल और घाससे छिपी हुई हैं और दूसरी पथरीली और पौधोंसे रहित हैं। सबसे अधिक ऊँची गया कसबेसे १२ मील दक्षिण-पूर्व माहर पहाड़ी है। उसकी ऊँचाई समुद्रके जलसे १६२० फीट है। गया जिलेका पूर्वी भाग अधिक उपजाऊ और उत्तर-पश्चिमका कम उपजाऊ है। शेष भागमें पहाड़ी और जङ्गल, जिसमें बहुत जङ्गली जानवर हैं, देखनेमें आते हैं। दक्षिणी पहाड़ियोंमें बाघ और बहुतेरे भागोंमें तेंदुये और भालू रहते हैं। बहुतेरी नदियाँ दक्षिणकी पहाड़ियोंसे निकलकर जिलेमें दक्षिणसे उत्तर बहती हैं। पुनपुन नदी जिलेके दक्षिणी सीमासे निकलकर पूर्वोत्तर गङ्गाकी ओर बहती है। दो पहाड़ी धाराओंके मेलसे फल्गू नदी बनी है। सूखी ऋतुओंमें फल्गू नदी सूख जाती है जिलेमें कई एक नहर निकली हैं।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय २१४१०६५ और सन् १८८१ में २१२४६८२ मनुष्य थे; अर्थात् १८९१४८४ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान और २००५७ क्रस्तान इत्यादि। जातियोंके खानेमें ३०९८७१ ग्वाला, १५२६४६ भूमिहार, ११४४०२ राजपूत, १०८२४९ दुसाध, १४४६७५ कोइरी, ११६९६१ कहार, ८९७५० ब्राह्मण, ८३४६९ मुइआ ७८५५२ चमार, ५७३७९ तेली, ४९३०४ बनिआ, ४३९६५ कायस्थ, ४३७७१ कुर्मी, ४३७७३ रजवाड़ और शेषमें पासी, हजाम, बढई, इत्यादि थे। जिलेमें लगभग ३०० घर गयावाल ब्राह्मण हैं। सन् १८९१ ई० में गया जिलेके कसबे गयामें ८०३८३, टिकारीमें ११५३२, और, दाउदनगर, सेरघाटी, जहानाबाद और हसुआमें १०००० से कम मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अत्रिस्मृति—(५५ से ५८ वें श्लोक तक) बहुत पुत्रोंमेंसे एक भी यदि गयाको जाय अथवा नीले बैलसे वृषोत्सर्ग करे तो उसको अश्वमेध यज्ञका फल

होता है। नरकोंसे डरते हुए पितर यह इच्छा करते हैं कि जो पुत्र गयाको जायगा वह हमारा रक्षक होगा। मनुष्य फल्गु तीर्थमें स्नान और गदाधर देवके दर्शन करके और गयासुरके शिरपर चरण रखकर ब्रह्महत्यासे भी छूट जाता है। जो मनुष्य महा नदीमें स्नान करके पितर और देवताओंका तर्पण करता है वह अक्षय लोकोंको प्राप्त होता है और अपने कुलका उद्धार करता है। (३५६ से ३६० श्लो०) श्राद्धके समय बड़े यत्नसे ब्राह्मणकी परीक्षा करनी उचित है। कन्या राशि पर जब सूर्य्य आते हैं तब पितर अपने उत्तम पुत्रके समीप गमन करते हैं फिर वृश्चिककी संक्राति होनेपर जब पिण्ड नहीं पाते हैं, तब निराश हो शाप देकर अपने भवनको चले जाते हैं।

कात्यायन स्मृति—(२९ वाँ खण्ड) कोई २ विद्वान पिण्डदानको ही प्रधान कहते हैं क्योंकि गया आदि तीर्थोंमें पिण्डही दिया जाता है इत्यादि।

बृहस्पति स्मृति—(२० वाँ श्लोक) नरकके भयसे डरते हुए पितर यह कहते हैं कि जो पुत्र गयामें जायगा वही हमारी रक्षा करनेवाला होगा।

शंखस्मृति—(१४ वाँ अध्याय) गयामें जाकर जो कुछ पितरोंके निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। गयाके तीरका दान अनन्त फल देता है।

लिखितस्मृति—(१० वें से १३ वें श्लोक तक) जो पुत्र गयाको जाय वा अश्वमेध यज्ञ करे अथवा नील बैलका उत्सर्ग करे वही सुपुत्र है गयामें जिसके नामसे पिण्डदान किया जाता है वह यदि नरकमें हो तो स्वर्गमें जाता है और स्वर्गमें होय तो मुक्त होता है।

याज्ञवल्क्यस्मृति (श्राद्ध प्रकरण) गया तीर्थमें और भादों बदी त्रयोदशी विशेष करके मघायुक्त त्रयोदशीमें पिण्ड देनेसे निस्सन्देह अनन्त काल पितरोंकी तृप्ति रहती है। वसु, रुद्र, अदितिसुत और पितर ये श्राद्धके देवता हैं, ये श्राद्धसे तृप्त होकर मनुष्योंके पितरोंको तृप्त करते हैं, जब पितर तृप्त होते हैं तो मनुष्योंको आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्षसुख और राज्य देते हैं।

महाभारत—(वनपर्व–८४ वाँ अध्याय) गयामें जानेसे अश्वमेधका फल और कुलका उद्धार होता है। वहाँ तीन लोकोंमे विख्यात अक्षयवट है। (८७ वाँ अध्याय) चाहे अश्वमेध करे, चाहे काले रंगका साँड़ छोड़े, चाहे गयाको जाय; तीनों कर्मोंका यही फल है कि १० अगली और १० पिछली पीढ़ियोंका उद्धार हो जाता है; गयामें महानदी और गयाशिरनामक तीर्थ है। उसी जगह ब्राह्मण लोग अक्षयवट बतलाते हैं और उसी जगह पवित्र जलवाली फल्गू नामक महानदी है।

(९५ वाँ अध्याय) पाण्डव लोग गयामें पहुँचे, जहाँ धर्मज्ञ राजा गयने पर्वतक संस्कार किया है। उसी जगह उसने अपने नामसे गयाशिर नामक तीर्थ स्थापन किया है। उसी जगह उत्तम घाटवाली फल्गु नामक महानदी है। जहाँ पवित्र शिखरवाला दिव्य पर्वत है, उसी जगह ब्रह्मसरनामक उत्तम तीर्थ है, जहाँसे अगस्त्य मुनि सूर्य्यके पास गये थे। उसके पासही सब नदियोंका एक सोता है। वहाँ महादेव सदा वास करते हैं और अक्षयवट वृक्ष है, जिसका फल अक्षय होता है। वहाँ यज्ञ करनेसे अक्षय पुण्य लाभ होता है। उसी तीर्थ में राजा अमूर्त्तरयसके पुत्र राजा गयने तालाबके तटपर बड़े बड़े अनेक यज्ञ किये हैं। (द्रोण पर्व ६४ वाँ अध्याय) यज्ञ कर्मके प्रभावसे राजा गय जगतमें

विख्यात हुए थे। उनका कीर्तिस्वरूप अक्षयवट और ब्रह्मसरोवर तीनों लोकोंमें विख्यात होकर जगतमें स्थित है। (शल्य पर्व ३८ वाँ अध्याय) जब राजा गय गयानामक स्थानमें यज्ञ कर रहे थे और अनेक व्रतधारी ब्राह्मणोंने सरस्वतीका ध्यान किया तब त्रिशालानामक सरस्वती गयामें पहुँची। वह शीघ्र बहनेवाली नदी हिमाचलके शिखरसे चली थी।

(अनुशासन पर्व–२५ वाँ अध्याय) गयाके अन्तर्गत अश्मपृष्ठमें स्नान करनेसे पहली ब्रह्महत्या, निरविन्द पर्वतपर दूसरी ब्रह्महत्या और क्रौंचपदीमें स्नान करनेसे तीसरी ब्रह्महत्या छूट जाती है। (८८ वाँ अध्याय) बहुत पुत्रोंके लिये कामना करनी योग्य है क्योंकि उसमेंसे एक पुत्र भी तो गया धाममें जायगा जहाँ परलोक विख्यात अक्षयवट है।

वाल्मीकिरामायण–(अयोध्याकाण्ड–१०७ वाँ सर्ग) गयनामक एक यशस्वी पुरुषने जो गया प्रदेशमें यज्ञ करता था, पितर लोगोंके पास यह वाक्य कहा कि पुत्रोंमेंसे कोई एक भी यदि गयाको जायगा तो पितरोंका उद्धार होगा।

लिङ्गपुराण—(६५ वाँ अध्याय) सूर्यके पुत्र मनुका सुद्युम्न नामक पुत्र था, जो स्त्री रहनेके समय इला कहलाता था। सुद्युम्नके ३ पुत्र हुए, उत्कल, गय और विनताश्व। उनमें से गयके नामसे गया बसी।

वामनपुराण–(७६ वाँ अध्याय जहाँ गय राजाने १०० वार अश्वमेध यज्ञ और सैकडों हजारोंवार मनुष्यमेध यज्ञ किया है और मुरारि भगवान् गदाधर नामसे प्रसिद्ध हो रहे हैं वही गया तीर्थ है। (९० वाँ अध्याय) वामनजी बोले कि गयामें गोपतिदेव, ईश्वर, त्रैलोक्यनाथ, वरद और गदापाणि मेरा रूप है।

वाराहपुराण—(१८३) वाँ अध्याय) पितर कहने लगे कि गया श्राद्धकर अक्षयबटके नीचे पिण्डदान करो।

मत्स्यपुराण—(२२ वाँ अध्याय) गया नामसे प्रसिद्ध पितृतीर्थ सब तीर्थोंमें उत्तमहै।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड–७६ वां अध्याय) जो मनुष्य गयाके विष्णुपदमें पिण्डदान और विष्णुकी पूजा करता है, वह पितृगण और अपनेको उद्धार करदेता है।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड–११ वां अध्याय) गयामें विष्णुपदनामक पितरोंका सर्वोपरि तीर्थ है, जहां आश्विनमासके कृष्ण पक्षमें पिण्ड वा जलदानकरनेसे प्रेतयोनिमें प्राप्त भी पिता पितामहादि तुरन्त ब्रह्मलोकको चले जाते हैं। पुन पुना नदीके तीरपर गया तीर्थ है। श्राद्धके विषयमें गयाके समान कोई भी तीर्थ नहीं है। (स्वर्ग खण्ड–२० वाँ अध्याय) आषाढ़ी पूर्णिमाके पीछे जो पांचवां पक्ष होता है (आश्विनका कृष्णपक्ष) उसमें श्राद्ध करे, चाहे कन्याके सूर्य्य हों अथवा न हों। कन्याके सूर्य्य होनेपर जो प्रथमके १६ दिन होते हैं वे श्रेष्ठ यज्ञोंके समान हैं। महापुण्य काम्य श्राद्ध करनेका कन्याके सूर्य्यहीमें मुख्य काल होता है। यदि किसी कारणसे कन्याके सूर्य्यमें श्राद्ध न कर सके तो तुलाके सूर्य्यमें कृष्ण पक्षके १६ दिनमें करे, क्योंकि जब कन्या तुला दोनों राशियोंके सूर्य्यमें कृष्ण पक्षके १६ दिनोंमें श्राद्ध नहीं हो तो वृश्चिकके सूर्य्य हो जानेसे पितर निराश होकर चले जाते हैं।

देवी भागवत (९ वाँ स्कन्ध ४४ वाँ अध्याय) सृष्टिके आदिमें ब्रह्माजीने ७ पितृगणों को उत्पन्न करके श्राद्ध तर्पण उनका आहार बना दिया ।

सौरपुराण–(६७ वाँ अध्याय) परमगुप्त गया तीर्थमें भगवान् महादेवके चरणचिह्न प्रतिष्ठित हैं । वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है । मनुष्य महानदीमें स्नान करके रुद्रपदके स्पर्श करनेसे अपने पितरोंके सहित शिवलोकमें निवास करते हैं ।

कूर्मपुराण–(उपरिभाग ३४ वाँ अध्याय) परमगुप्त गया तीर्थमें श्राद्धादि कर्म करनेसे पितर लोगोंका पृथ्वीमें पुनरागमन नहीं होता है । गयामें ब्रह्माजीने जगतके हितके लिये तीर्थशिलापर चरण अंकित किया है । पितरगण लड़कोंके उत्पन्न होनेपर प्रसन्न होकर कहते हैं कि हमारे वंशमें हम सबको तारन करने वालेने जन्म लिया यह किसी समयमें गया जाकर हम लोगोंको परमपद देगा । कोई पुत्र गयामें जाकर पिण्डदानादि कर्मकरे तो पितरगणोंका स्वर्गवास होता है ।

अग्निपुराण—(११५ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें देवगण गयासुरकी तपस्यासे त्रसित होकर विष्णुभगवान्की शरणमें गये और उनसे बोले कि हे प्रभो! तुम हमलोगोंकी गयासुरसे रक्षा करो । विष्णुने दैत्यके पास जाकर उससे कहा कि वरदान माँगो । गयासुर बोला कि हे भगवान् मैं सम्पूर्ण तीर्थोंसे पवित्र हो जाऊँ । यह वरदान देकर जब विष्णु चले गये तब स्वर्ग और भूमिमें सम्पूर्ण देवता और ब्राह्मण दैत्यके अधिक तेज होनेसे निस्तेज होगये । देवताओंने विष्णुसे निवेदन किया कि हे प्रभो सम्पूर्ण देवता ब्राह्मण और तीर्थ शून्य प्राय होगये हैं तुम इसका उचित उपाय करो । ब्रह्माने विष्णुके आदेशानुसार देवताओंके साथ गयासुरके पास जाकर उससे कहा कि मैं अतिथि हूँ तुम यज्ञ करनेके लिये अपना पवित्र शरीर मुझको देदो । ऐसा सुन असुर भूमिपर लेट गया और बोलाकि हे भगवान्, आप हमारे शरीरसे यज्ञ कीजिये । ब्रह्माने असुरके सिरपर यज्ञ किया;किन्तु पूर्णाहुति देनेके समय वह चलायमान हो गया । तब विष्णुकी आज्ञानुसार धर्मराजने देवमयी शिलाको गयासुरके ऊपर रक्खा और शिलाके ऊपर विष्णुकी गदाधर मूर्त्ति स्थापित की और सम्पूर्ण देवताओंके सहित आप भी उसपर निवास करने लगे ।

धर्मणी शिला धर्म्मराजकी पुत्री थी,उसका विवाह ब्रह्माके पुत्र महर्षिमरीचिसे हुआ मरीचिने उससे रमण करनेके उपरान्त श्रमातुर होकर उससे कहा कि मैं शयन करताहूँ तुम मेरा चरण दबाओ । मुनिके शयन करनेपर शिला उनके चरण दवाने लगी । उसी समय ब्रह्माजी वहाँ आगये शिला विचार करने लगी कि ब्रह्माका पूजन करूँ कि स्वामीका चरण दबाऊँ ? अन्तमें वह ब्रह्माजीको अपने स्वामीका पिता जानकर चरण दवाना छोड़ पुष्पादिकसे ब्रह्माका पूजन करने लगी । मरीचिने अपने स्त्रीको ब्रह्माकी पूजामें निरत देखकर उसको शाप दिया कि तुम शिला अर्थात् पत्थर हो जावो । शिलाने कहा मैंने तुम्हारी सेवा छोड़कर तुम्हारे पिताकी सेवा कीहै, तुमने मुझ निरपराधिनीको शाप दिया है इसलिये तुमको भी शिवजी शाप देवेंगे । इसके पश्चात् शिलाने सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या की । विष्णु आदि देवता वरदान देनेके लिये उसके पास आये शिलाने ऐसा वरदान माँगा कि मेरा शाप निवृत्त हो जावे । देवताओंने कहा कि मरीचिका शाप व्यर्थ नहीं होगा; किन्तु सम्पूर्ण देवताओंके चरणोंका चिह्न तुम्हारे ऊपर रहेगा । शिला बोली कि तुम लोग सर्वदा हमारे ऊपर निवास करो ।

विष्णु आदि देवता उसको वरदान देकर स्वर्गको चले गये। वही शिला गयासुरके ऊपर रक्खी गई। उसपर भी जब असुर चलायमान होने लगा, तब देवताओंने विष्णुका आराधन किया। विष्णुने जब अपनी गदाधर मूर्त्तिको शिलापर स्थापित किया, तब असुर स्थिर हो गया। पूर्व समयमें विष्णुने गदनामक एक असुरको मारा; विश्वकर्माने उसकी अस्थिसे एक गदा बनाई और विष्णुने उस गदाको स्वीकार किया इस कारण उनका नाम गदाधर पड़ा वही मूर्त्ति गदाधरी कहलाती है। असुरके स्थिर होनेपर। ब्रह्माने अपना यज्ञ समाप्त किया और ब्राह्मणोंको बहुत दक्षिणा दी। देवताओंने गयासुरको वरदान दिया कि, तुम्हारा शरीर विष्णुतीर्थ, शिवतीर्थ और ब्रह्मतीर्थ होगा और वह सम्पूर्ण तीर्थोंसे प्रसिद्ध और पितर गणोंको मोक्ष देनेवाला होगा। ऐसा कह देवतागण उसी स्थानपर स्थित हो गये।

गयामें संक्रातिके दिन श्राद्ध कर्म करनेका महाफल है। मनुष्य प्रतिपदामें श्राद्ध करनेसे धनी होता है; द्वितीयामें करनेसे रूपवती भार्य्या मिलती है; चतुर्थीमें करनेसे धर्म्म और वाँछित फल लाभ होता है; पञ्चमीमें श्राद्ध करनेसे पुत्र प्राप्त होता है; षष्ठीका श्राद्ध श्रेष्ठ है; सप्तमीमें श्राद्ध करनेसे गृहस्थको लाभ होता है; अष्टमीमें श्राद्ध करनेसे अर्थ लाभ होता है; नवमीमें श्राद्ध करनेसे एक खुरवाले पशुओंके व्यापारमें लाभ होता है; दशमीमें श्राद्ध करनेसे गौ गणोंकी वृद्धि होतीहै; एकादशीमें श्राद्ध करनेसे कुटुम्बगणोंका कल्याण होता है; द्वादशीमें श्राद्धकरनेसे धन धान्यकी वृद्धि होती है; त्रयोदशी और चतुर्दशीमें श्राद्ध करनेसे ज्ञाति जन आनन्दित होते हैं; और अमावस्यामें श्राद्ध करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्त होता है। युगादि तिथिमें अर्थात् माघकी पूर्णिमा, भाद्र कृष्ण त्रयोदशी, वैशाख शुक्ल तृतीया और कार्त्तिक शुक्ल नवमी; कार्त्तिककी द्वादशी, माघ और भाद्रपदकी तृतीया, फाल्गुनकी अमावस्या, पौषकी एकादशी आषाढ़की द्वादशी, माघकी सप्तमी, श्रावणके कृष्णपक्षकी अष्टमी, आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन और ज्येष्ठकी पूर्णिमाको श्राद्ध करनेसे अक्षय फल प्राप्त होता है।

गरुड़पुराण—(पूर्व खण्ड ८२ वाँ अध्याय) पूर्व कालमें सम्पूर्ण प्राणियोंको क्लेशदेनेवाले गयनामक असुरने उग्र तपस्या की। उसके तपसे पीडित होकर देवता लोग विष्णुकी शरणमें गये। उसके उपरान्त किसी दिन गयासुरने शिवकी पूजाके निमित्त समुद्रसे कमलका पुष्प लाकर कीकट देशमें शयन किया। विष्णुने गदासे उसको मारा। इस कारणसे वह गदाधर नामसे गयामें निवास करते हैं और उसके पुण्यमय शरीरपर लिङ्गरूपी पितामह, जनार्दन, शिव, प्रपितामह रहने लगे। उसके पश्चात् विष्णुने कहा कि यह स्थान पुण्यक्षेत्र होगा। यहाँ श्राद्ध पिण्ड दान स्नानादि कर्म करनेसे स्वर्गमें निवास होगा। उसके उपरान्त ब्रह्माने गयाको उत्तम तीर्थ जानकर वहाँ यज्ञ किया और यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणोंको बहुत सा धन और पाँचकोसका गयाक्षेत्र दिया और रसवती महानदी और तड़ागोंको वहाँ रचा। उसने कहा कि ब्रह्मज्ञान, गयामें श्राद्ध, गो ग्रहमें मृत्यु और कुरुक्षेत्रमें निवास ये चार मनुष्योंके मुक्ति लाभके प्रधान स्थान हैं। गयामें श्राद्ध करनेसे ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी-गमन और पापियोंके संसर्गके पापका विनाश हो जाता है।

(८३ वाँ अध्याय) कीकट देशमें गयापुरी और राजगृह बन पुण्य स्थान हैं। गयाके चारोंओर अढ़ाई कोस मुण्डपृष्ठ और पाँच कोसमें गयाक्षेत्र और एक कोसमें गयाशिर है। फल्गु तीर्थमें पिण्डदान देनेसे पितरगणोंकी उत्तम गति होती है। मनुष्य गयामें जानेसे पितृ-

ऋणसे मुक्त हो जाते हैं और पितृरूपी जनार्दनके दर्शन करनेसे पितृऋण, ऋषिऋण और देवऋणसे छूट जाते हैं। गयामें रथमार्ग कालेश्वर और केदारके दर्शन करनेसे मनुष्य पितृ-ऋणसे उद्धार पाता है और उस स्थानपर ब्रह्माके दर्शन करनेसे उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है। प्रपितामहको देखनेसे अक्षय पद मिलता है और गदाधर पुरुषोत्तमको भक्ति पूर्वक नमस्कार करनेसे पुनर्जन्म नहीं होता। मौनादित्य और कनकार्कके दर्शनं करनेसे पितृ-ऋणसे उद्धार होता है और उस जगह ब्रह्माके पूजन करनेसे ब्रह्मपद लाभ होता है। जो मनुष्य उस स्थानमें प्रातःकाल गायत्रीका दर्शन करके प्रयत्नसे संध्या करता है वह सम्पूर्ण वेद पढ़नेका फल पाता है। मध्याह्नमें सावित्रीके दर्शन करनेसे यज्ञ करनेका फल प्राप्त होता है और संध्या कालमें सरस्वतीके दर्शनसे सम्पूर्ण दानका फल मिलता है। पर्वतस्थित शिवजीके और धर्मारण्यमें धर्मके दर्शन करनेसे पितरगणोंसे उद्धार होता है। गृद्धेश्वरके दर्शन करनेसे बन्धनसे मुक्ति होती है प्रभासमें प्रभासेश्वरके दर्शन करनेसे उत्तम गति मिलती है। कोटीश्वर और अश्वमेध यज्ञके स्थानके दर्शन करनेसे मनुष्य तीनों ऋणोंसे छूट जाता है और स्वर्ग द्वारेश्वरके दर्शन करनेसे भवबन्धनसे छूटता है। मनुष्य रामेश्वर और गदालोलके दर्शन करनेसे स्वर्ग पाते हैं और ब्रह्मेश्वरके दर्शनसे ब्रह्महत्यासे छुटकारा पाते हैं। मुण्डपृष्ठमें महा-चण्डीके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण कामना प्राप्त होती हैं। फल्ग्वीश, फल्गुचण्डी, मङ्गला गौरी, गोमक, गोपति, अङ्गारेश, सिद्धेश, गया और मार्कण्डेश्वर इनके दर्शन करनेसे मनुष्य पितृऋण से उद्धार पाता है। फल्गु तीर्थमें स्नान करके गदाधरके दर्शन करनेसे मनुष्य सम्पूर्ण प्रकारके पुण्य प्राप्त करता है और उसके २१ पुश्त ब्रह्मलोकमें जाते हैं। पृथ्वीमें गया और गयामें गयाशिर श्रेष्ठ है। कनकादिक नदी जो नाभितीर्थ कही जाती है और ब्रह्मसर तीर्थमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। कूपमें पिण्डदान देनेसे पितृगणोंसे उद्धार होता है। अक्षयवटमें श्राद्ध करनेवाले मनुष्य पितृगणोंको ब्रह्मलोकमें भेजते हैं। हंसतीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य सम्पूर्ण पापोंसे छूट जाता है। कोटितीर्थ, गदालोल, वैतरणी और गोमक इनतीर्थोंमें श्राद्ध करनेसे २१ पुश्त ब्रह्मलोकमें प्राप्त होते हैं ब्रह्मतीर्थ, रामतीर्थ, रामह्रद, आग्नेय, और सोम-तीर्थमें स्नान करनेवाले पितृकुलको ब्रह्मलोक प्राप्त कराते हैं। उत्तर मानसमें श्राद्ध करने वाले मनुष्यका पुनर्जन्म नहीं होता। स्वर्गद्वारमें श्राद्ध करनेसे पितरोंको ब्रह्मलोक मिलता है। भस्मकूटमें तर्पण करने वाला मनुष्य पितृगणको तारता है। गृद्धेश्वरमें श्राद्ध करनेसे पितृ-ऋणसे उद्धार होता है। धेनुकारण्यमें श्राद्ध करनेसे पितृगण ब्रह्मलोकमें जाते हैं। गायत्री सावित्री और सरस्वती इन तीर्थोंमें स्नान, संध्या और तर्पण करनेसे १०१ पुश्तको ब्रह्म-लोक मिलता है। जो मनुष्य पितरोंको स्मरण करते हुए ब्रह्मयोनिमें प्रवेश करके उससे बाहर निकलते हैं, वे पितर और देवताओंको तृप्त करके पुनर्जन्म संकटमें नहीं पड़ते काक-जम्वामें तर्पण करनेसे पितरगणोंकी अक्षय तृप्ति होती है। धर्मारण्य और मतङ्गवापीमें श्राद्ध करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मयूप और कूपमें श्राद्ध करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मयूप और कूपमें श्राद्ध करनेवाले मनुष्यका पितृऋणसे उद्धार हो जाता है। रामतीर्थमें स्नान करके प्रभासमें श्राद्ध करनेसे पितृगण प्रेतत्व छोड़कर मुक्ति पाते हैं। स्वपृष्ठमें श्राद्ध करनेवाला २१ पुश्तोंको तारता है। मुण्डपृष्ठादिमें श्राद्ध करनेसे पितृगण ब्रह्मलोकमें जाते हैं गयाके पञ्चक्रोशके किसी स्थानमें पिण्डदान देनेवाला मनुष्य

अक्षय फलको प्राप्त करता है और पितरोंको ब्रह्मलोकमें भेजता है। गयामें धर्मपृष्ठ, ब्रह्म सर, गयाशिर और अक्षयवटमें जो कुछ पितरोंको दिया जाता है उसका अक्षयफल होता है। धर्मारण्य, धर्मपृष्ठ; धेनुकारण्य इनके दर्शन करनेसे भी २१ पुश्तका तरन होजाता है। गया नदीके पश्चिम भागमें ब्रह्मारण्य और पूर्वमें ब्रह्मसर है। नागाद्रीको भरताश्रम कहते हैं गयाशिरसे दक्षिण और महानदीसे पश्चिम चम्पकवन और चम्पकवनमें पाण्डुशिला है। उस स्थान पर और कौशिकी ह्रदमें तृतीयाको श्राद्ध करनेसे अक्षय फल मिलता है। वैतरनीसे उत्तर तृतीया नामक सरोवरके निकट क्रौंचपद है, उस स्थानमें श्राद्ध करनेसे पितरगण स्वर्गमें निवास करते हैं। क्रौंचपदसे उत्तर निश्चिराख्य जलाशय है उस स्थानपर एकवार पिण्डदान करनेसे मनुष्यको कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं रहता। जो मनुष्य महानदीके जल स्पर्श करके पितर और देवताओंके तर्पण करते हैं, उनको अक्षय लोक प्राप्त होता है। मुण्ड-पृष्ठ, अरविंद पर्वत और क्रौंचपदके दर्शन करनेसे भी सम्पूर्ण पाप छूट जाता है। माघ मास, चन्द्रग्रहण और सूर्य्यग्रहणमें गयाका पिण्डदान दुर्लभ है। महाह्रद कौशिकी, मूल-क्षेत्र और गृध्रकूटके गुहेमें पिण्डदान देना अति उत्तम है। महेश्वरीधारमें स्नान करनेवाला मनुष्य सम्पूर्ण ऋणसे विमुक्त होजाता है विशाला नदीमें श्राद्ध करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है। सूर्य्यपदमें पिण्डदान देनेसे पतितोंका उद्धार होता है। वैतरनी नदी पितरगणोंको तारनेके लिये गयामें आई है। उसमें पिण्डदान करके गोदान करनेसे २१ पुश्तका उद्धार होजाता है। ब्रह्माके निर्माण किये हुए स्थानोंपर पिण्डदान करनेवाले मनुष्योंको गया बास होता है। राम तीर्थ और मतंगवापीमें स्नान करनेवाले मनुष्य को १०० गोदान करनेका फल मिलता है। वशिष्ठजीके आश्रम पर स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल, महाकौशीमें निवास करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल, ब्रह्मसरसे निकली हुई कपिलामें स्नान और श्राद्ध करनेसे अग्निष्टोमका फल और कुमारधारामें श्राद्ध और कुमारको नमस्कार करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। सोमकुण्डमें स्नान करनेसे सोमलोकमें निवास होता है संवर्त्तक सरमें पिण्डदान देनेसे वांछित फल प्राप्त होता है। प्रेतकुण्ड पर पिण्ड देनेसे मनुष्य पवित्र होता है।

(८४ वाँ अध्याय) मुण्डन और उपवास सम्पूर्ण तीर्थोंका नियम है; परन्तु कुरुक्षेत्र, विशाला, विरजा और गयामें इनकी आवश्यकता नहीं है। गयामें दिन और रात्रिमें सर्वदा श्राद्ध होता है। मुण्डपृष्ठसे उत्तर कनखल तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य स्वर्गमें निवास करते हैं और वहाँ श्राद्ध करनेसे अक्षयफल प्राप्त होता है। प्रथम दिन फल्गु तीर्थमें स्नान और गदाधर और पितामहके दर्शन करनेसे मनुष्यके २१ पुश्तका उद्धार होता है। दूसरे दिन मतंगवापी और धर्मारण्यमें श्राद्ध करनेसे वाजपेय यज्ञका फल, ब्रह्म तीर्थमें पिण्डदान करनेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल होता है। कूप यूपमें श्राद्ध और तर्पण करनेवाले मनुष्यके पितृगणोंको अक्षयफल मिलता है। तृतीय दिन ब्रह्मसरमें स्नान और तर्पण करके कूप यूपमें पिण्डदान और ब्रह्माके कल्पित स्थानोंके सेवन करनेसे मनुष्यके पितृगण मुक्त होजाते हैं और यूपको प्रदक्षिण करनेसे वाजपेय यज्ञका फल होता है। चतुर्थ दिन फल्गु तीर्थमें स्नान, देवतादिकोंके तर्पण और गयाशीर्ष द्रुपदादि, पन्थाग्नि, सूर्य्य, इन्दु, कार्त्तिकेय इन तीर्थोंमें श्राद्ध करनेसे अक्षय फल मिलता है। दशाश्वमेध तीर्थमें स्नान करके पितामहक

दर्शन और रुद्रपदका स्पर्श करनेसे पुनर्जन्म नहीं होता। गयाशिरमें पिण्डदान देनेसे तीन बार पृथ्वी दान करनेका फल लाभ होता है। मुण्डपृष्ठमें रुद्रपदके निकट अल्प भी तपस्या करनेसे महत् फल मिलता है। पञ्चम दिन गदालोलमें स्नान और वटवृक्षके नीचे श्राद्ध करनेसे सम्पूर्ण कुलका उद्धार होता है। अक्षयवटके नीचे पिण्डदान देनेसे मनुष्यको अक्षयलोक प्राप्त होता है और १०० पुस्तका उद्धार हो जाता है।

वायुपुराण—(४३ वाँ अध्याय) गयासुरके तपके तेजसे देवता और ऋषिगण त्रसित हुए, तब ब्रह्माजीने याचना करके उसका शरीर माँग लिया और अत्यन्त पवित्र जानकर श्वेतवाराहकल्पमें उसके शिरपर यज्ञ किया। पूर्णाहुतिके समय जब दैत्य चलायमान हुआ, तब विष्णुकी आज्ञासे धर्मराजने उसके शिरपर शिला स्थापितकर दिया; उसपर भी जब असुर स्थिर नहीं हुआ, तब भगवान् गदाधर उसपर स्थित हुए। ब्रह्माने अपना यज्ञ समाप्त करके ब्राह्मणोंको बहुत दान दिया। श्वेतवाराहकल्पमें जब गयने ब्रह्मा करके निर्मित क्षेत्रमें यज्ञ किया, तबसे गयके नामसे वह क्षेत्र गया नामसे प्रसिद्ध हुआ। ब्रह्मज्ञान, गयाका श्राद्ध, गोगृहकी मृत्यु और कुरुक्षेत्रके निवाससे मनुष्योंकी अवश्य मुक्ति होती है। गयामें श्राद्ध करना सर्वदा विहित है। सिंह राशिमें बृहस्पतिके होनेपर सम्पूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्रमें निवास करते हैं, इसलिये सिंहस्थ बृहस्पतिमें तीर्थादिक कर्म करनेका निषेध है; परन्तु उस समयमें भी गयामें पिण्डदान करना विहित है। गया तीर्थ करनेवाले मनुष्यको अकाल मृत्यु होनेपरभी प्रेतयोनिमें निवास नहीं होता। गयाक्षेत्रमें मृत्यु होनेसे विना ब्रह्मज्ञानके मनुष्यकी मुक्ति हो जाती है। २ ½ कोसतक गया, ५ कोस तक गयाक्षेत्र और १ कोस गया शिर है। इन्हींके मध्यमें सम्पूर्ण तीर्थ बास करते हैं। गयाशिरपर पिण्डदान करनेसे १०० कुलका उद्धार होता है। गयामें खीरसे, सत्तूसे, पिसानसे, चावलसे और फल मूलादिकसे भी पिण्डदान करना विहित है। मधु, घृत, तिल, से युक्त हविष्यान्नके पिण्डदान करनेसे पितृगणोंकी अक्षय तृप्ति होती है। वैतरणी नदीमें स्नान करके महां गोदान करनेसे सात पीढ़ीतकका उद्धार होता है। चैत्र, वैशाख, आश्विन, पौष और फाल्गुनमें गयाका पिण्डदान दुर्लभ है।

(४४ वाँ अध्याय) गयासुरने कई एक वर्षतक कोलाहल गिरिपर उग्र तपस्याकी, उस तपस्यासे देवतागण क्षोभित हुए। वे लोग ब्रह्मा और शिवको अपने साथ लेकर क्षीरशायी विष्णुके पास गये। विष्णु भगवान् सब देवताओंके सहित गयासुरके पास आए, उन्होंने असुरसे कहा कि तुम कैसे फलके लिये तपस्या करते हो जो इच्छा हो वह वर माँगो। गयासुरने कहा कि मैं सब देवताओं, ऋषियों, मन्त्र, यज्ञ और तीर्थादिकोंसे पवित्र हो जाऊँ। जब देवतागण उसको यह वरदान देकर चले गये, तब सम्पूर्ण तेज गयासुरमें निवास करनेके कारणसे त्रैलोक्य और यमपुरी तेजसे शून्य हो गई।

यमराजने इन्द्रादि देवताओंके सहित ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्मासे कहा कि हे पितामह! गयासुरकी पवित्रतासे हम लोगोंका अधिकार नष्ट हो गया। ब्रह्माने विष्णुके उपदेशानुसार देवताओंके साथ गयासुरके पास जाकर उससे कहा कि मैंने सम्पूर्ण पृथ्वीपर चारोंओर भ्रमण किया, परन्तु तुम्हारे शरीरके अतिरिक्त कोई स्थान पवित्र नहीं हैं, इसलिये यज्ञ करनेके लिये मैं तुम्हारा शरीर तुमसे याचना करता हूँ। गयासुर ब्रह्माका वचन स्वीकार करके

अति प्रसन्न हो कोलाहल गिरिके नैर्ऋत्य कोनपर उत्तर शिर और दक्षिण चरण करके लेट गया। ब्रह्माने श्वेतवाराहकल्पमें महर्षियोंके सहित गयासुरके शरीरपर यज्ञ किया अग्निशर्मा-नामक ऋषीश्वरने अपने मुँहसे दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय, सत्य और आवसथसे पञ्चाग्निका निर्माण किया। हवनके अन्तमें जब ब्रह्मा पूर्णाहुति देने लगे, तब गयासुर अपनी देहको संचालन करने लगा। ब्रह्माकी आज्ञासे यमराजने अपने गृहसे शिला लाकर गया-सुरके शरीरपर रक्खा। जब असुर थिर नहीं हुआ, तब ब्रह्माकी प्रार्थनासे सब देवता उस दैत्यके शरीरपर स्थित हुए। उस परभी जब दैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्मा व्याकुल हो विष्णु भगवान्के पास गये। विष्णुने एक मूर्त्ति अपने शरीरसे निकालकर ब्रह्माको दी। ब्रह्माने विष्णुके आदेशानुसार उस मूर्त्तिको गयासुरके ऊपर स्थापित किया, उस पर भी जब दैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्माने विष्णुको पुकारा। विष्णु साक्षात् आकर उसके शरीरपर स्थित हुए। ब्रह्मा, पितामह, फल्गवीश, केदार, कनकेश्वर और ब्रह्मा इन पाँच मूर्त्तियों करके विराजे। सूर्य्य, गयादित्य, उत्तरार्क और दक्षिणार्क इन तीन मूर्त्तियोंसे स्थित हुए। इनके अलावे गणेश, लक्ष्मी, सीता, गौरी, मंगला, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, इन्द्र, वृहस्पति, पूषा, अष्टवसु, विश्वेदेवा, अश्विनी कुमार, इत्यादि देवता अपनी २ शक्तियोंके साथ असुरके शरीरपर विद्यमान हुए। तब असुर बोला कि हे आर्यगण! इतने छल करनेकी आवश्यकता नहीं थी, हम केवल विष्णुके वचनसे निश्चल हो जाते। गदाधर आदिक देवताओंके प्रसन्न होनेपर गयासुरने ऐसा वरदान माँगा कि, जब तक आप लोग मेरे ऊपर निवास करें, हमारे नामसे यह तीर्थ विख्यात हो, पंचकोस गयाक्षेत्र और एक कोस गया-शिर कहा जावे, इसके भीतर सम्पूर्ण तीर्थोंका निवास हो, यहाँ स्नानादिक करके पिण्डदान करनेसे १०० कुलका तारन हो जावे, पिण्डदानादिक करने वालेको ब्रह्मलोक मिले, इस जगह वास करनेसे ब्रह्म हत्यादिक पापोंका नाश हो जावे और नैमिष, पुष्कर, गङ्गा, प्रयाग, अविमुक्त, इत्यादि तीर्थ आकर यहाँ निवास करें। विष्णु आदि देवताओंने गयासुरको एवमस्तु कहा। गयासुर प्रसन्न चित्तसे स्थिर हो गया। ब्रह्माने यज्ञकी पूर्णाहुति दी और ब्राह्मणोंको बहुत सा दान दिया।

(४५ वाँ अध्याय) सनत्कुमारजी नारदसे शिलाकी उत्पत्तिकी कथा कहने लगे कि धर्मकी विश्वरूपा नामक पत्नीसे धर्मव्रता नामक कन्या उत्पन्न हुई। धर्मराजने अपनी पुत्रीका विवाह ब्रह्माके पुत्र महर्षि मरीचिसे कर दिया। मरीचिके १०० पुत्र उत्पन्न हुए। एक समय महर्षि सो गये और धर्मव्रता उनकी आज्ञानुसार उनके पावोंको दबाने लगी। उसी समय ब्रह्माजी आ पहुँचे। धर्मव्रताने विचार किया कि ये हमारे पतिके पिता हैं, इसलिये पतिकी सेवा छोड़कर इनका सत्कार करना उचित है। ऐसा विचार वह फलादिकसे ब्रह्माका सत्कार करने लगी। इसके पश्चात् मरीचिने उठकर धर्मव्रताको शाप दिया कि तू पत्थल होजा। धर्मव्रता बोली कि हे महर्षि! तुमने वृथा मुझे शाप दिया है, इसलिये तुमको भी शिवजी शाप देंगे। धर्मव्रता और मरीचि दोनों वनमें जाकर घोर तपस्या करनेलगे। विष्णुने देवताओंके साथ धर्मव्रताके समीप जाकर उससे कहा कि वरदान माँगो। धर्मव्रता बोली कि स्वामीके शापसे निवृत्त हो जाऊँ। देवताओंने कहा कि मरीचिका शाप हमसे निवृत्त नहीं होगा, तुम दूसरा वरदान माँगो। तब धर्मव्रताने कहा कि मैं अति पवित्र शिला होऊँ उसपर सम्पूर्ण देवता

सर्व तीर्थ और सम्पूर्ण पवित्र वस्तु आकर निवास करें। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इत्यादि देवताओंके चरण चिह्न हमारेपर विद्यमान रहें। जो मनुष्य हमारे ऊपर तर्पण और श्राद्धादि कर्म करें उनको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होय। गदाधरकी मूर्त्ति हमारे ऊपर स्थित रहें, फल्गु नदीमें वाराणसी, प्रयाग, पुरुषोत्तम, गङ्गासागर, इत्यादि नित्य विद्यमान रहें, चारों प्रकारके जीव शिलापर प्राण छोड़नेसे विष्णुपदको पावें और श्राद्धादिक कर्म करनेवाला मनुष्य सहस्र कुलके सहित विष्णुलोकमें निवास करें। देवतागण बोले कि धर्मव्रता जो तुमने वर माँगा वह सब सत्य होगा। जब गयासुरके शिरपर तुम्हारा वास होगा, तब हम सब चरण चिह्न होकर तुम्हारे ऊपर बास करेंगे। ऐसा वरदान देकर देवगण अन्तर्द्धान हो गये।

(४६ वाँ अध्याय) जब धर्मव्रता शिलारूपिणी हुई, तब उसके स्पर्श करनेसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निवासियोंको वैकुण्ठ मिलने लगा। तीनों लोक और यमपुरी शून्य होगई। यमराजने ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्मासे कहा कि महाराज हमारी पुरी शून्य होगई। आप अपना अधिकार मुझसे ले लीजिये। ब्रह्माने कहा कि तुम शिलाको लाकर अपने गृहमें रखो। जब यमराज शिलाको अपने घर लाया, तब सब लोग यमपुरीमें आने लगे। उसके पश्चात् यमराजने ब्रह्माके यज्ञके समय उस शिलाको अपने गृहसे लाकर गयासुरके शरीरपर रखदिया। देवताओंने कोई ३ मूर्त्ति रूपसे, कोई २ पद रूपसे और कोई २ शिलारूपसे उसपर निवास किया। गयामें रामचन्द्रने स्नान किया था, इस कारण उस स्थानका नाम रामतीर्थ पड़ा, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको विष्णुपद प्राप्त होता है। और वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरगणोंकी मुक्ति होती है। रामचन्द्रके वनवास होनेपर भरतजीने गयामें आकर शिलापर पितरगणोंको पिण्डदान दिया और राम लक्ष्मण सीताको वहाँ स्थापन किया। वह भरतका स्थान अत्यन्त पवित्र है। उस स्थानमें मतंगपदका दर्शन होता है। भरताश्रममें चतुर्युगके स्वरूप, सूर्य्यकी मूर्त्ति, वामनजी और ब्रह्मा हैं। इनके दर्शन करनेसे मनुष्य पितरगणोंके साथ विष्णुपदको प्राप्त करते हैं। शिलाके वामहस्तपर उद्यन्तक गिरि है। उसपर पिण्डदान करनेसे पितरगणोंको ब्रह्मलोक मिलता है। उद्यन्तक गिरि पर अगस्त्यजीने उग्र तपस्या की थी। उस गिरि पर मध्याह्नमें सावित्रीके पूजन करनेसे मनुष्य धनाढ्य और वेदपारग ब्राह्मण होता है। जो मनुष्य ब्रह्मयोनिमें प्रवेश करके बाहर निकलता है; उसकी मुक्ति हो जाती है। सोमकुण्डमें स्नान करनेसे पितरगणोंको सोमलोक मिलता है। स्वर्गद्वारेश्वरको नमस्कार करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है। व्योमगङ्गामें पिण्डदान करनेसे पितरगणोंका स्वर्गमें निवास होता है। शिलाके दक्षिण हस्तपर भस्मकूट गिरि है, जहाँ धर्मराज और कुम्भजजी शोभित हैं और दक्षिण पर्वतपर वटेश्वर और प्रपितामह हैं। मतंगपद पर पिण्डदान करनेसे पितरोंको स्वर्ग मिलता है। मतंगकुण्डसे आगे रुक्मिणीकुण्ड और उससे पश्चिम कपिला नदी है। भस्मकूट पर जनार्दनके हाथमें पिण्डदान देनेसे मनुष्यको विष्णु लोक मिलता है। शिलाके दक्षिणपादपर प्रेतकूट पर्वत है, वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरोंका प्रेतत्व छूट जाता है। कीकट देशमें गया; बड़ी पवित्र भूमि है, वहाँ राजगृह च्यवनजीका आश्रम और पुनपुना नदी है। इन स्थानोंमें श्राद्ध करनेसे पितरोंको ब्रह्मलोक मिलता है। शिलाके दक्षिण पादपर धर्मराजने गृद्धकूट पर्वत स्थापित किया, उसपर पूर्व समयमें महर्षियोंने गृद्धरूप धारण करके तप किया था। उस गिरि पर गृद्धेश्वरको

नमस्कार करनेसे और उस स्थानकी गुहाके समीप पिण्डदान देनसे मनुष्यको शिवलोक मिलता है। वहाँके गृद्धकूटवटको नमस्कार करनेसे कामना सिद्ध होती है, और महेश्वरी धारापर पिण्डदान देनेसे पितर लोगोंको स्वर्ग मिलता है। शिलाके उदरमें आदिपाल गिरि पर श्राद्ध करनेसे पितर लोग ब्रह्मलोकमें जाते हैं। शिलाके वामहस्त पर उद्यन्तक गिरि है, जिसको अगस्त्यजी ले आये थे, वहाँ ही अगस्त्यका कुण्ड है। शिलाके दक्षिण हस्तपर भस्मकूट गिरि पर धर्मराज और अगस्त्यजी रहते हैं। वहाँ अगस्त्येश्वर और ब्रह्माका दर्शन करनेसे ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है। और लोपामुद्राके साथ अगस्त्यजीके पूजन करनेसे पितर लोग ब्रह्मलोकमें जाते हैं। सीताद्रिके दक्षिण गिरि पर वट, वटेश्वर और प्रपितामह रहते हैं; उससे दक्षिण रुक्मिणीकुण्ड और पश्चिम कपिला नदी है, उस नदीमें सोमवती अमावस्याको स्नान और पिण्डदान करनेसे पितृगणोंकी मोक्ष होती है। उस स्थानमें अग्निधारा है। उद्यन्तक गिरिके पीछे सारस्वत कुण्ड है। क्रौञ्चपदपर पिण्डदान देनेसे पितरोंको स्वर्ग मिलता है।

(४७ वाँ अध्याय) सनत्कुमार महर्षि नारदसे विष्णुके गदाधर नाम पड़नेकी कथा कहने लगे कि ब्रह्माने गदनामक असुरसे जिसने उग्र तपस्या करके वर लाभ किया था, गदा बनानेके लिये उसका शरीर माँग लिया। विश्वकर्माने ब्रह्माकी आज्ञासे उसके अस्थिसे गदा बनाई; वह गदा स्वर्गमें रक्खी गई। ब्रह्माके पुत्र हेती नामक असुरने ब्रह्मासे वरदान पाकर इन्द्रादिक देवताओंको जीत लिया; तब देवगण विष्णुकी शरणमें गये। विष्णुने गदासुरके अस्थिसे निर्मित गदाको देवताओंसे लेकर उससे असुरका विनाश किया और गयासुरके शिरपर गदाको धोवा, तभीसे उस कुण्डका नाम गदालोल हुआ और विष्णुका गदाधर नाम पड़ा, जिसको देवताओंने गयासुरकी देहपर स्थापित किया। मुण्डपृष्ठगिरि, गृद्धकूट, प्रेतकूट, अरविंदक, पंचलोक, सप्तलोक, वैकुण्ठ, लोहदण्डक; क्रौञ्चपद, अक्षयवट, फल्गुतीर्थ, मधुश्रवा, दधिकुल्या, मधुकुल्या, देविका, वैतरणी इन स्थानोंपर आदि गदाधर प्रगट होकर निवास करते हैं और विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, काश्यपपद, पंचाग्नि, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, सूर्य्यपद, कार्त्तिकेयपद, क्रौञ्चपद, मातङ्गपद इन मुख्य स्थानोंपर विष्णुभगवान, व्यक्त और अव्यक्तरूपसे विद्यमान हैं गायत्री, सावित्री, सरस्वती, गयादित्य उत्तरार्क, दक्षिणार्क, नैमिष, श्वेतार्क, गणनाथ, अष्टवसु, एकादश, रुद्र, सप्तर्षि, सोमनाथ, सिद्धेश, कपर्दीश नारायण, महालक्ष्मी, ब्रह्मा, पुरुषोत्तम, मार्कण्डेय, अंगिरेश, पितामह, जनार्दन, मङ्गला पुंडरीकाक्ष इन स्थानोंपर भी गदाधर भगवान् रहते हैं। गदाधर भगवान्‌के समीप श्राद्धादिक कर्म करनेसे पितरोंको मोक्ष होती है। आदि गदाधरकी स्तुति और पूजा करनेसे मनुष्यको पृथ्वीमें कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रहती।

(४८ वाँ अध्याय) मनुष्यको उचित है कि यात्राके समय अपने गृहमें श्राद्ध करके गुप्त होकर ग्राम प्रदक्षिणा करे, उसके उपरान्त प्रतिग्रहसे निवृत्त होकर यात्रा करे। गयाके समीप महानदीमें स्नानकर देवताओंका तर्पण करके पितरोंका श्राद्ध करे।

(४९ अध्याय) उत्तर मानसमें स्नान करके श्राद्धादिक कर्म करनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है, और सूर्य्यको नमस्कार करनेसे पितृगणोंको सूर्य्यलोक प्राप्त होता है। दक्षिण मानसके उदीची तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको स्वर्ग मिलता है, और उस स्थानके कनखल

तीर्थमें स्नान करनेसे सुवर्णके समान शरीरकी चमक हो जाती है और श्राद्धादिक कर्म करनेसे ब्रह्महत्या आदि पाप विनाश होता है। फल्गुतीर्थमें स्नान करनेसे अश्वमेधादिक यज्ञके फलसे अधिक लाभ होता है। जो मनुष्य गयामें जाकर गदाधर भगवान्का दर्शन नहीं करता है, उसके श्राद्ध करनेका फल निष्फल हो जाता है।

गयाके यात्रीको उचित है कि प्रथम दिन फल्गु तीर्थमें स्नान तर्पण और श्राद्धादि कर्म करके ब्रह्मा, गदाधर और शिवजीको नमस्कार करे, दूसरे दिन धर्मारण्यके मतंगवापीमें स्नान तर्पणादि कर्म करके मतंगेशको नमस्कार करे। ब्रह्मतीर्थपर श्राद्ध करे। कूपमें पिण्ड-दानादिक कर्म करनेसे सम्पूर्ण पितरोंकी तृप्ति होती है। पितरोंको तारनेके लिये धर्म, धर्मेश्वर और महावोधी अर्थात् पीपलके वृक्षको नमस्कार और महावोधीकी स्तुति करनी चाहिये। तीसरे दिन ब्रह्मसरमें स्नान और श्राद्धादिक कर्म; ब्रह्माके निर्माण किये हुए यूपकी प्रदक्षिणा, ब्रह्मसरमें उत्पन्न आम्र वृक्षोंको सींचना; यमबलिदान; श्वान वलिदान और काक वलिदान देना उचित है। चौथे दिन फल्गु तीर्थमें स्नान, गयाशिरपर श्राद्ध और पादपर सपिण्ड श्राद्ध करना उचित है। नगकूट जनार्दन ब्रह्मकूपसे लेकर उत्तर मानस और पितामहेश्वर तक गयाशिर कहा जाता है पितामहसे लेकर उत्तर मानस पर्यन्त फल्गु तीर्थ है। क्रौंचपदसे फल्गु तीर्थ तक गयासुरका मुख है, इसलिये उस स्थानपर पिण्डदान करनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है। मुण्डपृष्ठसे गिरिके नीचे तक फल्गु तीर्थमें आदि गदाधरका स्थान है, उस स्थानमें पिण्डदान और गदाधरके दर्शन और पूजन करनेसे सहस्र कुलको विष्णुपद प्राप्त होता है। शिवजीको नमस्कार करके उनके स्थानपर श्राद्ध करनेसे सौ कुलको रुद्रपद मिलता है। ब्रह्माको नमस्कार करके वहाँ पिण्डदान करनेसे १०० कुलको ब्रह्मलोक मिलता है। कश्यपके स्थानपर पिण्डदान करनेसे ब्रह्मपद, दक्षिणाग्नि पदपर पिण्डदान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल, गार्हपत्यपदपर श्राद्ध करनेसे राजसूय यज्ञका फल आहवनीयपदपर श्राद्ध करनेसे अश्वमेधका फल, सत्यपदपर श्राद्ध करनेसे ज्योतिष्टोम यज्ञका फल, आवसथ्यके स्थानपर श्राद्ध करनेसे पितृगणोंको सोमलोक, इन्द्रपदपर श्राद्ध करनेसे इन्द्रलोक, अगस्त्यपद पर श्राद्ध करनेसे पितृगणोंको ब्रह्मलोक, क्रौंचपद और मातंगपदपर श्राद्ध करनेसे ब्रह्मलोक, सूर्य्यपदमें श्राद्ध करनेसे सूर्य्यलोक; कार्त्तिकपदमें श्राद्ध करनेसे शिवलोक, गणेशपदमें श्राद्ध करनेसे रुद्रलोक, गजकर्णमें तर्पण करनेसे पितृगणोंको स्वर्ग मिलता है। सम्पूर्ण स्थानोंमें विष्णुपद, रुद्रपद; ब्रह्मपद और काश्यपपद श्रेष्ठ हैं। किसी समयमें श्रीरामचन्द्रने गयामें आकर रुद्रपदपर पिण्डदान दिया। राजा दशरथने स्वर्गसे आकर पिण्डदान ग्रहण किया। मुण्डपृष्ठ पर्वत देवताओंके पदसे सर्वत्र चिह्नित है वहाँ पिण्डदान करनेसे पितृगणोंकी मोक्ष होती है। गदालोल तीर्थमें स्नान करनेसे पितरोंकी मुक्ति हो जाती है। अक्षयवटके नीचे अन्नसे श्राद्ध करनेसे पितरोंकी मोक्ष होती है।

(५० अध्याय) राजा गयने गयामें यज्ञ किया और वहुत अन्न द्रव्य दान दिया विष्णु आदि देवता प्रसन्न होकर राजा गयसे बोले कि तुम मनोवाञ्छित वर माँगो। राजा गयने कहा कि यह पुरी हमारे नामसे विख्यात होजाय। देवताओंने वरदान दिया कि ऐसाही होगा।

बोधगया।
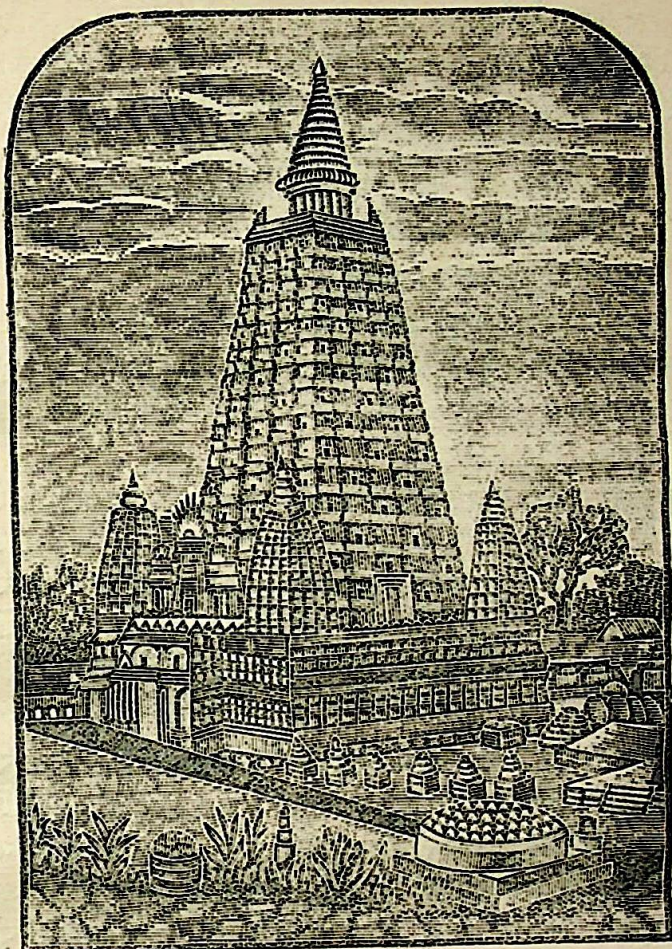
बुद्ध गयाका मन्दिर

गयाके विष्णुपदके मन्दिरसे६ मील दक्षिण, विहारके गया जिलेमें फल्गू नदीके बाँयें अर्थात् पश्चिम किनारे पर: फल्गू और मोहन नदीके सङ्गमसे ऊपर बोधगया एक गाँव है। गयासे बोधगया तक पक्की सड़क गई है। बोधगया बौद्ध लोगोंके लिये संसारमें सबसे अधिक पवित्र स्थान है। हजारों यात्री बोधगयामें आते हैं और पवित्र पीपलके वृक्षके नीचे और बुद्धदेवके विख्यात पुराने मन्दिरमें पूजा चढ़ाते हैं। वहाँ ८० फीट लम्बी, ७८ फीट चौड़ी और ३० फीट ऊँची छतके ऊपर ४७ फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी बुद्धके मन्दिरकी नीव है। नीचेके सतहसे मन्दिरकी ऊँचाई १७० फीट है। उसके पूर्व वगलपर दो मञ्जिला जगमोहन और ३ वगलोंपर लगभग१६फीट चौड़ी छत है। मन्दिर अत्यन्त पक्के हुए ईंटोंसे बना है। ईंटोंपर गचका काम है। केवल दरवाजेका चौकठ और फर्श पत्थरका वना है। मन्दिरके शिखरके चारों वगलों पर नीचेसे ऊपरतक सर्वत्र छोटे बड़े ताक हैं,

जिनमेंसे बहुतोंमें बौद्धमूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। मन्दिर पुराना होनेपर भी इसकी बनावट उत्तम है। सब बातोंको ख्याल करनेपर ठीक जान पड़ता है कि यह मन्दिर बहुत दिन ठहरा है। कोई कोई कहते हैं कि इस मन्दिरको मगध देशके बौद्ध राजा अशोकने बनवाया जिसका राज्य सन् ईस्वीके २६४ वर्ष पहलेसे २२३ वर्ष पहले तक था। पीछे उसकी कई बार मरम्मत हुई। सन् १८७६ ई० में ब्रह्माके राजाने मन्दिरकी मरम्मतके लिये ३ अफसरोंको बोधगयामें भेजा, जिन्होंने मन्दिरके चारों तरफ बहुत जमीन साफ की। उस समय बङ्गाल गवर्नमेण्टको डर हुआ कि मन्दिरकी नीव पोली होजानेसे शायद मन्दिरको नुकसानी पहुँचे, इस लिये सन् १८७७ ई०में डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र वहाँ भेजे गये। उस समय मन्दिरका हिस्सा हीन दशामें था, जो पीछे सुधारा गया।

मन्दिरके द्वारके ऊपर अङ्गरेजीमें शिला लेख है, जिसमें लिखा है कि जहाँ राजा शाक्यसिंह बुद्ध हुए उस पवित्र स्थान पर महाबुद्धका पुराना मन्दिर है। इसको सन् १८८० ईस्वी में बङ्गालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नरने अङ्गरेजी सरकारके खर्चसे सुधरवाया।

उस मन्दिरमें पूर्व तरफ मुख करके बुद्धकी विशाल मूर्त्ति बैठी है; जिसका बायाँ हाथ ढोढ़ीके पास और दहिना हाथ नीचेकी ओर गिरा हुआ है। मूर्त्ति पर सोनेका मुलम्मा है। जगमोहनमें केवल पूर्व बगल पर एक द्वार है, इसके आगे ४ खम्भे लगे हुए एक छोटा ऊंचा दालान है, जिसके भीतर उत्तर और दक्षिणकी दीवारोंमें दहिना हाथ उठाये हुए और बायाँ हाथ नीचे गिराये हुए एक एक बौद्धमूर्त्ति है। अब दोनोंके अङ्ग भङ्ग होगये हैं।

दो मञ्जिले पर भी इस मन्दिरकी परिक्रमा है, जिसके चारों कोनोंपर एक एक शिरपरदार छोटा मन्दिर बना हुआ है। उनमेंसे पूर्व-दक्षिण और पूर्वोत्तरवाले मन्दिरोंमें होकर ऊपरकी परिक्रमा पर सीढ़ी गई हैं। २१ सीढ़ियोंके ऊपर पूर्व-दक्षिणवाले मन्दिरमें लगभग ५ फीट ऊँची और पूर्वोत्तरवालेमें करीब ५½ फीट ऊँची बौद्धमूर्त्ति हैं, जिनके पाससे ११ सीढ़ी और चढ़नेपर आदमी छतके ऊपर पहुँचते हैं और वहाँसे बड़े मन्दिरके चारों तरफ घूम सकते हैं। पश्चिम-दक्षिणवाले छोटे मन्दिरमें करीब ५ फीट ऊँची दो भुजावाली बौद्धमूर्त्ति और पश्चिमोत्तरके छोटे मन्दिरमें भी इतनीही बड़ी बौद्धमूर्त्ति है;जिसके दोनों बगलोंपर मनुष्य, हाथी आदिकी छोटी छोटी कई मूर्त्तियाँ बनाई हुई है। ऊपरके मन्दिरमें नीचेके बुद्धदेवके ठीक ऊपर करीब ४ फीट ऊँची बौद्धमूर्त्ति पूर्वमुखसे खड़ी है, जिसके बाँयें हाथकी केहुनी और दहिना हाथ नीचेको लटके हुए हैं और दोनों बगलोंपर नीचेसे ऊपर चार चार छोटी मूर्त्तियाँ हैं। जगमोहनके प्रत्येक ओर एक द्वार है, दिखलानेवाला ऊपरकी सम्पूर्ण बौद्धमूर्त्तियोंको भैरव, काली, लक्ष्मी आदि देवता कहता है।

मन्दिरके पीछे भूमिपर इसकी दीवारमें लगा हुआ बौद्ध सिंहासन नामक पत्थरका चबूतरा है, जिसपर बैठकर बुद्ध सिद्ध हुए थे। चबूतरेसे दो तीन गज पश्चिम पीपलका वृक्ष है। मन्दिरके उत्तर कई बड़े चबूतरोंपर बहुत लिङ्गाकार बौद्धमूर्त्तियाँ रक्खी है, जिनसे उत्तरवाले पीपलके वृक्षके नीचे गयाके यात्री पिण्डदान करते हैं। मन्दिरके दक्षिणके

मैदानमें बहुत बौद्धमूर्त्ति रक्खी हुई हैं, जो भूमि खोदनेपर मिली थीं। मन्दिरके आगे दक्षिण बगलपर उत्तर मुखकी कई कोठरी हैं, जिनमेंसे पश्चिम वालीमें गयाके दूसरे महन्त बाबा महादेव नाथका चौरा है। उसके पूर्वका कमरा खाली है, जिसके पूर्वकी कोठरीमें बोधगयाके पहले महन्त बाबा चेतननाथका चौरा है। उनके ३ चेले थे; महादेवनाथ, विभूतनाथ और घमंडनाथ। उनमेंसे महादेवनाथ बोधगयामें रहते थे। लोग कहते हैं कि उनकी ग्यारहवीं गद्दीपर बोधगयाके वर्तमान महन्त हैं। विभूतनाथ फल्गुके उस पार और घमंडनाथ सरस्वतीके पास घमण्डी बागमें रहते थे। पिछले दोनोंके चेलेभी सिलसिलेसे चले आते हैं। चेतननाथके चौरेके पूर्वकी कोठरीमें बहुत मूर्त्तियाँ और कोठरीके पूर्वकी अन्तवाली कोठरीमें एक बौद्धमूर्त्ति है। कोठरीके आगे एक नादके ऊपर १¾ हाथ लम्बा बुद्धका चरणचिह्न देख पड़ता है। बौद्ध तबाहियाँ, जिसके उत्तर भागमें मन्दिर है, १५०० फीट लम्बी और १००० फीट चौड़ी भूमिपर फैली हुई हैं। कदाचित् राजा अशोक और उसके उत्तराधिकारियोंके रहनेकी यह जगह थी।

बुद्धमन्दिरके हातेके पूर्वोत्तरके कोनेके पास तारादेवीका शिखरदार पुराना मन्दिर हीन दशामें खड़ा है। हातेके पूर्व एक घेरेके भीतर ५ शिखरदार बड़े मन्दिरोंमें बोधगयाके महन्तोंकी समाधि हैं। हातेके उत्तर मूर्त्ति गोदाममें बहुत बौद्धमूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं। मूर्त्ति गोदामके उत्तर जगन्नाथका दो मञ्जिला पुराना मन्दिर है, जिससे लगे हुए उत्तर अहिल्या बाईके बनवाये हुए दो मञ्जिले मन्दिरमें राम, लक्ष्मण, जानकी हनुमान, आदिकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित हैं। दोनों मन्दिरोंकी मूर्त्तियाँ दो मञ्जिलेपर स्थापित हैं। इनके उत्तर एक अँधियारे मन्दिरमें लोकनाथ और ऋणमोचन शिवलिङ्ग हैं। दो कोठरियोंको लाँघकर मन्दिरमें आदमी पहुँचते हैं। जगन्नाथजीके मन्दिरके पासही पूर्व दो शिखरदार मन्दिर हैं, जिनमेंसे एकमें नागेश्वर और दूसरेमें खगेश्वर शिवका दर्शन होता है।

बुद्धके मन्दिरके करीब ५० गज पूर्व छोटा बाजार और लगभग १०० गज पूर्वोत्तर बोधगयाके महन्तका तीन मञ्जिला मकान और फुलवाड़ी आदि सामान देखनेमें आते हैं। महन्त बड़े धनी हैं, इनको यात्रियोंकी दी हुई भूमिसे करीब ८०००० रुपये सालाना आमदनी होती है। नैपाल, अराकान, ब्रह्मा, शिलोन, जापान, चीन, इत्यादि देशोंसे बौद्ध यात्री आकर बहुत पूजा चढ़ाते हैं।

गया कसबेसे लगभग १६ मील उत्तर फल्गू नदीके पास ७ पुरानी बौद्ध गुफा हैं। उनमेंसे सबसे बड़ी गुफा, चन्द्रगुप्तके पोते राजा अशोकके राज्यके समय सन् ईस्वीसे २५२ वर्ष पहिलेकी बनी हुई ४६ फीट लम्बी और २० फीट चौड़ी है। उनमेंसे जो सबसे पीछेकी बनी हुई है, उसको ईसासे २१४ वर्ष पहले अशोकके पोतेने बनवाया था। भारतवर्षमें राजा अशोकने पहले पहल गुफाओंको बनवाया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत (शान्तिपर्व–३४२वाँ अध्याय) अदितिने इस उद्देश्यसे देवताओंके निमित्त अन्न पाक किया था कि वे लोग इस अन्नको खाकर असुरोंको मारेंगे। बुद्धने व्रत समाप्त होनेपर अदितिके निकट जाकर भिक्षा माँगी। देवतालोग पहले इस अन्नको भोजन करेंगे, इसी निमित्त उसने बुद्धको भिक्षा नहीं दी, तब बुद्धस्वरूप भगवान्‌ने रुष्ट होकर अदितिको शाप दिया कि तुम्हारे उदरमें पीड़ा होगी।

मत्स्यपुराण—(४७ वाँ अध्याय) विष्णु भगवान्‌ने देवताओंके हितके लिये शुक्रकी माताका शिर काट डाला। यह देख शुक्रने विष्णुको शाप दिया कि तुम इस संसारमें ७ बार मनुष्यका शरीर धारण करोगे। (दश अवतारमें मत्स्य; कूर्म और वाराह ये ३ मनुष्यसे बाहर हैं।) तभीसे मनुष्योंके हितके लिये विष्णु बार बार जन्म लेते हैं। उनमें धर्मकी स्थिति और असुरोंके नाश करनेके लिये तप करके कमल सदृश नेत्रवाले और देवताके समान रूपवाले बुद्धका अवतार हुआ।

पद्मपुराण—(पाताल खण्ड—६८ वाँ अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल २ को बुद्ध भगवान्‌ने जन्म लिया।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड–९ वाँ अध्याय) बुद्ध अवतार हरिके अंशसे है।

श्रीमद्भागवत—(पहला स्कन्ध–३ रा अध्याय) कलियुगकी प्रवृत्ति देख असुरोंको मोह देनेके लिये बुद्धने जन्म लिया।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध–७२ वाँ अध्याय) श्रावण शुक्ल १२ को कलशके ऊपर सुवर्णकी बुद्ध भगवान्‌की प्रतिमा स्थापन करके पूजन करे और पश्चात् कलश ब्राह्मणको देदेवे। यह व्रत शुद्धोदनने किया, जिससे बुद्ध भगवान् उसके पुत्र बने और शुद्धोदन बहुत काल राज्य सुख भोगकर परम गतिको प्राप्त हुआ।

वाराहपुराण—(प्रथम अध्याय) भगवान्‌ने बुद्ध अवतार धारणकर वेदके विरुद्ध धर्म भाषण करके लोकको मोहित किया था।

शिवपुराण—(५ वाँ खण्ड–१५ वाँ अध्याय) पृथ्वी म्लेच्छोंसे परिपूर्ण हो गई, तब भगवान्‌ने बौद्धरूप होकर उनसे वेदोंको छीन लिया और वेदोंकी निन्दा करके दैत्योंकी बुद्धि भ्रष्ट करदी।

अग्निपुराण—(१६ वाँ अध्याय) पूर्व कालके देवासुर-संग्राममें दैत्योंने देवताओंको परास्त किया, तब देवतागण विष्णुकी शरणमें गये। विष्णु देवताओंके हितके लिये शुद्धोदनके बुद्धनामक पुत्र हुए। उनकी मायासे दैत्यगण बौद्ध होकर धर्म और वेदसे वर्जित हो गये। उसके पश्चात् भगवान्‌ने अर्हित होकर बहुत लोगोंको अर्हित-मतावलम्बी बना दिया, जिससे वे लोग वेद धर्मसे वर्जित हो गये।

इतिहास—पश्चिमोत्तर प्रदेशके गोरखपुर जिलेकी उत्तरीय सीमाके बाहर नैपालकी तराईमें कपिलवस्तु नगर था उसमें शाक्यजातिका राजा शुद्धोदन रहता था। सन् ईस्वीसे ६२३ वर्ष पहले गौतमनामक उसका पुत्र जन्मा, जो पीछे अति बुद्धिमान होनेके कारण बुद्ध नामसे विख्यात हो गया। गौतमका विवाह एक राजपुत्रीसे हुआ, जिससे १ पुत्र जन्मा। ३० वर्षकी अवस्थामें गौतमने घरसे चुपचाप निकलकर जङ्गलमें रहना आरम्भ किया। उसने बहुत दिनों तक २ ब्राह्मणोंसे पटनेके जिलेमें शिक्षा पाई कि सिवाय शरीरके दुःख देनेके आत्माके चैन देनेका दूसरा उपाय नहीं है। इसलिये उन्होंने ६ वर्ष तक ५ चेलोंके साथ गयाके तङ्ग और अन्धेरे जङ्गलमें कठिन तपसे अपने शरीरको गला डाला जहाँ उन्होंने बहुत दिनों तक तप किया था, उस स्थानपर बुद्ध गयाका मन्दिर है।

पीछे बुद्धका विचार ऐसा हुआ कि आदमियोंको अच्छी चालकी शिक्षा दें। तब उन्होंने तपस्या छोड़ दी और बनारसके सारनाथके पास साधारण शिक्षा देनी आरम्भकी।

उनकी शिक्षा सबके लिये थी। सर्व साधारण लोगोंने उनका मत स्वीकार किया। ३महीनेके भीतर ६० आदमी उनके चेले हुए। सालके ८ महीने तो बुद्ध शिक्षा देते फिरते थे और बाकी ४ महीने बरसातमें किसी खास जगहमें बैठकर शिक्षा देते थे। छोटे बड़े सब लोग बुद्धके मतमें शामिल हुए। बुद्ध विहार, अवध और पश्चिमोत्तरके आस पासके जिलोंमें अपनी शिक्षाको फैलाकर घूमते हुए अपने घर आये। बूढ़े राजाने उनकी शिक्षा आदरके साथ सुनी। उनका लड़का उनके मतमें आया। ३० वर्षकी अवस्थामें बुद्धने अपने गृहको छोड़ा और ३६ वर्षकी उमरमें शिक्षा देनी आरम्भकी। उसके पश्चात् ४४ वर्ष शिक्षा देनेके उपरान्त सन् ई० से ५४३ वर्ष पहले ८० वर्षकी अवस्थामें बुद्धका देहान्त हुआ।

बुद्ध इस बातकी शिक्षा देतेथे कि हर एक आदमी मोक्ष पा सकता है; परन्तु मोक्ष किसी देवताके प्रसन्न करनेसे नहीं, किन्तु अपने कर्मोंसे मिल सकता है आदमीके वर्तमान, भूत और भविष्य जिन्दगीके हालात केवल इन्हींके कर्मके फल हैं।
जो आदमी बोता है, वही काटेगा। दुःख और सुख जो इस जन्ममें होता है, उनको पहले जन्मके कर्मका फल जानना चाहिये और वर्तमान जन्मके कर्मसे दूसरे जन्ममें दुःख सुख भोगना होगा। जब कोई जीवधारी मरता है, तो वह फिर अपने कर्मके अनुसार बड़े या छोटे शरीरको पाता है। बुद्धका यह मत है कि प्रत्येक अच्छे आदमीको इस बातका उद्योग करना चाहिये कि किसी प्रकारसे जन्म मरणके दुःखसे मोक्ष होकर छुटकारा पावें। बुद्धके मतका धार्मिक आदमी इस संसारमें पवित्र ध्यानके मरतबेको पानेका उद्योग करता है। और दूसरे जन्ममें नित्य की सुस्थिरताकी आशा रखता है। यज्ञोंके बदलेमें बुद्धने ३ बड़े धर्म बतलाये; अर्थात् अपनेको वशमें रखना दूसरों पर दया करना और सब जीवधारियोंके प्राणकी रक्षा करना।

सन् ई० के लगभग ३५७ वर्ष पहले चन्द्रगुप्तका पोता मगध या विहार का राजा अशोक, जो सन् ईस्वीके ३६९ वर्ष पहले राजसिंहासनपर बैठा था, बौद्धमतका माननेवाला निहायत सरगर्म था। लोग कहते हैं कि वह ६४००० बौद्ध मतके पुजारियोंकी परवरिश करता था। उसने बहुतसे तपस्थान कायम किये इसी लिये उसका मुल्क अबतक विहार प्रदेश कहलाता है।

कनिष्क पश्चिमोत्तर प्रदेशके सिदियाका राजा था, उसके राज्यके समय सन् ४० ई० में बौद्ध मतका अन्तिम और चौथा बड़ा जलसा हुआ। उसने दूसरी बार पवित्र पुस्तकोंको सुधारा। उसके समयका तरजुमा उत्तरी मजमूयेके नामसे तिब्बत तातार और चीनके बौद्धोंके लिये दीनी किताब हुआ। उसके समय बौद्ध मतकी शिक्षा सम्पूर्ण एशियाके मुल्कोंमें दी गई। सन् ई० से २२४ वर्ष पहले अशोकका बेटा पवित्र पुस्तकोंका दक्खिनी मजमूआ, जो उसके बापने इकट्ठा कर दिया था, लंकाको ले गया। वहाँसे वह ब्रह्मा और पश्चिमी द्वीप समूहमें पहुँचा। बौद्ध मतका उत्तरी मजमूआ सन् ६५ ई० में चीनका राजधर्म होगया। अबतक तिब्बतसे लेकर जापान तक उत्तरके बौद्ध लोग उसको मानते हैं।

यद्यपि बौद्ध मत कई शतकों तक शाही मजहब था, परन्तु ब्राह्मणोंका मजहब नाबूद नहीं हुआ; वह पीछे धीरे धीरे बढ़ गया। शंकराचार्य्यने इसमें अधिक सहायताकी। सन्

ईस्वीकी नवीं सदीमें इस मजहबके लोग हिन्दसे जबरदस्ती निकाल दिये गये। परन्तु परदेशमें उसको इतनी कामयाबी हासिल हुई कि जन्मभूमिमें हासिल होनी कभी सम्भव न थी। करीब आधी दुनियाँके निवासियोंके लिये उसने एक नया धर्म और विद्या बना दी और बाकी आधेके विश्वासको भी किसी कदर बदल दिया। दुनियाँके निवासियोंमें ५० करोड़ आदमी अर्थात् फी सदी चालीश मनुष्य बुद्धकी शिक्षाको मानते हैं। समय समय पर उसके विजयका झण्डा अफगानिस्तान नैपाल; पूर्वी तुर्किस्तान, तिव्वत, मँगोलिया मंचूरिया, चीन, जापान द्वीप समूह, स्याम, ब्रह्मा, सिंहलद्वीप, लंका और हिन्दमें खड़ा हुआ था। उसके मठ और मन्दिर रूसकी सल्तनतके वर्तमान हदसे लेकर पासिफिक समुद्र टापू तक लगातार देखनेमें आते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भारतवर्षमें (जिसमें ब्रह्मा भी है) ७१३१३६१ बौद्ध थे।

टेकारी

गयासे लगभग १५ मील पश्चिम कुछ उत्तर गया जिलेमें टेकारी एक म्युनिसिपल कसवा है। जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय, ११५३२ मनुष्य थे; अर्थात् ८८९३ हिन्दू और २६३९ मुसलमान। कसवेमें टेकारीके राजाका गढ़ बना हुआ है। वहाँके मृतराजाको सन् १८७३ ई० में महाराजका पद मिलता था। राजा भूमिहार ब्राह्मण हैं। राजा सुन्दरसिंहके पोते राजा मित्रजीतसिंहके दो पुत्र थे, हितनारायणसिंह और मोदनारायणसिंह। छोटे भाईने बड़े भाईसे जमीदारीमेंसे साढ़े सात आना हिस्सा ले लिया पीछे हितनारायणसिंहके वारिश उनके शालेके पुत्र रामकिशुनसिंह और मोदनारायणसिंहके वारिश उनके भतीजे रणबहादुरसिंह हुए।

तीसरा अध्याय।

(सूबे बिहारमें) बिहार, राजगृह, बाढ और मोकामा जंक्शन।

बिहार।

पटनेके स्टेशनसे २३ मील पूर्व बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन है, जिससे १८ मील दक्षिण (२५ अंश ११ कला २८ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ३२ कला ५० विकला पूर्व देशान्तरमें) पटने जिलेमें बिहार एक पुराना शहर है, जिसके नामसे यह प्रदेश सूबे बिहार कहलाता है। बख्तियारपुरसे बिहार तक मेल कार्ट अर्थात् डाकगाडी चलती हैं, जो तीन घण्टेमें बिहार पहुँच जाती हैं। रास्तेमें ६ मील, ९½ मील और १४ मीलपर ३ जगह घोड़े बदलते हैं। एक गाड़ीमें ६ मोसाफिर बैठते हैं। एक आदमीका महसूल १ रुपया लगता है। पक्की सड़कपर मीलके पत्थर लगे हैं। बख्तियारपुरसे आगे ३ मीलपर धोवा नामक एक छोटी नदी और १५ मीलपर एक तालाब मिलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय विहारमें ४७७२३ मनुष्य थे; अर्थात् २२९१७ पुरुष और २४८०६ स्त्रियाँ। इनमें ३२५०१ हिन्दू, १५१०६ मुसलमान, ११५ जैन, और १ क्रस्तान थे। मनुष्य–संख्याके अनुसार यह बङ्गालमें ११ वाँ और भारतवर्षमें ७९ वाँ शहर है।

विहार पटनें जिलेका सब डिवीजन है। वहाँ एक मुनसफ, दो डिपुटी मजिस्ट्रेट, एक स्कूल और एक अस्पताल है। शहरमें एक छोटी लम्बी पहाड़ी है, जिसके ढालू छोरपर नीचेसे ऊपर तक शहरका एक हिस्सा बसा है। विहारके दक्षिण भागमें सदर सड़कके पास वेली साहबकी बनवाई हुई वेली सराय नामक उत्तम इमारत है। इसकी सब कोठरियाँ मुण्डेरेदार और मोरब्बा बनी हैं। प्रत्येकके चारों तरफ द्वार बने हैं। कोठरियोंके दो तरफ उत्तम बरण्डे और बड़ा आँगन हैं। इससे दक्षिण दूसरे कितेमें इसी तरहकी दूसरी इमारत है। अङ्गरेजी कायदेके रहनेसे इस सरायमें हिन्दू मोसाफिर कम टिकते हैं, मैं भी किरायेके मकानमें टिका था। शहर होकर राजगृहको सड़क गई है। शहरके पास पञ्चानानामक छोटी नदी है। विहारसे ४० मील पश्चिम-दक्षिण गया तीर्थ है। विहारमें बड़ी तिजारत होती है। तिजारतकी खास चीजें युरोपियन कपड़ा, चावल, कई प्रकारके गल्ले, तम्बाकू आदि हैं। रेशमी और रुईके कपड़ेकी वहाँ दस्तकारी होती है। शाह मखदूमकी कबरके पास एक सालाना मेला होता है, जिसमें लगभग २०००० मुसलमान आते हैं। पुराने किलेकी तबाहियाँ लगभग ३०० एकड़में फैली हुई हैं। यह अनुमान किया जाता है कि ईस्वी सन् प्रारम्भ होनेके थोड़ेही पश्चात् यह मगधकी पुरानी बादशाहतकी राजधानी था।

राजगृह।

विहारसे १४ मील दक्षिण, कुछ पश्चिम और बख्तियारपुरके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील दक्षिण पटने जिलेमें राजगृह है, जिसको बहुत लोग राजगिर भी कहते हैं। विहारसे ३ मील तक पक्की सड़क, आगे कच्ची है। मेलेके समय बख्तियारपुर और विहारमें एक्के, बैलगाड़ी और डोली सवारीके लिये बहुत मिलती हैं। बख्तियारपुरसे राजगृह तक जगह जगह बस्तियोंमें टिकान और मोदी हैं। सड़कके किनारेपर मीलके पत्थर और वृक्ष लगे हैं।

विहारसे २ मील आगे वालूके मैदानमें एक छोटी नदीकी धारा, ३½ मील आगे दीपनगरमें मोदियोंके कई एक मकान और ६¾ मील आगे महुआ बाग है।

महुआबागसे करीब ३ मील पश्चिम एक दूसरी सड़क बड़गाँवाँको गई है, जिसको वहाँके लोग रुक्मिणीके पिता राजा भीष्मककी राजधानी कुण्डिनपुर कहते हैं। परन्तु पुराणोंमें विदर्भ देशमें कुण्डिनपुर लिखा है। (श्रीमद्भागवत, दशमस्कन्ध, ५२ वाँ और ५३ वाँ अध्याय) विदर्भ देशके पालन करनेवाला राजा भीष्मक कुण्डिनपुरका राजा था) दक्षिणके हैदराबाद राज्यके बीदर कसबेको लोग विदर्भ देशमें कहते हैं। मगध देशमें जरासन्धकी राजधानी राजगृहसे बड़गाँवा केवल ८ मीलपर है। बड़गाँवाँ एक छोटी बस्ती है। बस्तीसे बाहर एक बौद्ध मन्दिर है, जहाँ किसी नियत समयमें बहुत बौद्ध यात्री जाते हैं। बौद्ध लोगोंके लिये नालन्द गाँव बहुत पवित्र है। बड़गाँवाँमें पुराने नालन्दके चिह्न अबतक मिलते

हैं। बस्तीके भीतर सूर्यका एक छोटा मन्दिर; बाहर सूर्यकुण्डनामक एक कच्चा तालाब और बस्तीसे थोड़ीही दूरपर जगह जगह चार पांच टीले हैं।

बिहारसे ९½ मील (महुआबागसे ३ मील) शिलावनामक एक बड़ी बस्ती, जिसकी खझुली सुस्वाद होती है; १२¾ मील पण्डितपुर; १३¾ मील नया राजगृह बस्ती और १४ मील मेलेकी जगह है, जहाँसे करीब १ मील आगे ब्रह्मकुण्डतक मलमासमें मेला लगता है। राजगृह सूबे बिहारके पटने जिलेमें एक छोटी बस्ती और मगध देशकी पुरानी राजधानीका स्थान है, जो पूर्वकालमें जरासन्धकी राजधानी गिरिव्रज नामसे प्रसिद्ध था। चीनके रहनेवाले फाहियानने लगभग सन् ४०० ई० में और हुएंत्सांगने सातवीं सदी में राजगृहको देखा था। हुएत्सांगने लिखा है कि यहाँ गरम पानीके कई झरने हैं।

राजगृहमें सरस्वती नामक नदी दक्षिण-पश्चिमसे वैभार पर्वतके पूर्वोत्तर ब्रह्मकुण्डके पूर्व आई है और वहाँसे उत्तरकी ओर गई है। नदीकी धारा छोटी है। स्नानके प्रसिद्ध घाटोंपर केवल डुबकी देने योग्य पानी रहता है। ब्रह्मकुण्डके पास सरस्वतीको प्राची सरस्वती कुण्ड कहते हैं, जहाँ नदीके दोनों किनारोंपर पक्के घाट बने हैं। और यात्रीगण प्रथम स्नान करते हैं।

सरस्वतीकुण्डसे पश्चिम वैभार पर्वतके पूर्वोत्तर पाँवके पास मार्कण्डेय क्षेत्र है। सरस्वती कुण्डसे क्षेत्र तक पक्की सीढ़ियाँ बनी हैं। वहाँ नीचे लिखे हुए ७ कुण्ड हैं,—जिनमें ब्रह्मकुण्ड प्रधान है,—(१) मार्कण्डेयकुण्ड, (२) व्यासकुण्ड, (३) गङ्गायमुनाकुण्ड, (४) अनन्त-नारायणकुण्ड, (५) सप्तर्षिधारा, (६) काशीधारा और (७) ब्रह्मकुण्ड। गङ्गायमुना-कुण्डमें एक ठंढ़ा और दूसरा गरम झरना है। दूसरे सब कुण्डोंके झरने गरम हैं। कई झरनोंके ऊपर आदमीके बैठने लायक नाले बने हैं, जिनमें वहाँके चढ़े हुए पैसे लेनेवाले आदमी बैठे रहते हैं। (अनन्तनारायणकुण्डका नाम राजगृह माहात्म्यमें नहीं है) इनमें सप्तर्षिधारा उत्तर और दक्षिणको लम्बी १ बावली है, जिसके पश्चिमकी दीवारमें ५ और दक्षिण २ झरने हैं, सातों जगह स्नान होता है। झरने निम्न लिखित सप्तर्षिके नामसे प्रसिद्ध हैं। अत्रि, भरद्वाज, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ और यमदग्नि। परन्तु राजगृह माहात्म्यमें यहाँ भरद्वाज, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि, दुर्वासा और पराशर तीर्थ लिखा है। बावलीके पश्चिमकी दीवारमें शिलालेख है, जिससे जान पड़ता है कि संवत् १९०४ में यहाँसे १० कोस पूर्व-दक्षिणके रहनेवाले एक आदमीने इसको बनवाया। बावलीके दक्षिण किनारेपर दोनाके कायस्थके बनवाये हुए एक छोटे मन्दिरमें सप्तर्षियोंकी ७ मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। उससे पूर्व और ब्रह्मकुण्डसे दक्षिण एक छोटा शिवमन्दिर और सप्तर्षिधाराके उत्तर किनारेपर एक शिवमन्दिर, एक कन्हैयाजीका मन्दिर और गयावाल पण्डेका बनवाया हुआ एक बड़ा पश्च मन्दिर है, जिसमें देवताओंकी स्थापना कभी नहीं हुई। सप्तर्षिधाराके पासही पूर्व ब्रह्मकुण्ड है। राजगृहके सब कुण्डोंसे इसका जल अधिक गरम रहता है कुण्डमें पानीके किनारेपर ब्रह्मा; लक्ष्मी और गणेशकी मूर्त्तियाँ हैं। ब्रह्मकुण्डसे पूर्व एक छोटे मन्दिरमें बराहजीकी मूर्त्ति है। और दक्षिण पहाड़ीके ढालपर सन्ध्यादेवीका छोटा मन्दिर है; जिसके पास केदारकुण्ड है, जिसमें पुत्रकामनाके लिये बहुत स्त्री स्नान करती हैं। पश्चिम एक छोटे मन्दिरमें विष्णुका चरणचिह्न देख पड़ता है।

सरस्वतीकुण्डसे २०० गज पूर्व नीचे लिखे हुए ५ कुण्ड हैं,-(१) सीताकुण्ड, इसके उत्तर हाटकेश्वर महादेवका छोटा पुराना मन्दिर है। लोग कहते हैं कि तीर्थ निर्माण हुआ, तभी का यह मन्दिर है। हाटकेश्वरसे उत्तर (२) सूर्य्य कुण्ड,-(३) चन्द्रकुण्ड, (४) गणेश कुण्ड और पाँचवाँ रामकुण्ड हैं। सब कुण्डोंमें गरम झरनेका पानी गिरता है। रामकुण्डका एक झरना गरम और दूसरा ठण्ढ़ा है। रामकुण्डके पूर्व दीवारमें शिलालेख है। जिसमें इस कुण्डके बननेका संवत् और बनाने वालेका नाम लिखा है। राजगृहमाहात्म्यमें इस कुण्डका नाम नहीं है। सीताकुण्डसे पूर्व-दक्षिण विपुलाचल पर्वतकी जड़में ठण्डे जलका झरना है। सीताकुण्डसे पूर्व विपुलाचलको जड़के पास शृङ्गीकुण्ड है। एक ठण्ढे और दूसरे गरम झरनेका पानी उसमें गिरता है। उस जगह किसी समय मखदूम साहब एक मुसलमान फकीर रहे थे। वह कुण्ड मुसलमानोंके कवजेमें है। वेलोग इसको मखदूमकुण्ड कहते हैं।

सरस्वतीकुण्डसे आधे मीलसे अधिक उत्तर उसी सरस्वतीको लोग वैतरणी कहते हैं। नदीके दोनों किनारोंपर पक्के घाट वने हैं। दहिने किनारेपर बहुत लोग पिण्डदान और गोदान करते हैं। वहाँ बहुत बछियोंको लेकर ग्वाले लोग खड़े रहते हैं। एक आनेपर भी बछिया संकल्प कराकर वे लोग उसको लौटा लेते हैं। नदीके बाँये किनारेपर बहुत छोटे एक मन्दिरमें माधवजीकी एक मूर्त्ति है। वैतरणीसे करीब ४०० गज उत्तर उसी सरस्वतीको लोग शालग्रामकुण्ड कहते हैं। उसमें घाट बना है। यात्रीगण स्नान करते हैं। शालग्रामकुण्डसे पूर्व एक छोटे मन्दिरमें धर्मेश्वर महादेव और धर्मेश्वरसे पूर्व भरतकूप है। कई सीढ़ियोंसे भीतर जाकर उस कूपमें स्नान होता है। उसमें झरनेका पानी नहीं है। उसका जल साफ नहीं रहता। उस कूपका नाम राजगृहमाहात्म्यमें नहीं है।

बहुतेरे यात्री एकही दिनमें सरस्वतीके तीनों घाटोंपर अर्थात् सरस्वतीकुण्ड, वैतरणी और शालग्रामकुण्डमें और सम्पूर्ण झरनोंके जलसे और भरतकूपमें स्नान करते हैं। कोई कोई २ दो दिनमें स्नान कर्म समाप्त करता है। ब्रह्मकुण्ड और सप्तर्षि धाराकुण्डके अतिरिक्त सब कुण्डोंमें जानेको एकही रास्ता है। सीढ़ियोंपर मलमासमें स्नान करनेवालोंकी बड़ी भीड़ रहती है। पुरुष और स्त्री सभी भींगे हुए कपड़े पहने हुए एक जगहसे दूसरी जगह स्नान करते फिरते हैं। उस तीर्थमें स्नान करनेवालोंका आश्चर्य दृश्य देखनेमें आता है। ब्रह्मकुण्ड और सीताकुण्डके बीचमें बहुतेरे लोग एक स्थानसे दूसरे स्थानको दौड़ते हैं। कोई अपने लड़केको कन्धेपर या गोदीमें लेकर स्नान कराता फिरता है। किसी कुण्डका गरम पानी असह्य नहीं है। मोरी द्वारा कई कुण्ड मिले हुए हैं।

सरस्वतीकुण्डसे दक्षिण ओर सरस्वती नदीमें नदीके बाँये वानरीकुण्डनामक एक बहुत छोटा कुण्ड है, जिसका पानी लोग देहपर छिड़कते हैं। उस स्थानको वानरीतरण क्षेत्र कहते हैं। वानरीकुण्डसे कुछ दूर दक्षिण गोदावरीनामक एक छोटीधारा दक्षिणसे आकर सरस्वतीमें मिली है। संगमसे दक्षिण-पूर्व पहाड़ी टीलेपर ज्वाला देवीका छोटा मन्दिर है।

सरस्वती और गोदावरीके संगमसे पश्चिम सरस्वतीकुण्डसे १ मील दक्षिण-पश्चिम सरस्वती नदीके बाँये वैभार पर्वतके दक्षिण बगलमें ११ गज लम्बी और ५½ गज चौड़ी सोनभण्डार नामक प्रसिद्ध एक गुफा है। उसके भीतरकी छत दोनों तरफ ढालुवाँ हैं, जो

मध्यमें पृथ्वीसे ३३ गज ऊँची है। गुफाके पूर्व भागमें ४ मुखवाली १ बौद्धमूर्त्ति बैठी है। गुफाके द्वारपर टूटी हुई छोटी छोटी २ बौद्धमूर्त्तियाँ पड़ी हैं। गुफाके भीतर और द्वारके पास कई अक्षरोंका घिसा हुआ लेख है। कोई कोई यात्री गुफाके द्वारके बाहर खड़ी दीवारमें अपना नाम लिख देते हैं। बौद्ध लोगोंके लिये सोनभण्डार बहुत पवित्र है। उसी स्थानपर सन् ई० के ५४४ वर्ष पहले बुद्धकी विद्यमानतामें उनके चेलोंमेंसे ५०० आदमियोंने इकट्ठे होकर धर्मसभाकी थी। वही बौद्धोंका पहला जलसा कहलाता है।

राजगृहकी पहाड़ियां लगभग १००० फीट ऊँची हैं, जिनमें शिलाजीत निकलता है। उनमें वैभार, विपुलाचल, जिसको महाभारतमें चैतक लिखा है, रत्नागिरि जिसका नाम महाभारतमें ऋषिगिरि लिखा है, उदयगिरि और सोनागिरि ये पांच पहाड़ियाँ प्रधान हैं। वैभार सरस्वतीकुण्डसे दक्षिण-पश्चिम है। उसके सिरेपर एक पुराने जर्जर मन्दिरमें सोमनाथ और सिद्धनाथ २ शिवलिङ्ग हैं। एक मील चढ़ाईके पीछे मन्दिर मिलता है, जहाँ बहुत यात्री जाते हैं। उस मन्दिरके आस पास ६ जैनमन्दिर हैं, जिनमें मलमासके मेलेके समय यात्री लोग हिन्दूमन्दिर जानकर दर्शन करते हैं। मन्दिरके नौकर हिन्दू-मन्दिर कहकर पैसे चढ़वाते हैं। विपुलाचल सीताकुण्डसे पूर्व है, जिसपर ६ जैनमन्दिर हैं। उससे दक्षिणकी पहाड़ीपर गणेशजीका एक छोटा मन्दिर है। रत्नागिरि विपुलाचलके दक्षिण है, जिसपर २ जैनमन्दिर हैं। उदयगिरि रत्नगिरिके दक्षिण है; जिसपर १ जैनमन्दिर है और उसके पश्चिम नीचे नाटकेश्वर महादेवका छोटा मन्दिर है और सोनागिरि उदयगिरिसे पश्चिम है, जिसपर १ जैनमन्दिर है। महाभारतमें लिखा है कि इन पाँच पहाड़ियोंके मध्यमें राजा जरासन्धकी गिरिव्रजनामक राजधानी थी। बहुतेरे जैन लोग खटोलियोंमें और पैदल उन पहाड़ोंपर अपने तीर्थस्थानको जाते हैं। गयाजीके पर्वत तक पहाड़ियोंका ताँता लगा है। राजगृहसे गया तीर्थ ३२ मील पश्चिम है।

सरस्वती कुण्डसे करीब ६ मील पूर्व गिरिये वस्तीके पास वैकुण्ठ नामक नदी और वैकुण्ठ तीर्थ है, जिससे उत्तरकी ओर कण्ठेश्वरका मन्दिर है।

राजगृह एक समय मगध देश और जरासन्धकी राजधानी था, जो चारोंओर पहाड़ोंसे और उत्तरकी ओर एक पुराने किलेके खण्डहरसे वेष्टित है। सरस्वतीकुण्डसे करीब ४ मील दक्षिण बाणगङ्गा पहाड़ी नदी है, जिसके पारकी चहार दिवारी जरासन्धका बान्ध कहलाती है। और वही एक बाहर जानेका रास्ता है। राजगृहके पुराने कसबेकी बाहरकी दीवारका चिह्न, जिसका घेरा ४ मीलसे अधिक है, अब तक देखनेमें आता है। बाणगङ्गासे उत्तर कई पुराने शिलालेख हैं, जो पढ़े नहीं जाते। रङ्गभूमि भी उसी जगह है। लोग कहते हैं कि भीमने जरासन्धको इसी जगह चीर डाला था। सरस्वती कुण्डसे करीब २ मील दक्षिण और बाणगङ्गासे २ मील उत्तर मणियारमठ (नागमणि) में अशोक महाराजका स्तूप और जैनलेख हैं। राजगृहमें बौद्धोंने हिन्दुओंको निकालकर अपना अधिकार किया था, परन्तु हिन्दुओंने फिर उन्हें निकालकर अपने तीर्थ स्थापित कर लिये।

सरस्वती कुण्डसे १२ मील पश्चिम तपोवन और गिरिव्रजनामक दो स्थान हैं जिनको लोग जरासन्धका भजनागार और बैठक कहते हैं। तपोवनमें चारों भाई सनकादिकोंके

नामसे गरम झरनेके ४ कुण्ड हैं। पर्वत लाँघकर वहाँ जाना होता है । मेलेके दिनोंमें दुकान रहती हैं।

राजगृहका मेला मलमासमें एक महीना रहता है, किन्तु शुक्लपक्षसे कृष्णपक्षमें अधिक यात्री जाते हैं। आसपासके जिलोंके लोग उस तीर्थमें वहुत जाते हैं। बहुतेरे यात्री पहुँचनेके दिन या दूसरे दिन स्नान करके लौट जाते हैं। कुण्डोंमें स्नानकी भीड़ दिनभर रहती है। राजगृह और पण्डितपुरके ब्राह्मण राजगृहके पण्डे हैं; वे लोग यात्रियोंके टिकनेके लिये बहुत छप्पर लगाते हैं। ब्रह्मकुण्ड और सरस्वती कुण्डसे १ मीलपर बाजार बसता है। मेलेमें कोई पशु बिकनेको नहीं आता। नदी और झरनोंके सिवाय वहाँ कई कूप हैं। मेलेके आस पासके जङ्गल मेलेसे भर जाते हैं। इन्तजामके लिये विहारके एक हाकिम टिके रहते हैं। पहाड़ोंपर और उनकी तराइयोंमें छोटे वृक्ष और झाड़ोंका जङ्गल है। खटोलीमें बैठाकर पहाड़ोंपर ले जानेवाले कुली मेलेमें मिलते हैं। मलमासके अतिरिक्त कार्त्तिकी पूर्णिमा, माघी अमावस्या और पूर्णिमा, वैशाखकी अमावास्या, सोमवारी अमावास्या, ग्रहण आदि पर्वोंमें भी आस पासके वहुत लोग स्नानके लिये राजगृहमें जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—महाभारत–(शान्तिपर्व्व ५९ वाँ अध्याय) वेणुके पुत्र राजा पृथुके दो वन्दी थे सूत और मागध। प्रतापी पृथुने उनके ऊपर प्रसन्न होकर सूतको अनूप देश और मागधको मगध देश प्रदान किया।

(सभापर्व १३ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णसे राजसूय यज्ञ करनेका प्रयोजन कह सुनाया। (१४ वाँ अध्याय) कृष्णचन्द्रने कहा कि हे महाराज! जरासन्ध सम्पूर्ण राजाओंका सौभाग्य पाकर पृथ्वीनाथ बनकर अपने तेजसे सर्वोपरि हुआ है। आप उसके जीवित रहते हुए कदापि राजसूय यज्ञ पूरा नहीं कर सकेंगे। (१५ वाँ अध्याय) उसने सैकड़े पीछे ८६ भूपोंको कैद कर रक्खा है। सौमें केवल १४ राजा शेष बचे हैं। (१७ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरके पूछनेपर श्रीकृष्ण जरासन्धका जन्म वृत्तान्त कहने लगे कि मगध देशमें अति विक्रमभरे दूसरे इन्द्रके समान वृहद्रथ नामक एक राजा था। उसने काशीराजकी दो कन्यासे विवाह किया था। राजाकी यौवन दशा कट गई, पर एक भी पुत्र नहीं उपजा। तब उसने दोनों रानियोंके साथ एक तपस्वी चण्डकौशिक मुनिके पास जाकर उनको प्रसन्न किया और पुत्रके लिये प्रार्थना की। मुनि आमके वृक्षकी छाहमें बैठकर जब ध्यान करने लगे, तब उनकी गोदमें एक आम्र फल गिरा। मुनिवरने पुत्र लाभके लिये वह फल राजाको दिया। राजाने अपने घर आकर अपनी दोनों पत्नियोंको वह फल दे दिया। उन्होंने आपसमें बाँटकर उस फलको खाया। १० महीने पूरे होनेपर दोनों रानियोंने दो खण्ड शरीर प्रसव किये तब उनकी आज्ञासे दो धात्रियोंने उन दो सुन्दर खण्डोंको अन्तःपुरसे निकालकर एक चौराहे पर फेंक दिया। जरा नाम्नी एक राक्षसीने उन खण्डोंको ले लिया और सहजहीमें दोनों खण्डोंको जोड़ दिया। दो आधी देहोंके एक दूसरेसे मिलते ही एक वीर कुमार बनगया। अनन्तर राक्षसी बचेको उठानेकी चेष्टा करने लगी पर वह उठा नहीं सकी। बालक गहेरे शब्दसे रोने लगा। अनन्तर उस राक्षसीने मानवी शरीर धर उस कुमारको लेकर सब वृत्तान्त कहनेके उपरान्त राजाको दे दिया। (१८ वाँ अध्याय) जरा राक्षसीने बालकको संधित किया, अर्थात् जोड़ा इस कारणसे

राजा बृहद्रथने बालकका नाम जरासन्ध रक्खा । (१९ वाँ अध्याय) जरासन्धके बड़े होने पर राजा बृहद्रथ उसको मगधके राजसिंहासन पर बैठाकर अपनी दोनों रानियोंके साथ बनको पधारे और तपोबनमें बहुत दिनों तक तप करके स्वर्गको सिधारे। जरासन्धने अपने वीर्य्यके प्रभावसे सब नरनाथोंको अपने वशमें कर लिया।

(२० वाँ अध्याय) ऐसा कह श्रीकृष्ण बोले कि सम्पूर्ण सुरासुर भी खुला खुली लड़ाईमें जरासन्धको परास्त नहीं कर सकेंगे, इस लिये भुजयुद्धसे ही उसको जीतना उचित है। राजा युधिष्ठिरके सहमत होने पर श्रीकृष्णचन्द्र भीम और अर्जुनके सहित स्नातक ब्राह्मणोंके वस्त्र पहिरकर इन्द्रप्रस्थसे मगधनाथके धामकी ओर चले और गङ्गा और सोनके पार उतर कर मगधराजके छोरमें आ पहुँचे। अनन्तर उन्होंने गोरथनामक पर्वतसे उतर कर मगधनाथकी पुरी देखी। (२१ वाँ अध्याय) श्रीकृष्ण बोले कि हे अर्जुन! देखो मगध-राजकी राजधानी कैसी सुन्दर शोभा पारही है। ऊँची ऊँची चोटी लिये हुए ठण्ढे वृक्ष-वाले एक दूसरेसे मिले हुए वैहार, वराह, वृषभ ऋषिगिरि और चैतक ये ५ पर्वत मानो एक गृह बनकर गिरिव्रज नगरीकी रखवारी कर रहे हैं। पूर्वकालमें अङ्ग वङ्गादिके राजा-गण यहाँके गौतमजीकी कुटीमें आकर प्रमुदित होते थे। देखो गौतमजीके आश्रमके निकट लोध्र और पीपलके बन कैसी सुन्दर शोभा दे रहे हैं। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन मगधपुरीकी ओर चले और द्वारके निकट न जाकर चैतक पर्वतकी चोटीको लाँघ-कर गिरिव्रज नगरमें जाघुसे। वे लोग ३ कक्षाओंको पीछे छोड़कर राजा जरासन्धके निकट जा पहुँचे। राजाने इनका बड़ा सत्कार किया। उस काल भीम और अर्जुन मौन साधे थे। श्रीकृष्ण जरासन्धसे बोले कि हे नरनाथ! यह दोनों नियम युक्त हैं। इस समय कुछ नहीं बोलेंगे, किन्तु आधीरात बीतने पर तुमसे वार्तालाप करेंगे। आधीरात बीतने पर राजा उन द्विजोंके पास आया और कृष्णादिकी निन्दा करके बोला कि स्नातक व्रतधारी ब्राह्मण माला आदि नहीं धारण करते, पर तुम फूल लगाये हो और तुम्हारी हथेलियोंमें धनुषके गुण चढ़ानेके चिह्न बने हैं; सो तुम कहो कौन हो। कृष्ण बोले कि महाराज तुम हमको स्नातक ब्राह्मण करकेही जानो। (२२ वाँ अध्याय) बहुत बातें करनेके पीछे कृष्णचन्द्रने कहा कि हमने तुमको मारनेके लिये ब्राह्मण वेष लिया है। मैं कृष्ण हूं और ये दोनों पाण्डुके पुत्र हैं। हम तुमको ललकारते हैं स्थिर होकर लड़ो। अथवा सब भूपोंको छोड़ दो। जरासन्ध बोला कि जो तुम युद्धकी बात कहते हो तो मैं व्यूह युक्त सेनाओंसे अथवा अकेले एकसे, दो से वा तीनोंसे एकही बार या अलग अलग, चाहे जैसे हो, लड़नेमें सम्मत हूँ। (२३ वाँ अध्याय) कृष्णचन्द्रके पूछने पर तेजस्वी मगधनाथने भीमसे लड़नेको कहा, तब जरासन्ध और भीम शस्त्र लिये हुए अति प्रमुदित चित्तसे एक दूसरेसे भिड़ गये। भीम और जरासन्धकी लड़ाई होने लगी जो कार्त्तिक मासकी प्रथमा तिथिसे आरम्भ होकर त्रयोदशी तक निश दिन बिना भोजन चली थी। चतुर्दशीकी रातको जरासन्धने थककर कुश्ती त्याग दीं। (२४ वाँ अध्याय) भीमने जरासन्धको ऊँचे उठाकर १०० फेरा घुमानेके पश्चात् अपनी जंघासे उसकी पीठ नवाकर तोड डाली। अनन्तर कृष्णचन्द्रने राजा-ओंको कारागारसे छुड़ाया और जरासन्धके पुत्र सहदेवको राज्यतिलक दिया उसके पीछे भीम और अर्जुनके साथ वह इन्द्रप्रस्थमें आये।

(यह कथा श्रीमद्भागवत दशमस्कन्धके ७२ वें अध्यायमें है। उसमें यह लिखा है कि कृष्णचन्द्रने जरासन्धसे द्वन्द युद्ध करनेको कहा, तब वह स्वीकार करके नगरसे बाहर निकलकर भीमसेनके साथ गदा युद्ध करने लगा। कृष्णके इशारा बताने पर भीमने जरासन्धके एक पाँवको अपने पाँवसे दाब दूसरे पाँवको भुजाओंसे पकड़ कर चीर डाला)

(बन पर्व—८४ वाँ अध्याय) पुलस्त्य बोले कि तीर्थ सेवी पुरुष राजगृह तीर्थको जाय। वहाँ तीर्थोंका स्पर्श करनेसे पुरुष आनन्दित होता है। वहाँ यक्षिणीको नैवेद्य लगाकर भोजन करनेसे यक्षिणीके प्रसादसे पुरुषकी ब्रह्महत्या छूट जाती है। मणिनाग तीर्थमें जानेसे हजार गोदानका फल होता है। जो पुरुष मणिनाग तीर्थकी उत्पन्न हुई वस्तुओंको खाता है, उसे सर्प काटनेका विष नहीं चढ़ता। वहाँ एक रात रहनेसे हजार गोदानका फल होता है। वहाँसे ब्रह्मर्षि गौतमके वनमें जाना उचित है। वहाँ अहल्याकुण्डमें स्नान करनेसे मोक्ष मिलती है।

विष्णुपुराण—(चौथा अंश २३ वाँ और २४ वाँ अध्याय) सोमवंशके पल्लवसे उत्पन्न मागध वंशमें जरासन्ध आदि प्रतापी राजा हुए। जिनके क्रमिक नाम ये हैं—(१) जरासन्ध, (२) सहदेव, (३) सोमापि, (४) श्रुतवान, (५) अयुतायु, (६) निर्मित्र, (७) सुक्षत्र, (८) वृहत्कर्मा, (९) सुश्रम, (१०) दृढ़सेन, (११) सुमति, (१२) सुवल, (१३) सुनीत, (१४) सत्याजित्, (१५) विश्वजित् और (१६ वाँ) रिपुञ्जय। इतने वृहद्रथवंशके मागध राजा कलियुगके १००० वर्ष वीतने तक होंगे।

रिपुञ्जयके मन्त्री शुनक रिपुञ्जयको मारकर अपने पुत्र प्रद्योतको राजसिंहासनपर बैठावेगा। प्रद्योत वंशी ५ राजा १३८ वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) प्रद्योत, (२) पालक, (३) विशाखयूप, (४) जनक और (५) नन्दिवर्द्धन।

शिशुनाग वंशके १० राजा ६६२ वर्ष राज्य करेंगे,—(१) शिशुनाग, (२) काकवर्ण, (३) क्षेमधर्मा, (४) क्षेत्रज्ञ, (५) विन्दुसार, (६) अजातशत्रु, (७) दर्भक, (८) उदयाश्व, (९) नन्दिवर्द्धन और (१० वाँ) महानन्द।

नन्द और उसके पुत्र गण १०० वर्षतक राज्य करेंगे। महानन्दकी शूद्री स्त्रीसे उत्पन्न नन्द नामक पुत्र पृथ्वीका एक राजा होगा। उसके सुमाली इत्यादि ८ पुत्र होंगे। चाणक्य नामक ब्राह्मण छलसे नवोंको मारकर चन्द्रगुप्तको राजसिंहासनपर बैठावेगा। १० मौर्यवंशी राजा १३० वर्ष तक राज्य करेंगे। (१) चन्द्रगुप्त, (२) विन्दुसार (३) अशोकवर्द्धन, (४) सुयशा, (५) दशरथ, (६) सङ्गत, (७) शालिशुक, (८) सोमशर्मा, (९) शतधन्वा और (१० वाँ) वृहद्रथ।

शुङ्गजातिके १० राजा ११० वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) पुष्पमित्र, (२) अग्निमित्र, (३) सुज्येष्ठ, (४) वसुमित्र, (५) आर्द्रक, (६) पुलिन्दक, (७) घोषवसु, (८) बज्रमित्र, (९) भागवत और (१० वाँ) देवमूर्त्ति।

वसुदेव नामक कण्व वंशी अपने स्वामी देवमूर्तिको मारकर राज्यसिंहासन पर बैठेगा। ३५ वर्ष तक उस वंशके ४ राजा राज्य करेंगे—(१) वसुदेव, (२) भूमिमित्र, (३) नारायण और (४ था) सुशर्मा।

क्षिप्रनामक अन्ध्रक वंशी अपने स्वामी सुशर्माको मारकर राजा होगा । उस वंशके ३० राजा ४५६ वर्ष तक राज्य करेंगे.—क्षिप्र, कृष्ण, श्रीशान्तकर्ण, पूर्णोत्सङ्ग, शाककर्णी, लम्बोदर, द्विविलक, मेघस्वाती, पटुमान, अरिष्टकर्मा, हालेय, पत्तलक, प्रविल्लसेन, सुनन्दन, शातकर्णी, चकोर, शातकर्णी, शिवस्वाति, गोमती, पुलिमान, शातकर्णी, शिवश्री, शिवस्कन्ध, यज्ञश्री, विजय, चन्द्रश्री, और पुलोमच । ये ४५६ वर्ष राज्य करेंगे ।

उसके पीछे ७९ राजा १३९९ वर्ष तक राज्य करेंगे; ७ आभीर, १० गर्द्दभिल, १६ शकवंशी, ८ यवन, १४ तुषार अर्थात् गोरा, १३ मुण्ड और ११ मौनेय । उसके पश्चात् पौर नामक ११ राजा ३०० वर्ष राज्य करेंगे इत्यादि । श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्धके प्रथम अध्यायमें भी यह वंशावली है ।)

भविष्यपुराणमें (१४ वाँ अध्याय)—कलियुगके राजाओंका वर्णन इस भाँति है;—

कुरुवंशी, इक्ष्वाकुवंशके राजा और मागधवंशके राजा एक हजार वर्ष तक.

कलिमें राज्य करेंगे	१०००
प्रद्योतवंशी ५ राजा	१३८
शिशुनाग आदि १० राजा	३६०
शूद्रीके गर्भसे उत्पन्न नन्दराजा और उसके ८ पुत्र	१००
चन्द्रगुप्त आदि मौर्य्यवंशी १० राजा...	१३७
शुङ्ग जातिके १० राजा	११०
कण्ववंशी	३४५
इनके सेवक शूद्र आन्ध्रवंशी ३० राजा	४५६
आभीर ७ राजा	१००
गर्द्दभीनामक १० राजा	९८
कङ्क नामक १६ राजा	२००
उज्जैनका विक्रमादित्य	१३५
शालिवाहन	१००
८ यवन और १६ तुरुष्क	३५०
गुरुण्ड नामक १० राजा	११६
मौन नामक ११ राजा	३००
भूतनन्द आदि राजा	१०५
बहुखण्ड राज्य	४१२
गौरमुख नामक राजा	१८०
हजारों राजा	३५०
विजयके वंशमें	५५०
नागार्जुन वंश	१०००
बलि राजाके घरानेमें	११००

उसके पीछे शूद्र म्लेच्छ आदि राजा होंगे, सब जगत् म्लेच्छमय होजायगा ।

वाढ़।
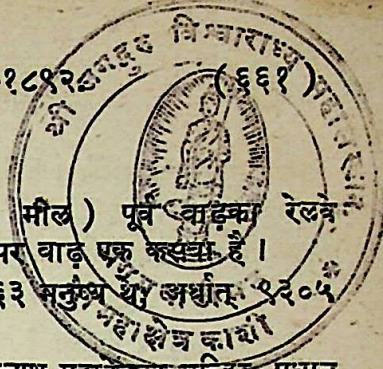
वख्तियारपुरसे ११ मील (बांकीपुर जंक्शनसे ३९ मील) पूर्व वाढ़का रेलवे स्टेशन है। सूबे विहारके पटना जिलेमें गङ्गाके दहिने किनारेपर वाढ़ एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वाढ़में १२३६३ मनुष्य थे; अर्थात् ९२०५ हिन्दू, २९६५ मुसलमान, ५० जैन और ४३ कृस्तान।

गङ्गाके किनारेपर देवताओंके कई मन्दिर, जिनमें उमानाथ महादेवका मन्दिर प्रधान है, वने हुए हैं। कसबेमें देशी पैदावारकी तिजारत होती है।

मोकामा जंक्शन।

मोकामा जंक्शनसे रेलवे लाईन ३ ओर गई है।

(१) मोकामा घाटसे उत्तरकी ओर बङ्गाल नर्थवेष्ट रेलवे;—

मील—प्रसिद्धष्टेशन।

२ मोकामाघाट।

३२ सेमरियाघाट (वोट द्वारा)

६० समस्तीपुर जंक्शन।

समस्तीपुरसे पश्चिमोत्तर ३२ मील मुजफ्फरपुर जंक्शन, ८१ मील मोतीहारी, ९४ मील मुगौली और १०८ मील वेतिया और समस्तीपुरसे २३ मील उत्तर दरभङ्गा।

मुजफ्फरपुर जंक्शनसे दक्षिण कुछ पश्चिम ३१ मील हाजीपुर और ३५ मील सोनपुर।

दरभंगा जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १४ मील कमतौल, २६ मील जनकपुर रोड, ४२ मील सीतामढ़ी और ६१ मील वैरगिनिया और दरभंगासे पूर्वोत्तर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ५३ मील भभटियाही, ६० मील राघवपुर ६७ मील प्रतापगञ्ज और ७५ मील कोशी नदीके दहिने कनवाघाट।

(२) मोकामासे पूर्व-दक्षिण इष्टइंडियन रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

२० लक्षीसराय जंक्शन (आगेके स्टेशन लक्षीसरायमें देखो)।

(३) मोकामासे पश्चिम इष्टइंडिययन रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१७ वाढ़।

२८ वख्तियारपुर।

५० पटना शहर।

५६ बाँकीपुर जंक्शन।

(आगेका स्टेशन। पटना और बाँकीपुरमें देखो)।

चौथा अध्याय।

(सूबे विहारमें) मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, बेतिया (स्वतंत्र) नैपाल और मुक्तिनाथ।

मुजफ्फरपुर।

मोकामा जंक्शनसे ६० मील उत्तर, कुछ पश्चिम, समस्तीपुर जंक्शन और समस्तीपुरसे ३२ मील पश्चिमोत्तर मुजफ्फरपुर रेलवेका जंक्शन है। सूबे विहारके पटने विभागके तिरहुतमें (२६ अंश ७ कला २३ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश २६ कला ५२

विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसबा, छोटी गण्डकी नदीके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर मुजफ्फरपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुजफ्फरपुर कसबेमें ४९१९२ मनुष्य थे; अर्थात् २७१६५ पुरुष और २२०२७ स्त्रियां। इनमें ३५१९६ हिन्दू, १३६३८ मुसलमान, २४९ कृस्तान, ३ पारसी १ यहूदी, और १०५ दूसरे थे (मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ७७ वाँ, बंगालमें १० वाँ और विहारमें ७ वाँ शहर है।

कसबा साफ है, इसकी सड़कें जो खास करके पूर्वसे पश्चिम गई हैं, अच्छी बनी हुई हैं। बाजारमें एक सीतारामका और दूसरा शिवका बड़ा मन्दिर और कचहरीके निकट एक बड़ा तालाब है। इनके आलावे मुजफ्फरपुरमें सिविल कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, और कई एक स्कूल हैं और छोटी गण्डकी और रेलवे द्वारा बड़ी तिजारत होती है।

मुजफ्फरपुर कसबेसे लगभग २० मील पूर्व, लखनदेई नदीके एक मील पश्चिम, अंबराई गाँवके निकट फागुन और वैशाखकी शिवरात्रिके समय भैरवनाथका मेला होता है और लगभग एक सप्ताह रहता है। मेले में बैल टट्टू और कपड़े बर्तन इत्यादि वस्तु बिकतीं हैं। वहाँ भैरवनाथ महादेवका मन्दिर है।

मुजफ्फरपुर जिला—यह जिला तिरहुतके, जो सन् १८७५ में दरभंगा और मुजफ्फरपुर दो जिले बने थे, पश्चिमी भागमें है। इसके उत्तर नैपालका स्वाधीन राज्य, पूर्व दरभङ्गा जिला, दक्षिण गङ्गा, बाद पटना जिला और पश्चिम चम्पारन जिला और बड़ी गण्डकी नदी, जो सारन जिलेसे इसको अलग करती है। जिलेकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ९६ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक ४८ मील और इसका क्षेत्रफल ३००३ वर्गमील है। छोटी गण्डकी नदी मुजफ्फरपुर कसबेके पास बहती है और बागमती, बड़ी गण्डकी, लखनदेई और बया जिलेकी प्रधान नदियाँ हैं। इस जिलेमें गाय बहुतायतसे पाली जाती हैं, उनके बच्चे दूर २ के देशोंमें खरीद होकर जाते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य—गणनाके समय २६८९४९२ और सन् १८८१ में २५८२०६० मनुष्य थे; अर्थात् २२६५३८० हिन्दू, ३१६३०८ मुसलमान और ३७२ कृस्तान। जातियोंके खानेमें २९९१३७ अहीर, १८९८२७ दुसाध, १७१६३७ भूमिहार, १६७५९४ राजपूत, १४१५५१ कोइरी, १३२८३७ चमार, ११५११७ कुर्मी, ९६२०६ ब्राह्मण, ८९८६३ माला, ८३१५२ काँदू, ५२७७३ धानुक और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। १८९१ में इस जिलेके कसबे मुजफ्फरपुरमें ४९१९२, हाजीपुरमें २१४८७, लालगञ्जमें १२४९२ मनुष्य थे। जिलेमें महनर, सरसोंधा, सीतामढ़ी, घटारो, बहिलबारा, कन्ता, शिवहर, मानिकचक, बसन्तपुर, धनौली, इत्यादि बड़ी बस्तियाँ हैं।

मोतीहारी।

मुजफ्फरपुरसे ४९ मील (समस्तीपुर जंक्शनसे ८१ मील) पश्चिमोत्तर मोतीहारीका रेलवे स्टेशन है। सूबे विहारके पटना विभागमें चम्पारन जिलेका सदर स्थान एक झीलके पूर्व किनारे पर मोतीहारी एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मोतीहारीमें १३१०८ मनुष्य थ, अर्थात् ९६०८ हिन्दू, ३४६१ मुसलमान, ३५ कृस्तान और २ बौद्ध। मोतीहारीमें छोटा बाजार,

सिविल आफिसं, जेलखाना, नीलकी कोठी, अफीमका आफिस, अस्पताल और स्कूल हैं। छपरेके जज दौरेके समय मोतीहारीमें जाकर कचहरी करते हैं।

अरेराज महादेव—मोतीहारीसे ४ या ५ मील पश्चिमोत्तर एक पोखरेके पास अरेराज गाँवमें महादेवका मन्दिर है। फाल्गुनकी शिवरात्रिको वहाँ मेला होता है और लगभग १ सप्ताह रहता है। किसान लोग धानकी बाल वहाँ चढ़ाते हैं। बालोंकी ढेर लगजाती है। बहुतेरे लोग शिवको पगड़ी चढ़ाते हैं, अर्थात् शिवके मन्दिरसे पार्वतीके मन्दिर तक पगड़ी लगा देते हैं। गाँवमें एक बहुत पुराना स्तम्भ है।

चम्पारन जिला—यह सूबे विहारके पश्चिमोत्तर कोनेमें पटना विभागका जिला ३५३१ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। जिलेके उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य; मुजफ्फरपुर जिला; दक्षिण मुजफ्फरपुर और सारन जिला; और पश्चिम पश्चिमोत्तर देशमें गोरखपुर जिला और नैपाल राज्यका एक हिस्सा है। जिलेका सदर स्थान मोतीहारी और प्रधान कसबा वेतिया है। जिलेके उत्तरीय भागमें ऊँची नीची भूमि है। गण्डकी नदी जो यहाँ शालिग्रामी कहाती है, और इस जिलेके पश्चिमी सीमा पर दूर तक वहती है, नैपाल राज्यमें बहती हुई त्रिवेणी घाटके निकट इस जिलेमें प्रवेश करती है। छोटी गण्डकी नदी जिसका नाम स्थान २ में भिन्न २ है, जिलेमें बहती है; जिसको बहुत स्थानोंमें सूखी ऋतुओंमें हलकर लोग पार होजाते हैं। बागमती नदी जिलेकी पूर्वी सीमापर बहती है। जिलेके भीतर १५० वर्ग-मीलके क्षेत्रफलमें ४३ झीलोंका लम्बा जञ्जीर है। छोटी पहाड़ी नदियोंकी बालू धोकर कुछ सोना निकाला जाता है। लोग कहते हैं कि पहले बहुत सोना निकलता था। सम्पूर्ण जिलेमें भूमिके नीचे कङ्कड़का एक तह है। जङ्गलोंमें सोबीता नामक घास, जिसके रस्से बनथे हैं, नरकट, जिसकी चटाई बनती है; मधु, मोम, लाही इत्यादि वस्तु होती हैं।

जिलेमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १८५४०३८ और सन् १८८१ में १७२१६०८ मनुष्य थे; अर्थात् १४७६९८५ हिन्दू, २४२६८७ मुसलमान और १९३६ क्रस्तान। जातियोंके खानेमें १६९२७४ ग्वाला, ११२७८९ चमार, १०३८९३ कोइरी, ८८७३१ कुर्मी, ८१९६१ दुसाध, ८०७६४ राजपूत, ७६,२८४ ब्राह्मण, ६६५६२ काँदू, ५५४११ मलाह, ५३८४२ तेली, ४२८० मुंइहार, ३८४११ कायस्थ, शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय चम्पारन जिलेके कसबे वेतियामें ३२७८० और मोतीहारीमें १३१०८ मनुष्य थे। जिलेमें मधुबनी और केसरिया छोटे कसबे हैं और बेतिया सीताकुण्ड, अरेराज और त्रिवेंणी घाटमें सालाना मेला होता है।

इतिहास—चम्पारन जिलेका कोई खास इतिहास नहीं है सन् १८६६ ई० में सारन जिलेके दो भाग करके चम्पारन जिला बनाया गया। अवतक सारनके सेशन जज नियत समय पर छपरेसे आकर मोतीहारी कचहरीमें करते हैं। जिलेके कई एक स्थानोंमें दिलचस्प पुरानी निशानियाँ हैं। सन् ई०से पंहिले चम्पारन जिला मगधके राज्यका एक भाग था। अरेराज गाँवमें एक बहुत पुराना स्तम्भ और केसरिया गाँवमें एक ईटेका बड़ा टीला, जिसके ऊपर ६२ फीट ऊँचा ६८ फीट व्यासके ईटेका बहुत पुराना स्तूप है, दखनेमें आता है।

सन् १८५७ के बलवेके समय जुलाईमें सुगौलीमें सवारोंकी १२ वीं पल्टन अचानक बागी हो गई । सवारोंने अपने कमांडर और उसकी स्त्री और लड़कोंको तथा छावनीके सम्पूर्ण यूरोपियनोंको मार डाला ।

बेतिया ।

मोतीहारीसे २७ मील और मुजफ्फरपुरसे ७६ मील पश्चिमोत्तर बेतियाका रेलवे स्टेशन है । बिहारके चम्पारन जिलेमें सबसे बड़ा कसबा, प्रधान तिजारती जगह और सबडिबीजनका सदर स्थान हड़हा नदीके पास बेतिया है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बेतियामें २३७८० मनुष्य थे, अर्थात् १४६६८ हिन्दू, ६८७८ मुसलमान और १२३४ क्रस्तान ।

बेतियामें यहाँके महाराजका उत्तम महल बना हुआ है और एक रोमन कैथलिक चर्च, जो सन् १७४६ ई० में बना था, और खैराती अस्पताल है । प्रतिवर्ष दशहरेके समय बेतियामें कालीका बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग ३०००० मनुष्य आते हैं और घोड़े, बैल, गाय, भैंस, कपड़ा, बर्तन, मिठाई, किरानेकी चीजें आदि वस्तु बिकती हैं । मेला १५ दिन तक रहता है । महाराजके महलके पास कालीजीके मन्दिरमें कालीकी विचित्र प्रतिमा बनाकर रक्खी जाती है । अन्तमें उसको लोग नदीमें बहा देते हैं ।

इतिहास—सन् १६५९ ई० में राजा गजसिंहने बेतियाको बसाया । दिल्लीके बादशाह शाहजहाँने उनको राजाकी पदवी दी थी । सन् १८३० में लार्ड विलियम बेंटिंगने उस समयके राजाको महाराजकी पदवी दी । बेतियाके महाराज सर हरेन्द्रकिशोरसिंह बहादुर के. सी. आई. ई. के पिता महाराज इन्द्रकिशोरसिंह बहादुर बड़े दानी थे ।

रामनगर—बेतियासे २३ मील पश्चिमोत्तर चम्पारन जिलेमें रामनगर, जो केवल महाराजके रहनेसे प्रसिद्ध है, एक बस्ती है । वहाँके राजा क्षत्री हैं, जिनके पुरुषोंको दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबने सन् १६७६ ई० में राजाकी पदवी दी थी, और अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने सन् १८६० ई० में उस पदवीको दृढ़कर दिया । राज्यकी मालगुजारी खास करके रामनगरके जङ्गलोंसे आती है ।

नैपाल ।

मोतीहारी और बेतियाके बीचमें मोतीहारीसे १३ मील और मुजफ्फरपुरसे ६२ मील पश्चिमोत्तर सुगौलीमें रेलवेका स्टेशन है । यात्री लोग वहाँ रेलगाड़ीसे उतर कर नैपालके काठमांडूमें पशुपतिनाथके दर्शनके लिये जाते हैं । सुगौलीसे उत्तर पहाड़ी मार्गसे ९० मील काठमांडू है । सुगौलीसे भीमपदी तक ६६ मील जानेके लिये गाड़ी और पालकीकी सवारी मिलती हैं । प्रत्येक कहारका भाड़ा ३ रुपयेसे कम लगता है । भीमपदीसे उत्तर पहाड़के ऊपर जानेके लिये छींका (कण्डी) और झूलाकी सवारी मिलती है । छींका बाँस या बेंतका एक टोकड़ा है, जिसको नैपाली लोग बोको कहते हैं । पहाड़ी कूली उसमें आदमीको बैठाकर पीठपर पीछे लटका लेते हैं और एक लाठी हाथमें लेकर उसीके सहारेसे चलते हैं ।

काठमांडूका मार्ग—सुगौलीके रेलवे स्टेशनसे १७ मील रकसौल, ३० मील सिमरा-वासा, ४० मील विचकी, ४६ मील चूड़ियाघाटी, ५२ मील हिटाई, ६६ मील भीमपदी, ६८ मील सीसागढ़ी, ७१ मील ताम्बाखानि, ७९ मील चिटङ्ग, ८१ मील थानकोट और ९० मील काठमांडू है। इन सब स्थानोंमें रहनेके लिये मकान और खाने पीनेका सब सामान मिलता है।

सुगौलीके स्टेशनसे हर्दिया कोठीकी राह होकर १७ मील उत्तर अङ्गरेजी और नैपाल राज्यकी सीमापर रकसौल है। सुगौलीसे रकसौल तक रेल वनानेकी तजवीज होती है। रकसौलसे आगे १३ मील सिमरा वासा है। सिमरा वासासे नैपाली तराईका जङ्गल आरंभ होता है और जङ्गलके बीचमें वालू और कंकड़की राहसे १० मीलपर विचकी नामक स्थानपर पहुँचना होताहै। विचकीसे ६ मील चूड़ियाघाटी तक पहाड़ी रास्ता है। चूड़िया-घाटीसे हिटाइ तक ६ मील नीचा ऊँचा कठिन रास्ता मिलता है। सम्पूर्ण मार्गके पासकी भूमि वाँस और वृक्षोंके घने जङ्गलसे ढंकी हुई है। हिटाईसे आगे १४ मील भीमपदीतक तीव्रगामिनी नदीके किनारे मार्ग वहुत सुन्दर है। भीमपदी हिमालयके पाँवपर स्थित है। वहाँ वाजार और गोले हैं। वहाँतक वैल और टट्टू जाते हैं और हलकी गाड़ी भी जा सकती है। उससे आगे केवल कूली बोझ लेजाते हैं। भीमपदीसे करीव २ मील सीसागढ़ी किलेतक कड़ीचढ़ाई है, जहाँ नैपालके महाराजके अफसर रहते हैं। सीसागढ़ीसे आगे ३ मील तांवाखानि तक पानीनी नामक नदीके किनारे मार्ग क्रमशः नीचाही होता चला गया है। ताम्बाखानिसे आगे ८ मील चिटङ्गतक मार्ग बड़ा दुस्तर है। राह सर्वत्र ढालू है। इस रास्तेसे धीरे धीरे पाँव रखकर बड़े भयसे चलना होता है। जगह जगह समतल भूमि है, जहाँ थक जानेसे आदमी विश्राम कर लेता है। चिटङ्गसे उलटी सीधी चक्रदार राहसे च[illegible] गढ़ी पहुँचना होता है। वहाँसे फिर नीची भूमि मिलती है। ढालू मार्गसे २ मी[illegible] उतर कर थानकोटमें यात्री पहुँचते हैं। थानकोटसे आगे ९ मील काठमांडू तक मार्ग सुन्दर और चौड़ा है।

काठमांडू—नैपालकी राजधानी काठमांडू (२७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश १२ कला पूर्व देशान्तरमें) हिमालय पहाड़की एक घाटीमें समुद्रके जलसे लगभग ४५०० फीट ऊपर विष्णुमती और वागमती नदीके संगमके निकट; विष्णुमतीके पूर्व किनारे पर एक सुन्दर शहर है। विष्णुमती नदीपर दो पुल वने हैं, जिनमेंसे एकपर होकर एक सड़क शहरसे हथियार खाना और परेडकी भूमि तक और दूसरे पर होकर दूसरी सड़क सीधी शम्भुनाथके मन्दिरको गई है। शहरके मकान जो खासकर ईंटोंसे वने हुए, और खपड़ेसे छाये हुए हैं, २ मञ्जिलेसे ४ मञ्जिले तक वने हैं। उनमेंसे वहुतेरोंमें काठका वहुत काम है और खिड़कियाँ तथा वालाखाने वने हैं; जिनमें उत्तम नकाशीका काम है। काठमांडूमें कभी मनुष्य गणना नहीं हुई; किन्तु शहरमें ५००० मकान और ५०००० मनुष्य अनुमान किये गये हैं। शहरकी सड़कें तङ्ग और मैली हैं। महाराजका महल, दरवार स्कूल वीर अस्पताल इत्यादि मकान देखने योग्य हैं। शहरकी सम्पूर्ण सड़क और गलियोंके वगलों में देवमन्दिर देख पड़ते हैं। शहरके पूर्वोत्तर फाटकसे दक्षिण राजा प्रतापमाली और उसकी रानीका वनवाया हुआ रानीपोखरी नामक तालावके मध्यमें एक मन्दिर है। तालावके

पश्चिम किनारेपर एक लम्बा पुल बना है । परेडकी भूमिसे पश्चिम पूर्व समयके नैपाल राज्यके प्राइमिनिष्टर जनरल भीमसेन थापाका बनवाया हुआ एक पत्थरकी नेवपर २५० फीट ऊँचा सुन्दर स्तम्भ है। बागमतीके किनारेपर नैपालके प्राइमिनिष्टर सर जंगबहादुरके बनवाये हुए मन्दिरके पास एक ऊँचे स्थानपर सर जंगबहादुरकी प्रतिमा खड़ी है। काठमांडूसे लगभग १ मील दक्षिण बागमतीके उत्तर किनारेपर पुलके पास एक बड़ी इमारत है, जिसमें सर जंगबहादुर रहते थे । शहरसे १ मील उत्तर अङ्गरेजी रेजीडेन्टके रहनेकी कोठी है। शहरसे पूर्वोत्तर गत प्राइमिनिष्टर सर रणोद्दीपसिंहके रहनेका स्थान फैला हुआ है। काठमांडू और इसकी शहर तलियोंमें लगभग १२००० फौज और १५० तोपें रहती हैं और कई एक मेगजीन बने हैं । काठमांडूके पड़ोसमें भातगाँव, पाटन और थानकोट कसबे हैं। काठमांडूके निवासियोंमें नेवार जातिके आदमी अधिक हैं। इनमेंसे लगभग आधे बौद्धमतावलम्बी हैं।

काठमांडूसे २ मील दक्षिण, पूर्वको झुकता हुआ, बागमती नदीके पार ललितपट्टन कसबा और ८ मील पूर्व, अग्निकोनको झुकता हुआ भातगाँव कसबा है, जिसमें गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर और महाराजका एक महल बना है और ब्राह्मण बहुत बसते हैं। काठमांडूसे ४१ मील पश्चिम वायुकोनको झुकता हुआ गोरखा बस्ती है, जिसमें गोरखनाथका एक मन्दिर बना हुआ है।

महाराजका महल—शहरके मध्यमें पत्थरसे बना हुआ बहुत बड़ा महाराजका महल है। इसमें उत्तम प्रकारसे नकाशीका काम हुआ है। महलके उत्तर तालीजूका मन्दिर; दक्षिण बसन्तपुर और नया दरवार, पूर्व शाहीवाग और अस्तवल और पश्चिम महलका प्रधान अग्रभाग है । महलके आगे सुन्दर सड़क और बहुतेरे देवमन्दिर हैं, जिनमेंसे बहुतेरोंके शिखरमें एकहरी, दोहरी तथा तेहरी चौकूटी अर्थात् एक प्रकारकी छाजनी, जो मुलम्मेदार तांबेके पत्तर या पीतलके पत्तरोंसे छाई हुई हैं, बनी हैं । चकूटियोंके चारों बगलोंकी ओरियानिओंमें बहुतेरी छोटी घंटियां, जो हवेसे बजती हैं लगी हैं। मन्दिर उत्तम नकाशी और रंगोंसे भूषित है । कई एक मन्दिरोंके द्वारके पास पत्थरके २ बड़े सिंह बने हुए हैं और कई एकके आगे गरुड़की प्रतिमा है । महलसे कुछ दूरपर एक मन्दिरके निकट पत्थरके २ स्तंभोंमें एक बहुत बड़ा घण्टा लटका है और एक मकानमें ८ फीट व्यासवाले २ बड़े नक्कारे रक्खे हुए हैं। महलके अग्र भागके आगे सड़क है।

तालीजूका मन्दिर—राजमहलके पास उत्तर ओर ऊपर लिखे हुए मन्दिरोंके ढांचेका तालीजूका विशाल मन्दिर है। लोग कहते हैं कि सन् १५४९ में राजा महेंद्रमालीने इसको बनवाया। केवल राजपरिवारके लोग इसमें पूजा करते हैं।

मुछंदरनाथका मन्दिर—बागमती नदीके पास मुछंदरनाथका सुन्दर मन्दिर है। मुछंदरनाथ नैपालके प्रधान देवता हैं। लोग इनको नैपालका रक्षक समझते हैं। मेषकी संक्रांतिके दिन बड़ी धूमधामसे मुछंदरनाथकी रथयात्राका उत्सव होता है।

कथा ऐसी है एक समय नैपालमें १२ वर्ष अवर्षण हुआ। लगभग सन् ४३७ ई० में नरेंद्रदास नामक एक नैपाली राजा एक प्रसिद्ध बौद्ध संतको आसामसे नैपालमें लाया। संतके आनेपर बड़ी वर्षा हुई और अकाल जाता रहा। तब नरेंद्रदासने उस संतके स्मरणार्थ

उसके नामसे मुछेन्दरनाथका मन्दिर बनवाया और एक सालाना तिहवार नियत किया, जो अबतक होता है और सब तिवहारोंसे बड़ा समझा जाता है।

पशुपतिनाथका मन्दिर—महाराजके महलसे १ कोस उत्तर एक चौगानके भीतर पशुपतिनाथका मन्दिर है, जिसके चारोंओर दरवाजे और दालान बने हैं। मन्दिरके मध्यमें प्रायः ३ हाथ ऊंची पाषाणमयी पञ्चमुखी पशुपतिजीकी मूर्त्ति है। मूर्त्तिके चारोंओर लोहेका जंगला बना है। मन्दिरके एक तरफ दालानसे बाहर सोनहला मुलम्मेदार बहुत बड़ा नन्दी और एक तरफ दालानमें घण्टा है। मन्दिरके पूर्व तरफ विष्णुमती नदी बहती है, जिसमें यात्री लोग स्नान करते हैं। नदीपर बड़ा पुल है, जिससे होकर भातगांव जाना होता है। जो लोग गङ्गाजल लेजाते हैं, वे उसको पंडाओं द्वारा पशुपतिनाथपर चढ़ाते हैं। मन्दिरके समीप बहुतेरी पक्की दो मंजिली धर्मशालाएँ बनी हैं, जिनमें यात्री लोग टिकते हैं।

फाल्गुनमें पशुपतिनाथके दर्शनका मेला होता है। कृष्णपक्षकी शिवरात्रिके दिन मन्दिरमें बड़ी भीड़ होती है। कभी कभी उसदिन नैपालके महाराज पशुपतिनाथके दर्शनके लिये आते हैं। दूसरे तीर्थोंके समान नैपालके पण्डे यात्रियोंसे कुछ हठ नहीं करते। वे थोड़ेहीमें प्रसन्न होजाते हैं। मन्दिरके आसपास कई मीलोंके बीचमें अनेक देव देवियोंके मन्दिर हैं, जिनमें गुह्येश्वरी, वागीश्वरी और गणेशजी प्रसिद्ध हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—लिंगपुराण—(७ वां अध्याय) पिशाचसे देवता पर्य्यंत सब जीव पशु कहाते हैं, उन सबका स्वामी होनेसे शिवजीका नाम पशुपति पड़ा है।

दूसरा शिवपुराण (८ वां खण्ड—१५ वां अध्याय) नैपालमें पशुपतिनाथ शिवलिंग हैं, वे महिष भाग अर्थात् भैंसेके शरीरके एक भाग हैं।

(२७ वां अध्याय) जब राजा पाण्डुके लड़के केदारमें गए, कि केदारेश्वरके दर्शन करके अपने पापोंसे छूटें; तब शिवजी भैंसेका रूप धरकर वहांसे भाग चले। उस समय उन्होंने अति प्रेमसे यह विनय किया कि हे प्रभो जो पाप हमको महाभारतके युद्धमें हुआ है, उसको तुम दूर करो और इसी स्थानपर स्थित होजाओ। तब शिवजी अपने पिछले धड़से उसी स्थानपर स्थित होगए और अगले धड़से नैपालमें जा विराजे। वह हरिहर रूपसे वहां सबको सुख देते हैं।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध-१३९ वां अध्याय) वाराहजी बोले कि नैपाल नामक स्थानमें जो पशुपति नामक शिवजी हैं उनके जटाजूटसे श्वेतगङ्गा नामक तीर्थ प्रकट हुआ; जिससे छोटी छोटी अनेक नदियां निकलकर गण्डकी, कृष्णा, आदि नदियोंमें मिलीं। और त्रिशूलगङ्गा नामक एक नदी निकली, जिसमें अनेक पवित्र नदियाँ आकर मिल गईं। इन सब नदियोंका सङ्गम अति पवित्र है।

(२०९ वाँ अध्याय) शिवजीने देवताओंसे कहा कि हम हिमवान पर्वतके तटमें नैपाल नामक देशमें पृथ्वीको भेदन कर चारमुख धारण करके उत्पन्न होंगे, तब हमारा नाम शरीरेश होगा। वहाँ हम घोर नागह्रद नामक कुण्डके जलमें ३० हजार वर्ष तक निवास करेंगे। जब वृष्णि कुलमें उत्पन्न होकर श्रीकृष्णजी इन्द्रकी सम्मतिसे दैत्योंके बधके निमित्त निज चक्रसे पर्वतको तोड़कर दानवोंका संहार करेंगे; तब वह देश म्लेच्छों करके सेवित होगा अर्थात् दानवोंके मारनेके अनन्तर वहाँ म्लेच्छ निवास करेंगे। तिसके कुछ काल बीतनेपर

सूर्य्यवंशके क्षत्रिय आकर उन म्लेच्छोंका संहार कर उत्तम उत्तम कुलके ब्राह्मणोंको वसावेंगे और चारों वर्णोंको स्थापन कर हमारे लिङ्गकी प्रतिष्ठा करेंगे । उस लिङ्गको पूजनेसे चारों वर्णोंके मनुष्य सब भाँतिके सुखको प्राप्त करेंगे ।

नैपालराज्य—तिव्वत और अङ्गरेजी राज्यके बीचमें हिमालयके दक्षिणी सिलसिलेपर नैपाल स्वाधीन राज्य है। इसके उत्तर तिव्वतकी सीमापर कुचक्रता; पश्चिम काली नदी, जिसको शारदा भी कहते हैं, बाद अङ्गरेजी राज्यके कमाऊँ देश, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण अङ्गरेजी राज्यमें पीलीभीत, खीरी, बहराइच, गोंड़ा, वस्ती, गोरखपुर, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभङ्गा, भागलपुर और पुर्नियाँ जिले और पूर्व सिङ्गाथारोज और शिकमके पहाड़ी राज्य हैं। नैपालकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग ५०० मील और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको ७० मीलसे १५० मील तक और इसका क्षेत्रफल अनुमानसे ५४००० वर्ग-मील है । राज्यकी अनुमानकी हुई मनुष्य-संख्या २०००००० और मालगुजारी १००००००० रुपयेसे अधिक है। राजधानी और उसके आसपासके देशमें १७००० और राज्यमें १३००० फौज रहती हैं।

नैपाल राज्यका पहाड़ी सतह अत्यन्त ऊबर खाबर अर्थात् नीचा ऊँचा है । इसकी ऊँची चोटियोंमेंसे एवरेस्ट पर्वत समुद्रके जलसे २९००० फीट ऊँचा है । पृथ्वीके जितने पहाड़ देखनेमें आते हैं, उन सबोंसे यह ऊँचा है। उत्तरीय सीमाकी सम्पूर्ण चोटियाँ सर्वदा रहनेवाली वर्फकी चोटियोंके वरावर या उनसे अधिक ऊँची हैं। और राज्यकी दक्षिण सीमाका देश, जो तराइ कहलाता है और उसपर खेतीकी भूमि फैली है, नीचा और तर है । पहाड़ी घाटियाँ, जो वङ्गालके मैदानसे ३००० से ६००० फीट तक ऊपर हैं, बहुत तङ्ग हैं। काठमांडूकी घाटी समुद्रके जलसे लगभय ४००० फीट ऊँची, पूर्वसे पश्चिमको लगभग २० मील लम्वी और उत्तरसे दक्षिणको प्रायः १५ मील चौड़ी है। ऊँची जगहोंपर सर्दी अधिक रहती है।

जङ्गलोंमें जङ्गली जन्तु वहुत हैं । निचली और मध्यकी पहाड़ियोंमें अव तक हाथी रहते हैं। तराईमें गेंडा, बाघ और तेंदुए बहुत होते हैं । वनोंमें बेश कीमती लकड़ियाँ, जो दूसरे देशोंमें जाती हैं, वहुतायतसे हैं । पहाड़ियोंमें लोहा, ताँबा और गन्धककी वहुत खान हैं और मार्वुल आदि कई प्रकारके उत्तम पत्थर वहुत होते हैं, किन्तु गाड़ीके मार्ग नहीं होनेके कारण वे काममें नहीं लाये जाते। पहाड़ियोंमें स्लेट बहुत हैं । नैपाल राज्यमें वनाई हुई सड़क बहुत कम हैं; किन्तु सूखी ऋतुओंमें गाड़ी और वैल चलते हैं । नदियोंमें नाव नहीं चलती हैं, किन्तु लोग उनमें लकड़ी बहाकर दूर दूर तक ले जाते हैं ।

गल्ले, तेलके अनेक प्रकारके बीज, मवेसी, घी, लकड़ी चमड़ा मसाला इत्यादि नैपाल राज्यसे अन्य देशोंमें जाते हैं और ऊनी और रेशमी असवाव नमक, चीनी, रुई इत्यादि वस्तु दूसरे देशोंसे नैपालमें आती हैं। तेजपात और वड़ी इलायची वहुत उत्पन्न होती हैं। नैपालमें चाँदीका सिक्का मोहर कहलाता है और दो मोहरका मोहरी रुपया होता है। एक मोहरका दाम अङ्गरेजी रुपयेका ६ आना ८ पाई होता है। ताँवेके पैसे ३ प्रकारके होते हैं;—(१) बुटवलिया, जिसको गोरखपुरी भी कहते हैं (२) लोहिया और (३) गोल-पैसा। ये तीनों पैसे उत्तरीय भारतके अङ्गरेजी राज्यमें चलते हैं।

नैपालके राज्यमें पहाड़ीके पादमूलके पास कालीगङ्गा नामक नदीके किनारे पर मकरकी संक्रान्तिके समय देवघाटका मेला होता है। मेला लगभग दो सप्ताह रहता है। उसमें कपड़ा, वर्तन, मसाले इत्यादि वस्तु बिकती हैं। नैपाल और अंगरेजी राज्यके बहुत लोग मेलेमें जाते हैं। नदीके दूसरे पार पहाड़ीपर देवनाथ महादेवका मन्दिर बना हुआ है। नदीमें पार उतारनेवाली नाव रहती हैं। व्यापारी लोग बेतियासे चार पांच दिनमें देवघाट पहुँचते हैं।

नैपालकी राजधानी काठमांडू है। गोरखा और ललितापट्टन भी अच्छे कसबे हैं। इस राज्यके मनुष्योंके प्रधान भोजनकी वस्तु चावल है। बहुतेरे भागोंमें वर्षमें ३ फसिल होती हैं। पहाड़ियोंमें किसी किसी जगह हल और बैलगाड़ी देखनेमें आती हैं। वहांके लोग खेत बोनेका काम हाथसे करते हैं। भेड़ और बकरियोंपर बोझ लादे जाते हैं। तराईमें अफीम, तेलहन और तम्बाकू बहुत उत्पन्न होते हैं।

इस राज्यमें तातारी और चीनी नसलकी बहुत जात हैं। देशी निवासीमें नेवारा बहुत बौद्ध मतवाले हैं। राजवंशके लोग, जिनकी संख्या कम है, गोरखा कहलाते हैं। उनकी भाषा हिन्दीके समान है। वे लोग छोटे कदके होते हैं; परन्तु बड़े लड़ाके हैं। सरकार अङ्गरेज बहादुरकी फौजमें गोरखोंकी कई पल्टन हैं। राज्यके पूर्वी भागमें आदि निवासी कौम; पश्चिमी भागमें नागर, सुरङ्ग, नेवार, लेंवू, लेपचा, भूटिया, कासवार, थारू इत्यादि बहुत बसते हैं। राज्यके प्रधान निवासी गोरखाली हैं, उनमें ब्राह्मण तो पाण्डे और उपाध्याय और राजपूत कुश और थापा कहलाते हैं।

भारत गवर्नमेंटने सन् १८२९ ई० में सती होनेकी रीति उठा दी, पश्चात् क्रम क्रमसे भारतवर्षके देशी राज्योंसे भी यह चाल उठ गई; किन्तु स्वाधीन हिन्दू राज्य नैपालमें यह प्रथा अबभी प्रचलित है। जो स्त्री अपने पतिके मरनेपर सती होनेकी इच्छा प्रकट करती है, वह अपने पतिकी रथीके सङ्ग एक दूसरी रथीपर चढ़कर सिन्दूर अपने शरीरमें लगाकर अक्षत इत्यादि कई वस्तु छीटती हुई बहुत लोगोंके साथ श्मशानमें पहुँचती है। वहाँके लोग एकही चितापर मृतकके सङ्ग उस स्त्रीको सुलाकर जलाते हैं। जलनेके समय कई आदमी बाँससे उस स्त्रीको दबाये रहते हैं।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि काठमांडू शहरका नाम पहले मंजुपाटन था, क्योंकि उसको मंजुश्रीने बसाया। बौद्ध नेवारा लोग कहते हैं कि मंजुश्रीकी तलवारकी शकलमें यह शहर बसा हुआ है। लगभग सन् ७२३ ई०में राजा गुनकमदेवने काठमाण्डूको नियत किया। इसका वर्तमान नाम एक पुराने काठके मकानसे काठमण्डी हुआ। काठमण्डीका अपभ्रंश काठमाण्डू है। इस देशमें मंदिर और मकानको लोग मण्डी कहते हैं।

नैपालका वर्तमान राजवंश गोरखा छत्री है। राजपूताने-मेवाड़के चित्तौड़गढ़का सिसोदिया राजपूत समरसिंह, जिसका विवाह दिल्लीके राजा पृथ्वीराजकी बहनसे हुआ था सन् ११९३ ई०में महम्मदगोरीकी लड़ाईमें अपने शाले पृथ्वीराजके साथ मारा गया। समरसिंहका बड़ा पुत्र कल्याण अपने पिताके साथ परलोकको सिधारा। दूसरा पुत्र कुम्भकर्ण बीदरको चला गया और तीसरा पुत्र कमाऊँमें जा बसा। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसके वंशधर लोग पीछे पहाड़ी कन्याओंसे विवाह करने लगे और गोरखामें, जो नेपाल राजमें काठमाण्डूसे पश्चिमो-

त्तरकी ओर एक अच्छा कसवा है, जाकर रहने लगे। वहाँ वे लोग करीब दोसौ वरस तक रहे, उसके पश्चात् खास नैपालके साथ उनका सम्वन्ध हुआ। गोरखामें रहनेके कारणसे वे लोग गोरखा जाति कहे जाते हैं।

नैपालके प्राचीन कालका इतिहास ठीक तौरसे ज्ञात नहीं होता है; किन्तु ऐसा जान पड़ता है कि किसी एक राजाने बहुत काल तक राज्य न किया। इस राज्यको कोई दिल्लीके बादशाह या कोई दूसरे एशियाके विजय करने वाले अपने अधिकारमें कभी नहीं लाये। ऐसा कहा जाता है कि अवधके राजाओंमेंसे एक राजा हरीसिंहने, जिसको मुसलमानोंने निकाल दिया था, सन् १३२३ ई० में इसको पूरी तौरसे जीता, किन्तु उसके पीछेका वृतान्त ज्ञात नहीं होता है कि कब कौन राजा हुआ। भातगाँवके सूर्यवंशी राजाओंमें; जिन्होंने नैपालमें राज्य किया था, रणजीतमल अन्तिम राजा था। उसने काठमाण्डूके विरुद्ध पृथ्वीनारायणसे मित्रताकी उस मित्रताका फल यह हुआ कि सन् १७६८ ईस्वीमें पृथ्वीनारायणने उसका राज्य ले लिया। गोरखा लोग सन् १७६९ में राजाको पाटनमें जीत करके सम्पूर्ण घाटीके मालिक वन गये और काठमांडूमें आ वसे और धीरे धीरे नैपालकी पहाड़ियों और घाटियोंको अपने अधिकारमें लाए। सन् १७७१ में पृथ्वीनारायण मर गये। सन् १७७५ में उनके पुत्र सिंहप्रताप अपने बच्चे पुत्र रणवहादुरशाहको छोड़कर मर गये। लगभग सन् १७९२ ई० में भारतवर्षके गवर्नरजनरल लार्ड कर्नवालिसने नैपालियोंके साथ एक तिजारती सन्धिकी।

गोरखे लोग कभी पूर्वमें शिकमपर, कभी पश्चिम कमाऊँपर और कभी दक्षिण ओर गङ्गाके मैदानोंपर चढ़ाई करते थे। जब गङ्गाके मैदानमें अङ्गरेजी प्रजाको उनसे दुःख पहुँचा, तव अङ्गरेजी सरकारने नैपालपर चढ़ाई की। सन् १८१४ की पहली चढ़ाईमें अङ्गरेजी सेना परास्त हुई, किन्तु उसी साल गरमीके मौसिममें जनरल अक्टरलोनीने सतलज नदीसे फौज उतारकर एक एक करके नैपालियोंके पहाड़ी किले जीत लिये। वह किले हिमालयकी रियासतोंमें पञ्जाव गवर्नमेन्टके आधीन अवतक विद्यमान हैं। दूसरे साल सन् १८१५ ई० में अक्टरलोनीने वड़ी तेजीके साथ पटनेसे काठमांडूकी ऊपरी खाड़ीपर चढ़ाई करदी। जब अङ्गरेजी फौज राजधानीके निकट पहुँची, तव नैपालियोंने सुलह किया। तारीख २८ नवम्बर सन् १८१५ में सन्धि हुई। और ता० ४ मार्च सन् १८१६ में सुगौलीमें अहद-नामा पक्का हुआ। उसके अनुसार पूर्वमें शिकमके राजाकी भूमि, जो नैपालियोंने दवाली थी, उसको लौटा दी और पश्चिममें काली नदी नैपाल राज्यकी पश्चिम सरहद ठहरी। नैनीताल, मन्सूरी और शिमलाकी सेहत देनेवाली जगहें अङ्गरेजोंके हाथ आई और काठमांडूमें एक रेजीडण्टका रहना करार पाया; परन्तु दूसरे देशी राज्योंके समान नैपालमें राज कार्य्यमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार रेजीडण्टको नहीं है। यह स्वाधीन हिन्दू राज्य है।

सन् १८१६ ई० में नैपालके महाराजाधिराज रणवहादुर शाह २१ वर्षकी अवस्थामें परमधाममें गये। उनकी स्त्रियोंमेंसे १ स्त्री और रखेलिनियोंमेंसे १ रखेलिनी ५ लौंडियों सहित उनके साथ सती हो गई। रणवहादुर शाहके पुत्र महाराजाधिराज राजेन्द्र विक्रमशाह उत्तराधिकारी हुए।

एक ऊँचे दरजेके आदमीका भतीजा सर जङ्गबहादुर हालके प्राइ मिनिष्टर थे; जो रानीके कहनेसे अपने चचाको मारकर फौजका कमाण्डर बने और नई मिनिष्टरी कायम

हुई। थोड़ेही दिन बाद नया प्रधानमन्त्री मारा गया और जंगवहादुर सन् १८४६ ई० में प्राइमिनिष्टर हुए। उसके पश्चात् जंगवहादुरको मारनेके लिये कपट प्रवन्ध हुआ, किन्तु जंगवहादुरने कपट प्रबन्ध करने वालेके साथियोंको मारडाला। रानी अपने दो पुत्रोंके साथ देशसे निकाली गई, राजाभी उनके साथ गये। राजाके वारिश महाराजाधिराज सुरेन्द्र-विक्रमशाह राजसिंहासनपर बैठाये गये कुछ दिनके बाद पहले राजा राजेन्द्रविक्रमशाह अपना राज्य पानेका उद्योग करने लगे, किन्तु जंगवहादुरने अपनी चतुरतासे उनका मनोरथ सफल होने नहीं दिया; राजा कैदी बनाये गये।

जंगवहादुर सर्वदा अङ्गरेजी सरकारके मित्र थे। सन् १८५७ के बलवेमें उन्होंने अङ्गरेजोंको गोरखोंकी फौजकी सहायता देकर अपनी मित्रताका सच्चा परिचय दिया था। जंगवहादुर सन् १८७७ ई० की तारीख २५ वीं फरवरीको मर गये, उनके साथ एक बड़ी रानी और २ छोटी रानियाँ सती हो गईं।

जंगवहादुरके बाद उनका भाई रणोद्दीपसिंह प्राइमिनिष्टर हुआ। सन् १८८५ के नवम्बरमें सर जंगवहादुरके एक भतीजे वीरशमशेरजंगने रणोद्दीपसिंह और जंगवहादुरके एक लड़के और एक पोतेको मारडाला और आप प्राइमिनिष्टर वन गया। नैपालके वर्तमान राजा हिज हाईनेस शमशेर जंगवहादुर युवा अवस्थाके हैं।

मुक्तिनाथ।

काठमांडूसे उत्तर गण्डकी नदीके बाँये किनारे मुक्तिनाथ एक तीर्थ है। दस वारह दिनमें काठमांडूसे लोग वहाँ पहुँचते हैं। मार्ग पहाड़ी है। वहाँ गण्डकी नदीमें, जिसको शालग्रामके निकलनेके कारण लोग शालग्रामी और नारायणी नदी भी कहते हैं, बूड़ी मारने योग्य जल नहीं है। नदीमें विविध भाँतिके सुन्दर असंख्य शालग्राम निकलते हैं। यात्रीगण वहाँसे अनेक शालग्राम अपने गृहको ले आते हैं। नदीके आसपास छोटे बड़े पन्द्रह वीस देवमन्दिर बने हुए हैं और ७ गर्म सोतोंसे पानी निकलकर नारायणी नदीमें गिरता है। उनमेंसे अग्निकुण्डका सोता एक मन्दिरके भीतर पहाड़से निकलता है। उसके पानी पर ज्वालामुखीकी गोरखडिब्बीके समान अग्निकी ज्वाला रहती है।

काठमाँडूसे ८ मञ्जिल उत्तर वर्फिस्तानमें नीलकण्ठ महादेव हैं, वहाँ भी गर्मपानीका कुण्ड देखनेमें आता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत (९ वाँ स्कन्ध–१७ वें अध्यायसे २४वें अध्याय तक) और ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृतिखण्डके १५ वें अध्यायसे २१वें अध्यायतक) लक्ष्मीजी शापके कारणसे धर्मध्वजकी पुत्री हुई तव उनका नाम तुलसी पड़ा। तुलसीका विवाह शंख-चूडसे हुआ। जव विष्णुने ब्राह्मण रूप धरकर शंखचूडका कवच माँग लिया और छलसे तुलसीसे रमण किया, तव शंखचूड शिवके हाथसे मारा गया। तुलसीने विष्णुको शाप दिया कि संसारमें पाषाण रूप होगे। विष्णुने कहा कि तुलसीकी देह भरतखण्डमें गण्डकी नामक नदी होगी। उसके पश्चात् तुलसी विष्णु लोकमें चली गई। उसका शरीर गण्डकी नदी और उसके केशोंका समूह तुलसी वृक्ष हुआ। विष्णु शालग्राम शिला हुए (यह कथा शिवपुराण पाँचवें खण्डके ३८ वें और ३९ वें अध्यायमें हैं)।

वाराहपुराण—(१३८ वाँ अध्याय) एक समय विष्णु भगवान् तप कर रहे थे, शिवजी वहाँ प्रकट होकर उनसे बोले कि हे भगवन्! तप करते समय तुम्हारे गण्डस्थान

अर्थात् कपोलसे स्वेद उत्पन्न हुआ है। इस स्वेदरूपी जलसे लोकमें गण्डकी नामक नदी प्रसिद्ध होगी और तुम उस नदीके गर्भमें सदा निवास करोगे। जो मनुष्य सम्पूर्ण कार्त्तिक मासमें इस नदीमें स्नान करेंगे; वे मुक्तिफल पावेंगे।

एक समय गण्डकी नदीके एक ग्राहने जलक्रीडा करते हुए एक हाथीका पैर पकड़ लिया, तब दोनों युद्ध करने लगे। उस समय वरुण देवताके निवेदनसे विष्णु भगवान्ने वहाँ आकर सुदर्शन चक्रसे ग्राहका मुख फाड़कर गजको जलसे बाहर निकाला। उस समय चक्रके वेगसे गण्डकीकी शिला बहुतही चिह्नित होगई। उन चिह्नोंसे भावी वश वज्र-कीट नामक क्रिमि उत्पन्न हुए और गण्डकीमें चक्र उत्पन्न होते हैं। विष्णुने कहा कि भक्तकी रक्षाके निमित्त हमारी आज्ञासे सुदर्शनचक्रने गण्डकी नदीमें जहाँ जहाँ भ्रमण किया है, वहाँ सर्वत्र पाषाणोंमें सुदर्शनचक्रका चिह्न होगया है। इस लिये पाषाणोंका नाम गण्डकी चक्र होगा। वह स्थान चक्र तीर्थ कहलावेगा। मनुष्य वहाँ स्नान करनेसे अति तेजस्वी होकर सूर्य्यलोकमें निवास करेंगे। जिस दिनसे शालंकायनके शिष्य नन्दी आसुख्यायनको गोधन सहित मथुरासे लाये, उस दिनसे उस स्थानका नाम हरिहरक्षेत्र हुआ।

जिस शालग्राम क्षेत्रमें शिवजीने विष्णु भगवान्को वरदान दे निवास किया उस क्षेत्रमें स्नान करके पितरोंका तर्पण करनेसे पितरगणोंको स्वर्ग मिलता है। शालग्राम क्षेत्र चारों दिशाओंमें बारह बारह योजन है। वहाँ विष्णु भगवान् शालग्राम रूपसे सर्वदा निवास करते हैं। (१३९ वाँ अध्याय) शालग्रामक्षेत्र हरिहरात्मक अर्थात् विष्णु और शिवका रूप है।

पद्मपुराण—(पातालखण्ड, ७९ वाँ अध्याय) गण्डकी नदीके एक छोरमें शालाग्रामका महास्थल है। उसमेंसे जो पाषाण उत्पन्न होते हैं; वे शालग्राम कहाते हैं।

(उत्तरखण्ड, ७५ वाँ अध्याय) गण्डकी नदीमें शालग्राम शिला बहुत होती हैं। वह नदी उत्तरमें प्रकट हुई है, वहाँ नारायण सर्वदा स्थित रहते हैं। जो मनुष्य शंख और चक्रके चिह्न धारण करके वहाँ निवास करता है, वह मृत्युके पश्चात् चतुर्भुज रूप धारण करके विष्णुके लोकमें जाता है। वहाँ अनेक प्रकारकी बहुत मूर्त्तियाँ देख पड़ती हैं। चारों वर्णोंके मनुष्य गण्डकी नदीके जल स्पर्श करनेसे ब्रह्महत्यादि पापोंसे विमुक्त हो जाते हैं। उस क्षेत्रको विष्णु भगवान्ने रचा था। ब्राह्मण लोगोंको आषाढ़ मासमें उस स्थानपर जाकर शंख चक्रादि चिह्न धारण करना उचित है। जो ब्राह्मण अपने बायें हाथमें शंख और दहिने हाथमें चक्रादि चिह्न धारण करते हैं वे मुक्ति पाते हैं।

(१२० वाँ अध्याय) शालग्रामशिला स्नानका जल पीनेसे मनुष्यको गर्भवासका भय छूट जाता है और नित्यही शालग्रामके पूजन करनेसे जन्म मृत्युका भय नहीं रहता। शालग्राम अनेक प्रकारके होते हैं,-वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, नारायण, हरि, विष्णु, कपिल, नृसिंह, वाराह, मत्स्य, कूर्म, हयग्रीव, वैकुण्ठ, श्रीधरदेव, इत्यादि (इनके पहचानके आकार और चिह्न यहाँ लिखे हुए हैं)।

(१३१ वाँ अध्याय) ब्राह्मणको ५ क्षत्रियको ४ और वैश्यको ३ या १ शालग्रामको पूजना उचित है। शूद्र शालग्रामके दर्शन मात्रहीसे मुक्ति प्राप्त करते हैं। जो ब्राह्मण शंख चक्रादिसे चिह्नित होकर शालग्राम शिलाका पूजन करता है, उस पूजनसे सब संसार पूजित होजाता है। और पितर कहते हैं कि हमारे कुलमें वैष्णव उत्पन्न हुआ, अब वह हमारे कुलको विष्णु लोकमें भेजेगा।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध—६६–वाँ अध्याय) चक्र करके अंकित शालग्रामशिलाके पूजन करनेसे विना चिह्नकी मूर्त्तिका पूजन करना उत्तम है। एक रेखावाले शालग्रामशिलाको सुदर्शन, २ रेखा वालेको लक्ष्मीनारायण, ३ रेखावालेको अच्युत, ४ रेखावालेको चतुर्भुज, ५ रेखावालेको वासुदेव, ६ रेखावालेको प्रद्युम्न, ७ रेखावालेको संकर्षण, ८ रेखा-वालेको पुरुषोत्तम, ९ रेखावालेको व्यूह, १० रेखावालेको दशात्मक, ११ रेखावालेको अनिरुद्ध और १२ रेखावालेको द्वादशात्मक कहते हैं। इससे अधिक रेखावाले शालग्रामको-अनन्त कहना उचित है।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग–३४ वाँ अध्याय) शालग्राम तीर्थ विष्णुकी प्रीतिको बढ़ाने-वाला है। उस स्थानपर मृत्यु होनेसे साक्षात् विष्णुका दर्शन होता है।

दूसरा शिवपुराण—(८ वाँ खण्ड १५ वाँ अध्याय) नैपालमें मुक्तनाथ शिवलिङ्ग हैं।

पांचवां अध्याय।

(सूबे बिहारमें) दरभंगा, गौतमकुण्ड, (नैपाल-राज्यमें) जनकपुर, (सूबेबिहारमें) सीतामढ़ी, सींगेश्वर-नाथ और (नैपाल–राज्यमें) वाराहक्षेत्र।

दरभंगा।

काठमाण्डूसे ९० मील उत्तर पहाड़ी मार्गसे सुगौली, और सुगौलीसे दक्षिण–पूर्व रेलवे द्वारा ९४ मील समस्तीपुर जंक्शनको लौट आना चाहिये। समस्तीपुर जंक्शनसे २३ मील (और मोकामा जंक्शनसे ८३ मील) उत्तर दरभङ्गाका रेलवे स्टेशन है। सूबेविहारके पटना विभागमें तिरहुत देशके पूर्वी भागमें छोटी वागमती नदीके बायें, अर्थात् पूर्व किनारे पर जिलेका सदरस्थान और प्रधान कसवा दरभङ्गा है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय दरभङ्गा शहरमें ७३५६१ मनुष्य थे; अर्थात् ३८२६७ पुरुष और ३५२९४ स्त्रियां। इनमें ५३९८७ हिन्दू, १९१८१ मुसलमान, १३२ क्रस्तान और ३६१ दूसरे थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ४५ वाँ वङ्गालमें ६ ठा और विहारमें ३ शहर है। वहुतेरोंका मत है कि दरभङ्गीखाँने दरभङ्गाको बसाया, इससे इसका यह नाम पड़ा। और वहुतेरे लोग कहते हैं कि द्वारवंग अर्थात् वङ्गालके दरवा-जेका अपभ्रंश दरभङ्गा शब्द है।

दरभङ्गामें सिविल कचहरियाँ, अनेक स्कूल और अस्पताल; शिवसागर तालावके किनारेपर माधवेश्वर महादेवका मन्दिर, अनेक बड़े बाजार, अस्पताल और महाराजके बागके वीचमें हालकी वनी हुई नई पेठिया और वहुतेरे सरोवर हैं। महाराजका पुराना महल और हालका वनाहुआ नया राजमहल, वाग, अश्वशाला, और जन्तूशाला देखने योग्य है। दर-भङ्गामें तिजारत वहुत होती है। अनेक भाँतिके तेलके वीज घी और मकान बनानेकी लकड़ी वहाँसे दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती हैं और गल्ला, नमक, चूना लोहा इत्यादि वस्तु दूसरे शहरोंसे वहाँ आती हैं।

दरभंगासे रेलवे लाइन तीन ओर गई है—पश्चिमोत्तरकी लाइनपर २६ मीलपर जनकपुर रोड, ४२ मील सीतामढ़ी और ६१ मील वैरागिनिया; पूर्वकी लाइनपर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ६७ मील प्रतापगञ्ज और ७५ मील कनवा घाट; और दक्षिण ३३ मील समस्तीपुर जंक्शन और ८३ मील मोकामा जंक्शन है ।

दरभंगाके महाराज—सन् १७६२ ई० से दरभंगा शहर यहाँके महाराजकी राजधानी हुआ है । महाराजके पूर्व पुरुषे तिरहुतके राजाओंके पुरोहित थे मुसलमानोंने तिरहुतको जीत लिया और वहाँके राजा नष्ट हो गये तब उनके पुरोहित मैथिल ब्राह्मण महेश ठाकुरने दिल्लीमें जाकर बादशाह अकबरसे राज्य प्राप्त किया; किन्तु सन् १७०० ई० में महेश ठाकुरके वंशज राघवसिंहके राज्यके समयमें राजाकी पदवी दृढ़ हुई । सन् १७७६ में माधवसिंह राज्यके उत्तराधिकारी हुए । सन् १८०८ में माधवसिंहके देहान्त होनेपर उनके पुत्र छत्तरसिंह दरभंगाके राज्य सिंहासनपर बैठे । इन्हींने महाराजकी पुस्तैनी पदवी प्राप्तकी थी । सन् १८३९ ई० में महाराज छत्तरसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र महाराज रुद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए । सन् १८५० में महाराज रुद्रसिंहके देहान्त होनेपर उनके पुत्र महाराज महेश्वरसिंह राजगद्दीपर बैठे । सन् १८६० ई० में महाराज महेश्वरसिंह अपने दो बच्चे पुत्र लक्ष्मीश्वरसिंह और रमेश्वरसिंहको छोड़कर मृत्युको प्राप्त हुए । राज्य कोर्ट आफ वार्डसके अधिकारमें हुआ । सन् १८७९ में वर्तमान महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुर के०सी० आई० ई० राज्याधिकारी हुए, जिनकी अवस्था ३६ वर्षकी है ।

महाराजकी जिमींदारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, पुर्नीया और भागलपुर इन पाँच जिलोंमें फैली हुई, है, जिससे २४००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे लगभग ४००००० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेन्टको देना पड़ता है। महाराजकी ओरसे १५० मील लम्बी नई सड़क बनाई गई है, नदियोंपर बहुतेरे पुल बनाये गये हैं और ७०००००. रुपये सिचाईके काममें खर्च किये गये हैं ।

दरभंगा जिला—यह पूर्व समयके तिरहुत जिलेका पूर्वी भाग है । सन् १७७५ ई० में तिरहुत जिलेमें मुजफ्फरपुर और दरभंगा दो जिले बनाये गये । इसके उत्तर स्वाधीन नैपाल राज्य; पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण गङ्गा नदी और मुंगेर जिला और पश्चिम मुजफ्फरपुर जिला है । यह जिला पश्चिम दक्षिणसे पूर्वोत्तर तक ९६ मील लम्बा ३३३५ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैलाहै । जिलेकी प्रधान नदियाँ बागमा, गण्डक, छोटी बागमती, कराई और कमला हैं। तिरहुतमें विवाहादि उत्सवोंमें चिउड़ा दहीका भोजन सब भोजनसे उत्तम समझा जाता है ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय दरभंगा जिलेमें २७७००५३ और सन् १८८१ में २६३३४४७ मनुष्य थे, अर्थात् २३२३९८५ हिन्दू, ३०८९८५ मुसलमान, ३२५ क्रस्तान और १५२ दूसरे, जो प्रायः सब कोल हैं । जातियोंके खानेमें ३४१११३ ग्वाला, १८९५३४ दुसाध, १७९२६३ ब्राह्मण, १३००७९ धानुक, १२९०२७ कोइरी, ११८५५६ भूमिहार, ११४८९१ मलाह, ९००८३ राजपूत, ८८६४१ चमार, ७९४४९ तेली, ६७०९८ कुर्मी, ६६७९३ मुसहर, ६१३१५ ततवा, ४५१२४ कायस्थ, शेष इनसे कम संख्याकी जातियां थीं । सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दरभंगा जिलेके कसबे दरभंगामें ७३५६१, मधुबनीमें १७५४४, रोसरामें १०८८० मनुष्य थे । इनके अलावे जिलेमें विसुनपुरा, सुलतानपुर और माधवपुर छोटे कसबे हैं ।

मैथिल वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ

द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष

त्र ज्ञ का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

दरभंगा जिलेके मधुबनी कसवेसे चार पांच मील पश्चिम सौराठ वस्तीके पास सालमें मैथिल ब्राह्मणोंका एक मेला होताहै। वे लोग उसमें अपने लड़का लड़कीके विवाहका लेन देन पक्का करते हैं। लड़की अपने पिताके घर रहेगी या ससुरके घर, बहुतेरोंमें इस वातका दस्तावेज लिखा जाता है। जो लड़की विवाह होजानेपर अपने पिताके घर रहती है, उसके पुत्र अपने नानाके धनमें भाग पाते हैं। बहुतेरे कुलीन ब्राह्मणोंमें एकके कई विवाह होते हैं। जो स्त्रियां अपने पिताके घर रहती हैं, उनके पति अपने ससुरके घर जाकर उनसे कुछ रुपया लेकर कई एक दिन वहाँ रहते हैं।

गौतमकुण्ड।

दरभङ्गा जंक्शनसे १४ मील पश्चिमोत्तर सीतामढ़ी ब्रैंच पर कमतौलका स्टेशन है, जिससे ३ मील पश्चिमोत्तर छोटी नदीके पास एक छोटे मन्दिरमें अहिल्याकी मूर्त्ति है, जहाँ चैत्र नौमीको एक छोटा मेला होता है और स्टेशनसे करीब १० मील पश्चिमकी ओर बिना वृक्षोंके धानके मैदानमें गौतमकुण्ड एक सरोवर है। उसके चारों बगलोंपर घाट बना है, तलमें गच किया हुआ है, पानीमें छोटे छोटे ५ कुण्ड हैं। और पासमें एक छोटी नदी है, जिसका जल गौतमकुण्डमें रहता है। गौतमकुण्डके पास पाकड़का एक वृक्ष और एक कोठरीमें नृसिंहजीकी मूर्त्ति है। वस्ती उससे बहुत दूर है। कुण्डके पास एक साधु है।

गौतमकुण्डसे ३ मील पूर्व अहिल्याकुण्ड तीर्थ और वट वृक्षके नीचे अहल्याका चौरा है, जिसके पास दरभङ्गाके राजाका वनवाया हुआ रामलक्ष्मणका सुन्दर मन्दिर स्थित है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वन पर्व—८४ वाँ अध्याय) गौतमके प्यारे वनमें जाकर अहिल्याकुण्डमें स्नान करनेसे मोक्ष मिलती है। गौतमके आश्रममें जानेसे पुरुष शोभाको प्राप्त करता है। वहाँ तीनों लोकोंमें विख्यात एक तड़ाग है। उसमें स्नान करनेसे अश्वमेधका फल होता है। उससे आगे राजर्षि जनकका कुँआ है, जिसमें स्नान करनेसे विष्णुलोक प्राप्त होता है।

वाल्मीकिरामायण—(बालकाण्ड—४८ वाँ अध्याय) रामचन्द्रने मिथिलाके उपवनमें प्राचीन और निर्जन आश्रमको देख महर्षि विश्वामित्रसे पूँछा कि यह आश्रम किसका है। मुनि बोले कि, यह आश्रम गौतम मुनिका था; इसमें वह अपनी स्त्री अहल्याके साथ रहते थे। किसी समयमें इन्द्रने मुनि रहित आश्रमको देख गौतमका वेष धारणकर अहल्यासे कहा कि मैं तुम्हारे सङ्ग प्रसङ्ग करूँगा। अहिल्याने इन्द्रको पहचान करके भी उसका मनोरथ पूर्ण किया, पश्चात् मुनिके डरसे शीघ्रतासे ज्योंही वह कुटीसे निकला, त्योंही पर्णशालामें पैठते हुए ऋषि देख पड़े। गौतमने इन्द्रको मुनि वेशधारी और दुष्ट कर्म करनेवाला देखकर शाप दिया कि तू अण्डकोष रहित होजायगा। मुनिके ऐसे कहनेपर इन्द्रके दोनों अण्डकोष गिर पडे। फिर मुनिने अपनी स्त्रीको यह शाप दिया कि तू इसी स्थानमें अनेक सहस्र वर्ष पर्यंत वास करेगी, तेरा भोजन केवल वायु होगा और तू किसी प्राणीको नहीं देख पड़ेगी; जब दशरथके पुत्र रामचन्द्र इस वनमें आवेंगे तब तू उनका सत्कार करके इस शापसे मुक्त हो अपने पूर्व शरीरको धारणकर मेरे पास आवेगी। ऐसा कह मुनि हिमाचलके शिखरपर जाकर तपस्या करने लगे। (४९ वाँ अध्याय) पितृगणोंने मेषका अण्डकोष काटकर इन्द्रको लगा दिया। रामचन्द्रने विश्वामित्रके ऐसे वचन सुन उनके सङ्ग उस

आश्रममें प्रवेश किया और उस तपस्विनीको, जिसको सुर असुर कोई नहीं देख सकते थे, देखा। उसी क्षण अहिल्याके पापका अन्त हुआ। तब इनको वह देख पड़ी। राम और लक्ष्मणने हर्षसे उसके चरणोंको ग्रहण किया। अहल्याने भी गौतमके वचनको स्मरण कर रामके चरणोंका स्पर्श किया और अतिथि सत्कारसे इनकी पूजाकी। इसके पश्चात् अहल्या शुद्ध होकर गौतम ऋषिसे जामिली। रामचन्द्र मिथिलाको चले।

जनकपुर।

दरभङ्गा जंक्शनसे २६ मील पश्चिमोत्तर जनकपुर रोडका, जिसको पुपुड़ी भी कहते हैं, रेलवे स्टेशन है स्टेशनसे २४ मील पूर्वोत्तर नैपाल राज्यके अन्तर्गत तिरहुतमें जनकपुर एक वड़ी वस्ती है। जनकपुर जानेका दूसरा मार्ग सकरीके रेलवे स्टेशनसे है। दरभङ्गासे १२ मील पूर्व कोसी लाइनपर सकरी रेलवेका स्टेशन है, उससे ३८ मील उत्तर जनकपुर है दोनों स्टेशनोंपर सवारीके लिये वैलगाड़ी मिलती हैं।

जनकपुरमें साधारण लोगोंके मकान टट्टी और छप्परसे वने हुए हैं। महन्तका मकान पक्का दो मञ्जिला है। उसके पासही दक्षिण एक विशाल मन्दिरमें भ्रातागणोंके सहित रामचन्द्रका दर्शन होता है। उसके पास एक कोठरीमें महावीरकी मूर्त्ति है। राममन्दिरसे पूर्व गङ्गासागर और धनुषसागर, जिनमें साधारण घाट वने हैं, दो तड़ाग तड़ागोंके निकट शिवजी, जानकीजी, रामचन्द्र और जनकजीके एक २ मन्दिर बने हैं। शिव, जानकी, और रामचन्द्रके मन्दिरसे दक्षिण रामसागर और एक दूसरा तालाव है। महंतके मकानके पासवाले राममन्दिरसे पश्चिम रतनसागर, दशरथतालाव, और अग्निकुण्ड है। जनकपुरके आस पास वहुतेरे कच्चे तड़ाग हैं। लोग कहते हैं कि यहाँ ७२ तड़ाग और ५२ कुटियाँ हैं। कुटियोंमें साधु लोग रहते हैं, उनके पास देवस्थान या देवमन्दिर वने हुए हैं।

चैत्र सुदी नवमीको जनकपुरका प्रधान मेला होता है। नैपाली और भोटिये और भारतवर्षके अन्य प्रदेशोंके वहुतेरे यात्री मेलेमें आते हैं। माल खूब विकता है। अगहन सुदी पंचमीको सीतारामके व्याहका उत्सव होता है। हाथी घोड़े आदि ठाटोंसे सज्जित होकर राममन्दिरसे वारात निकलती है और कई सौ गज पश्चिमोत्तर जानकीके मन्दिरको जाती है। वहाँ सवको भोजन मिलता है। उस समय भी बहुत यात्री आते हैं।

जनकपुरसे लगभग ६ मील दक्षिण-पूर्व एक तड़ागके पास विश्वामित्रका मन्दिर है। जनकपुरसे १४ मील दूर जङ्गलमें धनुषा वस्तीके पास एक सरोवरके निकट पत्थरका वड़ा धनुष पड़ा है। यात्री लोग वहाँ जाकर धनुषका दर्शन करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(आदिपर्व-११३ वाँ अध्याय) राजा पाण्डुने मिथिलामें जाकर विदेहनगरको परास्त किया। (सभापर्व-३० वाँ अध्याय) भीमने विदेहपति राजा जनकको अति अल्प युद्धमें जीत लिया।

वाल्मीकिरामायण—(वालकाण्ड—७१ वाँ सर्ग) जनकके वंशके राजा;—(१) राजा निमि, (२) मिथि, (३) जनक, (४) उदावसु, (५) नन्दिवर्धन, (६) सुकेतु, (७) देवरात, (८) वृहद्रथ, (९) महावीर, (१०) सुधृति, (११) धृष्टकेतु, (१२) हर्यश्व, (१३) मरु, (१४) प्रातीन्धक, (१५) कीर्तिरथ, (१६) देवमीढ़, (१७) विवुध, (१८) महीध्रक, (१९) कीर्तिरात, (२०) महारोमा, (२१) स्वर्ण-

रोमा (२२) और ह्रस्वरोमा हुए। ह्रस्वरोमाके सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र कहे हैं। सीरध्वजकी पुत्री सीता हैं।

उत्तरकाण्ड—(१७ वाँ सर्ग) एक समय लंकापति रावणने हिमालयके वनमें वृहस्पतिके पुत्र कुशध्वजकी पुत्री वेदवतीको तप करती हुई देखा तब उसने विमानसे उतर कामातुर हो उसके माथेके केशोंपर हाथ लगाया। तब वेदवतीने हाथसे अपने केशोंको काटडाला और रावणको शाप दिया कि हे नीच ! मैं तेरे वधके लिये फिर जन्म लेऊँगी। ऐसा कह वह अग्निमें प्रवेशकर गई और पीछे जनकराजके घरमें अयोनिजा सीता रूप उत्पन्न हुई।

(बालकाण्ड–५० वाँ सर्ग) विश्वामित्र राम और लक्ष्मणके सहित राजा जनककी यज्ञशालामें पहुँचे। राजाने विश्वामित्रका आगमन सुन सत्कारपूर्वक उनको टिकाया। (६६ वाँसर्ग) दूसरे दिन प्रातःकाल विश्वामित्रने राजा जनकसे कहा कि ये दोनों राजा दशरथके पुत्र आपका श्रेष्ठ धनुष देखना चाहते हैं (६७ वाँ सर्ग) राजा जनककी आज्ञासे ५ सहस्र मनुष्य उस धनुषकी संदूकको खींच लाये। विश्वामित्रकी आज्ञासे रामचन्द्रने सन्दूकके भीतरसे धनुष निकाल कर उसे बीचमें थांभा और लीलासे उठाकर प्रत्यञ्चासे पूर्णकर उसको दो खण्डकर डाला। उसके उपरान्त राजा जनकने अपने मन्त्रियोंको राजा दशरथको बुलानेके लिये अयोध्यामें भेजा। (६८ वाँ सर्ग) जनकके दूत तीन रात्रि मार्गमें टिककर चौथे दिन अयोध्यामें पहुँचे। उन्होंने जनकपुरका सब वृत्तान्त राजा दशरथसे कह सुनाया। (६९ वाँ सर्ग) राजा दशरथ चतुरंगिणी सेना और ऋषियोंके सङ्ग अयोध्यासे प्रस्थानकर चार दिनमें विदेह नगर पहुँचे। (७३ वाँ सर्ग) रामचन्द्रका विवाह सीतासे, लक्ष्मणका उर्मिलासे, भरतका माण्डवीसे, और शत्रुघ्नका श्रुतिकीर्तिसे हुआ। उस समय रामचन्द्रका वय १५ वर्षका और सीताजीका ६ वर्षका था। (७७ वाँ सर्ग) राजा दशरथ सम्पूर्ण सेना और पुत्रगणोंके साथ जनकपुरसे प्रस्थान करके अयोध्या पहुँचे। (विशेष कथा भारत–भ्रमण दूसरे खण्डके तीसरे अध्यायमें देखो)

विष्णुपुराण—(चौथा अंश–पांचवाँ अध्याय) क्रमसे जनकपुरके राजाओंका नाम–(१) निमि, (२) विदेह, (३) उदावसु, (४) नन्दिवर्धन, (५) सुकेतु, (६) देवरात, (७) वृहद्रथ, (८) धृति, (९) विबुध, (१०) महाधृति, (११) कृतिरात, (१२) महारोमा, (१३) सुवर्णरोमा, (१४) ह्रस्वरोमा, (१५) सीरध्वज अर्थात् जानकीके पिता हुए; वह पुत्रप्राप्तिके लिये सोनेके हलसे यज्ञभूमिको जोतते थे, उसी समय हलके अग्रभागसे सीता कन्या उत्पन्न हुई। सीरध्वजके भाई कुशध्वज सांकाश्यनगरके राजा हुए। (१६) भानुमान्; (१७) शतद्युम्न, (१८) शुचि, (१९) उर्जवह, (२०) सत्यध्वज, (२१) कुणि, (२२) अञ्जन, (२३) ऋतुजित्, (२४) अरिष्टनेमी, (२५) श्रुतायु, (२६) सुपार्श्व, (२७) सञ्जय, (२८) क्षेमारी, (२९) अनेना, (३०) मीनरथ, (३१) सत्यरथ, (३२) सत्यरथी, (३३) उपंगु, (३४) श्रुत, (३५) शाश्वत, (३६) सुधन्वा, (३७) सुभास, (३८) सुश्रुत, (३९) जय, (४०) विजय, (४१) ऋतु, (४२) सुनय, (४३) वीतहव्य, (४४) धृति, (४५) बहुलाश्व, (४६) और कृति, यहाँ तक विदेहवंश चला।

आदिब्रह्मपुराण—(१७ वाँ अध्याय) श्रीकृष्णने मिथिलापुरीके पास द्वारिकाके शतधन्वाको मारा, तब बलदेवजी मिथिलापुरीमें चले गये। वहाँके राजाने बलदेवजीको सन्मान पूर्वक रक्खा। जब बलदेवजी मिथिलापुरीमें रहते थे, तब हस्तिनापुरके राजा दुर्योधनने उनसे गदा विद्या सीखी थी।

सीतामढ़ी।

जनकपुर रोड अर्थात् पुपुड़ीके रेलवे स्टेशनसे १६ मील (दरभङ्गा जंक्शनसे ४२ मील) पश्चिमोत्तर सीतामढ़ीका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ·१: मील पर लषनदेई नदीके पश्चिम किनारे पर सूबे विहारके मुजफ्फरपुर जिलेमें सवडिवीजनका सदर स्थान सीतामंढ़ी एक छोटा कसवा और तीर्थ स्थान है सन्, १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय सीतामढ़ीमें ६१२५ मनुष्य थे।

सीतामढ़ीमें मुन्सफी कचहरी बाजार, स्कूल और एक अस्पताल है। चावल, सखुआकी लकड़ी, तेलके बीज, चमड़ा और नैपालके पैदावारकी तिजारत होती है। शोरा और जनेऊ बहुत तैयार होते हैं। लखनदेई नदी पर लकड़ीका पुल बना है। चैत्रकी रामनवमीके समय एक बड़ा मेला होता है और २ सप्ताह तक रहता है। मेलेके समय दूर दूरके यात्री लोग आते हैं। यह मेला बैलकी खरीद विक्रीके लिये प्रसिद्ध है। इसमें पीतलके वर्तन, मसाला, कपड़ा और हाथीकी भी तिजारत होती है। सीतामढ़ीमें एक घेरेके भीतर सीताका मन्दिर और चार पाँच दूसरे मन्दिर और घेरेके आसपासमें तीन चार देवमन्दिर हैं। इनमें सीता; रामचन्द्र, लक्ष्मण, शिव, हनूमान, गणेश, इत्यादि देवताओंकी मूर्त्तियाँ स्थापित हैं और सीतामढीके महन्तका समाधिस्थान भी है। सीतामढ़ी कसवेसे १ मील पश्चिम पुनउड़ा बस्तीके निकट एक पक्का सरोवर है। लोग कहते हैं कि इसी स्थान पर अयोनिजा सीताजी उत्पन्न हुई थीं। सरोवरके पूर्व एक बड़ी ठाकुरवाड़ी है। यात्रीगण सरोवरमें स्नान करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पाँचवाँ अध्याय) जनकपुरके राजा ह्रस्वरोमाके सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र थे, उनमें सीरध्वज मिथिलाके राजा हुए। वह एक समय पुत्र कामनाके निमित्त सोनेके हलसे यज्ञभूमिको जोतते थे, उसी समय हलके अग्रभागसे सीता कन्या उत्पन्न होगई।

सींगेश्वरनाथ।

दरभङ्गासे ६० मील पूर्व राघवपुरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ३५ मील दक्षिण भागलपुर जिलेमें एक छोटी नदीके किनारेपर सींगेश्वर स्थान नामक बस्ती है, वहाँ नदीके किनारेपर एक घेरेके भीतर सींगेश्वरनाथ महादेवका, जिनका शुद्ध नाम शृङ्गेश्वरनाथ है, बड़ा मन्दिर स्थित है।

फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय सींगेश्वरनाथका बडा मेला होता है, और दो सप्ताह तक रहता है। मेलेमें बिकनेके लिये हाथी बहुत आते हैं और घोड़े, अङ्गरेजी कपड़ा, जूता, नैपालियोंकी लम्बी छूरी, जिसको वे लोग खुखुड़ी कहते हैं और बर्तन इत्यादिकी तिजारत होती है। पुर्निया, मुँगेर, तिरहुत और नैपालके बहुत सौदागर आते हैं। वैशाखकी शिवरात्रिको फाल्गुनके मेलेसे छोटा मेला होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–वाराहपुराण (उत्तरार्द्ध २०७–वाँ अध्याय) एक समय शिवजी मन्दराचलके उत्तर किनारेके मुञ्जवान पर्वतसे श्लेष्मातक वनमें चले गये और नन्दीश्वरसे कह गये कि तुम किसीके पूछनेपर हमारे जानेका स्थान मत कहो। (२०८ वाँ अध्याय) उसके पश्चात् इन्द्रने ब्रह्मा और विष्णुको साथ ले मुञ्जवान पर्वतपर आकर नन्दीश्वरसे पूछा कि भगवान् शंकर कहाँ हैं। (२०९ वाँ अध्याय) जब नन्दीश्वरने शिवजीका पता नहीं बतलाया, तब देवता गण शिवजीको ढूँढ़ते ढूँढ़ते श्लेष्मातक वनमें पहुँचे। वहाँ शिवजीने मृगरूप धारण किया था। देवतागण उनको पहचानकर पकड़नेके लिये चारोंओरसे दौड़े। इन्द्रने मृगके शृङ्गका अग्रभाग जा पकड़ा ब्रह्माने बिचला भाग पकड़ लिया और शृङ्गका मूल भाग विष्णुके हाथमें आया। जब वह शृङ्ग तीन टुकड़े होकर तीनोंके हाथोंमें रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया, तब आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम लोग हमको नहीं पासकोगे; अब शृङ्गमात्रके लाभसे संतुष्टहो जाओ। (२१० वाँ अध्याय) इन्द्रने शृङ्गके निज खण्डको स्वर्गमें स्थापित किया और ब्रह्माने अपने हाथके शृङ्ग खण्डको उसी स्थानमें स्थापित करदिया। दोनों खण्डोंका गोकर्ण नाम प्रसिद्ध हुआ। विष्णुने अपने हाथके शृङ्ग खण्डको लोकके हितके लिये स्थापित किया, उसका नाम शृङ्गेश्वर हुआ। जिन स्थानों पर शृङ्गके खण्ड स्थापित हुए, उन स्थानोंमें शिवजी निज अंश कलासे स्थित हो गये। कुछ कालके पश्चात् रावण इन्द्रको जीतकर गोकर्णेश्वरको उखाड़कर अमरावती पुरीसे लंकाको ले चला और कुछ दूर जाकर शिवलिङ्गको भूमिमें रख संध्योपासन करने लगा। जब चलनेके समय रावणके उठानेपर वह शिवलिङ्ग नहीं उठा, तब रावण उसको वहाँही छोड़कर लंका चला गया। उसी लिङ्गका नाम दक्षिण गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ और ब्रह्माके स्थापित शृङ्गके खण्डका नाम उत्तर गोकर्ण है। (उत्तर गोकर्णकी कथा दूसरे खण्डके गोला गोकर्ण नाथके वृत्तान्तमें और दक्षिण गोकर्णकी कथा चौथे खण्डके गोकर्णमें देखो)।

वाराहक्षेत्र।

सकरीके स्टेशनसे ६३ मील और दरभंगासे ७५ मील पूर्व थोड़ा उत्तर बंगाल नर्थवेष्टर्न रेलवेका खतमी स्टेशन कोशी नदीके दहिने किनारेपर कनवाघाट है, जिसके उस पार इष्टर्नबंगाल स्टेट रेलवेका अंचराघाट स्टेशन है। वहाँसे १० कोश उत्तर पैदल या बैल गाड़ीकी राहसे कोशी नदीके किनारे हिमालयके पादमूलपर चतरागद्दी स्थानमें पहुँचना होताहै। चतरागद्दीसे ३ कोस उत्तर वनखण्डीनाथकी धूनी है, जहाँ अनेक साधु रहते हैं। धूनी सर्वदा जलती रहती है। वाराहक्षेत्रके यात्री उस धूनीमें कुछ लकड़ी फेंक देते हैं। उससे आगे १० कोस उत्तर धवलागिरिका कठिन चढ़ाव है। पहाड़का रास्ता एक दो हाथ चौड़ा है। कहीं कहीं समथल भूमि मिलती है, जहाँ पहाड़ियोंके दो चार घर बने हुए हैं। वहाँ कमला नींबू बहुत होता है। पहाड़पर खानेके लिये यही मिलते हैं। चतरागद्दीसे मन्दिरतक पैदल अथवा कुलीकी पीठपर छींके या झूलेमें बैठकर, या नावमें बैठ कोशी नदीके मार्गसे जाना चाहिये। नावका भाड़ा एक आदमीका ८ आना लगता है। कोशी नदीमें नावको ऊपर चढ़ना पड़ता है। नदीमें अनेक चट्टान हैं। जलका वेग प्रबलहै। कोशी नदी हिमालयसे निकलकर करीब २२५ मील दक्षिण बहनेके उपरान्त भागलपुरके नीचे गङ्गामें मिलगई है।

कोशी नदीके किनारे नैपाल राज्यमें धवलागिरि शिखरपर वाराहक्षेत्र है, जिसको कोकामुख भी कहते हैं। एक साधारण कदके मन्दिरमें छोटी चतुर्भुज वाराहजीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके चारोंओर दीवार वनी है और आस पास एक विगहा समतल भूमि है। उत्तर ओर कोवरा नदी वहती है, जिसमें स्नान करके यात्री लोग उसका जल वाराहजीपर चढ़ाते हैं। कार्त्तिक पूर्णिमाके दिन स्नान और जल चढ़ानेकी वड़ी भीड़ होती है। नैपाल सरकारकी ओरसे शान्ति रखनेको पुलिस रहती है। कमला निम्बू सस्ते मिलते हैं और चिउड़ा भी मिल जाता है खानेकी सामग्री साथ लेजाना चाहिये। वाराहक्षेत्रका मेला कार्त्तिकी पूर्णिमाके ४ रोज पहलेसे ४ दिन पीछे तक रहता है। मन्दिरसे दो तीन मील दूर पहाड़ीके ऊपर सूर्य्यकुण्ड नामक पुराना तालाव है। नाव कोशी नदीके मार्गसे वाराहक्षेत्रसे चतरागद्दी शीघ्र पहुँचती है क्योंकि पानीका उतार है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—(वालकांड ३४ वाँ सर्ग) विश्वामित्रने रामचन्द्रसे कहा कि सत्यवती नामक मेरी जेठी वहन महर्षि ऋचीकसे व्याही गई थी, वह अपने पतिके संग स्वर्गमें गई और पीछे लोकके हितके निमित्त पवित्र जलवाली कौशिकी नदी होकर हिमवान पर्वतसे निकली, इसी लिये मैं अपनी वहनके स्नेहसे हिमवानके पास निवास करता हूँ।

महाभारत-(वन पर्व्व-८७ वाँ अध्याय) गयाकी ओर कौशिकी नामक नदी है। विश्वामित्र वहीं ब्राह्मण वने थे। (अनुशासन पर्व्व २५ वाँ अध्याय) कौशिकी नदीमें वायुभक्षी होकर त्रिरात्रि उपवास करनेसे गन्धर्व्वनगरमें वास होता है। (वनपर्व्व ८३ वाँ अध्याय) वाराह तीर्थमें वाराहरूपधारी विष्णुने निवास किया था, वहाँ स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है।

वाराहपुराण-(उत्तरार्द्ध-पहला अध्याय) कोकामुखक्षेत्र, जिसको शूकरक्षेत्र भी कहते हैं, भागीरथी गङ्गाके निकट है। (२४ वाँ अध्याय) कोकामुख नामक क्षेत्रको महात्माजन वदरी भी कहते हैं। इस क्षेत्रमें जलविन्दु नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊँचे पर्व्वतसे जलधारा पड़ती है और एक विष्णुधारा नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊँचे पर्व्वतसे मूसलके समान धारा पृथ्वीमें गिरती है। उसी कोकामुखमें विष्णुपद नामक स्थान है, जिसे वाराहशिला भी कहते हैं; सोम तीर्थ नामक स्थान है. जिसमें विष्णुनामांकिता पञ्चशिला नामक भूमि प्रसिद्ध है; अग्निसर नामक तीर्थ है, जहाँ पाँच धारा पर्व्वतकी कन्दरासे निकलती हैं; ब्रह्मसर नामक गुप्त तीर्थ है, जहाँ ऊँचेसे एक धारा शिलाके ऊपर गिरती है; सूर्य्यप्रभ नाम अति पवित्र तीर्थ है, जिसमें अग्नि समान अति जलती हुई जलकी धारा गिरती है, और कौशिकी नामक पुण्य देने वाली नदी है। कोकामुखके समीप मत्स्यशिला नाम एक पवित्र तीर्थ है, जिसमें पर्व्वतके ऊपरसे एक जलकी धारा गिरती है। वाराहजी वोले कि कोकामुख हमाराक्षेत्र पाँच योजन विस्तारका है।

मत्स्यपुराण—(१९२ वाँ अध्याय) जहाँ जनार्दन भगवान वाराहरूप धारणकर सिद्ध होकर पूजित हुए हैं, वह वाराह तीर्थ है। वहां विशेष करके द्वादशीको जाकर स्नान करनेवाला पुरुष विष्णुलोकमें प्राप्त होता है।

पद्मपुराण–(सृष्टिखण्ड–११ वाँ अध्याय) कोकामुख नाम परमोत्तम तीर्थ है। इस तीर्थसे होकर इन्द्रपुरी जानेका रास्ता दिखाई देता है। पुष्करके समान ब्रह्माजीकी मूर्त्ति यहाँ भी निरन्तर रहती है।

आदिब्रह्मपुराण–(१०५ वाँ अध्याय) त्रेता और द्वापरकी सन्धिमें पितरगण दिव्य मनुष्यरूप होकर मेरुपर्वतकी पीठपर विश्वेदेवों सहित स्थित हुए। चन्द्रमासे उत्पन्न हुई कांतियुक्त एक दिव्य कन्या उनके आगे हाथ जोड़कर खड़ी हुई और पितरोंसे बोली कि मैं चन्द्रमाकी कलाहूं तुमको वरूंगी। मैं पहिले ऊर्जा नामवाली थी; पश्चात् स्वधा हुई और तुमने मेरा कोकानाम किया है। पितरदेव उसके वचनको सुनकर मोहित होकर उसका मुख देखने लगे। तब विश्वेदेवा पितरोंको योगसे भ्रष्ट देख उनको त्यागकर स्वर्गको चले गये। चन्द्रमाने अपनी आत्मजा ऊर्जाको उस स्थानमें न देख मनमें ध्यान करके जाना कि कामसे पीड़ित हुई ऊर्जा पितरोंको प्राप्त हो रही है। तब उन्होंने पितरोंको शाप दिया कि तुम योगसे भ्रष्ट हो जाओ और इसने जो तुमपर मोहित हो पतिभावसे तुमको वरा है, इस कारणसे यह नदी होकर लोकमें कोका नामसे प्रसिद्ध हो इस पर्वतके शिखरपर स्थित रहे।

निदान चन्द्रमाके शापसे पितर योगभ्रष्ट हो हिमवान पर्वतके नीचे जा पड़े और ऊर्जा भी कोका नामसे विख्यात नदी होकर वहांपर वेगसे बहने लगी। पितर भी योगसे हीनहो उस नदीको देखने लगे; तब वह एक उत्तमतीर्थ हो गया। उस पर्वतने क्षुधासे पीड़ित पितरोंको देखकर उनके भोजनके लिये वदरीवन तथा अमृत देनेवाली गौको आज्ञा दी और उस कोका-रूपी नदीका जल दुग्ध होगया। इसी तरह पाप युक्त होकर पितर १०००० वर्ष वास करते रहे। सब लोक स्वधाकार और पितरोंसे रहित और दैत्य आदि वली हो गये; तव वे सब विश्वेदेवोंसे रहित पितरोंको देख कर चारों तरफसे आये। उन्हें आते देख कोकाने क्रोधसे युक्त हो अपने वेगसे हिमाचलको डुवाकर पितरोंको घेर लिया पितरोंको अन्तर्हित हुए देख राक्षस आदिक भय देनेके लिये वहाँही स्थित हो गये, पितर जलमें दुःखित होकर हरिकी शरणमें गये, और उनकी वहुत स्तुतिकी। तब विष्णुने दिव्य मूर्त्ति सूकर रूप धारणकर जलमें डूबे हुए पितृगणोंका उद्धार किया। शूकर रूप धारण करके पितरोंका उद्धार करनेसे वहाँ विष्णुतीर्थ स्थापित हुआ। सूकरभगवान्‌ने विष्णुसे जल और अपने रोमोंसे उत्पन्न हुई कुशाको लेकर अपने पसीनेसे उत्पन्न हुए तिलों सहित उस उत्तम तीर्थमें पितरोंका तर्पण किया। वाराहजीने कहा कि कोकाके जलका पान पापोंका नाश करता है, उस तीर्थमें स्नान करनेवाला धन्य है। माघ मासके शुक्ल पक्षमें प्रातःकाल कोकामें स्नान करे और ५ दिन वहाँ ठहरे। एकादशी और द्वादशीको वहाँ रहना योग्य है।

नरसिंहपुराण—(३९ वाँ अध्याय) वाराहजीने कोका नामक तीर्थमें बाराहरूप छोड़ कर वैष्णवोंके हितके लिये उसको उत्तम तीर्थ वना दिया।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध ८१ वाँ अध्याय) कोकामुख तीर्थ सम्पूर्ण कामका देनेवाला है।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वाँ अध्याय) कोकामुख नामक विष्णुका तीर्थ है, उसके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पातकोंका विनाश होजाता है और विष्णुलोक मिलता है। (४० वाँ अध्याय) वाराह तीर्थमें जनार्दन भगवान् रहते हैं वहाँ स्नानादिक कर्म करनेसे मनुष्यको विष्णुलोकमें निवास होता है।

छठा अध्याय।

(सूबे विहारमें) ल(क्खी)क्षीसराय जंक्शन, जमालपुर, मुंगेर, अजगयबीनाथ, भागलपुर, साहबगंज, राजमहल, मालदह और इङ्गलिशबाजार, गौड, पाण्डुआ, मुर्शिदाबाद और बरहमपुर।

लक्षीसराय जंक्शन।

ईष्टइण्डियन रेलवेके मोकामा जंक्शनसे २० मील पूर्व-दक्षिण सूबे विहारके मुंगेर जिलेके लक्षीसरायमें रेलवेका जंक्शन है, जहाँसे कार्डलाइन या लूपलाइनसे खाना जंक्शन जाकर कलकत्तेके निकट हवड़ा पहुँचना होता है। वैद्यनाथ, आसनसोल, रानीगंज, वर्दवान, हवड़ा, कलकत्ता इत्यादिके जानेवालेको कार्डलाइनसे जाना चाहिये। ईष्ट इण्डियन रेलवेका महसूल प्रति मील २½ पाई है।

(१) लक्षीसरायसे पूर्व-दक्षिण कार्डलाइनपर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ जमुई।
३७ गिद्धौर।
६१ वैद्यनाथ जंक्शन।
७९ मधुपुर जंक्शन।
१२४ सीतारामपुर जंक्शन।
१३० आसनसोल जंक्शन।
१४१ रानीगंज।
१४६ अण्डाल जंक्शन।
१८७ खाना जंक्शन।

वैद्यनाथ जंक्शनसे ४ मील पूर्व दक्षिण देवघर या वैद्यनाथजी।

मधुपुर जंक्शनसे २३ मील पश्चिम-दक्षिण गिरिडी।

सीतारामपुर जंक्शनसे पश्चिम ५ मील वराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

आसनसोल, जंकशनसे पश्चिम-दक्षिण बंगाल नागपुर रेलवेपर ४७ मील पुरुलिया, ३२१ मील वामरा और २४४ मील झारसूगढ़ जंक्शन।

अण्डाल जंक्शनसे २४ मील पश्चिमोत्तर गौरागड़ी।

खाना जंक्शनसे पूर्व दक्षिण ८ मील वर्दवान, ४६ मील मगरा, ५१ मील हुगली जंक्शन, ५४ मील चन्दरनगर, ६१ मील सेवड़ाफूली जंक्शन, ६३ मील श्रीरामपुर और ७५ मील हवड़ा।

(२) लक्षीसरायसे लुपलाइनपर पूर्व साहबगंज और साहबगंजसे दक्षिण खाना जंक्शन,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

७ कजरा।
२५ जमालपुर जंकशन।
४३ सुलतानगंज।
५८ भागलपुर।
७८ कहलगाँव।
१०४ साहबगंज।
१२८ तीन पहाड़ जंकशन।
१५४ पकउड़ सबडिवीजन।
१६८ मुराडोई।
१७८ नलहाटी जंक्शन।
१८७ रामपुरहाट सबडिवीजन।

३०४ साइन्थिया ।

२४८ खाना जंक्शन ।

जमालपुर जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर मुङ्गेर ।

साहबगंजके मनिहारीघाटसे इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवेके स्टेशनोंकी तफसील साहबगंजमें देखो ।

तीनपहाड़ जंक्शनसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल ।

नलहाटी जंक्शनसे २७ मील पूर्व मुर्शिदाबादके पास अजीमगंज।

जमालपुर ।

लक्षीसरायसे ७ मील पूर्व कजराका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे १½ मील उत्तर रेलवे लाइन और ओरियन गाँवके पास एक पहाड़ी है । कहा जाता है कि इस पहाड़ीपर कुछ समय तक बुद्धदेव रहे थे और यहाँ एक प्रसिद्ध जलसा हुआ था । पुराने समयमें यह यात्राके लिये विख्यात था । यहाँ बुद्धकी निशानियां पाई जाती हैं ।

लक्षीसराय जंक्शनसे २५ मील पूर्व जमालपुरमें रेलवेका जंक्शन है । सूबे विहारके मुङ्गेर जिलेमें जमालपुर एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जमालपुरमें१८०८९मनुष्य थे; अर्थात् १४११२ हिन्दू, ३२९० मुसलमान और ६८७ कृस्तान ।

रेलवेका काम और इंजन वननेका यह हिन्दुस्तानमें प्रधान स्थान है यहाँ ५५ एकड़में कारखानेका काम होता है, जिसमें करीब १७ एकड़ जमीन छाई हुई है । यहाँ ३००० से अधिक हिन्दुस्तानी आदमी और सैकड़ों यूरोपियन काम करते हैं । यूरोपियन लोगोंके रहनेके लिये कारखानेके पास मकान वने हैं । देशी कसवे और यूरोपियन बस्तीके बीचमें रेलकी लाइन है । युरोपियन बस्तीके पास गिर्जा, हम्माम और कई एक स्कूल बनेहुए हैं ।

यह कारखाना सन् १८६२ ई० में कायम हुआ । सन् १८९१ में जो काम तैय्यार हुए उनकी कीमत १० लाख थी । कारखानेका काम बहुत तरक्कीपर है । यहाँ लोहेके असबाव हरतरहके ढाले जाते हैं । सबसे बड़े ३० टन तक होते हैं । यहाँके रोलिङ्ग मिलमें हर महीनेमें ४०० टन छर बनते हैं । हिन्दुस्तानमें रौलिङ्गमिलें दूसरी जगह नहीं हैं । यहाँ ३½ टनका एक कलका हथउरा है । हिन्दुस्तानके कुल हिस्सोंके सम्पूर्ण लाइनोंके लिये लोहेके रेलवे असवाव यहाँसे जाते हैं ।

जमालपुरके पास पहाड़ फोड़कर रेलकी सड़क निकाली गई है ।

ऋषिकुण्ड—जमालपुरसे ३ मील दूर पहाड़ीके ऊपर ऋषिकुण्ड नामक गरम पानीका कुण्ड है । पांच छ कुण्डहोकर पानी निकलता है । यहाँ मलमासमें मेला होता है ।

मुंगेर ।

जमालपुर जंक्शनसे ५ मील उत्तर थोड़ा पश्चिम और लक्षीसराय जंक्शनसे रेलवे द्वारा ३० मील पूर्व मुंगेरका रेलवे स्टेशन है । सूबे विहारके भागलपुर किस्मतमें गङ्गाके दहिने किनारेपर (२५ अंश २२ कला ३३ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश ३० कला ३१ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका प्रधान कसबा और सदरस्थान मुंगेर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुंगेरमें ५७०७७ मनुष्य थे; अर्थात् २७१८८ पुरुष और २९८८९ स्त्रियाँ। इनमें ४४१२१ हिन्दू, १२५७८ मुसलमान; ३२२ क्रस्तान, ५२ जैन और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ६६ वाँ बङ्गालमें ९ वाँ और सूबे बिहारमें ६ ठा शहर है।

यहाँके बड़े बाजारमें अच्छी अच्छी दुकानें हैं। इसमें बन्दूक, छुरी, पिस्तौल, आदि अच्छे बनते हैं। मुङ्गेरके पास छोटी छोटी कई पहाड़ी हैं। प्रधान सड़क दो बड़े तालावोंके बीचमें उत्तरसे दक्षिण गई है। एक तालावके पास पहाड़ी पर विजयानगरके महाराजका कर्णचौरा नामक मकान और दूसरे तालावके निकटकी पहाड़ी पर साहब-महल करके प्रसिद्ध एक सुन्दर मकान है। उसके पीछे शाहशुजाके रहनेकी इमारत है, जो अब जेलखानेके काममें आती है। भागलपुरके जज मुङ्गेरमें आकर दौरेके मुक-दमोंका विचार करते हैं।

किला—गङ्गाके दक्षिण किनारेपर एक पहाड़ीके अखीरके पास करीब ५००० फीट लम्बा और ३५०० फीट चौड़ा एक पुराना किला है। किलेका डौल दुरुस्त नहीं है। किलेकी दीवारमें भीतरसे मट्टी और बाहरसे ईटे दिये गये हैं। बहुतेरी जगहोंमें अब ईटे नहीं हैं। उत्तर ओर गङ्गा और जमीनकी ओर खाई है। किलेमें उत्तर एक टीला है। लोग कहते हैं कि इसपर राजा कर्णका गढ़ था, अब गढ़की कुछ निशानी नहीं है, टीलेपर किसी राजाका बँगला बना है। किलेमें एक तरफ जिलेकी कचहरियाँ और गङ्गाकी तरफ जगह जगह अङ्गरेजोंके बँगले हैं। किलेसे पूर्व और दक्षिण शहर बसा है।

घाट—किलेके पास गङ्गाजीका कष्टहरनी घाट है। सीढ़ियाँ पक्की बनी हैं। घाटपर देवताओंके कई मन्दिर बने हैं। माघी पूर्णिमाके दिन इस घाटपर स्नानका मेला होता है। घाटसे पश्चिमकी ओर गङ्गाकी बीचधारमें एक पत्थरका चट्टान देख पड़ता है।

सीताकुण्ड—शहरसे ५ मील दूर सीताकुण्ड है; वहाँ दीवारसे घेरी हुई १¾ बीघा जमीन है। घेरेके भीतर राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न चारों भाइयोंके नामसे अलग अलग ४ कुण्ड अर्थात् बहुत छोटे छोटे पोखरे बने हैं, जिनका जल ठंढा है और सीताकुण्ड नामक एक पाँचवाँ कुण्ड है, जिसका पानी बहुत गरम है; उससे कोई स्नान नहीं कर सकता है। वहाँके ब्राह्मण कुण्डका पानी लोटेसे निकालकर यात्रियोंके ऊपर छिड़कते हैं। कुण्डके चारों तरफ लोहेका जँगला लगा है। कुण्डसे सर्वदा धुँआ निकलता है। कुण्डका पानी एक नाला होकर बराबर बाहर गिरता है। घेरेके भीतर दो एक छोटे मन्दिर और एक छोटा मकान है। वहाँ माघकी पूर्णिमाको मेला होता है। इसके अतिरिक्त वैशाख और कार्त्तिककी पूर्णिमा और चैत्रकी रामनवमीको भी वहाँ बहुत यात्री जाते हैं। वहाँके पण्डे गरीब हैं।

चण्डीका मन्दिर—सीताकुण्डसे ५ मील और गङ्गासे १ मील दूर चण्डीका स्थान है। वहाँ एकही पत्थरका अर्द्धगोलाकार गुम्बजके समान चण्डीका मन्दिर है। उसमें एक तरफ छोटा द्वार है, भीतर माथा टेकता है, दीवारमें चण्डीका आकार है, जिसकी पूजा लोग करते हैं। मन्दिरके ऊपर गच किया हुआ है। लोग कहते थे कि यह मन्दिर चण्डीका उलटा हुआ कड़ाह है। राजा कर्ण इसी कड़ाहमें कूदकर नित्य चण्डीसे सवामन सोना पाकर कष्टहरनी घाटपर दान देते थे।

मुङ्गेर जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३९३१ वर्ग मील है। इसके उत्तर भागलपुर और दरभङ्गा जिला; पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण संथाल, परगना और हजारीबाग जिला और पश्चिम गया, पटना और दरभङ्गा जिले हैं। गङ्गानदी जिलेके मध्य होकर जिलेमें ७० मील बहती है। गङ्गाके उत्तर जिलेका छोटा भाग और दक्षिण बड़ा भाग है। उत्तरके भागमें गण्डकी और तिलजुगा नदियाँ और उपजाऊ भूमि और दक्षिण भागमें पहाड़ियोंका सिलसिला और कम उपजनेवाली भूमि है गङ्गासे दक्षिणखानोंसे लोहा सीसा, कङ्कड़ और कोयला निकलते हैं; पत्थर और स्लेटकी भी खान हैं। जिलेके दक्षिणी भागमें जङ्गल बहुत है, जङ्गली पैदावारोंमें महुआ अधिक होता है। वृक्षोंसे गोंद इकट्ठा किया जाता है। जंगली बंवर और घाससे रस्सियाँ बनाई जाती हैं। संथाल लोग बाघ और भालुओंको मार कर सरकारसे इनाम लेते हैं।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २०३५२१८ और सन् १८८१ में १९६९७७४ मनुष्य थे; अर्थात् १७७४०१३ हिन्दू, १८७५१७ मुसलमान, १०९१ कृस्तान, और ७१५३ संथाल और कोल। जातियोंके खानेमें २१७६१६ ग्वाला, १७५९९५ भूमिहार, १२३३३७ मुसहर, ११८९४० धानुक, १०८४३३ दुसाध, ९३६५२ कोईरी, ५९८६४ कानू, ५७२९१ ब्राह्मण, ५६०६७ राजपूत, ५६६३२ तेली, ५४०११ तांती, ५२६३४ चमार, ४८६३१ बनियाँ शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ में इस जिलेके कसबे मुंगेरमें ५७०७७ जमालपुरमें १८०८९ और शेखपुरा, वधिया, बरवीघा, खुटिया, और मथुरापुरमें दस हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि मुंगेर कसबा पूर्वकालमें मुद्गर मुनिके नामसे मुद्गरपुर या मुद्गराश्रम नामसे प्रसिद्ध था। क्योंकि मुद्गर मुनि यहाँ निवास करते थे। मुद्गरका अपभ्रंश मुंगेर है। कुछ लोगोंका मत है कि विश्वामित्रके पुत्र राजा मुद्गरके नामसे इसका नाम मुंगेर हुआ था। लोग मुङ्गेरको राजा कर्णकी राजधानी कहते हैं, किन्तु महाभारत या पुराणोंमें मुझको इसका कोई प्रमाण नहीं मिला। जान पड़ता है कि सन् ११९५ ई० में महम्मद वखतियार खिलजीने मुङ्गेरको ले लिया था। गोरके अफगान वादशाह हुसेनशाहके पुत्र दनआलेने सन् १४९७ ई० में मुङ्गेरके किलेको सुधारा था।

बंगालेके नव्वाव मीरकासिमने, जो मुर्शिदावादमें रहता था, अङ्गरेजोंकी हुकूमतसे छूट जानेका मनसूबा बांधा और मुङ्गेरमें आकर फौज दुरस्त करके अङ्गरेजोंकी भांति उसे कवाइद सिखाई। उसने सन् १७६३ में अवधके नव्वाबको मिलाकर लड़ाई आरम्भकी, घेरिया और ऊधानालाकी लड़ाइयोंमें उसकी सेना परास्त हुई। वह भागकर अवधके नव्वावके पास चला गया इत्यादि। अङ्गरेजी अधिकार होनेपर मुङ्गेर प्रसिद्ध हुआ। सन् १८१२ ई० में मुङ्गेरमें सिविल स्टेशन बना। एक समय मुङ्गेरके मुसलमानोंके पुराने किलेमें ईष्टइंडियन कम्पनीकी एक फौज रहती थी।

अजगयबीनाथ।

जमालपुरसे १८मील (लक्खीसराय जंक्शनसे ४३ मील) पूर्व भागलपुर जिलेमें सुलतानगञ्जका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे थोड़ी दूर उत्तर जहांगीरा गाँवके पास गङ्गाके बीच धारामें एक चट्टानपर अजगयबीनाथ महादेवका मन्दिर है। यात्रीगण नावमें सवार हो

चट्टानपर जाते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँ जह्नु ाश्रम था और वैजू नामक ग्वाला उसी स्थानसे गङ्गाजल ले जाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाता था। वहुतेरे लोग वहाँसे जलले जाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाते हैं। अजगयवीनाथ लिङ्गस्वरूप हैं। उनके पास जह्नुमुनिका स्थान और उनके मन्दिरके आस पास कई जीर्ण पुराने मन्दिर हैं। चट्टानके वगलमें चट्टान काट कर गणेश, सूर्य, विष्णु, भगवती, महावीर आदि देवताओंकी मूर्त्तियाँ वनी हुई हैं। माघकी पूर्णमासीसे फागुनकी शिवरात्रितक चट्टानपर मेला होता है।

भागलपुर।

सुलतानगञ्जसे १५ मील (लक्षीसराय जंक्शनसे ५८ मील) पूर्व भागलपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे विहारमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान, (२५ अंश १५ कला १६ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश ३ कला २९ विकला पूर्व देशान्तरमें) गङ्गाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारेपर २ मील लम्वा और लगभग १ मील चौड़ा भागलपुर शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भागलपुर शहर और इसकी फौजी छावनीमें ६९१०६ मनुष्य थे; अर्थात् ३४७०८ पुरुष और ३४३९८ स्त्रियां। इनमेंसे ४८९१० हिन्दू, १९६६६ मुसलमान, ३०३ कृस्तान, १४४ जैन, ४३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी; २५ वौद्ध और १५ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ४९ वां, वङ्गालमें ७ वाँ और विहारमें ४ था शहर है।

शुजागञ्ज, नाथनगर, चम्पानगर, मसूरगञ्ज, आदि नामोंसे कई खण्ड होकर भागलपुर शहर वसा है। शुजागञ्जमें रेलवे स्टेशन है। और यह सव मुहल्लोंसे अधिक रवनकदार है। स्टेशनके निकट टोडरमलकी उत्तम धर्मशाला वनी हुइ ह उसीमें मैं टिका था। गङ्गाके तीरपर बूढ़ानाथ महादेवका सुन्दर मन्दिर वना है। भागलपुरमें बूढ़ानाथ वड़े प्रसिद्ध देवता हैं। एक महन्तके आधीन मन्दिरकी वड़ी जायदाद है।

चम्पानगर, जो पूर्व समयमें बौद्ध राजाओंकी राजधानी था। शुजागंजसे ४ मील पश्चिम ह। उसमें रामेश्वरदत्त ठाकुरका सदावर्त जारी है। स्टेशनसे करीव २ मील एक पहाड़ीपर अङ्गरेजोंकी एक पुरानी कोठी है। स्टेशनसे २ मील कमिश्नरी और जिलेकी कचहरियां हैं। स्टेशनसे ३ मील एक जैन मन्दिर है, जहाँ जैन यात्री उत्साहसे जाते हैं। मन्दिरके पास एक वड़ी सराय है। शहरमें अङ्गरेजोंके २ स्मरण स्तंम्भ और शहरमें तथा इसके आस पास मुसलमानोंके कई दरगाह हैं। करनगढ़ पहाड़ीपर देशी पल्टन रहती है।

भागलपुर तिजारतका स्थान है। वहाँ रेशमका वड़ा कार वार होता है और २५¾ गण्डेके सेरसे जिनिस विकते हैं। शहरमें जल कल लगी है। भागलपुरका सेंट्रलजेल, दरी, कम्वल और पर्दा वननेके लिये मशहूर है। भागलपुरमें एक देशी कालिज, सिविल अस्पताल, दवाई खाना, और कई मान्य जमींदार हैं।

भागलपुर जिला—जिलेका क्षेत्रफल ४२६८ वर्गमील है। यह जिला गङ्गाके दोनों ओर है। इसके उत्तर नैपालका राज्य; पूर्व ओर गङ्गाके उत्तरका पूर्नियां जिला; पूर्व और दक्षिण गंगाके दक्षिण ओर संथाल परगना जिला और पश्चिम दरभङ्गा और मुङ्गेर जिला है।

जिलेके पूर्वोत्तर भागमें जंगल है, जिसमें वाघ, भैंसे और गेंडे रहते हैं। जिलेमें आम और ताड़के वाग वहुत हैं। भागलपुर शहरके २० मील दक्षिणसे पहाड़ी देश आरम्भ होता

है। पानी जमीनकी सतहसे थोड़ेही नीचे है। वृक्ष बड़े बड़े होते हैं। इस जिलेमें गङ्गाके दक्षिण चन्दन नदी और उत्तर कोशी, तिलजुगा, डिमरा इत्यादि बहुत नदियां बहती हैं और रेशमके कीड़े बहुत पाले जाते हैं। अमरपुर, खदवली, वलुआ और सुलतानगंज तिजारती गाँव है। गङ्गासे उत्तर सीङ्गेश्वर स्थान गाँवमें हाथीका मेला होता है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय २०३३३८५ और सन् १८८१ में १९६६१५८ मनुष्य थे; अर्थात् १७६४३०४ हिन्दू, १८५५३३ मुसलमान, १५७३२ पहाड़ी जाति, ५७८ कृस्तान और ११ यहूदी। जातियोंके खानेमें ३४३८३० ग्वाला, १०१६६५ धानुक, ८२६०९ ततवा, ८२३०२ कोइरी, ७९५८४ मुसहर, ७६४०७ चमार, ७१४२० ब्राह्मण, ७०८६३ दुसाध, ६६९४६ तेली, ६०४९१ राजपूत, ४२३५१ भूमिहार, ३८३६३ कूर्मी, ३६३१९ कुँभार, ३५५१६ केवट, ३५१७४ वानियां, ३४७२४ कान्दू, ३३९३७ नाई और शेषमें दूसरी जातियां थीं। पहाड़ी जातियोंमें १७९०४ भुइयाँ, १३३८४ संथाल, ८९७७ भुम्मिज और २३२२ कोल थे। भागलपुर जिलेमें केवल भागलपुर एक शहर है, कोलगङ्ग और सोनवरसा छोटे कसबे हैं।

मन्दरगिरि—भागलपुर जिलेके बांका सवडिवीजनमें लगभग ७०० फीट ऊँची मन्दरगिरि नामक एक छोटी पहाड़ी है। उसके निकट दो तीन अन्य छोटी पहाड़ियां हैं। मन्दरगिरिके ऊपर सीताकुण्ड और रामकुण्ड नामक शीतल जलके कुण्ड; शिखरपर मन्दिरमें भगवानका चरणचिह्न और देवीका मस्तक, और पहाड़ीके पादमूलपर पापहरणी नामक पुष्करणी है। उससे दो मील पश्चिम बौलीगाँवमें मधुसूदन भगवान्‌का मन्दिर है। मन्दिरसे कुछ दूरपर एक बड़ा सरोवर है। पौषकी संक्रातिके समय मेला लगता है और ३ दिनों तक रहता है। यात्री-गण पापहरणी पुष्करणीमें स्नान करके मन्दरगिरिपर एकत्र होते हैं और वहाँसे उतर कर मधुसूदन का दर्शन करते हैं। अधिकारी गण मधुसूदन भगवान्‌को पापहरणी पुष्करणीमें स्नान कराकर मन्दर पहाड़ीके एक छोटे मन्दिरमें ठहराते हैं और सन्ध्याके समय उनको फिर लेजाते हैं लोग कहते थे कि मन्दरगिरिके नीचे एक दैत्य दबा हुआ है। विष्णुने उसका शिर काटडाला और उसके धड़को दबानेके लिये इस गिरिपर अपना चरण-चिह्न रखते हैं। इसीसे सब लोग पहाड़ीको पवित्र समझते हैं।

साहबगंज।

भागलपुरसे ४६ मील (लक्षीसराय जंक्शनसे १०४ मील) पूर्व साहबगञ्जका रेलवे स्टेशन है। सूबेविहारके संथालपरगना नामक जिलेमें गङ्गाके दहिने किनारे पर साहबगञ्ज उन्नती करता हुआ तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय साहबगञ्जमें ११२९७ मनुष्य थे; अर्थात् ९०८९ हिन्दू, ३०६४ मुसलमान, १२२ कृस्तान और २२ जैन।

गङ्गाके किनारे पर एक धर्मशाला बनी है; कसबेसे सबईघास, जिसका कागज बनता है, दूसरी जगहोंमें बहुत भेजे जाते हैं।

साहबगञ्जके उसपार मनिहारीघाटसे इष्टर्नबङ्गाल स्टेट रेलवे उत्तर और पूर्वोत्तर गई है। पूर्नीया, दिनाजपुर, दार्जिलिङ्ग, रङ्गपुर, ग्वालपाड़ा, गौहाटी इत्यादिके जानेवाले लोग उसकी गाड़ीमें सवार होकर जाते हैं।

साहबगञ्जसे ७ मील पश्चिम तेलियागढ़ी नामक उजड़ा हुआ पुराना किला है, एक समय गङ्गा उसके पास बहती थी।

साहबगञ्जसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है, तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ $\frac{1}{2}$ पाई लगता है।

(१) साहबगञ्जसे दक्षिण ईष्टइण्डियन रेलवे।

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

२४ तीनपहाड़ जंक्शन।

५० पकउड़।

६४ मुड़ाडोई।

७४ नलहाटी जंक्शन।

८२ रामपुरहाट।

१०० साँइथिया।

१४४ खाना जंक्शन।

तीन पहाड़ जंक्शनसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

नलहाटी जंक्शनसे २७ मील पूर्व मुर्शिदाबादके पास अजीमगञ्ज।

खाना जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ८ मील वर्द्धवान, ४६ मील मगरा, ५१ मील हुगली जंक्शन, ५४ मील चन्दरनगर, ६१ मील सेवड़ाफुली जंक्शन, ६३ मील श्रीरामपुर, और ७५ मील हवड़ा और खाना जंक्शनसे पूर्वोत्तर ४६ मील रानीगञ्ज, ५७ मील आसनसोल जंक्शन, १०८ मील मधूपुर जंक्शन, १२६ मील बैद्यनाथ जंक्शन, और १८७ मील लक्षीसराय जंक्शन।

(२) साहबगञ्जसे उत्तर कुछ पश्चिम ईष्टर्नबङ्गाल स्टेट रेलवे, मनीहारी घाटसे फासिला।

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन—

७ मनीहारी।

२३ कठिहर जंक्शन।

४० पुर्नियाँ।

४५ कसवा।

८२ फर्बिसगञ्ज।

९६ अचराघाट (कोसीके किनारेपर)

कठिहर जंक्शनसे पूर्व २४ मील वरसूई जंक्शन, ३७ मील रायगञ्ज, ७० मील दीनाजपुर, और ८९ मील पार्वतीपुर जंक्शन! और वरसूई जंक्शनसे ३५ मील उत्तर किसनगञ्ज।

(३) साहबगञ्जसे पश्चिम ईष्टइण्डियन रेलवे।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२६ कहलगाँव।

४६ भागलपुर।

६१ सुलतानगञ्ज।

७९ जमालपुर जंक्शन।

१०४ लक्षीसराय जंक्शन।

जमालपुर जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर मुङ्गेर।

राजमहल।

साहबगञ्जसे २४ मील दक्षिण कुछ पूर्व तीन पहाड़का रेलवे जंक्शन है। तीन पहाड़से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल तक रेलवेकी शाखा गई है। सूबे बिहारके संथाल परगना जिलेमें (२५ अंश, २ कला, ५१ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश ५२ कला ५१ विकला पूर्व देशान्तरमें) गङ्गाके दहिने सब डिवीजनका सदर स्थान राजमहल एक छोटा कसवा है।

राजमहल एक समय बङ्गालकी राजधानी था, अब मट्टीके छोटे मकानोंका जिनमें चन्द अच्छे मकान हैं, एस छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय केवल-३८३९ मनुष्य थे । वर्तमान कसबेके पश्चिम मुसलमानोंके पुराने शहरके खँडहर जङ्गलमें ४ मील फैले हुए हैं । रेलवे स्टेशनसे कई सौ गज दूर उत्तरसे दक्षिणको १०० फीट लम्बी संगीदालान नामक एक इमारत हीन दशामें खड़ी है । उसके मध्यमें काले पत्थरके ३ दरवाजे हैं । लोग कहते हैं कि दिल्लीके बादशाह जहाँगीरके पुत्र बिहारके गवर्नर सुलतान शूजाके महलका यह हिस्सा है । कचहरीसे ३ मील पश्चिम मैनातालाबके दक्षिण एक ईटोंकी इमारत और १०० गज दक्षिण मैनामसजिद है । इनके अलावे राजमहलमें बहुतेरी पुरानी मसजिदें और मुसलमानोंके स्मारक चिह्न हैं । स्टेशनके पास सरकारी इमारतें बनी हुई हैं । गल्ला, तसर, पहाड़ी बांस, छोटी लकड़ियाँ इत्यादि वस्तु राजमहलसे दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती हैं ।

इतिहास—प्रथम राजमहलका नाम आगमहल था । बादशाह अकबरके प्रसिद्ध जनरल राजा मानसिंहने उडीसाको जीतकर लौटनेपर सन् १५९२ ई० में आगमहलको सूबे बंगालका सदर स्थान बनाया और उसका नाम राजमहल रख दिया। सन् १६०७ में इसलामखाँने राजमहलको छोड़कर ढाकेको सूबेका सदर स्थान बनाया, किन्तु सन् १६३९ में बादशाह जहाँगीरके पुत्र सुल्तान शुजाने फिर राजमहलको बंगालेका सदर स्थान नियत किया । अठारहवीं सदीके आरम्भमें जब मुर्शिदकुलीखाँने मुर्शिदाबादको सूबेका सदर मुकाम बनाया, तबसे राजमहलकी घटती होने लगी। सन् १८६३ में गङ्गाजीकी प्रधान धारा राजमहलसे ३ मील दूर हो गई ।

मालदह और इंगलिस बाजार ।

राजमहलसे ३४ मील दूर (२५ अंश १४ विकला उत्तर अक्षां और ८८ अंश, ११ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) महानन्दाके दहिने किनारेपर पुराने मालदहसे ४ मील दक्षिण सूबे बिहारमें भागलपुर विभागके मालदह जिलेका सदर स्थान इंगलिसबाजार कसबा है, जिसको अङ्गरेजी बाजार भी कहते हैं । राजमहलके समीप आगबोट गङ्गाके आर पार चलता है आगे देहाती सड़क हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इंगलिसबाजारमें १३८१८ मनुष्य थे; अर्थात् ८०५७ हिन्दू, ५७४६ मुसलमान, ८ कृस्तान, ४ जैन और ३ एनिमिष्टिक ।

कसबेको बाढ़से बचानेके लिये एक छोटा बान्ध बना है । ईष्टइंडियन पनीकी पुरानी कोठीमें जिलेकी कचहरियाँ और सम्पूर्ण सरकारी आफिस हैं कसबेमें गल्लेकी बड़ी तिजारत होती है ।

इंगलिसबाजारसे लगभग ४ मील दूर महानन्दा और कालिन्दीके सङ्गमके निकट पुराना मालदह, जिसको मालदा भी कहते हैं, एक छोटा कसबा है । सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मालदहमें ४६९४ मनुष्य थे । मालदहमें बहुतेरे लोग रेशमके कीड़ोंको पालकर रेशमका काम करते हैं । वहाँ रेशमी कपड़ा अच्छा बुना जाता है और वहाँके आम बहुत प्रसिद्ध हैं । मालदह अठारहवीं सदीमें रुई और रेशमके कामके लिये बड़ा प्रख्यात था । वहाँ डच और फरासिसियोंकी कोठियाँ थीं । इंगलिसबाजारमें सन् १६५६ की नियतकी

हुई अङ्गरेजोंकी कोठी थी। मालदहसे २५ मील दक्षिण महानन्दा और खाड़ीनदीके संगमके पास रहमपुर तिजारती कसवा है।

मालदह जिला—इस जिलेका क्षेत्र फल १८९१ वर्ग मील है। इसके पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण गङ्गा नदी वहती है। यह जिला सन् १८७६ ई० में राजशाही विभागसे भागलपुर विभागमें कर दियागया। महानन्दा नदी जिलेके मध्य होकर उत्तरसे दक्षिण वहती है। जिलेके पूर्वका आधा भाग ऊँचा है। जिलेमें महानन्दाके अतिरिक्त कालिन्दी, पूर्णभावा इत्यादि कई नदियाँ वहती हैं और वंगालकी प्रसिद्ध पुरानी राजधानी गौड़ और पाण्डुआकी दिलचस्प तवाहियाँ हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ८१३८५५ और सन् १८८१ में ७१०४४८ मनुष्य थे; अर्थात् ३७९१५३ हिन्दू, ३२९५२५ मुसलमान, १७३४ पहाड़ी संथाल जो अपने पुराने मतमें हैं, २६ कृस्तान, ७ यहूदी और ३ ब्राह्म। पहाड़ी कोमोंमेंसे ७००४४ हिन्दूमें लिखे गये थे, जिनमेंसे ६०७०० कोचवाली और राजवंशी, ७५७८ वीन, ४१८२ खरवार, ८९७ कोल, ८३३ संथाल और २५९ मुंड्याँ थे। खास हिन्दुओंमें २३७५६ कैवरत, १६८७५ ग्वाला, १५७३६ तियर, १२००१ ब्राह्मण और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं, राजपूत केवल ५१०४ थे।

इतिहास—मालदह जिलेका प्राचीन इतिहास गौड़ और पाण्डुआके इतिहासमें देखो। सन् १६५६ में ईष्टइंडियन कम्पनीकी कोठी मालदहमें नियत हुई। सन् १८१३ में राजशाही, दीनाजपुर और पुर्नियाँ इन ३ जिलेसे निकाल कर मालदह जिला वना।

गौड़।

इंगलिसवाजारसे ८ मील दक्षिण पश्चिम मालदह जिलेमें (२४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १० कला पूर्व देशान्तरमें) बंगालकी प्राचीन राजधानी गौड़ अति हीन अवस्थामें विद्यमान है, जिसको लखनवती भी कहते हैं। पुरानी वस्तुओंके प्रेमियोंके लिये यह वड़ा हृदयग्राही है। इसके किले और महलोंमें वड़ा जङ्गल होगया था; किन्तु निवासीगण जङ्गलको साफ करके खेती वढ़ाते जाते हैं। शहरतलियोंके साथ गौड़का क्षेत्र फल २० से ३० वर्गमील तक था। खास शहर उत्तरसे दक्षिण तक ७½ मील लम्वा और १ से २ मीलतक चौड़ा अर्थात् लगभग १३ वर्गमील क्षेत्रफलको छिपाता था। महानन्दा और गङ्गाके वीचमें गौड़की तवाहियाँ फैली हुई हैं। गौड़के पश्चिम भागीरथीके वर्तमान छोटे नालेमें पहले गङ्गाकी प्रधान धारा थी। अव गङ्गाकी धारा चार पाँच कोस हट गई है। लगभग ६ मील लम्वी किलावंदियोंकी एक लाइन भागीरथीके पुराने नालेसे भोलाहाटके पास महानन्दाके निकट तक टेढ़ी शकलमें फैली हुई है। किलेकी भीति खास कर ईटोंसे वनी हुई लगभग १०० फीट चौड़ी है। घुमावके पूर्वोत्तरभागके समीप एक फाटक है। उसके आस पास अनेक तालाव और एक मुसलमानी फकीरका स्मारकचिह्न है। उससे पूर्वोत्तर ७१ फीट ऊँचा एक पुराना मीनार खड़ा है। किलेकी भीतिके उत्तर आदिशूर और वलालसेन दो हिन्दू राजाओंके महलोंकी निशानियाँ हैं और पीछे गौड़की उत्तरीय शहरतली है उसके पश्चिमी भागमें भागीरथीके निकट हिन्दुओंका वनाया हुआ उत्तरसे दक्षिण प्रायः १६००

गज लम्बा और पूर्वसे पश्चिम तक ८०० गजसे अधिक चौड़ा सागर दीघी नामक मीठे जलका बड़ा तालाव है। उसके किनारे ईंटोंसे बंधे हुए हैं। किनारोंपर मुसलमानी इमारतें हैं, जिनमें मखदुमशाह जलालका मकबरा प्रसिद्ध है। उस शहरतलीके सामने शाहदुलापुर बाजारके पास गङ्गाके पुराने बेड़का एक प्रधान घाट है। उस जगह दूर दूरसे मुर्दे जलानेके लिये लाये जाते हैं। गौड़में छोटे तालाव प्रत्येक स्थानोंमें देखे जाते हैं। स्थान स्थानमें मकानोंकी नेव और पूजाके छोटे स्थानोंकी निशानियाँ देख पड़ती हैं। भागीरथीके किनारेपर उत्तरसे दक्षिण तक लगभग १ मील लम्बा और ६०० से ८०० गज तक चौड़ा मुसलमानों का किला फैला हुआ है। किलेकी दीवार ईंटोंसे बनी हुई है। प्रत्येक कोनोंके पास पाये और दक्षिणके कोनेके निकट ४० फीट ऊंची और ८ फीट मोटी ईंटोंकी दीवारसे घेरा हुआ महल उजाड़ पड़ा है। महलसे थोड़ा उत्तर शाही कवर स्थान है जिसमें हुसेनशाह और बंगालके दूसरे स्वाधीन बादशाह दफन किये गये थे। वह स्थान निहायत उजड़ गया है। किलेके भीतर एक उजड़ी हुई मसजिद और दूसरी कदमरसूल नामक छोटी मसजिद है। किलेके पूर्वकी दीवारसे बाहर ईंटोंके एक ऊँचे टावरपर एक कमरा है, जिसपर जानेके लिये गोलाकार सीढ़ियां बनी हैं। किलेसे लगभग १½ मील उत्तर खाईसे घेरा हुआ फूलबाग नामसे प्रसिद्ध एक स्थान है। उसके दक्षिण-पूर्व 'प्यास बारी' नामक खारा जलका एक बहुत बड़ा तालाव है। गौड़ शहरकी दीवारके भीतर बहुतेरे दूसरे बड़े तालाव हैं। उनमेंसे कई एकमें घड़ियाल रहते हैं। वहाँके तालावोंमें छोटी सागरदीघी उत्तम है। 'प्यास बारी' और किलेके बीचमें गौड़में सबसे बड़ी इमारत सुनहली मसजिद खड़ी है। इसकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १८० फीट, चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमतक ६० फीट और ऊँचाई कारनिसके शिरोभाग तक २० फीट है। पहले इसके ऊपर ३३ गुम्बज थे। गौड़ शहरके दक्षिणकी दीवारमें कोतवाली दरवाजा नामक सुन्दर बनावटका पुराना फाटक खड़ा है।

इतिहास–गौड़के नियत होनेका समय जान नहीं पड़ता है। ऐसा निश्चय है कि यह पूर्वकालमें हिन्दू राजाओंके आधीन बंगालकी राजधानी थी। इसी गौड़से पञ्चगौड़ ब्राह्मण प्रसिद्ध हुए थे। कथा ऐसी है कि गौड़के राजा आदिशूरने कन्नौजके राजासे ५ वैदिक ब्राह्मण मांगे। कन्नौजमें देश देशके विद्वान् ब्राह्मण रहते थे। राजाने ५ वैदिक ब्राह्मणोंको गौड़में भेज दिया। राजा आदिशूरने अवध प्रदेशके गोंड़ाके ब्राह्मणोंको गौड़ की, मिथिला देशके ब्राह्मणको मैथिलकी, कन्नौजके ब्राह्मणको कान्यकुब्जकी, सरस्वतीके निकटके ब्राह्मणको सारस्वतकी, और उत्कल देशके ब्राह्मणको उत्कलकी पदवी दी। देशी लोग गौड़के उजड़े पुजड़े महलोंमेंसे चन्दको आदिशूर बल्लालसेन और लक्ष्मणसेनके कहते हैं। जान पड़ता है कि शहरका पुराना नाम लक्ष्मणवती था, जिसका अपभ्रंश लखनवती है। गौड़ नाम भी बहुत पुराना है किन्तु यह राज्यका नाम ज्ञात होता है।

गौड़का ठीक इतिहास मुसलमानोंके विजयके समय सन् १२०४ ई० से आरम्भ होता है। लगभग ३०० वर्ष तक यह मुसलमानोंके बंगालका प्रधान बैठक था। उस समयके अन्तके भागमें बहुतेरी मसजिदें और मुसलमानोंकी दूसरी इमारतें बनी थीं, जो अबतक देखनेमें आती हैं। बङ्गालके अफगान बादशाहोंने स्वाधीन बन जानेके पश्चात् गौड़को छोड़ कर पाण्डुआको राजधानी बनाया, किन्तु पीछे पाण्डुआ छोड़ दियागया और फिर गौड़

मुसलमानोंकी राजधानी हुआ । अफगान वंशके पीछे गौड़से चन्द मील दक्षिण-पश्चिम गङ्गाके किनारेपर गवर्नमेन्टका सदर स्थान बनाया गया । सन् १५३७ में शेरशाह अफगानने गौड़को लूटा । उस समयसे गौड़की घटती आरम्भ हुई । सन् १५७५ में दिल्लीके मुगल बादशाह अकबरने गौड़के सबसे पिछले अफगान बादशाह दाउदखांको परास्त किया। शहर बरबाद हुआ ।

पांडुआ ।

मालदहसे ८ मील, और इंगलिसबाजारसे लगभग १२ मील (गौड़से २० मील) पूर्वोत्तर मालदह जिलेमें पाण्डुआका अदीना मसजिद है । पाण्डुआको परुआ भी कहते हैं । एक पक्की ६ मील लम्बी सड़क पाण्डुआ होकर गई है । मुसलमानोंके प्रायः सम्पूर्ण स्मारक चिह्न और लगातार शहरकी निशानियाँ उसी सड़कके किनारोंपर हैं । सिकन्दरशाहने सन् १३६० ई० में अदीना मसजिदको बनवाया । मसजिद उत्तरसे दक्षिणको लगभग ५०० फीट और पूर्वसे पश्चिमको ३०० फीट फैली हुई है । यह ऐसे ढबसे बनी है कि इसकी दीवारों और खम्भोंसे १२७ मुरब्बे भाग बन गये हैं । प्रत्येक भागके ऊपर एक गुम्बज है, बाहरी ओर बहुतेरी छोटी खिड़कियां बनी हुई हैं । खास मसजिदके मध्यका गुम्बज सतहसे ६० फीट ऊँचा है । पाण्डुआकी सम्पूर्ण इमारतें पत्थरकी हैं । गौड़के समान पाण्डुआमें भी अब पहलेके समान जङ्गल नहीं है । वहाँके निवासी हलसे जोतकर खेत बढ़ाते जाते हैं । किलेकी निशानी भी दूरतक देखनेमें आती हैं । मखदुमशाह जलाल और उसके पोते कुतब शाहके स्मारक चिह्न बने हैं । वहाँ कार्तिक या अगहनमें मेला होता है और ५ दिन रहता है । मेलेमें पाँच छः हजार मनुष्य आते हैं ।

इतिहास—पाण्डुआ आरंभमें गौड़के बाहरीका एक पड़ाव था । पीछे दिहाती लोगोंके रहनेका प्रिय स्थान हुआ । बंगालके अफगान बादशाहने स्वाधीन होजानेके पश्चात् सन् १३५३ ई० में गौड़को छोड़कर पाण्डुआको राजधानी बनाया । जान पड़ता है कि तिजारती और कारीगर लोगोंने गौड़को नहीं छोड़ा, केवल सरकारी कचहरियां पाण्डुआमें बनाई गईं । पीछे पाण्डुआको तोड़कर फिर गौड़ राजधानी बना । किन्तु कुछ दिनों तक पाण्डुआ बादशाहोंका दिहाती महल था । पाण्डुआमें सुनहली मसजिद, १० गुम्बजवाली लक्खीमसजिद, अदीना मसजिद, जो इस देशमें सबसे अधिक प्रसिद्ध इमारत है और बादशाहोंका महल प्रधान इमारतें हैं ।

मुर्शिदाबाद ।

तीनपहाड़ जंक्शनसे ५० मील (साहबगञ्जसे ७४ मील) दक्षिण मुर्शिदाबाद जिलेके नलहाटीमें रेलवे जंक्शन है । लोग कहते हैं कि राजानलके नामसे इसका नाम नलहाटी है। नलहाटी वस्तीसे कई एकसौ गज दूर पहाड़ीके नीचे पत्थरपर सीताजीका चरणचिह्न और १ मील दूर पार्वतीजीका बड़ा मन्दिर है ।

नलहाटीसे पूर्व २७ मीलकी रेलवे शाखा भागीरथी गङ्गाके दहिने किनारेपर अजीमगञ्जको गई है । अजीमगञ्ज मुर्शिदाबाद जिलेमें एक वस्ती है, जिसमें कई एक धनी सौदागर

रहते हैं और कई एक सुन्दर जैन मन्दिर बने हुए हैं। बाजार होकर एक पक्की सड़क गई है। अजीमगञ्ज और मुर्शिदाबादके बीचमें नाव चलती है।

अजीमगञ्जके सामने उसपार अर्थात् भागीरथीके बायें किनारेपर (२४ अंश, ११ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें) सूबे बङ्गालके नदिया विभागमें मुर्शिदाबाद जिलेमें प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुर्शिदाबादमें ३५५७६ मनुष्य थे; अर्थात् १८०४६ पुरुष और १७५३० स्त्रियाँ। इनमें २०७८९ हिन्दू, १२६१५ मुसलमान, २१३२ जैन और ४० कृस्तान थे।

मुर्शिदाबाद एक समय बहुत बड़ा शहर था। यद्यपि इसकी मनुष्य-संख्या घट रही है किन्तु अबतक इसमें बहुतेरे धनी जैन सौदागर विद्यमान हैं और चन्द वस्तु देखने योग्य हैं; दूरतक ईंटोंके बहुतेरे मकान बने हुए हैं मकानोंके पास बाँसका झाड़ और वृक्ष लगे हुए हैं और कई महल्लोंमें सुन्दर देवमन्दिर बने हुए हैं।

निजामत किलेसे अलग मुबारक मञ्जिलके निकट मनीबेगमकी बनवाई हुई मसाजिद किलेके बाहर बरहमपुर जानेवाली सड़कके पास घोड़ेगाड़ीके मकान और घोड़े और हाथियोंका बड़ा अस्तबल; और सामने कुछ दूर पर निजामत कालिज जो नव्वाबके रिस्तेदारोंकी शिक्षाके लिये ७८००० रुपयेके खर्चसे बना है, देखनेमें आते हैं। कसबेके बाहर दक्षिण-पूर्व ओर मोती झीलके पूर्वोत्तरके कटरेमें मक्केकी बड़ी मसाजिदके ढाँचेकी बनी हुई नव्वाब मुर्शिद-कुलीखाँका मकबरा है। इसके ७० फीट ऊँचे दो मीनार हीन दशामें खड़े हैं। इस अभिप्रायसे सीढ़ोके नीचे नव्वाबकी कबर बनी है कि सब लोगोंके पाँव उसपर पड़ेंगे। उसके पड़ोसमें तोपखाना था। सड़कसे ६० गज दूर १७ फीट लम्बी, जिसकी नल ६ इञ्च चौड़ी है, एक बड़ी तोप पड़ी है उसपर सन् १६३७ का पारसी लेख है।

कसबेसे २ मील दक्षिण एक मनोरम स्थानमें मोतीझील है। झीलमें बहुतेरे घड़ियाल रहते हैं। पहले झीलके बगलोंमें शिराजुद्दौलाका बनवाया हुआ उत्तम महल था, उसकी चन्द मेहराबियाँ अबतक देखनेमें आती हैं।

भागीरथीके दहिने किनारेपर मोतीझीलके सामने मुर्शिदाबादके नव्वाबोंका खुसबाग नामक पुराना कबरगाह है, वहाँ बहुतेरे मकबरोंके अतिरिक्त एक मसजिद और अन्य दो इमारते हैं। एक मकबरेमें सिराजुद्दौला और उसकी स्त्री की कबर है।

मुर्शिदाबादमें धनी जैन सौदागर बहुत हैं। बहुत लोग रेशमके कीड़े पालते हैं और कोएको कातनेवालोंके पास भेजते हैं। रेशमी कपड़ा और रुमाल बहुत तैयार होते हैं। सोने चाँदीके कारचोबी और हाथीदाँतका उत्तम काम बनता है।

कासिमबाजारमें एक बङ्गाली राजाका सुन्दर महल बना है। राजबाड़ीके पास देवमन्दिरके चारों बगलोंके मकानोंमें अनेक देवमूर्त्तियाँ स्थापित हैं। और वहाँ सदावर्त लगा हुआ है।

नव्वाबका महल—मुर्शिदाबादमें दिलचस्पीकी प्रधान वस्तु नव्वाबका महल है। वह भागीरथीके किनारेपर बहुत बड़ी इमारत इटैलियन ढाँचेका बना हुआ है; जो सन् १८३७ ई० में लगभग १७००००० रुपयेके खर्चसे १० वर्षमें तैयार हुआ था। वह महल ४१५

फीट लम्बा, २०० फीट चौड़ा और ८० फीट ऊँचा है। अग्रभाग उत्तर है मार्बुलका चमकीला फर्श बना है। जेवनारका मकान २९० फीट लम्बा, जिसमें आइने जड़े हुए बहुतेरे दरवाजे हैं, बना हुआ है। इमारतके मध्यमें गुम्बजके नीचे १५० शाखाओंका एक बड़ा झाड़ लटका है और फर्श पर हाथीदाँतका मनोहर तख्त है। दीवारमें नव्वाब और उनके वंशके बहुतेरे लोगोंकी तस्वीरें टँगी हुई हैं। प्रधान दर्वाजेके दहिने जनाना किता है।

हातेके भीतर उत्तरके प्रधान फाटकके सामने सन् १२६४ हिजरी (सन् १८४७ ई०) का बना हुआ एक सुन्दर इमामबाड़ा खड़ा है।

खास महलको लोग आइनामहल कहते हैं। एकही घेरेके भीतर नव्वाबका महल, इमामबाड़ा और दूसरी इमारतें हैं। सब मिलाकर निजामत किला कहलाता है।

मुर्शिदाबाद जिला—जिलेके उत्तरसे दक्षिण-पूर्वके कोनतक सीमापर गंगाकी प्रधान धारा पदमा जो इस जिलेको मालदह और राजशाही जिलेसे अलग करती है; दक्षिण वीरभूमि जिला और पश्चिम संथाल परगना जिला है। जिलेका प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद और सदर स्थान बरहमपुर है। गङ्गाकी दूसरी धारा भागीरथी जिलेके मध्य होकर बहती है। भागीरथीके दाहिने अर्थात् पश्चिमका देश सरद और अंकड़ीला है और उपजाऊ नहीं है, किन्तु पूर्वका देश जो पदमा, भागीरथी और जलांगी नदियोंसे घेरा हुआ है; बंगालके सबसे अधिक उपजाऊ देशोंमेंसे एक है। गङ्गाके बायेंके हिस्सेमें भगवान्गोला और धुलियान प्रधान बाजार और बायें किनारे पर जंगीपुर, जियागंज, मुर्शिदाबाद, कासीमबाजार और बरहमपुर प्रधान स्थान है। इस जिलेके मालिमापुरमें प्रसिद्ध जगतसेठका घर है। वह सरकारसे कुछ पेंशन पाकर अब उसीसे गुजारा करते हैं। कई छोटी धारा गङ्गाकी धारासे निकली हैं और कई एक भागीरथीमें गिरती हैं। जंगलोंसे मधुमक्खियोंका मोम और लाही बनाई जाती है। जंगली जात संथाल और धांगड़, जूट और बूटीके वृक्षोंपर लाहके कोड़ेको पालते हैं। गाँव वाले अपने घरपर रेशमके कीड़ेको पालते हैं और कोवेको कातने वालोंके पास भेजते हैं। सालमें लाखों रूपयेके रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। जल वायु अच्छा नहीं है। जिलेमें नीलकी कई बड़ी कोठी हैं। मुर्शिदाबादके कासिम बाजारसे २५ मील दक्षिण सन् १७५७ की लड़ाईका प्रसिद्ध मैदान पलासी है।

सन् १८८१ में जिलेका क्षेत्रफल २१४४ वर्ग मील और मनुष्यसंख्या १२२६७९० थी, अर्थात् ६३४७९६ हिन्दू, ५८९९५७ मुसलमान, ८७७ आदि निवासी, ६७५ जैन, ४७० क्रुस्तान, १४ ब्राह्म, और १ बौद्ध। जातियोंके खानेमें १००३५५ कैवर्त, ३६९२७ सदगोप, ३५४११ ग्वाला, ३३९३५ ब्राह्मण, ३०५६८ बागड़ी, २२५५० चमार, शेषमें तान्ती, चण्डाल, कोच, कायस्थ, बनियाँ, नापित, सूडी, काल्ह, हाड़ी, डोम, मदक इत्यादि थे। राजपूत केवल ८९५५ थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेके कसबे मुर्शिदाबादमें ३९५७६, बरहमपुरमें २३५१५, यमखण्डीमें ११११३१ और जंगीपुरमें १०००० से कुछ कम मनुष्य थे।

इतिहास—बंगालके बड़े नव्वाब मुर्शिदकुलीखाँने सन् १७०४ ई० में ढाकाको छोड़कर मकसुदाबादको सूबेका सदर स्थान बनाया और मकसुदाबादका नाम बदलकर अपने नामके अनुसार मुर्शिदाबाद रक्खा। उस समय वह गङ्गाकी सौदागरीका बन्दरगाह था,

वहाँ उसने एक महल बनवाया । मुर्शिदकुलीखाँने इकबालके साथ तमाम मुल्क बंगालेपर २१ वर्ष राज्य किया और अपने दामाद और पोतेको अपना राज्य छोड़कर मरा; परन्तु सन् १७४० में अलीवर्दीखां हकदार वारिसोंको निकालकर खुद नव्वाब बन बैठा ।

अलीवर्दीखां सन् १७५६ में मर गया और उसकी जगह उसका पोता सिराजुद्दौला, जब उसकी उमर १८ वर्षकी थी, गद्दीपर बैठा । वह दोही महीनेके अन्दर अङ्गरेजोंसे बिगड़कर एक भारी फौजके साथ कलकत्तेपर चढ़ गया । बहुतसे अङ्गरेज नदीकी राहसे समुद्रकी तरफ उतर गये और बाकीको उसने पकड़ लिया और काली कोठरी नामक किलेके जेलखानेमें रात होनेपर बन्द करवा दिया । कोठरी बहुत तंग थी, इस लिये जब दूसरे दिन सुबहको दरवाजा खोला गया तो १४६ आदमियोंमेंसे २३ आदमी जीते निकले । जितनी फौज जमा होसकी उसको लेकर अङ्गरेजी अफसर क्लैव और वाटशनने मन्दराससे आकर कुछ ऐसाही सामना करनेके पश्चात् कलकत्तेपर फिर अपना अधिकार करलिया ।

क्लैवने अलीवर्दीखाँके दामाद मीरजाफरको सूबे बंगालकी गद्दीके दावाके लिये तैय्यार किया और आप १००० गोरे २००० तिलंगे और ८ तोपें लेकर पलासीकी, जो मुर्शिदाबादसे लगभग २५ मील दक्षिण है राहली । सिराजुद्दौला ३५००० पैदल, १५००० सवार और ५० तोपें लेकर सामना करनेको निकला । सन् १७५७ की तारीख २३ जूनको जब नव्वाबकी फौजें बे फिक्रीसे खाने पकानेमें लगी थी, क्लैवने दुश्मनके एक आगेके मोर्चेपर हमला किया । उस समय जब नव्वाबके बहुतसे अफसर मारे गये तब मीरजाफरने, जो अङ्गरेजोंसे मिला था, सिराजुद्दौलाको यही सलाह दी कि आज फौज पीछे हटालीजिये कल लड़ेंगे । उसी समय नव्वाब सिराजुद्दौलाकी तमाम फौज छितर बितर होगई, वह घबड़ाकर एक साँडिनी पर सवार हो भागा किन्तु राजमहलके पाससे पकडकर मुर्शिदाबादमें लाया गया । मीरजाफरके लड़का मीरनने उसको कतल करवा डाला ।

अङ्गरेजोंने मीरजाफरको मुर्शिदाबादमें नायबकी गद्दी पर बैठाया; परन्तु सन् १७६१ में उन्होंने मीरजाफरको गद्दीसे उतारकर उसकी जगह उसके दामाद मीरकासिमको नव्वाब बनाया ।

मीरकासिमको नव्वाब हुए बहुत अरसा न हुआ था कि उसने अङ्गरेजोंकी हुकूमतसे छूटजानेका मनसूबा बाँधा । इस नियतसे उसने सन् १७६३ में अपने रहनेकी जगह मुङ्गेरमें मुकर्रर की और अवधके नव्वाब शुजाउद्दौलाको मिलाकर अङ्गरेजोंके साथ लड़नेका इरादा किया । झगड़ा बहुत बढ़गया, तमामसूबेमें फसाद फैल गया, अङ्गरेजोंके २००० हिन्दुस्तानी सिपाही पटनेमें टुकड़े करडाले गये और २०० अङ्गरेज जो वहाँ और सूबेकी दूसरी जगहोंमें मुसलमानोंके हाथ पड़े काट डाले गये । घेरिया और उधानालाकी २ बड़ी लडाइयोंमें मीरकासिमकी फौजने शिकस्त खाई, वह भागकर अवधके नव्वाबके पास चला गया ।

मीरकासिमकी जगहपर मीरजाफर फिर नव्वाब बनाया गया । सन् १७६५ में मीरजाफरके मरनेपर उसके भाई नजमुद्दौलाको अङ्गरेजोंने गद्दीपर बैठाया, जो ५०००००० रुपया सालाना पेंशन पाता था । सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उसका भाई सैफुद्दौला उसकी जगह बैठा । सन् १७७० में सैफुद्दौलाके मरनेपर उसका भाई मुबारकुद्दौला

बंगालका सूबेदार हुआ। वह नावालिग था, कम्पनीने उसके लिये केवल १६ लाख रुपया सालाना कबूल किया। सन् १७७२ में अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने दीवानी और फौजदारी कचहरियोंको मुर्शिदावादसे उठाकर कलकत्तेमें नियत किया। सन् १७९९ में टकशाल मुर्शिदावादसे उठा दिया गया। लगभग उसी समय जिलेका सदर स्थान वरहमपुर हुआ, जहाँ पहलेहीसे छावनी थी। मुर्शिदावादके नव्वाब सन् १८८२ ई० तक १६००००० रुपया सालाना पेंशन पाते थे; किन्तु अब पेंशन घटा दी गई है।

वरहमपुर।

मुर्शिदावाद कसबेसे ५ मील दक्षिण भागीरथीके बायें किनारे पर मुर्शिदावाद जिलेका सदर स्थान वरहमपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वरहमपुरमें २३५१५ मनुष्य थे; अर्थात् १८७७९ हिन्दू ४२०२ मुसलमान, २८५ एनिमिष्टिक, २३६ कृस्तान और १३ जैन।

वरहमपुरमें कई एक गिरजा, कबरगाह, कालिज और वारकसे लगभग १ मील दक्षिण पश्चिम जिलेकी कचहरियाँ खजाना जेलखाना और पागलखाना है।

इतिहास—मुर्शिदावादके नव्वाव शिराजुद्दौलाने कासिमवाजारकी अङ्गरेजी कोठीको तोड दिया था, इस लिये सन् १७५७ की पलासीकी लड़ाईके थोड़े ही पीछे फौजी वारकके लिये वरहमपुर चुना गया। सन् १७६५ में ३०२२७०० रुपयेके खर्चसे वारक तैयार हुआ।

सन् १८५७ के बलवेके समय ता० २५ फरवरीको पहले पहल १९ वीं रेजीमेण्टके सिपाहियोंने इसी जगह गोली वारूद लेनेसे इनकार किया था। उस समय वे वारकपुर भेजे गये और वहाँ उनसे अफसरोंने सम्पूर्ण हथियार छीन लिया। सन् १८७० में वरहमपुरसे फौज उठा दी गई।

सातवां अध्याय।

(सूबे बिहारमें) पुर्निया, (सूबे बंगालमें) दीनाजपुर, पार्वतीपुर, जंक्शन, जलपाई गोड़ी, दार्जिलिंग, (देशीराज्य) शिकम और (स्वतंत्र राज्य) भूटान।

पुर्निया।

साहबगञ्जसे उसपार गंगाके पास मनिहारीघाटपर इष्टर्न वंगाल स्टेट रेलवेका स्टेशन है। साहबगञ्जसे वहाँ तक आगवोट चलताहै। मनिहारी घाटसे उत्तर २३ मील कठिहर जंक्शन और ४० मील पुर्नियाका रेलवे स्टेशन है।

सूबे बिहारके भागलपुर विभागमें संबरा नदीके पूर्व किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसबा पुर्निया है। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय इसमें

१४५५५ मनुष्य थे, अर्थात् ९५७६ हिन्दू, ४७५७ मुसलमान, १३३ क्रस्तान, ८४ जैन, ४ यहूदी और १ दूसरे।

पुर्नियामें जिलेकी कचहरियां दीवानी और फौजदारी एक दूसरीसे अलग हैं। उनके अलावे वहाँ जेलखाना, अस्पताल और कई स्कूल हैं और मामूली सौदागरी होती है तथा कई धनी महाजनोंके अच्छे मकान बने हैं। वहाँका जल वायु अच्छा नहीं है। वहाँ बहुत बोखार हुआ करता है। किसी किसी वर्षमें तो सैकड़े पीछे ९० आदमी बोखारसे बीमार हो जात हैं, किन्तु उनमेंसे बहुत कम आदमी मरते हैं।

पुर्निया जिला—जिलेका क्षेत्रफल ४९५६ वर्गमील है। यह भागलपुर विभागके पूर्वोत्तरका जिला है इसके उत्तर नैपालका राज्य और दार्जिलिङ्ग जिला, पूर्व जलपाई गोड़ी, दीनाजपुर और मालदह जिले, दक्षिण गङ्गा नदी, बाद भागलपुर और संथाल परगना जिला और पश्चिम भागलपुर जिला है। जिलेके आधे पश्चिमी भागमें मवेसी और भेड़के झुंडोंके चारागाह हैं और पूर्वी हिस्सेकी अपेक्षा उस भागमें वस्ती बहुत कम है। जिलेकी सम्पूर्ण नदियां गङ्गामें गिरती हैं। कोसी नदी नैपाल राज्यसे ३ धाराओंसे निकली है। और अङ्गरेजी सीमामें पहुँचनेपर उसकी चौड़ाई लगभग १ मील हो गई है। उसकी धार बड़ी तेज है। प्रति वर्ष उसका स्थान बदलता है। कालीकोसी दक्षिण और साहबगञ्जके सामने गङ्गामें गिरती है। महानन्दा नदी शिकमके पहाड़ोंसे निकलकर जिलेके दक्षिण-पूर्व इस जिलेमें प्रवेश करके जिलेकी पूर्वी सीमापर ८ मील तक बहती है। वहाँसे वह पहले पश्चिमको, उसके बाद दक्षिण-को और अन्तमें पूर्वको बहती हुई मालदह जिलेमें जाकर गङ्गामें मिल गई है। महानन्दाके किनारेपर कलियागञ्ज, हल्दीबाड़ी, खड़खड़ी, किशनगञ्ज, दुलारगञ्ज और वरसूई तिजारती गाँव हैं। जिलेमें कोसीके किनारोंपर और बालूदार टापुओंमें तथा उत्तरी सीमाके जङ्गलमें बाघ रहते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १९४०६५५ और सन् १८८१ में १८४८६८७ मनुष्य थे; अर्थात् १०७६५३९ हिन्दू, ७७११३० मुसलमान, ६७९ कोल, ३२७ क्रस्तान और १२ यहूदी। जातियोंके खानेमें १३१६२९ ग्वाला, ७१८३३ कोच, ४८४६५ राजपूत, ४४२२१ कैवर्त, ३८१३१ तेली, ३५५८४ धानुक, ३४८२२ ब्राह्मण, ३१२९० बनियां, ३११०९ मुसहर, १२७६१ कायस्थ और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। जिलेके कसबे पुर्नियामें १५०१६, बसगाँवमें ६१९८, सीतलपुरमें ६००२, किसनगञ्जमें ६०००, रानीगञ्जमें ५९७८, भटबागमें ५७२३ और कसबामें ५१३४ मनुष्य थे। किसन-गञ्ज और खगड़ामें मुसलमान राजा है।

इतिहास—१३ वीं सदीमें पुर्निया जिला मुसलमानोंके आधीन हुआ। लोग कहते हैं कि उससे पहले जिलेका दक्षिणी भाग बंगालके अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेनके राज्यका एक भाग था। १७ वीं सदीमें नवाब उस्तबालखां पुर्नियाका फौजदार था। अबदुल्लाखां उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७२३ में बभनारखांके मरनेपर सयफखां पुर्नियाका सूबेदार हुआ। सन् १७५६ में बंगालके नवाब अलीवर्दीखांके दामाद सैयद अहमदखांके मरनेपर सवक्तजंग उत्तराधिकारी हुआ। नवाबगञ्जके निकटकी लड़ाईमें सवक्तजङ्ग मारा गया। सन् १७७० में एक अङ्गरेजी अफसर सुपरिंटेंडेंट नियत हुआ। कालीकोसीके स्थान

छोडनेके कारण क्रम क्रमसे सन् १८२० ई० में पुर्निया कसवा रोगवर्द्धक स्थान हो गया। इधर उसकी जन-संख्या वहुत घट गई है। लगभग सन् १८३५ में सरकारी आफिस २ मील पश्चिम ऊँची भूमिपर हटा दिये गये।

दीनाजपुर।

मनिहारीघाटसे उत्तर २३ मील कठिहर जंक्शन और कठिहरसे पूर्व ३४ मील वरसुई बाजार, ३७ मील दीनाजपुर जिलेमें एक सबडिवीजन रायगंज और ७० मील दीनाजपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे वंगालके राजशाही विभागमें (२५ अंश, ३८ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ४० कला, ४६ विकला पूर्व देशान्तरमें) पूर्णभाभा नदीके पूर्व किनारेपर जिलेका सदर स्थान दीनाजपुर एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दीनाजपुर कसवेमें १२२०४ मनुष्य थे, अर्थात् ६६६६ हिन्दू, ५३७३ मुसलमान, ८६ कृस्तान, ७८ जैन और १ बौद्ध।

दिनाजपुरमें सिविल कचहरियाँ, अस्पताल, पुलिसस्टेशन स्कूल और एक राजा है। राजवाड़ीमें कलियाजीका सुन्दर मन्दिर वना हुआ ह।

दीनाजपुर कसवेसे १८ या २० मील उत्तर जंगलमें कन्तजीका विशाल मंदिर स्थित है। मन्दिरके शिरोभागपर ९ शिखर वने हैं और नीचेसे ऊपर तक अनेक भांतिकी सैकड़ों मूर्त्तियाँ वनी हुई हैं। वहाँ कन्तजीके भोगरागका वड़ा प्रवन्ध रहता है। महापुआ प्रसाद मिलता है। कंगलियोंको कच्ची रसोई खिलाई जाती है। कन्तजीके मन्दिरसे लगभग २० मील पश्चिम जंगलमें गोविन्दजीका एक वड़ा मन्दिर है।

दीनाजपुर जिला—यह राजशाही विभागके पश्चिमका जिला है, जो वंगालके दूसरे जिलोंके साथ सन् १७६५ ई० में अंगरेजी अधिकारमें आया। जिलेका क्षेत्रफल ४११८ वर्गमील है। इसके पूर्व करतोया नदी और पश्चिम महानन्दा नदी है। महानन्दा नदी जिलेकी पश्चिमी सीमापर लगभग ३० मील वहती है। छोटी नदियाँ अनेक हैं। जंगली पैदावार मधुमक्खियोंका मोम और सिंगहाड़ेका फूल, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं, इत्यादि और जंगली जानवरोंमें वाघ, तेंदुआ, भैंसे, सूअर, वारसींगा हरिन और कई प्रकारकी विल्लियाँ हैं। वाघ सघन वनोंमें और तेन्दुये सर्वत्र मिलते हैं।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १९४०६५५ और सन् १८८१ में १५१४३४६ मनुष्य थे; अर्थात ७९५८२४ मुसलमान, ७१६६३० हिन्दू, १४३५ पहाड़ी सन्थाल और ४५७ कृस्तान। जातियोंके खानेमें ४०७९३३ राजवंशी, पाली और कोच तीनों मिलकर, ३७७८५ कैवर्त, ३१९३४ हाड़ी, २११४९ वनियाँ, १३५६० जलुआ, १२७३५ नाई, ८९१३ ब्राह्मण, ६८३४ भूमिज, ६८१३ सन्थाल, ६०२४ कायस्थ, २८८५ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं।

पार्बतीपुर जंक्शन।

दीनाजपुरसे १९ मील पूर्व पार्वतीपुर जंक्शन है। पार्वतीपुरसे ईष्टर्न वंगाल स्टेट रेलवेकी लाइन ४ ओर गई है। तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २½ पाई लगता है। शिली गोड़ीसे पश्चिमोत्तर दार्जिलिङ्ग तक ५१ मील तक दार्जिलिङ्ग हिमालय रेलवे है, जिसका महसूल प्रतिमील सवाआना है।

(१) पार्वतीपुरसे उत्तर कुछ पश्चिम;
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन—
६१ जल्पाईगोड़ी ।
८४ सिलीगोड़ी ।
१३५ दार्जिलिङ्ग ।

(२) पार्वतीपुरसे पूर्व कुछ उत्तर;
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन ।
२२ रंगपुर ।
३३ कौनिया ।
३९ तिष्टा जंक्शन ।
५३ मगलहाट जंक्शन ।

तिष्टा जंक्शनसे २६ मील पूर्व कुछ उत्तर यात्रापुर ।

मगलहाट जंक्शनसे उत्तर कुछ पश्चिम ३८ मील कूचविहार कसबेके पास तोरसा ।

(३) पार्वतीपुरसे दक्षिण;—
मील–प्रसिद्ध–स्टेशन—
४९ नव्वाबगञ्ज ।
८८ नाटउर ।
११२ सांराघाट (पद्माके बायें)
१३४ दामुक दिया घाट ।
(पद्माके दहिने)
१४१ पोड़ादह जंक्शन ।
१८६ बगुला ।
१९८ रानाघाट जंक्शन ।
२२० नईहाटी जंक्शन ।
२३० बारकपुर ।
२३४ सोदपुर ।
२३७ बेलघरिया ।
२३९ दमदम जंक्शन ।
२४४ सियालदह (कलकत्ता) ।

पोड़ादह जंक्शनसे पूर्व ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया और ४८ मील ग्वालण्डो ।

ग्वालण्डोसे ब्रह्मपुत्र नदीके आगबोटके मार्गसे ७९ मील पूर्व दक्षिण चान्दपुर, और चान्दपुरसे २५ मील उत्तर नारायणगञ्ज ।

चाँदपुरसे आसाम वङ्गाल रेलवेपर ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्सम से दक्षिण पूर्व २५ मील फेनी, ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील वलवाकुंड और ८१ मील चटगाँव और लक्समसे उत्तर ७ मील लालमाई, १५ मील कुमिला और ४५ मील अखउरा ।

नारायणगञ्जसे उत्तर १० मील ढांका और ८५ मील मैमनसिंह ।

रानाघाट जंक्शनसे ३१ मील पूर्व वनगाँव जंक्शन, वनगाँवसे २६ मील पूर्वोत्तर जशर और जशरसे ३५ मील दक्षिण-पूर्व खुलना और वनगाँवसे पश्चिम-दक्षिण २६ मील बारासत, ३४ मील दमदम छावनी और ३६ मील दमदम जंक्शन ।

नइहाटी जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन ।

दमदम जंक्शनसे पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील बारासत और ३६ मील बनगाँव जंक्शन ।

(४) पार्वतीपुर जंक्शनसे पश्चिम;
मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
१९ दीनाजपुर ।
५२ रायगञ्ज ।
६५ वरसुई जंक्शन ।
८९ कठिहर जंक्शन ।

वरसुई जंक्शनसे ३५ मील उत्तर किसनगञ्ज ।

कठिहर जंक्शनसे उत्तर १७ मील पुर्निया और दक्षिण १६ मील मनिहारी और २३ मील मनिहारीघाट ।

जलपाईगोड़ी।

पार्वतीपुरसे ६१ मील उत्तर जलपाईगोड़ीका रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगालके राजशाही विभागमें तिष्टानदीके पश्चिम किनारेपर जिलेका सदर स्थान जलपाईगोड़ी एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जलपाईगोड़ीमें ७९३६ मनुष्य थे अर्थात् ४२४५ हिन्दू; ३६४७ मुसलमान और ४४ दूसरे।

वहाँ पहले फौजी छावनी थी। सन् १८६९ ई० में वह जिलेका सदर स्थान नियत हुआ। उस समयसे वह प्रसिद्ध हुआ और उसकी मनुष्य संख्या बढ़ने लगी। उत्तरी बंगाल स्टेट रेलवेके खुलनेसे उसकी और भी उन्नति हुई है। वहाँ सिविल कचहरियां और सरकारी आफिसें बने हुए हैं।

जलपाईगोड़ी जिला—यह राजशाही विभागके पूर्वोत्तरका जिला २८८४ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर भूटान और दक्षिण कूचविहारका राज्य और रङ्गपुर जिला है।

मैदानोंमें जगह जगह बाँस, ताड़ और फलदार वृक्षोंके बाग, जिनमें छोटी २ बस्तियां हैं, देखनेमें आते हैं। जिलेके उत्तरीय भागमें पहाड़ी देश हैं। जिलेमें महानन्दा, करतोया, तिष्टा, जलधाका इत्यादि नदियाँ बहती हैं। पश्चिमी द्वार नामक सबडिवीजनमें ४०० वर्ग मीलसे अधिक बचाया हुआ जङ्गल और जलपाई गोड़ी सबडिवीजनमें केवल वैकुण्डपुर नामक जङ्गल है। पश्चिमीद्वारके चरागाहोंमें चरनेके लिये बंगालसे बहुतसी मवेशियाँ आती हैं। इस जिलेमें पहाड़ियोंके निकट जङ्गली हाथी और वनैली मवेशियाँ और जंगलोंमें बाघ, तेंदुयें, भालू, गैंड़े, भैंसे इत्यादि वनैले जन्तु रहते हैं।

जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५८१५६२ मनुष्य थे, अर्थात् ३६७८९१ हिन्दू, २०८५१३ मुसलमान, ४५०७ आदिनिवासी अर्थात् जङ्गली, ४८६ बौद्ध, ४५९ क्रस्तान और ६ जैन। खास हिन्दुओंमें ३५८९६ तियर, २४५२७ बागड़ी, ५८३८ कैबर्त, ५४५३ तातियाँ, ३९०९ ब्राह्मण, ३७८२ कायस्थ, २६७२ बनियाँ, १३६९ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं।

दार्जिलिङ्ग।

जलपाईगोड़ीसे ३३ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ८४ मील) उत्तर सिलीगोड़ीका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे ५१ मील पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग तक दार्जिलिंग हिमालय रेलवेकी छोटी लाइन गई है यह लाइन केवल २ फीट चौडी है; गाड़ी भी बहुत छोटी छोटी हैं। ५१ मील जानेमें ८ घण्टा समय लग जाता है।

सिलीगोड़ीसे ७ मील सुकना स्टेशनके पास गाड़ीकी चढ़ाई आरम्भ होती है। लाइनकी घुमाव बहुत टेढ़ी है। पहाड़के बगल ऊँचे दरख्तों और जङ्गलोंसे छिपे हुए हैं। १५ मीलके पास पर्वतके एक छोटे श्रृङ्गके चारों तरफ गाड़ी घूमती है और १००० फीट ऊँचे खड़े पहाड़के किनारे पर लाइन निकली है। ३० मील पर कुरसियङ्गके पास, जो समुद्रके सतहसे ५००० फीट ऊपर है, चायका बाग और ५१ मील पर दार्जिलिंगका स्टेशन है। दार्जिलिंग (२७ अंश, २ कला, ४८ विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला,

३६ विकला, पूर्व देशान्तरमें) सूबे बङ्गालके राजशाही विभागमें जिलेका सदर स्थान एक प्रसिद्ध जगह है। यह बड़ी रनजीत नदीकी घाटीके ऊपर १००० फीट ऊँचे एक सिलसिले पर बसा है। पहाड़ीकी बगलमें विले और बँगले छितराये हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दार्जिलिंगमें १४१४५ मनुष्य थे; अर्थात् ८५८६ हिन्दू, ३६५७ बौद्ध, १२९८ मुसलमान, ५२४ क्रस्तान, ५२ सिक्ख, और ३८ जैन। अपरैलके पहिले यह मनुष्य-गणना हुई थी। अपरैलसे अकटूबर तक दार्जिलिंगकी मनुष्य-संख्या बहुत बढ़ जाती है।

एक स्थानपर बाजा बजनेकी जगह और पानी पीनेका एक हौज बना है। पुराना सेक्रेटरियट एक चौड़े प्लेट (समतल भूमि) पर है। सेक्रेटरियटसे ऊपर सेण्टऐंड्रूका चर्च है, जिसकी नेवका पत्थर सन् १८७० ई० में रक्खा गया। पुराना चर्च सन् १८४३ में बना। कसबेसे १ मील दूर एक पहाड़ी पर १५० सैनिकोंके रहने योग्य बारक् बना है।

चर्चसे करीब ½ मील बाद बङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरकी बड़ी कोठी है। वह यहाँ गर्मीकी ऋतुओंमें समय समय पर रहते हैं।

कसबेके मध्यमें प्रधान बाजार देखने लायक है। एतवारके दिन उसमें इतनी भीड़ होती है कि उससे होकर निकलना मुशकिल होता है। वहाँ बहुत लेपचा, लिम्बू, भुटिया; तिब्बती, नैपाली, पहाडी, हिन्दुस्तानी, काबुली, काश्मीरी और पारसी देख पड़ते हैं। सेंचल शृङ्गके झरनोंसे नलद्वारा दार्जिलिंगमें पानी जाता है।

दार्जिलिंगसे १ मील दूर एक सुन्दर भुटिया बस्ती है, जिसमें तिब्बतन ढाचेका एक दिलचस्प बौद्ध मन्दिर बना हुआ है।

दार्जिलिंगसे दुनियाँकी सबसे ऊँची पहाड़ी चोटियाँ देखी जा सकती हैं। इनमें सबसे ऊँची माउण्ट एवरेस्ट समुद्रके जलसे २९००२ फीट ऊँची है। यद्यपि उसका फासिला कमसे कम १२० मील है, किन्तु वह व्याघ्रपहाड़ीसे, जो दार्जिलिंगसे ६ मील है, या जेला पहाड़ फौजी छावनीसे देख पड़ती है। दूसरी चोटियाँ जो दार्जिलिंग या जेला पहाड़से देख पड़ती हैं ये हैं;—

चोटियोंके नाम	ऊँचाई फीट।
किञ्चि जङ्गा	२८१५६
जानू	२५३०४
कब्रू	२४०१५
चुमालरी	२३९४३
पौहन्द्री	२३१८६
डोंकिया	२३१७६
बौडिम्	२२०१७
नरसिंह	१९१४६
ब्लाएक राक (काला चट्टान)	१७५७२
चोमुङ्को	१७३२५
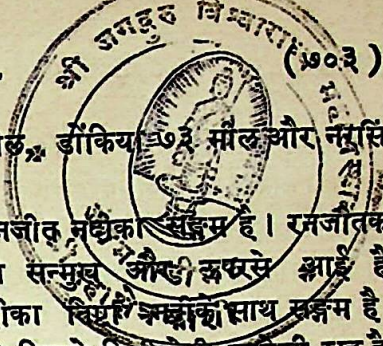
इनमेंसे किञ्चिजङ्गा ४५ मील, चुमालरी ८४ मील, डौंकिया ७३ मील और नरसिंह चोटी ३२ मील दूर पर है।

दार्जिलिंगसे १० मील पर रङ्गमो नदीके साथ रनजीत नदीका संगम है। रनजीतकी धारा घने जङ्गल होकर दौडती है। रङ्गमो नदी सन्मुख और ऊपरसे आई है, जिसपर वेंतके पुल वने हैं। उससे नीचे रनजीत नदीका तिष्टा नदीके साथ संगम है। तिष्टा अधिक गहरी, चौड़ी और तेज है। उसके किनारे किनारे सिलीगोड़ी जानेकी राह है।

दार्जिलिङ्ग जिला—यह राजशाही विभागके उत्तरका जिला १२२४ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर नदियोंके सिलसिले, वाद शिकमका राज्य, पश्चिम ऊँची पहाड़ियोंका सिलसिला, जो नेपाल राज्यसे इसको जुदा करता है; पूर्व और दक्षिण जलपाईगोड़ी और पुर्निया जिला है।

समुद्रके जलसे इस जिलेके मैदानकी ऊँचाई केवल ३०० फीट और मैदानकी पहाड़ियोंकी ऊँचाई ६००० फीटसे १०००० फीट तक है पहाड़ियोंकी चोटियोंपर सघन जंगलोंके मनोहर दृश्य देख पड़ते हैं। नीचले सिलसिलेपर जहाँ तहाँ चायके वाग हैं। जिलेके पर्वतकी सबसे ऊँची फलालुम नामक चोटी १२०४२ फीट ऊँची है। जिलेमें तिष्टा, महानन्दा और वलासन प्रधान नदियाँ हैं। तिष्टाकी प्रधान सहायक नदियोंमेंसे एक वड़ी रंजीत नदी है। इन दोनों नदियोंके संगमसे थोड़े नीचे तिष्टापर लटकाऊ पुल वना है, जिससे होकर तिव्वतके साथ इस जिलेमें सौदागरी होती है। महानन्दा इस जिलेमें छोटी धारा है और तराईके वालूमें कुछ दूरतक अदृश्य रहती है जिलेकी सरहद्के वाहर इसमें कई छोटी छोटी नदियाँ मिल जाती हैं। जिलेकी खानोंसे कोयला, लोहा, ताम्वा और स्लेट निकलते हैं। पहाड़ियोंमें कई एक गुफा हैं, जिनमेंसे सबसे अधिक प्रसिद्ध गुफा दार्जिलिङ्ग स्टेशनके कचारी पहाड़ीमें है। यहाँके देशी लोग विश्वास करते हैं कि यह गुफा तिव्वतसे लासा तक चली गई है। ऊँची पहाड़ियोंपर तेन्दुआ, भालू, और कस्तूरी वाली हरिनें होती हैं। वड़ी हरिन निचले सिलसिलोंपर और चन्द हाथी और बाघ मैदानके ऊपरी ढालूपर पाये जाते हैं। तराईमें बाघ, गेण्ड़ा, हरिन, वनैले सूअर बहुत हैं।

इस जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १५५१७९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६७१७ हिन्दू, १८७७५ वौद्ध, ८२०४ मुसलमान, ८४२ क्रस्तान, ६२४ जंगली कौमें, १४ ब्राह्मो और ३ सिक्ख। आवादीका वड़ा भाग जंगली कोम और वे जंगली लोग, जो अब मैदानके लोगोंकी चालपर चलते हैं होते हैं। इनमें नापित वहुत अधिक हैं। लेपचा वौद्धोंमें शामिल हैं। सन् १८८१ में ३०८०१ राजवंशी कोच थे। खास हिन्दुओंमें १०७३९ ब्राह्मण ६३५२ राजपूत और १०००० से अधिक दूसरी जातियाँ थीं।

इतिहास—अङ्गरेजी गवर्नमेंटने सन् १८३५ ई० में ३००० रुपये वार्षिक खेराजपर १३८ वर्गमील भूमि, गर्मीके दिनोंमें अफसरोंके रहनेके लिये शिकमके राजासे खरीदी और पीछे उसका खेराज ६००० रुपये कर दिये। उसके वाद शीघ्रही गर्मीके दिनोंमें सूवे वंगालके अफसर लोग दार्जिलिंगमें रहने लगे। रोगग्रस्त यूरोपियन सिपाहियोंके रहनेके लिये स्थान वना। सन् १८३९ में डाक्टर कैंवलने वहाँका चार्ज लिया। उसने २० वर्ष सुपरिंटेंडेंट रहकर वहाँ बाजार, कचहरी, सड़क और चर्च वनवाया और दार्जिलिंगके दक्षिण फौजी छावनी नियं-

तकी। सन् १८४९ ई० में जब सरकारी अफसर शिकममें कैदकर लिये गये, तब सन् १८५० में सरकारी फौज तिरस्कारके वदले लेनेके लिये शिकममें भेजी गई। अन्तमें शिकम राज्यकी तराई अर्थात् मोरंग जो पहाड़ियोंके कदमके पास है, अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया और पहाड़ियोंके दर्मियानकी बहुत सी भूमि अंगरेजी, राज्यमें जोड़ ली गई। सन् १८६४ में तिष्टाके पूर्वका पहाड़ी देश इस जिलेमें कर दिया गया। सन् १८२६ ई० में पहले पहल हिन्दुस्तानमें ऊपरी आसाममें चायके दरख्त और बीज आये। सन् १८५६में चायका बाग दार्जिलिङ्गमें नियत हुआ। अब लगभग ५०००० एकड़ भूमिपर लगभग २०० चायके बाग बने हैं। सन् १८८२–८३ में, जब फसिल अच्छी थी, ८००००० पौण्डसे अधिक चाय हुआ था। बंगालके लेफ्टिनेंटगवर्नर प्रति वर्ष गर्मीके दिनोंमें कई महीने दार्जिलिङ्गमें रहते हैं।

शिकम।

दार्जिलिङ्गके उत्तर शिकम एक पहाडी देशी राज्य है। इसके उत्तर और पूर्वोत्तर तिव्वत; पूर्व-दक्षिण स्वतन्त्र राज्य भूटान; दक्षिण अङ्गरेजी राज्यमें दार्जिलिङ्ग जिला और पश्चिम स्वतन्त्र राज्य नैपाल है। यह राज्य हिमालयके ऊँचे सिलसिलेपर १५५० वर्ग मीलके क्षेत्रफलमें फैला है। इसके सबसे नीचेका मार्ग समुद्रके जलसे १३००० फीट ऊपर है। शिकम राज्यमें तिष्टा और उसकी सहायक नदियाँ पहाड़ियोंके बहुत नीचे अति तीव्र वेगसे वहती हैं। नदियोंपर कई जगह बेंतका पुल बना है और कई जगह लोग घरनईसे पार उतरते हैं। सम्पूर्ण वस्तियाँ और ढालू पहाड़ियाँ सघन वनोंसे छिपी हुई हैं। बाँस बहुत बड़े और बेंत मोटे तथा बड़े होते हैं। बेंतोंसे हिमालयमें पुल बनाये जाते हैं। वन और पहाड़ियोंमें बाघ, भालू, कस्तूरीवाले मृग, बनैले सूअर इत्यादि बनजन्तु रहते हैं।

शिकमकी आनुमानिक मनुष्य-संख्या ७००० है; अर्थात् प्रायः ३००० लेपचा, २००० भोटिया, १००० लेंबू और १००० दूसरे। इनमें अधिकांश लोग बौद्ध मतपर चलते हैं। बहुत बौद्ध पुजारी अपने अपने लामा अर्थात् गुरुके आधीन मठोंमें रहते हैं। लामा लोग विना मालगुजारी दिये हुए जितना चाहें उतना खेत जोत सकते हैं। राज्यका प्रधान गाँव तमलाङ्ग और कंटक, जिसमें काजीका सुन्दर मकान बना है, और प्रधान मठ लयेवर्ग है।

गेंहू, जव, जनेरा, और थोड़ा धान घाटियोंमें उपजते हैं। पश्चिम भागमें तेलहन भी होते हैं। बागोंमें केला, नारंगी और दूसरे फल बहुत होते हैं। तिव्वतके सौदागर शिकम होकर जाते हैं। शिकमके लोग टट्टू, भेड़ और जंगली पैदावारोंको कपड़े, तम्बाकू आदि चीजोंसे बदलते हैं।

राजधानी—शिकमकी राजधानी तमलांग है, जहाँ जाड़े और वसन्तऋतुमें राजा रहते हैं। गरमी और बरसातमें राजा अपने तिव्वतकी मिलकियत चूम्बीमें बहुधा जाया करते हैं तमलांग पहाड़ीपर राजाके महलके अतिरिक्त शिकम राज्यके बहुतेरे अफसरोंके सुन्दर मकान बने हुए हैं। प्रत्येक मकानके चारोंओर बाँस या फलदार वृक्षोंके कई झुण्ड हैं। शिकमके वर्तमान नरेश महाराज 'चोटाल शिक्यं नामरिय' हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि शिकमके राजाका पुरुषा: तिव्वतके लासाके पड़ोससे आकर कंटकमें बसा। सन् १७७८ ई० में गोरखोंने शिकमपर आक्रमण करके राज्यका एक

छोटा भाग लेकर सुलह कर लिया। सन् १७९२ में जब गोरखोंने दूसरी बार शिकमपर आक्रमण किया तब चीनियोंने उनको खदेरा। नैपालियोंके परास्त होनेपर सन् १८१६ ई० में अंगरेज महाराज और नैपालियोंसे सन्धि हुई। उसके अ सार शिकमके राजाका राज्य; जो नैपालियोंने छीन लिया था, उनको फिर मिल गया। सन् १८३५ में अंगरेजी सरकार शिकमके राजासे दार्जिलिंग लेकर उसके बदलेमें ३००० रुपय सालाना खिराज देनेलगी। शिकमवाले अंगरेजी राज्यसे लड़के चुराकर उनको दास बना लेते थे और सन् १८४९ में शिकमके राजकर्मचारियोंने सफर करते हुए दो अंगरेजी अफ़सरोंको पकड़कर कैदकर लिया। तब उनको छुड़ानेके लिये अङ्गरेजी सेना गई। अन्तमें शिकमके राज्यका एक भाग अङ्गरेजी गवर्नमेण्टनेले लिया। तिसपर भी शिकम वाले अङ्गरेजी राज्यसे लड़का चोरा ले जाते थे। सन् १८६१ में अङ्गरेजी सेना शिकमकी राजधानी तक पहुँची, तब राजाने परवश होकर सुलह किया। उसके अनुसार अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको शिकममें सौदागरी करने और सड़क बनानेका अधिकार होगया। सन् १८७३ में शिकमके वर्तमान महाराजने दार्जिलिंगमें आकर बंगालके छोटे लाटसे भेटकी थी। अब शिकमका राजा अङ्गरेजी सरकारके आधीन हो गया है।

भूटान।

शिकमसे पूर्व हिमालयके पूर्व भागमें स्वाधीन राज्य भूटान है। इसके उत्तर हिमालय, बाद तिब्बत; पूर्व चीन; दक्षिण आसाम देश और जलपाईगोड़ी जिला और पश्चिम; शिकम है। सन् १८६४ में सम्पूर्ण क्षेत्र फल अनुमानसे २०००० वर्ग मील और मनुष्य-संख्या करीब १५०००० थी। सम्पूर्ण देशमें ऊँचे और नीचे पहाड़ हैं। बहुतेरी नदियाँ तंग रास्तेसे बहती हुई ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं।

भूटिये लोग सख्त और दिलेर होते हैं। उनका चमड़ा काला और चेहरे चीनियोंके समान हैं। उनकी आदत और बदन मैला है। उनकी खोराक चावल, जवका आटा, सलगम, गोस्त, खासकर सूअरका मांस और चाय है। सब दर्जेके लोग शराब आदि नशावाले अर्क पीते हैं। पुरुष ऊनका ढीला कोट टेहुने तक पहनते हैं, कमर पर कपड़े या चमड़ेकी पेटी बाँधते हैं और जूतेमें लगा हुआ पायजामा और पशमकी या मोटे ऊनकी टोपी पहनते हैं; और स्त्रियाँ लम्बा लबादा ढीले अस्तीनके साथ पहनती हैं। उस राज्यमें कई भाइयोंके एकही स्त्रीके साथ विवाह होनेकी रिवाज जारी है। वहाँके लोग बराय नामके बौद्ध मतवाले हैं; परन्तु वे भूत आदिकी बहुत पूजा करते हैं।

पहाड़ी देश होनेके कारण वहाँ खेती कम होती है। एक प्रकारके घोड़े जो टाँघन कहलाते हैं, भूटानमें पाले जाते हैं। भूटानके दक्षिण भागमें मोटे कम्बल और कपड़े बनते हैं। भूटानमें एक प्रकारके वृक्षसे कागज बनाया जाता है। वहाँ तलवार, बर्छी और तीर बनते हैं। प्रायः ऊँचे स्थानोंपर वर्षा अधिक होती है। राज्यमें पैदावार जिनिश और सौदागरीकी वस्तुओंमेंसे मालगुजारी ली जाती है।

३ या ४ मञ्जिलके मकान हैं। झोपड़ियोंके चारों तरफ बहुतेरी जमीन जोतनेके लिये तैय्यारकी जाती है। गेहूँ, जव, मिलेट और सलगम प्रधान फसिलोंमेंसे हैं। भोटिए लोग पहाड़ियोंके बगलोंमें काटकर चबूतरोंके कतार बनाते हैं और उन पर खेती

करते हैं । जङ्गलोंमें भाँति भाँतिके बड़े वृक्ष हैं । पहाड़ियोंके निचले सिलसिलेमें बहुत हाथी, तिष्टा नदीके निकट बाघ, घाटियोंमें तेंदुआ और हरिन, बर्फोंमें कस्तूरीवाली हरन और पहाड़ियोंके बगलोंपर सूअर और गैंडे मिलते हैं । तिब्बती भाषाओंमेंसे एक वहाँकी भाषा है ।

भूटानके राजा धर्मराजा कहलाते हैं और जो उनके राज्यमें देशके प्रबन्ध करते हैं उन्हें देवराजा कहते हैं । वह तीसरे वर्ष कौंसिल द्वारा बदल जाता है । नीचेके ओहदेदार तनखाह नहीं पाते; परन्तु अपने मातहतके लोगोंसे जितना हो सकता है वे लेते हैं । लूट-पाट सर्वत्र जारी रहती है ।

धर्मराजा बुद्धका अवतार समझा जाता है । उसके मरनेके एक या दो वर्ष पीछे प्रायः एक अफसरके खान्दानमें लड़केके शकलमें नया अवतार होता है । वह मठमें शिक्षा पाता है और बालिग होने पर राजा होता है । प्रधान शहर अर्थात् राजधानी पुनाखा स्वाभाविक अभेद्य स्थानमें दार्जिलिंगसे ९६ मील पूर्वोत्तर बुगनी नदीके बायें किनारेपर है । अङ्गरेजी राजदूतने सन् १८६४ में भूटानकी फौजकी संख्या ६००० अनुमान किया था ।

इतिहास—भूटान पहले टेफूजातियोंके अधिकारमें था । टेफू कूचबिहारके कोच खियाल किये जाते हैं । करीब २०० वर्ष हुए कि तिब्बतके सिपाहियोंके एक जमायतने टेफुओंको जीतकर उस देशको अपने अधिकारमें कर लिया ।

सन् १७७२ ई०में जब भूटियोंने कूचबिहारपर चढ़ाई की, तब अङ्गरेजोंके साथ उनका पहला सरोकार हुआ । कूचबिहारके राजाके दरखास्त करने पर जब एक अङ्गरेजी फौज भेजी गई तब भूटिये लोग भाग गये । सन् १८२६ में जब अङ्गरेजोंने आसामको लेलिया । तब भूटिये लोग पहाड़के पाँवके पासकी जमीन जो द्वारे कहलाती हैं, ले चुके थे । उसके पश्चात् भोटियोंने अङ्गरेजी राज्यपर आक्रमण करके बासिन्दोंको लूटा और उनको कैदी बना लिया । वे लोग बहुतेरोंको जब कैदी बनाकर ले गये तब अङ्गरेजी सरकारने द्वारोंको भूटियोंसे छीन लिया । पर भोटिये लोग द्वारोंमें अङ्गरेजी प्रजाओं पर अत्याचार करतेही रहे । सन् १८६५ में भूटान गवर्नमेण्टने एक लड़ाईके पीछे अङ्गरेजोंको दूसरे देशके साथ बङ्गाल और आसामके १८ द्वारोंको दे दिया और अङ्गरेजी प्रजाओंको जिनको भोटिये लोग चोराले गये थे; छोड़ दिया ।

आठवां अध्याय ।

(सूबे बङ्गालमें) रंगपुर, (देशीराज्यमें) कूचबिहार, ब्रह्मपुत्र तीर्थ, (आसामदेशमें) त्युरा, ग्वालपाड़ा, गौहाटी और कामाख्या ।

रङ्गपुर ।

पार्वतीपुर जंक्शनसे २३ मील पूर्वोत्तर (मनिहारी घाटसे १३४ मील) रङ्गपुरका रेलवे स्टेशन है । सूबे बङ्गालके राजशाही विभागमें घाघाट नदीके उत्तर किनारेपर (२५ अंश, ४४ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १७ कला, ४० विकला, पूर्व

देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान रंगपुर एक कसवा है, जिसमें माहीगञ्ज, धाप और नवावगञ्ज, शामिल हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रंगपुरमें १४३१६ मनुष्य थे; अर्थात् ७४३७ हिन्दू, ६६६७ मुसलमान, ७६ जैन, ३३ क्रस्तान, २ वौद्ध और १ दूसरे । रंगपुरमें सिविल कचहरियां, पुलिसस्टेशन, जेलखाना और अस्पताल है ।

रंगपुर जिला—यह राजशाही विभागके मध्यका जिला ३४८६ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर जलपाईगोड़ी जिला और कूचविहारका राज्य; पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी वाद ग्वालपाड़ा और मैमनसिंह जिला; दक्षिण वुगड़ा जिला और पश्चिम दीनाजपुर और जलपाईगोड़ी जिला है ।

इस जिलेमें कोई पहाड़ नहीं है । जिलेके क्षेत्रफलके ३/४ भागकी भूमि जोती जाती है । धान, तम्वाकू, आलू, ऊख, अदरख और अनेक भाँतिके तेलके वीज उत्पन्न होते हैं । विना जोती हुई भूमिपर नरकट और वेंत वहुत होते हैं । जिलेकी पूर्वी सीमापर ब्रह्मपुत्र नदी वहती है । उसकी सहायक नदियोंमें तिष्टा, ढइला, संकोस, करतोया, गङ्गाधर और दुधकुमार नदियां प्रधान हैं । इनमें तिष्टा अधिक प्रसिद्ध है, जिसका नाम पुराणोंमें तृष्णा और त्रिस्रोता भी लिखा है। यह सन् ई०की १६ वीं सदीमें गङ्गामें गिरती थी; किन्तु सन् १७८७ में अधिक वर्षा होनेके कारण ब्रह्मपुत्रमें गिरने लगी । तिष्टाके सहायक नदियोंमें करतोया, घाघी, मानस और गुजरिया प्रसिद्ध हैं । जिलेमें गवर्नमेंटको मालगुजारी देनेके योग्य कोई जङ्गल नहीं है । पंगा गाँवके पास ८ मीलके घेरेमें एक जङ्गल है, जिसमें मोटा वेंत, जो छड़ीके लिये विकते हैं, वहुत उत्पन्न होते हैं । जिलेमें वेंत और नरकट वहुत होते हैं । ब्रह्मपुत्र नदीके वालूदार टापुओंमें वाघ और तेंदुये वहुत रहते हैं।साधारण प्रकारसे वनैले भैंसे और सूअर और कई भाँतिकी हरिन देख पड़ती हैं ।

जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २०९७९६४ मनुष्य थे; अर्थात १२७९६०५ मुसलमान, ८१६५३३ हिन्दू, १३९९ पहाड़ी और जंगली जो अपने पुराने मतपर चलते हैं, २७४ जैन, ८६ क्रस्तान, ६० वौद्ध और ८ ब्राह्मो । जातियोंके खानेमें ४३२४९८ कोच, पाली और राजवंशी, जो अब हिन्दूके मतपर चलते हैं; ९३७९० तियर, ३६७९५ चण्डाल, ३०६१२ कैवर्त, २५१८० मदक, १३०४१ नाई, १२०७५ ब्राह्मण, जो मैथिल और कामरूपी दो प्रकारके हैं, ११४४९ कायस्थ, ८३८७ जलिया, शेषमें दूसरी जातियां थीं, जिनमें २६९७४ वैष्णव और केवल २३२५ राजपूत थे । रंगपुर जिलेके कसवे रंगपुरमें १३३२०, वरखतामें ११३९३, वोगदावाड़ीमें १०८९२, ढीमलामें १०५०३, गुरुग्राममें ९६१६ और छतनाईमें ९५०१ मनुष्य थे ।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि रंगपुर पूर्व कालमें राजा भगदत्तका, जिसकी राजधानी कामरूप जिलेके गौहाटी थी, देहाती महल था । भगदत्त महाभारतके युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारा गया । सन् १५०० ई० से पहले ३ घरानेके राजाओंने इस देशमें राज्य किया था । इनमें पहला पृथुराजा था, जिसकी राजधानीकी फैली हुई निशानियाँ जल्पाईगोड़ी जिलेमें देख पड़ती हैं । दूसरे घरानेमें ४ राजा हुए, जिनको वंगाल और आसामके लोग पाल घरानेके राजा कहते हैं । पहला राजा धर्मपालके शहरकी निशानी जल्पाईगोड़ी जिलेमें अवतक

विद्यमान है। पाल घरानेके तीसरा राजा भावचन्द्रका नाम बंगालमें प्रसिद्ध है। तीसरे घरानेमें नीलध्वज, चक्रध्वज और नीलाम्बर ३ राजा हुए। नीलध्वजने कामतापुरको बसाया। कूचविहारके राज्यमें उसकी तवाहियां १९ मीलके घेरेमें देख पडती हैं। कहा जाता है कि गौडके अफगान बादशाह हुसेनशाहने, जिसने सन् १४९७ से १५२१ तक गौड़में राज्य किया था, राजा नीलाम्बरको छलसे पकड़कर रंगपुरको लेलिया; किन्तु मुसलमानोंने इस देशमें अपना अधिकार नहीं रक्खा। आसामकी पहाड़ियोंसे जंगली जातियोंमेंसे कोच लोग आकर बस गये जो कूचविहारमें अबतक विद्यमान हैं। उनमेंसे राजा वीसूने पूर्व ओर आसामकी खाड़ीमें और दक्षिण रंगपुरतक अपना अधिकार फैलाया। उसकी मृत्यु होनेपर राज्य कई भागोंमें बँट गया। सन् १६८७ ई० में औरङ्गजेबने खास रंगपुरको अपने राज्यमें मिला लिया। पीछे यह अङ्गरेजी सरकारके आधीन हुआ।

कूचविहार।

रंगपुरसे ३१ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ५३ मील) पूर्वोत्तर मगलहाटमें रेलवे जंक्शन है। उससे २८ मील उत्तर कुछ पश्चिम कूचविहार स्टेट रेलवे कूचविहार कसवेके निकट तोरसा नामक स्टेशन तक गई है।

बंगालमें प्रधान देशी राज्यकी राजधानी (२६ अंश, १९ कला, ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, २८ कला, ५३ विकला, पूर्व देशान्तरमें) तोरसा नदीके निकट कूचविहार एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कूचविहार राजधानीमें ११४९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५९१ हिन्दू, ३७१६ मुसलमान, ११० जैन, ६७ क्रस्तान, ४ सिक्ख, २ बौद्ध और एक दूसरे।

हाल तक कसवेमें ईटोंके राजभवनके चारोंओर चटाई और फूसकी झोपड़ियाँ थीं; किन्तु चन्द बरसोंसे कसबेकी बड़ी उन्नति हुई है। कसबेके प्रधान स्क्येरके उत्तर वगलमें दो मंजिली इमारत, महाराजकी कचहरीके मकान और आफिस; पूर्व अङ्गरेजी और वर्नेक्युलर स्कूल, छापाखाना और राज्यका दफतरखाना औरं दक्षिण १ उत्तम इमारत, जिसमें ४ बड़े कमरे और दूसरे छोटे आफिस हैं, और मातहत दीवानी और फौजदारी कचहरियाँ हैं। स्क्येरके मध्यमें सागरदीघी नामक बड़ा तालाव है। कसबेके प्रायः सब लोग इसी तालावका पानी पीते हैं। पुराने बाजारके स्थानपर नया चौकोना बाजार बना है। बाजारके मकानोंकी छत लोहेकी चादरसे पाटी गई है। प्रधान सड़क बाजार होकर गई है। हालमें १२०००० रुपयेके खर्चसे एक उत्तम राजमहल बनाया गया है। इनके अलावे वहाँ पोष्टआफिस, जेलखाना, पुलिस-स्टेशन; कारीगरीका स्कूल और ब्राह्मसमाजकी एक सभा है।

सौदागरी बहुत नहीं है। ३ छोटी नदियाँ, जो तुरसा कहलाती हैं, कसबेको ३ ओरसे घेरती हैं। इनमें केवल वरसातमें नाव चलती हैं। एक सड़क रंगपुरसे कूचविहार कसवे होकर जलपाईगोड़ीको गई है।

कूचविहार-राज्य–यह देशी राज्य, अङ्गरेजी राज्यसे घेरा हुआ है। इसके उत्तर जलपाईगोड़ीके पश्चिमी द्वार और दक्षिण रंगपुर जिला है इसके अलावे रंगपुर और जलपाई

गोड़ी जिलेमें कूचविहार राज्यके कई टुकड़े हैं। सम्पूर्ण राज्यका क्षेत्रफल; १३०७ वर्गमील है। राज्यसे महाराजको १३३३००० रुपये मालगुजारी आती है।

यह राज्य समतल मैदानमें है। इसमें तिष्टा, सीङ्गमारी, तोरसा, कालजानी, राधक, गदाधर इत्यादि लगभग ३५ नदियाँ वहती हैं। इनमें बहुतेरी बहुत छोटी हैं। तिष्टा और राधकको छोड़कर सम्पूर्ण नदियाँ गर्मीकी ऋतुओंमें स्थान स्थानपर विना नावके पार होजाने योग्य रहती हैं। सम्पूर्ण नदियाँ उत्तरसे ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं। राज्यके अधिक भागमें खेती अच्छी तरह होती है पूर्वोत्तरके कोनेमें कुछ जङ्गली देश हैं। वोने वाली भूमिमेंसे $\frac{3}{4}$ भूमिपर धान उत्पन्न होता है। मैदानमें किसानोंके वथानके आस पास वांसके झुंड और फलदार वृक्षोंके वाग देख पड़ते हैं। जूट, तम्वाकू, तेल और लकड़ी राज्यसे दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती हैं सैकड़ों मील सड़क वनी हैं। पहले दश वीस गाड़ी चलती थीं, अब; हजारहाँ चलती हैं। हालमें विद्याकी वड़ी उन्नति हुई है। इस राज्यके लोग वस्ती वना कर इकट्ठा नहीं रहते हैं धनवान् लोग अपना अपना मकान अलग अलग बनाये हैं।

इस राज्यमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६०२६२४ मनुष्य थे; अर्थात् ४२७४७८ हिन्दू, १७४५३९ मुसलमान, १४४ जैन, ४८ कृस्तान और ४१५ दूसरे। जातियोंके खानेमें २९९४५८ राजवंसी, जो पहलेके कोच जाति हैं, ५४१५२ तियर और मछुहा, १४१९२ बागड़ी, ५२०८ चण्डाल, ४४३१ जोगी, ३५८६ कुर्मी, ३५३० ब्राह्मण, ३१९७ राजपूत, ३०५२ नाई, २६७८ कैवर्त्त, २६४० जलिया, ३५२२ कायस्थ थे; शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। कूचविहार राज्यमें कूचविहारके अतिरिक्त कोई दूसरा कसवा नहीं है।

इतिहास—पूर्व कालमें इस राज्यमें कामरूपके पुराने हिन्दू राजाकी राजधानी थी जिसको १५वीं सदीके अन्तके भागमें गौड़के अफगान वादशाहोंने विनाश करदिया। उनकी राजधानियोंमेंसे कई एककी निशानियाँ अव तक देख पड़ती हैं। उसके पीछे अंधेरका समय आया। जङ्गली लोग पूर्वोत्तरसे आकर लूट पाट; करने लगे, जिनमें कोच लोग जो अब राजवंशी कहलाते हैं, अगहर थे। उन्होंने कूचाविहार राज्य नियत किया। कोचवंशमें वीसूसिंह पहला राजा था, जिसका पुत्र नरनारायण सबसे वड़ा राजा हुआ, जिसका राज्य सन् १५५० ई० से आरम्भ हुआ था। उसने सम्पूर्ण कामरूप देशको जीता और आसाममें अनेक मन्दिर वनवाये। उजड़े पुजड़े मन्दिरोंके लेखोंमें अवतक उस राजाका नाम देख पडता है। उसने भूटानके राजाको कर देनेके लिये मजबूर किया. और दक्षिण-पश्चिममें जो अव रंगपुर और पुर्निया जिलेका भाग वना है, अपने राज्यको वढ़ाया। इसीके राज्यके समय नारायणी सिक्का चलाये गये थे, जो अभी तक कुछ २ चलते हैं। कोच राज्यकी स्वाधीनता बहुत दिनों तक नहीं रही। नरनारायणने अपने आधीनकी आसामकी भूमि अपने भाइयोंको वाँट दी। अवतक वहाँ उनके वंशधर धनी जमीदार विद्यमान हैं। नरनारायणका पुत्र लक्ष्मीनारायण, जो कूचविहारमें राज्यका उत्तराधिकारी था, कैदी वनाकर दिल्लीमें भेजा गया। उसके पीछे राजघराना तीन भागोंमें वट गया। सन् १७७२ ई० में भूटियोंने कूचविहारके राजा नाजिरदेवको निकाल दिया। तव अङ्गरेजी गवर्नमेंटने नाजिरदेवके दरखास्त करने पर कूचविहारमें अपनी सेना भेजकर भूटियोंको खदेरा और सन् १७७३ ई० में एक संन्धि की।

सन् १८६३ ई० में कूचविहारके राजा अपने १० महीनेके शिशु पुत्र वर्तमान कूच-विहार नरेशको छोड़कर मरगये । उस समय राज्यके प्रबन्धके लिये अङ्गरेजी कमिश्नर नियत किया गया । पीछे राज्यकी पैमाइश होकर मालगुजारी नियत कीगई, पुलिसका सुधार हुआ, सड़कें बनाईं गईं, डाकघर और टेलीग्राफ आफिस कायम हुए और नाबालिग राजा पटनेमें एक यूरोपियन अफसरसे पढ़ा और पीछे उसने कलकत्तेके प्रेसीडेन्सी कालिजमें आइनकी शिक्षा प्राप्त की । सन् १८७८ में राजाने सुप्रसिद्ध बाबू केशवचन्द्रसेनकी पुत्रीसे अपना विवाह किया और उसी साल वह इङ्गलैण्ड गये । सन् १८८३ में महाराज, सर एन. नारायणभूप बहादुर जी. सी. आई.ई. जिनकी अवस्था इस समय ३० बर्ष की है, सबालिग होने पर राज्यके अधिकारी हुए, तबसे उनको महाराजकी पदवी मिली ।

ब्रह्मपुत्र तीर्थ ।

रंगपुरसे ११ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ३३ मील) पूर्व कुछ उत्तर तिष्टा नदीके किनारे कौनिया तक रेल है । कौनियासे ६ मील तिष्टाके पूर्व किनारेके तिष्टा गाँवतक आग-बोट चलता है । तिष्टासे पूर्व १६ मील कुरीग्राम और २६ मील ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर यात्रापुर है । तिष्टासे यात्रापुर तक रेल बनी है ।

कुरीग्रामसे १३ मील दक्षिण-पश्चिम और यात्रापुरसे इससे कम दूर पर ब्रह्मपुत्र नदीका चिलमारी घाट है, जिसको ब्रह्मपुत्र तीर्थ भी कहते हैं । कुरीग्रामसे देहाती मार्ग और यात्रापुरसे ब्रह्मपुत्र नदीमें नावका रास्ता है ।

ब्रह्मपुत्र नदी कैलास पर्वतमें मानसरोवरके पाससे निकलकर हिमालयके उत्तरमें पूर्वकी ओर बहनेके उपरान्त पश्चिमको लौटी है और फिर दक्षिणको बह कर दो धारोंमें बट गई है; जिनमेंसे पूर्ववाली धारा नदीके निकाससे लगभग १७०० मील बहनेके पश्चात् समुद्रमें मिली है और पश्चिमकी धारा जिसको यमुना और जनाई कहते हैं, गंगाकी प्रधान धारा पदमामें जा मिली है । ब्रह्मपुत्रको तिब्वतमें यारु और साँपू कहते हैं । लोहित नदीके सङ्गम होनेके पश्चात् इसका नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा है और समुद्रमें गिरनेसे ६० मील पहले यह मेगना कहलाता है । इसके निकट डिब्रूगढ़, शिवसागर, नवगाँव, तेजपुर, गौहाटी, ग्वाल-पाड़ा, और धुबड़ी प्रसिद्ध कसबे हैं ।

चिलमारी घाटपर चैत सुदी ८ को ब्रह्मपुत्र स्नानका मेला होता है । जिस साल चैतकी बुधाष्टमी होती है उस साल अधिक यात्री एकत्र होते हैं । यात्रीगण चिलमारी घाट-पर केवल एक रात निवास करके चले जाते हैं । वे लोग वहाँके नियमानुसार लौटनेके समय पीछेकी ओर फिरकर घाटको नहीं देखते । ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि जमदग्निके पुत्र परशु-रामजी यहाँ आनेपर मातृ-हत्याके दोषसे विमुक्त हो गये ।

त्युरा ।

यात्रापुर तक रेल है । वहाँसे आगबोट द्वारा लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर धुबरी जाना होता है । धुबरीसे त्युरा तक लगभग ५० मील टट्टूकी सवारीका मार्ग और टेली-ग्राफ है । आसाम प्रदेशमें (२५ अंश, २९ कला, ३० विकला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, १६ कला १० विकला, पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे लगभग १३०० फीट ऊपर त्युरा पहाड़ीके सिलसिलेपर गारो पहाड़ी जिलेका सदरस्थान त्युरा एक गाँव है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय त्युरामें ७४४ मनुष्य थे। वह जगह रोग-वर्द्धक है। वहां लोगोंको वोखार वहुत आता है। लकड़ी, वाँस और फूससे मकान वने हुए हैं। सरकारी इमारतोंमें मामूली कचहरियां और आफिस, ३०० कानेष्टवुलोंके लिये वारक, डिपुटीकमिश्नर, पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट और सिविलसरजियनके लिये वँगले वने हैं। और एक अस्पताल, और एक स्कूल है, वहाँ सालमें औसत १२६ इञ्च वर्षा होती है।

गारोपहाड़ी जिला—इसके उत्तर ग्वालपाड़ा जिला; पूर्व खासी और जयन्ती पहाड़ियां जिला; दक्षिण और पश्चिम सूबे वंगालका मैमनसिंह और रंगपुर जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३१४६ वर्गमील है। सम्पूर्ण जिला पहाड़ी देश है। ब्रह्मपुत्र नदीके उत्तरकी पहाड़ियाँ नीची हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १०९५४८ मनुष्य थे; अर्थात् ८५६३४ पहाड़ियोंमें और २३९१४ मैदानमें। गारो लोग स्त्री पुरुष सव कुरूप और काले होते हैं। इनके गालकी वड़ी हड्डियां, चौड़ा नाक, मोटा ओठ और लम्वा कान होता है। इनकी दाढ़ीपर वाल वहुत कम जमता है। वे लोग अपने मुखपर जमे हुए वालोंको तोड़ डालते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों अपने सिरके वालोंको कभी नहीं कटवाते। पुरुष केवल डेढ़गज लम्वे कपड़ेका भगवा, जिसको वे लोग आपही वनाते हैं। पहनते हैं। स्त्रियोंका वस्त्र इससे थोड़ा अधिक फैला रहता है। स्त्री और पुरुष दोनों एक छोटे कम्वल लिये रहते हैं, जो साधारण तौरसे एक वृक्षके छालसे वनाया जाता है। पूर्वके पहाड़ियोंके गारो लोग खासिआ लोगोंके समान छोटे अंगरखे पहनते हैं। पुरुष अपने कानोंमें ३–४ पीतलके वाले और गलेमें गुरियाका लच्छा पहना करते हैं। स्त्रियां अपने गलेमें कांच और पीतलके गुरियेका लच्छा और कानोंमें वहुत वड़े और भारी वाला लगाती हैं। गारो लोगोंका हथियार, तलवार, वरछी और ढाल हैं। इनकी घराऊ रीति और चाल खासिआ लोगोंके समान है। स्त्रियां अपने घरकी मालिक होती हैं। खासिआ लोगोंमें सम्पूर्ण घरऊ कामोंमें स्त्रियां वहुत मानी जाती हैं। युवा होनेपर वर और कन्याका विवाह होता है। विवाह होनेपर पुरुष अपनी स्त्रीके घर चला जाता है। पुरुष अपनी स्त्रीकी अनुमतिके विना दूसरा विवाह नहीं कर सकता। वे लोग अपने मुर्दोंको जलाकर उनकी राख अपनी झोपड़ीके दरवाजेके निकट गाड़ देते हैं। लाश जलानेके समय मृतकको मार्ग दिखानेके लिये एक कुत्ता वलिदान किया जाता है। हाल तक प्रधानके मौतके स्थानपर मनुष्य वलि दिये जाते थे।

इतिहास—सन् १८६६ ई० में गारो पहाड़ियोंमें एक अङ्गरेजी अफसर नियत हुआ। सन् १८६७ में त्युरामें डिपुटी कमिश्नर गये। सन् १८६८ में गारो पहाड़ी जिला नियत होकर त्युरामें सिविल स्टेशन वना। सन् १८७१ के अन्ततक लगभग १०० गाँव अङ्गरेजी अधिकारमें हुए। सन् १८७३ के मईमें सम्पूर्ण जिलेका नकशा तैयार हुआ।

ग्वालपाड़ा।

यात्रापुरतक रेल है, वहाँसे आगवोटमें जाना होता है। यात्रापुरसे लगभग ३५ मील पूर्व कुछ उत्तर ब्रह्मपुत्रके दहिने किनारेपर ग्वालपड़ा जिलेका सदर स्थान धुवड़ी एक वस्ती है। आगवोट धुवड़ी छोड़नेके दूसरे दिन दोपहरको ग्वालपाड़ा पहुँच जाता है।

आसाम प्रदेशमें ब्रह्मपुत्र नदीके बाँये अर्थात् दक्षिणं किनारेपर यात्रापुरसे लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ४१ कला, पूर्व देशान्तरमें) एक गावदुमी पहाड़ीके पादमूलके पास जिलेमें प्रधान कसवा ग्वालपाड़ा है, जो पहले जिलेका सदर स्थान था।

ग्वालपाडा कसवेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ५४४०और सन् १८८१ में ६६९७ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५१ हिन्दू, २३७३ मुसलमान, और १७३ दूसरे।

एक पहाड़ीपर मैदानसे २६० फीट ऊपर सिविल स्टेशन बना है। वहाँसे ब्रह्मपुत्रकी घाटीके उत्तम दृश्य और उत्तर ओर हिमालयके शिरो भाग पर बर्फ देख पड़ती है। पहाड़ीके पश्चिम ढालूपर देशी लोगोंका कसवा बसा है। मकान लकड़ीके खम्भे, चटाई और काससे बने हुए हैं। कसवा अब तक इस देशमें प्रधान तिजारती स्थान है। इसमें बहुतेरे देशी सौदागर और पहाड़ी लोग,जो चमड़े आदिकी सौदागरीके लिये नीचे आते हैं, देख पड़ते हैं।

ग्वालपाड़ा जिला—पूर्वकालमें एक ग्वाला आकर यहाँ वसा इसलिये इस देशका नाम ग्वालपाड़ा पड़ा। यह आसाम देशका पश्चिमी जिला ब्रह्मपुत्र नदीके ऊपरी घाटीका दरवाजा बनता है। इसके उत्तर भूटानकी पहाड़ियाँ और दक्षिण गारो पहाड़ियोंका नया जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३८९७ वर्ग मील और सदर स्थान ब्रह्मपुत्र नदीके उत्तर किनारेपर धुवरी कसवा है। यह जिला ब्रह्मपुत्र नदीके उत्तर किनारेपर ६५ मील और दक्षिण किनारेपर १२० मील फैला है। नदीके किनारोंपर सघन बेंत और नर्कट और उसके बाद धानके खेत फैले हुए हैं। ब्रह्मपुत्रके उत्तर मानस, गदाधार और गंगा धार जिलेकी प्रधान नदियाँ हैं। जिलेमें विशेष करके पूर्वी द्वारोंमें बेशकीमती लकड़ीके जंगल हैं और बाघ, गेंड़ा, भैंसा इत्यादि जंगली जानवर बहुत रहते हैं। जंगली जानवर प्रति वर्ष बहुतेरे लोगोंको मार डालते हैं। पहाड़ियोंमें मकान बनाने योग्य पत्थर निकाला जाता है।

इस जिलेमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४४६२३२ मनुष्य थे; अर्थात् ३२९०६६ हिन्दू, १०४७७७ मुसलमान, ११७१२ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली ५१२ कृस्तान, ७९ बौद्ध,३९ जैन, ३२ ब्राह्म और१४ सिक्ख। जातियोंके खानेमें १९२३० जलिया जो मछुहेका काम करते हैं, ११७१० गारो, ११२९४ कुलिता, जो ब्राह्मणका काम करते हैं, २९७० ब्राह्मण, १७३३ कायस्थ, ५७ राजपूत थे शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। पहाड़ी जातियोंमें राझ, मेंच और कचारी ३ जाति अब हिन्दुओंमें लिखे जाते हैं और कोच ऊँचा मरतवा रखनेके कारण राजवंशी कहाते हैं और हिन्दुओंमें सामिल हुए हैं। ग्वालपाड़ा जिला रोगकारक देश है और इसमें भूकंप बहुधा हुआ करता है। जिलेमें ग्वालपाड़ाके अतिरिक्त किसी गाँवमें ५००० से अधिक मनुष्य नहीं हैं। धुवरी और विजनी प्रसिद्ध वस्ती है।

इतिहास—ग्वालपाड़ा सर्वदा बंगाल और आसामकी सीमापर था। पूर्व कालम यह जिला कामरूपके हिन्दु राज्यका एक भाग था। लोग कहते हैं कि पीछे यह कूचविहारके कोचोंके अधिकारमें हुआ। विजनीके वर्तमान राजा, जिनकी जमीन्दारी इस जिलम फैली हुई है, अपनेको कूचबिहारके एक राजाके छोटे पुत्रका वंशधर कहते हैं।

गौहाटी।

यात्रापुर तक रेल है। यात्रापुरसे आगवोट द्वारा ब्रह्मपुत्र नदीके मार्गसे लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर ग्वालपाड़ा और ग्वालपाड़ासे ९५ मील यात्रापुरसे १७५मील पूर्व गौहाटी

जाना होता है। आसाम देशके कामरूप जिलेका प्रधान कसवा और जिलेका सदरस्थान (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४८ कला, पूर्व देशान्तरमें) ब्रह्मपुत्र नदीके बायें अर्थात् दक्षिण किनारे पर गौहाटी एक छोटा कसवा है। ब्रह्मपुत्रके किनारोंपर या इसके आस पास ग्वालपाड़ा, गौहाटी और २ या ३ दूसरे स्थानोंके अतिरिक्त सर्वदा रहने वाले मकान नहीं देख पड़ते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गौहाटीमें १०८१७ मनुष्य थे; अर्थात् ७७७३ हिन्दू, २४०५ मुसलमान, ५१७ एनिमिष्टिक, ९९ क्रस्तान, और २३ जैन। मनुष्य-गणनाके अनुसार गौहाटी आसाममें दूसरा शहर है।

उत्तरी पहाड़ीके ढालूपर वर्षमें एक वार सौदागरोंके लिये भोटिये लोग एकत्रित होते हैं। गौहाटीके निकट ब्रह्मपुत्र नदीके बीचमें उमानन्द नामक छोटे चट्टानी टापूमें एक मन्दिर है। गौहाटीके पड़ोसका पवन पानी रोगवर्द्धक है।

प्राचीन कालमें गौहाटीका नाम प्रागज्योतिषपुर था। यहाँहीसे श्रीकृष्णचन्द्रने भौमासुरको मारकर १६१०० राजकुमारियोंको, जिनको भौमासुरने छीनकर रक्खा था, द्वारिकामें लेजाकर उनसे व्याह किया और महाभारतमें प्रसिद्ध राजा भगदत्तकी यही प्रागज्योतिषपुर राजधानी थी, जिनको कुरुक्षेत्रके संग्राममें अर्जुनने मारा। भगदत्तके वंशधरोंके महल और मन्दिरोंकी निशानियाँ अवतक उनके पराक्रमकी साक्षी देती हैं। मुसलमानोंने उसके वंशका विनाश किया था। लोग कहते हैं कि कूचविहार दरंग, बिजनी और सीदलोंके राजा उसी वंशसे हैं।

कामरूप जिला—यह जिला आसामके ब्रह्मपुत्र घाटीमें ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों ओर ३८५७ वर्ग मील क्षेत्र फलमें फैला है। इसके उत्तर भूटान देश; पूर्व दरंग और नौगाँव जिला; दक्षिण खसिया पहाड़ियाँ और पश्चिम ग्वालपाड़ा जिला है। जिलेका सदर स्थान गौहाटी कसवा है। ब्रह्मपुत्रके दक्षिणकी पहाड़ियाँ चन्द स्थानोंमें २००० से ३००० फीट तक ऊँची हैं इनके ढालुओंपर चायके वाग वनाये गये हैं। ब्रह्मपुत्रके दोनों ओर बहुतेरी छोटी नदियाँ ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं। जिलेमें लगभग १३० वर्ग मील क्षेत्रफलमें जङ्गल लगा है। हाथी, वाघ, तेंदुए, भालू, भेंडा, भैंसा, बड़ी हरिन और जङ्गली सूअर, खासकर जिलेके उत्तरमें बहुत होते हैं। बहुतेरे गाँव जङ्गली जानवरोंके भयसे घेरानसे घिरे हुए हैं। प्रतिवर्ष जङ्गली जानवर बहुतेरे आदमियोंको मार डालते हैं। जिलेमें मयूर पक्षी बहुत होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कामरूप जिलेमें ६४४९६० मनुष्य थे; अर्थात् ५६९९०६ हिन्दू, ५०४५२ मुसलमान, २३५२५ आदिनिवासी, ६९० बौद्ध, ३६६क्रस्तान २० जैन और १ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें १४०९२३ कोतीटा, ९९२९३ कचारी,८१५५१ कोच, ५३२०३ केवट, ३६३३६ ब्राह्मण, २२७२३ राभा, शेषमें कटानी, डोम, चण्डाल, मिकिर, सुनरिया इत्यादि जातियाँ थीं। राजपूत केवल ३११ थे।

कामरूप जिला महापुरुधिया करके प्रसिद्ध वैष्णवोंका प्रधान स्थान है। इसमें ६१ मठ जो सास्वत कहलाते हैं प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त देवलायी करके प्रसिद्ध दूसरे बहुतेरे मठ हैं।

कामरूप जिलेमें कई एक तीर्थ स्थान हैं। इनमेंसे एक महामुनिका बौद्ध मन्दिर है, जहाँ हिमालयके उसपारके भी बौद्ध यात्री आते हैं।

इतिहास—अति पूर्व कालमें राजा भगदत्त, जिसकी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर (वर्त्तमान कालकी गौहाटी) थी, इस देशमें राज करता था। उसको कुरुक्षेत्रके संग्राममें अर्जुनने मार डाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा भगदत्तका राज्य पूर्व दिशामें मनीपुरकी पहाड़ियोंसे करतोया नदी तक और सम्पूर्ण आसामकी घाटी पर फैला था। आईन अकबरीमें लिखा है, कि भगदत्तके वंशमें २३ उत्तराधिकारी राजा हुए। एक टीकाकारने लिखा है, कि भौमासुरका पुत्र भगदत्त था, किन्तु मुझको किसी पुराणमें यह बात नहीं मिली।

देशी कहावतें हैं कि इस देशमें भुइयाँ लोग राज्य करते थे। यह निश्चय है कि पीछे कोच लोगोंने आसामसे आकर कूचविहारको जीता। सन् १२०४ ई० में मुसलमान बादशाहोंके साथ कामरूपका सम्बन्ध आरम्भ हुआ। रंगामतीका किला, जो अब ग्वालपाड़ा जिलेमें है, दिल्ली राज्यके अखीर पूर्वोत्तरमें बाहरीका पड़ाव था। सन् १८२४ के पीछे आसामके नीचेकी घाटीको अङ्गरेजी गवर्नमेंटने बंगालमें मिला लिया और ऊपरीघाटी आसामके राजा पुरन्दरसिंहके आधीन एक देशी राज्य बना; परन्तु सन् १८३८में पुरन्दरसिंहका सम्पूर्ण राज्य गवर्नमेंटने छीन लिया। सन् १८७४ ई० में आसाम प्रदेश एक चीफकमिश्नरके आधीन बंगालसे अलग एक देश नियत हुआ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(उद्योग पर्व्व, चौथा अध्याय) पूर्वके समुद्रके पासका रहनेवाला भगदत्त है। (१९ वाँ अध्याय) राजा भगदत्तके संग चीन और किरात देशकी सेना हस्तिनापुरमें दुर्योधनकी सहायताके लिये आई। (कर्ण पर्व्व पाँचवाँ अध्याय) अर्जुनने राजा भगदत्तको, जो पूर्व समुद्रके निकटके अनूपदेशके किरातोंका स्वामी, इन्द्रका प्यारा मित्र और क्षत्रियोंके धर्ममें सदा निरत रहनेवाला था, कुरुक्षेत्रके संग्राममें मारडाला। (शान्ति पर्व्व १०१ वाँ अध्याय) प्रागदेशीय योद्धा लोग हाथियोंके युद्धमें निपुण होते हैं।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध ५९ वाँ अध्याय) श्रीकृष्णचन्द्र सत्यभामाके सहित गरुड़ पर चढ़ भौमासुरके नगर प्राग्ज्योतिषपुरमें गये। वहाँ पर्वत, जल, अग्नि, पवन और शस्त्रका किला था। भौमासुर, जिसका नाम नरकासुर भी है, गजारूढ़ सेना सहित बाहर निकला। बड़ा युद्ध करनेके पश्चात् कृष्णभगवान्ने पृथ्वीके पुत्र भौमासुरका शिर अपने चक्रसे काट डाला और १६१०० कन्याओंको, जिनको भौमासुरने छीनकर एकत्र किया था, पालकियोंमें बैठाकर चार चार दांत वाले ६४ हाथियों सहित द्वारिकापुरीमें भेज दिया। वहाँ सम्पूर्ण कन्याओंसे कृष्णभगवान्का व्याह हुआ (यह कथा आदिब्रह्मपुराणके ९१ वें अध्यायमें भी है)

कामाख्या।

गौहाटीसे लगभग २ मील पश्चिम (२६ अंश, १० कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४५ कला, पूर्व देशान्तरमें) कामाख्या नामक पहाड़ी है। उसके सिरपर एक सरोवरके निकट कामाख्या देवीका, जिनको लोग कामाक्षाभी कहते हैं, सुन्दर मन्दिर है। मन्दिरमें अंधियार रहनके कारण दिनमें भी दीप जलता है। मन्दिरके पास मोदियोंकी अनेक दूकानें

और पण्डाओंके मकान बने हैं । हिन्दुस्तानके सब विभागोंसे यात्रीगण कामाख्या जाकर देवीका दर्शन करते हैं । माघ, भादो और आश्विनमें उत्सवके समय बहुत लोग कामाख्या में एकत्र होते हैं ।

शिवके १२ ज्योतिर्लिंगोंमेंके भीमशङ्करको शिवपुराणमें कामरूप देशमें लिखा हुआ है, किन्तु बम्बईके पासके भीमशंकरको लोग ज्योतिर्लिङ्ग कहते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–देवीभागवत–(७ वाँ स्कंध ३८ वाँ अध्याय) कामरूप देशके कामाख्या भूमंडलमें देवीका महाक्षेत्र है । भूमण्डलमें इससे श्रेष्ठ स्थान देवीका नहीं है । वहाँ साक्षात् देवी प्रति मास रजस्वला होती हैं । वहाँकी सब पृथ्वी देवी रूप है । कामाख्या योनि मण्डलसे पर और स्थान नहीं है ।

पद्मपुराण–(पाताल खण्ड १२ वाँ अध्याय) शत्रुघ्नजी यज्ञ-अश्वकी रक्षा करते हुए, अहिछत्रा नामक बड़े नगरमें पहुँचे । उसने एक देवालय देखकर अपने मन्त्री सुमतिसे पूछा कि यह मन्दिर किसका है । मन्त्रीने कहा कि यह मन्दिर विश्वकी माता कामाख्याजीका है, जिनके दर्शन मात्रसे सम्पूर्ण सिद्धि उत्पन्न होती हैं । अहिछत्रापुरीके राजा सुमदने इनकी पूजा की; तबसे यह इस पुरीमें स्थित हुई हैं और सबका शुभ करती हैं । (१३ वाँ अध्याय) राजा सुमदकी आज्ञासे पुरंजनोंने तोरणादिकोंसे अपने २ गृह भली भाँतिसे सँवारे । सहस्रों कन्या रम्य भूषणोंसे भूषित होकर हाथियोंपर चढ़कर शत्रुघ्नजीके सन्मुख उपस्थित हुई और राजा अपनी सेना सहित शत्रुघ्नजीसे जा मिले । जब राजा शत्रुघ्नजीको अपने राज-मन्दिरको लेचले तब हाथियोंपर चढ़ी हुई कन्याओंने शत्रुघ्नजीके ऊपर लावा मिश्रित मोतियोंकी वर्षाकी ।

दूसरा शिवपुराण—(दूसरा खण्ड ३७ वाँ अध्याय) शिवकी स्त्री सती दक्षके यज्ञमें अपने श्वासको ब्रह्माण्डमें चढाकर शरीरको छोड़ निज लोकको गई । शिवजीने दक्षके यज्ञ विध्वंस करनेके पश्चात् सतीके शरीरको गङ्गाके तटमें पड़ा हुआ देखा । तब वह उसको अपने शरीरमें लपटाये हुए चारोंओर दौड़ने लगे । जिस २ स्थानपर सतीके अंग गिरे वह सब स्थान सिद्धपीठ होगये । काम शैलपर सतीकी योनिगिरनेसे कामाख्या नाम देवी प्रकट हुई, जिनको कामरूपा कहते हैं ।

वामनपुराण—(८४ वाँ अध्याय) प्रह्लादने कामरूप देशमें जाकर पार्वती शिवका पूजन किया ।

शिवपुराण–(ज्ञान संहिता ३८ वाँ अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनमेंसे डाकिनीमें भीमशकर स्थित हैं । (४८ वाँ अध्याय) लंकाके कुम्भकर्णका पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटीके साथ सह्यपर्वतपर रहता था । उसने दश हजार वर्षतक कठोर तप करके ब्रह्माजीसे अप्रमेय वर लाभ किया । उसके पश्चात् वह कामरूपके राजाको परास्त कर वन्दिखानेमें रख कामरूप देशका स्वामी बनगया और देवतागण तथा ऋषीश्वरोंको क्लेश देने लगा । कामरूपका राजा वन्दिखानेमें पड़ी हुई अपनी स्त्रीके सहित पार्थिव बनाकर शिवजीकी आराधना करने लगा । उधर देवताओंने शिव जीको प्रसन्न कर भीमके विनाशके लिये उनसे प्रार्थनाकी भीमने जब सुना कि राजा बन्दि-गृहमें भी शिवकी पूजा करता है तब राजाके पास जा उसको अनेक दुर्वचन कहकर उस

ऊपर तलवार चलाया। उसी समय शिवजीने पार्थिवसे निकलकर भीमकी तलवारको अपने पिनाकसे सौ टुकडे कर डाला। भगवान् शंकर और भीम दैत्यका भयंकर युद्ध होने लगा। उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछलने लगा और देवतागण अति त्रसित हुए। जब नारदने आकर शिवजीकी प्रार्थना की तब उन्होंने हुंकाररूपी अस्त्रसे सम्पूर्ण राक्षसोंके सहित भीमको भस्म कर दिया। उस समय देवताओंने शिवजीसे प्रार्थना की कि हे भगवन्! आप लोकके हितके लिये इस स्थानमें निवास करके इस दुष्ट देशको पवित्र कीजिये। शिवजी देवताओंके वाक्य स्वीकार करके उस स्थानमें रह गये और भीम शंकर नामसे प्रसिद्ध हुए, जिनके दर्शन और स्मरण करनेसे सम्पूर्ण पापका विनाश होजाता है।

नवां अध्याय।

(आसाम देशमें) शिलांग, सिलहट, सिलचर, और देशी राज्य मनीपुर।

शिलांग।

गौहाटीसे ६४ मील दक्षिण (२५ अंश, ३२ कला, ३९ विकला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ५५ कला, ३२ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे ४९०० फीट ऊपर खसिया और जयन्ती पहाड़ियाँ जिलेका प्रधान कसबा और आसामके चीफ कमिश्नरका सदर स्थान शिलांग एक छोटा कसबा है। गौहाटीसे ताँगाकी डाक एक दिनमें शिलांग चली जाती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके सहित शिलाङ्गमें ६७२० मनुष्य थे, अर्थात् ३०९५ हिन्दू, २५११ एनीमिष्टिक, ५६६ मुसलमान, ५४० क्रस्तान, १ बौद्ध और ७ दूसरे।

शिलाङ्गमें चीफ कमिश्नर सर्वदा रहते हैं। मनुष्य संख्या बढ़ती जाती है। बहुत रुपये खर्च करके सरकारी इमारतें बनाई गई हैं। और एक गिरजा बना है। नलद्वारा पानी सर्वत्र पहुँचता है। साप्ताहिक हाट लगता है। सन् १८८५ ई० में शिलाङ्गकी छावनीमें ३ पहाड़ी तोपोंके साथ बङ्गाल पैदलकी ४२ वीं रेजीमेण्ट थी। शिलाङ्गमें सालाना औसत ८७ $\frac{१}{२}$ इंच वर्षा होती है। अगहनसे चैत वा वैशाख तक जाड़ा रहता है। वर्फ कभी नहीं पड़ती है; किन्तु कभी २ सर्दीसे कम गहड़ा पानी जम जाता है।

खसिया और जयन्तियां पहाड़ियाँ जिला—इस जिलेके उत्तर कामरूप और नौगाँव जिला; पूर्व नौगाँव और कचार जिला; दक्षिण सिलहट जिला और पश्चिम गारो पहाड़ियाँ हैं। जिलेका क्षेत्रफल ६१५७ वर्गमील और सदर स्थान शिलाङ्ग है।

खासी पहाड़ियों पर अङ्गरेजी गवर्नमेंटके आधीन छोटे छोटे बहुतेरे देशी राजा हैं और बहुतेरे गाँव अङ्गरेजी हैं। जयन्ती पहाड़ियाँ अङ्गरेजी राज्यमें हैं, जिसको सन् १८३५ में सरकारने वहाँके राजासे छीन लिया। खसिआ पहाड़ी पर पहाड़ी नदियाँ बहुत हैं। जङ्गलोंमें मधुमक्खीका मोम और लाही होती है और हाथी, गैंडे; बाघ, भैंसे वनैली गाय

इत्यादि सब प्रकारके बनैले जन्तु रहते हैं और बहुतेरे आश्चर्य्य गुफा और खोह देखनेमे आते हैं, जिनमेंसे चेरापुँजी और रूपनाथका खोह बहुत प्रसिद्ध है। रूपनाथका खोह भूमिमें बहुत दूर तक फैला है। कचारकी सीमापर कपिली नदीके किनारे एक गर्म झरना है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १६९३० मनुष्य थे; अर्थात् १६०९७६ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जङ्गली जातियाँ, ५६९२ हिन्दू, २१०७ कृस्तान, ५७० मुसलमान और १५ ब्राह्म।

इस जिलेमें स्त्रियाँ मालिक हैं। पुरुष विवाह करनेके पश्चात् अपने ससुरके घरमे रह जाता है। जो धन सम्पत्ति पुरुष अपने घरसे ले आता है, वह उसके मरनेपर उसकी सबसे छोटी बहिन पाती है, और विवाहके पहलेकी सम्पूर्ण जायदादकी वही वारिस होती है। विवाहके पश्चातकी प्राप्त हुई जायदाद मृत पुरुषकी स्त्री और लड़के पाते हैं, किन्तु जिलेके भिन्नभिन्न प्रान्तमें यह रीति बदली हुई है। दक्षिणी ढालु और घाटियोंके निवासी विवाहके पहले और पीछेकी उपार्जनकी हुई सम्पत्तिमें भेद नहीं मानते। वहाँ मृत पुरुषकी सन्तान सम्पूर्ण धन सम्पत्तिकी मालिक होती है। खसिया और जयन्ती पहाड़ियोंमें केवल शिलांग और जोआई अङ्गरेजी स्टेशन और चेरापुञ्जी और शोलापुञ्जी देशी कसबा है। गौहाटी और शिलांगके बीचमें गाड़ीकी एक अच्छी सड़क सन् १८७७ में बनाई गई। उसके कई एक वर्ष पीछे सन् १८८३ में वह चेरापुंजी तक ३० मील बढ़ाई गई।

इस जिलेमें नारंगी, आलू, तेजपात और सुपारी बहुत होती हैं। जयन्ती पहाड़ियोंमें हल चलता है, किन्तु खसिया पहाड़ियोंमें केवल कुदालसे खेती होती है।

चेरापुंजी—खसिया पहाड़ियोंके दक्षिण भागमें जेठसे कार्तिक तक भारी वर्षा होती है। चेरापुंजीके पास, जो इस जिलेमें शिलांगसे ३० मील दक्षिण है, सन् १८७७ से १८८१ तक ४६३ इञ्च वर्षा हुई थी। लोग कहते हैं कि दुनियाँकी जानी हुई वर्षासे सबसे बड़ी वर्षा सन् १८७६ के १६ जूनको चेरापुंजीमें हुई। उस समय २४ घण्टेमें ३४ इञ्च पानी गिरा था। सन् १८६१ में ८०५ इञ्च वर्षा हुई, जिसमेंसे केवल जूनमें ३६६ इंच हुई थी।

इतिहास—अङ्गरेजी सरकारने सन् १८३५ में जयन्तीके राजा राजेन्द्रसिंहसे जयंती पहाड़ियाँ छीन लीं। खसियाका राजा सन् १८३३ में सरकारके आधीन हो चुका था। पहले इस जिलेका सदर स्थान चेरापुञ्जी था, किन्तु सन १८६४ में शिलाङ्ग सदर स्थान बनाया गया। सन् १८७४ में जब आसाम एक चीफ कमिश्नरके आधीन हुआ तब शिलाङ्ग चीफ कमिश्नरका सदर स्थान बना।

आसाम देश—आसाम देशका क्षेत्रफल ४९००४ वर्गमील है। इस देशमें कितनीही जगह अबतक नापी नहीं गई हैं। देशके उत्तर भूटान; पूर्वोत्तर मिशमी पहाड़ियाँ; पूर्व ब्रह्मा और मनीपुरका राज्य, दक्षिण लुसाइयोंके रहने वाली पहाड़ियाँ, टिपरा जिला और टिपराका राज्य और पश्चिम सूबे बङ्गालमें मैमनसिंह; रंगपुर और जलपाईगोड़ी जिले तथा कूचबिहारका राज्य है।

यह देश ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों ढारपर चीनकी सीमा तक चला गया है। और स्वाभाविक ३ भागोंमें बटा है; अर्थात् ब्रह्मपुत्र घाटी, सुरमा घाटी, और मध्यके पहाड़ी देशमें। इसमें पहाड़ियाँ और जङ्गल बहुत हैं, जिनमें दफला, मीरी, मिश्मी, नागा, कूकी, लुशाई

इत्यादि जङ्गली जातियाँ बहुत रहती हैं। भारतवर्षका कोई भाग इस देशके समान आर्द्र नहीं है। इसकी प्रधान नदी ब्रह्मपुत्र और सुरमा हैं; किन्तु लगभग ४० नदियाँ ऐसी हैं, जो वर्षभरमें किसी समय थाह नहीं होतीं। चैत्रसे कार्तिक तक बड़ी वर्षा होती है। यह देश चायके उपजके लिये प्रसिद्ध है। चायके बागोंमें काम करनेके लिये दूर दूरके देशोंसे आसाममें कुली लाये जाते हैं। आसाममें लोहा और कोयला बहुत निकलताहै। जङ्गलोंमें हाथी और गेंडे बहुत रहते हैं। बहुतेरे लोग जङ्गलोंसे हाथियोंको बझाकर दूसरे देशोंमें लेजाते हैं। जंगली लोग तसरके कीड़ोंको ले आते हैं। इस देशमें भूडोल बहुधा हुआ करता है।

आसाम प्रदेशमें ११ जिले हैं;—सिलहट, कचार, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरंग, नवगाँव, शिवसागर, लखिमपुर, नागा, खसिया पहाड़ियाँ और गारू। खसिया पहाड़ियाँ जिलेके शिलाङ्गमें आसामके चीफ कमिश्नर रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय आसाम देशमें ५४७६८३३ मनुष्य थे; अर्थात् २८१९५७५ पुरुष और २६५७२५८ स्त्रियां। इनमेंसे २९९७०७२ हिन्दू, १४८३९७४ मुसलमान, ९६९७६५ जंगली जातियाँ इत्यादि, १६८४४ क्रस्तान, ७६९७ बौद्ध, १३६८ जैन, ८३ सिक्ख, ५ यहूदी और २५ अन्य थे। इनमें सैकडे पीछे बंगाली भाषा वाले ५० मनुष्य, आसामी भाषा वाले २५$\frac{3}{5}$ मनुष्य, हिन्दी वाले ४$\frac{1}{5}$ मनुष्य, कचारी भाषाके ३$\frac{1}{2}$ मनुष्य, खासी भाषा वाले ३$\frac{1}{4}$ मनुष्य, गारो भाषा वाले २$\frac{3}{4}$ मनुष्य और अन्य भाषा वाले ११ मनुष्य थे।

आसामके कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य—गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	कसबा	जिला	जन-संख्या
१	सिलहट	सिलहट	१४०२७
२	गोहाटी	कामरूप	१०८१७
३	डिब्रुगढ़	लखिमपुर	९८७६
४	बरपेटा	कामरूप	९३४२
५	सिलचर	कचार	७५२३
६	शिलाङ्ग	खसिया पहाड़ी	६७२०
७	ग्वालपाड़ा	ग्वालपाड़ा	५४४०
८	शिवसागर	शिवसागर	५२४९

अति पूर्व कालमें आसाम प्रदेश महाभारतमें प्रसिद्ध राजा भगदत्त और उनके उत्तराधिकारियोंके आधीन था। बाद लगभग १३ वीं सदीमें वह 'अहम' नामक पहाड़ी जातियोंके अधिकारमें हुआ। अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने सन् १७६५ ई० में आसामके सिलहट और ग्वालपाड़ा जिलेका; सन् १८२६ में आसामका निचला भाग, सन् १८३० में राजा गोविन्दचन्द्रके विना वारिस मृत्यु होनेपर कचारके मैदानका भाग; और सन् १८३८में राजा पुरंदरसिंहको निकालकर घाटीका ऊपरी हिस्सा अपने राज्यमें मिला लिया। अङ्गरेजी अधिकार बहुत समयमें धीरे धीरे पहाड़ी देशोंपर फैलता गया। एक अङ्गरेजी अफसर सन् १८६८ में नागा

पहाड़ोंके 'समागुतींङ्ग' में रक्खा गया; किन्तु नागा जातियोंकी एक असभ्य जाति अब तक स्वाधीन है। सन् १८७४ में ११ जिले बंगालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नरके अधिकारसे निकालकर एक चीफ कमिश्नरके आधीन आसाम देश बनाया गया।

सिलहट।

शिलाङ्गसे ३० मील दक्षिण कुछ पश्चिम चेरापूंजी और चेरापूंजीसे लगभग ३० मील दक्षिण कुछ पूर्व (२४ अंश, ५३ कला, २२ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ५४ कला, ४० विकला, पूर्व देशान्तरमें) सुरमा नदीके दहिने अर्थात् उत्तर किनारेपर आसाम देशमें प्रधान कसबा और एक जिलेका सदर स्थान सिलहट कसबा है। शिलाङ्गसे सिलहट तक चेरा होकर सड़क बनी हुई है और नारायणगञ्जसे, जो सिलहटसे पश्चिम दक्षिणकी ओर बंगाल प्रदेशमें है, सिलहट कसबेसे लगभग १५ मील दूर नित्य आगबोट आता है। उस सफरमें आगबोटको दो दिन लगते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिलहट कसबेमें १४०२७ मनुष्य थे; अर्थात् ७९७६ पुरुष और ६०५१ स्त्रियाँ। इनमें ७०३० मुसलमान, ६८८८ हिन्दू, ७४ कृस्तान ३६ जैन और ९ एनिमिष्टिक थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह आसाम प्रदेशमें पहला शहर है।

यूरोपियन लोगोंके मकान दो मील तक सुर्मा नदीके किनारेपर और कसबेके पीछे छोटी पहाड़ियोंपर छितराये हुए हैं। वहाँ मामूली सरकारी इमारतें और एक सुन्दर गिर्जा बना हुआ है। शाहजलाल नामक फकीरकी प्रसिद्ध मसजिद है, जहाँ दूर दूरसे मुसलमान यात्री आते हैं।

सिलहट तिजारती कसबा है। चावल, ढाल, चमड़ा, सीतलपाटी, नारङ्गी पत्तीका छाता, जेवर इत्यादि वस्तु वहाँसे दूसरे स्थानोंमें जाती हैं और कपड़ा, निमक, चीनी, रेशम, मसाला इत्यादि सामान दूसरे स्थानोंसे वहाँ आते हैं। सिलहटमें सीतलपाटी, हाथीदांत और हड्डीके जेवर, पेटाढ़ा और मोढ़े अति उत्तम बनते हैं। वहाँके समान उत्तम नारङ्गी किसी जगह नहीं होती। वहाँ ईदके तिहवारके समय मुसलमानोंका मेला होता है, जो दो दिनों तक रहता है। सन् १८६९ के भारी भूकंपसे सिलहटकी इमारतोंको बड़ी हानि पहुँची थी।

सिलहट जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ५४१३ वर्गमील है, जिसके उत्तर खशिया और जयन्ती पहाड़ियाँ जिला; पूर्व कचार जिला; दक्षिण टिपराका राज्य और बंगालके अङ्गरेजी राज्यका टिपरा जिला और पश्चिम बङ्गालमें मैमनसिंह जिला है। जिलेके बड़े भागमें समतल भूमि है। स्थान स्थानमें छोटी छोटी पहाड़ियाँ, जो टीला कहलाती हैं, देख पड़ती हैं। जिलेमें नदियाँ बहुत हैं। आषाढ़से कार्त्तिक तक जिलेका पश्चिमी भाग नदियोंके जलसे समुद्रसा देख पड़ता है। लोग केवल नौकाओं द्वारा आवागमन करते हैं। बाँस, ताड़ और दूसरे वृक्षोंके कुञ्जोंमें गाँव बसे हैं। जिलेके दक्षिणी भागके मैदानोंमें पहाड़ियोंके ८ सिलसिले हैं; इनमेंसे किसीकी उँचाई समुद्रके जलसे १०० फीटसे अधिक नहीं है। जिलेके मध्यमें हट्टा पहाड़ियाँ हैं। सिलहट कसबेके निकटकी पहाड़ियाँ लगभग ८० फीट ऊँची हैं, जिनमेंसे

बहुतेरियों पर चायकी खेती होती है। जिलेमें सुरमा नदीकी बहुतेरी शाखा और सहायक नदियाँ बहती हैं। जिलेके दक्षिण पूर्वके भागमें अच्छी लकड़ी होती है। जिलेके जङ्गली पैदावारोंमें लकडी, बांस, छप्पर छाने योग्य घास; लाही, मधुमक्खियोंका मोम, मधु वृक्षके रससे वना हुआ अगर अत्तर और जङ्गली जानवरोंमें बाघ, हाथी, भैंसा, गैंडा प्रधान हैं। जिलेके पूर्व दक्षिणके भागमें हाथी वझाये जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिलहट जिलेमें १९६९००९ मनुष्य थे; अर्थात् १०१५५३१ मुसलमान, ९४९३५३ हिन्दू, ३७०८ जङ्गली जातियाँ, ३७९ क्रस्तान और ३८ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें १५७१३० कायस्थ, १२९६०९ चण्डाल, १०२०६५ दास या हलवा, ८२१७० नाथ या जोगी ४९६०० पाटनी, ४५४३४ ब्राह्मण, ४०४१२ माली, ३६४२२ सूँडी, ३५४०७ कैवर्त, २७२६४ डोम, २६३३० धोबी और केवल ३६५८ राजपूत थे, शेषमें दूसरी जातियाँ थीं।

इतिहास—मुसलमानोंने १४ वीं सदीके अन्तमें सिलहट जिले पर आक्रमण करके जिलेके हिस्सेको जीता। जयन्तियाके राजाने चन्द अङ्गरेजी प्रजाओंको बलसे छीनकर कालीजोको वलि चढ़ाया; इस लिये अङ्गरेजी सरकारने सन् १८३५ ई० में उसका राज्य छीनकर अपने राज्यमें मिला लिया। राजा इन्द्रसिंह अपने मरनेके समय सन् १८६१ ई० तक ६००० रुपया वार्षिक पिंशन पाते थे। सिलहट जिला सन् १८७४ में आसाम की कमिश्नरीमें मिला दिया गया।

सिलचर।

सिलहट कसबेसे लगभग ८० मील पूर्व (२४ अंश, ४९ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अंश, ५० कला, ४८ विकला, पूर्व देशान्तरमें) वारक नदीके दक्षिण किनारेपर आसाम देशके कचार जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा तथा फौजी छावनी सिलचर है। सूखी ऋतुओंमें सिलहटसे कचार तक सुर्मा नदीमें नावपर जाना होता है। बरसातमें नारायणगञ्जसे कचार तक आगबोट चलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय सिलचरमें ७५२३ मनुष्य थे; अर्थात् ५१४४ हिन्दू, २२२४ मुसलमान, ८४ क्रस्तान, ६३ एनिमिष्टिक ५ जैन, १ बौद्ध, १ यहूदी और १ दूसरा।

सिलचरमें एक सुन्दर गिर्जा हालमें बना है। सिविल स्टेशन और फौजी छावनी इत्यादि सरकारी इमारत बनी हुई है। माघ मासमें एक मेला होता है, जो ७ दिन तक रहता है। मेलेमें बीस पचीस हजार मनुष्य और मनीपुरसे बिकनेके लिये बहुत टांघन (घोड़े) आते हैं। सिलचरसे मनीपुर तक सड़क बनी हुई है, जिसको अङ्गरेजी गवर्नमेंटने सन् १८३२ और १८४२ ई० के बीचमें बनवाया था।

कचार जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३७५० वर्गमील है। जिलेके पूर्व मनीपुरका राज्य और नागा पहाड़ी जिला; दक्षिण पहाड़ी देश जिसमें लुशाई और कूकी पहाड़ी लोग रहते हैं; पश्चिम सिलहट जिला और जयन्ती पहाड़ी और उत्तर कपिली और ढ्यांग नदी बाद नौगाँव जिला है जिलेका सदर स्थान सिलचर है। कचार जिलेके ३ ओर पहाड़ियोंके ऊँचे सिलसिले हैं; केवल पश्चिम सिलहटकी ओर खुला मैदान है। मध्यमें एक नदी पूर्वसे

पश्चिम बहती है, जिसमें वर्षाकालमें आगबोट चलता है। वारक नदी कचार जिलेमें १३०मील बहतीहै इन नदियोंकी सहायक बहुतेरी छोटी नदियाँ हैं। पहाड़ियोंके नीचे ढालू भूमिपर चायके बाग हैं। जगह जगह नीची भूमिपर भाँगकी खेती होतीहै। बाँस और फलदारवृक्षोंके कुञ्जोंमें जिनका दृश्य मनोरम है, लोगोंकी झोंपड़ियाँ बनी हुई हैं। जङ्गलोंमें हाथी, गेंडे, भैंसे, बाघ और बनैली बिल्ली देखनेमें आती हैं। खास करके भैंसोंसे खेत जोते जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कचार जिलेमें ३१३८५८ मनुष्य थे; अर्थात् २८९४२५ मैदानमें और २४४३३ पहाड़ी देशमें। इनमेंसे मैदानमें १८६६५७ हिन्दू, ९३३९३ मुसलमान, ९५७० पहाड़ी जाति, ७६५ क्रस्तान, और ४० ब्राह्म और पहाड़ी देशमें १०९४७ हिन्दू, ३ मुसलमान, २ क्रस्तान. और शेष पहाड़ी जङ्गली मनुष्य थे। जातियोंके खानेमें कचारी ४४२५ मैदानमें और १०८९० पहाड़ियोंमें; कूकी और लुशाई २७९४ मैदानमें और ६४२० पहाड़ियोंमें; नागा ५९८४ मैदानमें और ४०२१ पहाड़ियोंमें; मिकिर ६५९ मैदानमें और ३०४५ पहाड़ियोंमें थे; शेषमें अन्य जातियाँ थीं। कचार जिलेमें कूली बहुत हैं। इस जिलेके लोग धानकी खेती या चायके बागोंमें काम करते हैं। जिलेमें सिलचरके सिवाय ५००० से अधिक मनुष्योंकी कोई बस्ती नहीं है।

इतिहास—सन् १८३० ई० में पिछला कचारी राजा मारा गया और देश अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके अधिकारमें आया। खियाल किया जाता है कि उस पहाड़ी देशमें कचारी राजा लोग रहते थे, जहाँ अब नागा जातिके लोग बसते हैं। उनकी राजधानी पहाड़ियोंके पावके निकट दीमापुर था। कचारके उत्तर भागके पहाड़ी देशमें अबतक कचारी लोग बसते हैं। कचार जिलेमें भूकंप बहुत होता है। सन् १८६९ ई० की १० वीं जनवरीके भूकम्पसे सिलचरका गिर्जा और सरकारी इमारतें गिर गईं; बाजारका बड़ा भाग उजड़ गया और पृथ्वीमें दरार हो गये और सन् १८८२ ई० के १३ वीं अकतूबरके भूकम्पसे सिलचरकी पक्की इमारतोंकी बड़ी हानि हुई।

मनीपुर।

कचारसे १०८ मील पूर्व आसाममें देशी राज्यकी राजधानी मनीपुर है। कचारसे मनीपुरतक पहाड़ी सड़क बनी है। नागापहाड़ी जिलेके कोहिमा छावनीसे १८ मील दूर माओ है। माओसे दक्षिण मनीपुर तक घोड़े चलने योग्य एक पहाड़ी सड़क है।

सन् १८९१ ई० में मनीपुरके राजा कुलचन्द्रने आसामके चीफ कमिश्नर और अन्य कई अङ्गरेजोंको मारडाला, इस लिये अङ्गरेजी सरकारने उनके महलका बड़ा भाग और उनका देवमन्दिर तोड़ डाला। राजाका खास महल छोड़ दिया गया है। राजा काला-पानी भेजा गया। अब मनीपुरका एक छोटा लड़का राजा बनाया गया है। राज्यका प्रबंध अङ्गरेज महाराज़ करते हैं। मनीपुरमें रेजीडेंसी है और अङ्गरेजी सेना रहती है।

मनीपुर राज्य—इसके उत्तर नागा पहाड़ी जिला और पहाड़ी देश, जिनमें नागा जातिके लोग बसते हैं और दूसरे लोग नहीं जासकते पश्चिम कचार जिला, पूर्व ब्रह्माका एक भाग और दक्षिण लूशाई, कूकी और सूती लोगोंका देश है। इस राज्यमें सख्त पहाड़ी देशके भीतर एक फैली हुई घाटी है। राज्यका क्षेत्रफल लगभग ८००० वर्गमील और खास घाटीका क्षेत्रफल ६५० वर्गमील है। साधारण तरहसे पहाड़ी सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको गये हैं।

'लोगताक' झीलके दक्षिणकी घाटी घासके जंगलसे पूर्ण विना वृक्षकी है; किन्तु राज्यके उत्तर और पूर्वके भागमें बहुत वस्तियां देखनेमें आती हैं। फासिलेपर उत्तरकी पहाड़ियोंके नीचे एक कोनेमें राजधानी मनीपुर है। देशके दूसरे भागोंकी अपेक्षा राजधानीके आस पासका देश अधिक आवाद है। कई एक नदियाँ उत्तर और पश्चिमसे लोगताक नामक झीलमें प्रवेश करती हैं। लोगताक झील बहुत बड़ा है; किन्तु प्रतिवर्ष छोटा होता जाता है। घाटीकी लम्बाई लगभग ३६ मील और इसकी सबसे अधिक चौडाई लगभग २० मील है। घाटीके बहुतेरे कूपोंसे नमक निकलता है, जिनमें प्रधान कूप राजधानीसे १४ मील पूर्वोत्तर पहाड़ियोंके पादमूलके निकट है। यही सब नमक मनीपुरमें खर्च होता है। घाटीमें कोई प्रसिद्ध नदी नहीं है। सव नदियोंमें बड़ी वारक नदी है। जंगलोंमें विविध प्रकारके वृक्ष देखनेमें आते हैं। वाँसके जंगल सर्वत्र लगे हुए हैं। पहाड़ी देशमें बहुतेरे हाथी, बाघ, तेन्दुये और भालू विचरते हैं। पूर्व और दक्षिणके भागमें गेंडे मिलते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि मनीपुर राज्यमें जहरीले सर्प नहीं हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मनीपुर राज्यमें ९५४ वस्तियाँ ४५३३२ मकान और २२१०७० मनुष्य थे; अर्थात् १३०८९२ हिन्दू, ८५२८८ पहाड़ीकोम, ४८८१ मुसलमान, ७ क्रस्तान और २ बौद्ध।

मनीपुर राज्यकी स्त्रियाँ बड़ी परिश्रमी हैं। खेतीके कामोंके अतिरिक्त खरीदना, वेचना इत्यादि बहुतेरे कामोंको वही करती हैं। भारतवर्षके किसी स्थानमें मनीपुरकी स्त्रियोंसे अधिक परिश्रम करनेवाली स्त्रियाँ नहीं हैं। वहाँ तिजारत, दुकान्दारीका काम प्रायः सब स्त्रियांहीं करती हैं।

राज्यके उत्तर भागमें खास करके नागा लोग और दक्षिण भागमें कूकी लोग वसते हैं। नागा लोग मामूली तौरसे पगड़ी नहीं वाँधते, किन्तु कूकी लोग सर्वदा सिरपर पगड़ी रखते हैं।

राज्यमें धान, कपास, तेलके वीज, आलू, मकई, तम्वाकू और अनेक प्रकारकी तरकारियाँ होती हैं। मनीपुरके टाँघन घोड़े प्रसिद्ध हैं। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८३२ और १८४२ ई० के मध्यमें मनीपुरसे कचार तक सड़क वनवा दी। सन् १८८३ ई० में घोड़े चलने योग्य एक अच्छी सड़क मनीपुरसे कोहिमासे १८ मीलकी दूरीपर है, जो बनाई गई। इनके अलावे घाटीमें देशी सौदागरीके योग्य कई एक कच्ची सड़कें हैं।

इतिहास—सन् १७१४ ई० में 'पामहीवा' नामक नागा हिन्दू मतमें आकर गरीबनेवाजके नामसे मनीपुरका राजा वना। उसने कई वार ब्रह्मा मुल्कपर चढ़ाई की। उसके मरनेके पश्चात् ब्रह्मावालोंने मनीपुरपर आक्रमण किया। तव मनीपुरके राजा जयसिंहने अङ्गरेजी सरकारसे सहायता मांगी। सरकारने फौज भेजी, किन्तु पीछे वह लौटा ली गई। सन् १८२४ में अंगरेजी सरकार और ब्रह्माके राजाकी पहली लड़ाई आरम्भ हुई। जब ब्रह्मा वालोंने कचार, आसाम और मनीपुर पर आक्रमण किया तब मनीपुरकेराजा गम्भीरसिंहने अंगरेज महाराजसे सहायता मांगी। अंगरेजी सरकारने अपनी फौज कचारकी ओर भेजी और दुश्मनोंको खदेरकर कूबोघाटी ले ली। सन् १८३६ में जब सरकारको ब्रह्मावालोंसे सन्धि हुई तब उन्होंने मनीपुरको स्वाधीन बनाया। सन् १८३४ में गम्भीरसिंह मर गया;

उस समय उसका पुत्र चन्द्रकीर्तिसिंह केवल एक वर्षका लड़का था, इस लिये उसका चचा (गरीबनेवाजका परपोता) नरसिंह राज्यका मालिक बना। सन् १८३४ में अङ्गरेजी सरकारने ब्रह्माके राजाको कूबोघाटी लौटा दी और उसके बदलेमें मनीपुरके राजाको सालाना ६०३७० रुपया देना कबूल किया। सन् १८५० में राजा नरसिंहकी मृत्यु होनेपर उसके भाई देवेन्द्रसिंहको अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने मनीपुरका राजा बनाया; किन्तु ३ महीनेके बाद गम्भीरसिंहके पुत्र चन्द्रकीर्तिसिंहने मनीपुर पर आक्रमण किया। देवेन्द्रसिंह कचारकी ओर भाग गया और चन्द्रकीर्तिसिंह राजा बन गया। सन् १८५१ की फरवरीमें अङ्गरेज महाराजने उसको राजा कबूल किया। सन् १८७९ में नागा लोगोंकी लड़ाईके समय चन्द्रकीर्ति सिंहने अङ्गरेजी सरकारकी सहायता की; इसकी कृतज्ञतामें सरकारने उसको के. सी. एस. आई. की पदवी दी।

सन् १८९० ई० में महाराज शूरचन्द्रसिंह मनीपुरके राजा थे। उनके छोटे भाई कुलचन्द्रसिंह युवराज और कुलचन्द्रसे छोटे भाई टिकेंद्रजितसिंह सेनापति थे और उनसे भी छोटे भाई अङ्गसिंह 'पक्कासेना' का काम करते थे इनके अलावे महाराजके और भी ४ भाई थे। टिकेन्द्रजितसिंहने महाराजके विरुद्ध विद्रोह मचाया। तारीख १२ सितम्बरकी आधी रातमें महाराज शूरचन्द्रसिंहने 'पक्कासेना' और कई एक सेवकों सहित भागकर रेजीडेन्सीमें पनाह लिया और दूसरे दिन वृन्दावन जानेके बहाने करके अपने लोगोंके साथ कलकत्तका मार्ग पकड़ा। उसने कलकत्तेमें पहुँचकर भारत गवर्नमेन्टसे सहायता मांगी। बड़े लाट लार्ड लैंसडौनने उनको सहायता नहीं की। उन्होंने युवराज कुलचन्द्रको मनीपुरके महाराज बनाने और सेनापति टिकेन्द्रजितसिंहको मनीपुरसे निकाल देनेके लिये आसामके चीफकमिश्नर क्विन्टन साहबको मनीपुर जानेकी आज्ञा दी। आज्ञापत्रमें लिखा था कि, टिकेन्द्रजितसिंह मनीपुरमें नहीं रहें, तो गवर्नमेन्ट कुलचन्द्रसिंहको मनीपुरका महाराज स्वीकार करेगी। क्विन्टन साहब चार पाँच सौ आदमियों सहित जिनमें १७५ सिपाही थे, मनीपुर चले। उन्होंने मनमें निश्चय किया कि दरबारमें युवराज, सेनापति आदिको बुलाकर गवर्नमेन्टकी आज्ञा सुनादें और उसी समय सेनापति टिकेन्द्रजितसिंहको पकड़ लें। तारीख २२ मार्चको जब चीफकमिश्नर साहब मनीपुरकी राजधानीसे कुछ दूरही थे, तब सेनापति २ पल्टन अपने साथ ले उनके स्वागतके लिये उनसे जा मिले। साहबके राजधानीके पास पहुँचनेपर युवराज कुलचन्द्रसिंह भी उनसे मिले। चीफकमिश्नरने दरबारके लिये दोपहर दिन नियत किया। दरबारके समय युवराज थे; पर सेनापति नहीं आये इस लिये दरबार नहीं हुआ। साहबने युवराजके पास कहला भेजा कि बिना सेनापतिके आये दरबार नहीं होगा। दूसरे दिन ८ बजे दरबारके समय भी सेनापति नहीं आये तब दरबारका समय १ बजे नियत हुआ। उस समय भी वह नहीं आये, तब मनीपुरके रेजीडेन्ट ग्रिमउड साहबने मनीपुरके दरबार गृहमें जाकर बड़े लाटकी आज्ञा युवराज कुलचन्द्रसिंहसे कह सुनाई और उसके पीछे सेनापतिको समझाया कि आप मनीपुरसे चले जाइये, पर सेनापतिने उनका कहना स्वीकार नहीं किया। चीफकमिश्नरने राजमहलमें मनीपुरी सेनाको प्रवेश करते देखकर रेजीडेन्सीके हातेको दृढ़कर रक्खा। ता० २४ मार्चको चीफकमिश्नरने अङ्गरेजी सेनाको सेनापतिको पकड़नेकी आज्ञा दी। सबेरे ५ बजे अङ्गरेजी सेनाका

आक्रमण आरम्भ हुआ। मनीपुरी सेना उनसे लड़ने लगी। दिनभर युद्ध होता रहा। कई अङ्गरेजी अफसर घायल हुए। शामको अङ्गरेजी सेना परास्त होकर रेजीडेन्सीके हातेमें भाग गई। मनीपुरी सेनाने रेजीडेन्सीके मकानको घेरलिया। उसके पीछे चीफकमिश्नर और कई एक अन्य अङ्गरेज युवराज और सेनापतिसे सन्धिकी बात करने गये। उसी समय मनीपुर वालोंने उनको कैद कर लिया। कई अङ्गरेज मारे गये। रेजीडेन्सीके भीतरके लोग निकल भागे। मनीपुरियोंने रेजीडेन्सीको जला दिया। चीफकमिश्नर किंटन साहब, इत्यादि ५ अङ्गरेज घातकों द्वारा दावसे काट डाले गये। पीछे मनीपुर वालोंने सब देशी कैदियोंको छोड़ दिया।

यह खबर पाकर अङ्गरेजी सेनाने तीन ओरसे मनीपुरपर चढ़ाई की; एक कोहिमा होकर, दूसरी तम्म स्थान होकर और तीसरी सिलचर होकर। लगभग ३० अप्रैलको मनीपुरी सेना कुछ मुकाबिला करनेके पश्चात् परास्त होकर भागी। अङ्गरेजी सेनाने राजधानीपर अपना अधिकार कर लिया। किन्टन साहब आदि कई एक मृत अङ्गरेजोंके सिर राजभवनके आंगनमें गड़े हुए मिले, जो मरनेके ३८ दिन बाद दफन किये गये। अङ्गरेजोंने महाराजके मन्दिर और राजमहलका बड़ा भाग तोड़ दिया। युवराज कुलचन्द्रसिंह, सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह इत्यादि प्रधान लोग क्रम क्रमसे पकड़े गये। विचार करनेके लिये मनीपुरमें एक कमीशन बैठा। सेनापति 'टिकेन्द्रजितसिंह' नायब सेनापति, बूढ़ा तोंगल जेनरल और बहुतेरे अन्य राजकर्मचारी फाँसी दिये गये और युवराज कुलचन्द्रसिंह, उनके भाई अङ्गसिंह इत्यादि बहुतेरे लोग कालापानी भेजे गये। इनके लड़के बाले मनीपुरसे निकाल दिये गये। राजवंशका एक छोटा लड़का मनीपुरका राजा बनाया गया। राज्यका प्रबंध अङ्गरेजी अफसर द्वारा होने लगा।

दसवां अध्याय।

(आसाम देशमें) तेजपुर, नवगाँव, शिवसागर, कोहिमा, डिब्रुगढ़ और परशुरामकुण्ड।

तेजपुर।

गौहाटीसे लगभग ८० मील पूर्वोत्तर आसाम प्रदेशमें ब्रह्मपुत्र नदीके दहिने अर्थात् उत्तर किनारेपर (२६ अंश, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अंश, ५३ कला, ५ विकला, पूर्व देशान्तरमें) दरंग जिलेका प्रधान कसबा और सदर स्थान तेजपुर है। तेजपुरके निकट भैरवी नदी ब्रह्मपुत्रमें मिली है। पहाड़ियोंके दो सिलसिलोंके बीचके मैदानमें तेजपुर बसा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें २९१० मनुष्य थे।

पहाड़ीपर यूरोपियन लोगोंकी कोठियाँ बनी हैं। देशी बस्तीमें खपड़े और लोहेकी चादरसे छाये हुए बहुतेरे पक्के मकान हालमें बने हैं। वहाँ मामूली अनेक सिविल आफिस, जेलखाना, एक खैराती अस्पताल और एक अङ्गरेजी स्कूल है।

कचहरीके आसपास बहुतेरे स्तंभ और नकाशीदार पत्थर पड़े हुए हैं; इससे अनुमान होता है कि पूर्व कालमें तेजपुर प्रसिद्ध स्थान था। तेजपुरके पड़ोसके जङ्गलमें बहुतेरे मन्दिरोंकी निशानियाँ देख पड़ती हैं। उस देशमें तेजपुर प्रसिद्ध तिजारती जगह है। वहाँ चायवाले यूरोपियन बहुत रहते हैं। चाय उत्पन्न होनेके लिये वह बहुत प्रसिद्ध स्थान है।

दरंग जिला––इसके उत्तर भुटिया, आका और डफला पहाड़ियाँ, पूर्व एक नदीके बाद लक्खिमपुर जिला; दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदी और पश्चिम कामरूप जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३४१८ वर्गमील और सदर स्थान तेजपुर है।

जिलेमें कई एक नदियाँ बहती हैं। मनुष्य संख्या कम है। खेती कम होती है नरकट और बेंतके सघन जङ्गल हैं। हाथी, भालू, गेंडे, भैंसे, बाघ इत्यादि विविध प्रकारके वनैले जन्तु रहते हैं। हिंसक जन्तुओंके मारनेवालोंको सरकारसे इनाम मिलता है। सन् १८८२–१८८३ में हाथी बझानेवालोंसे सरकारको २५६० रुपया महसूल मिला था। कई एक नदियोंमें खास करके भीवानीमें बालू धोकर सोना निकाला जाता है। कई एक नदियाँ मैदानमें कुछ दूर जाकर बालूदार भूमिमें गुप्त हो जाती हैं। और कई एक मीलके पश्चात् फिर प्रकट होकर बहती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दरंग जिलेमें २७३३३२ मनुष्य थे; अर्थात् २५१८३८ हिन्दू, १४६७७ मुसलमान, ४८५२ पहाड़ियोंके मतवाले, ७२३ बौद्ध, ३७१ कृस्तान, २७ जैन और १८ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें ७२२०० कचारी, ४२०६१ कोच, २४४६० कलिता, १६६०९ जोगी (रेशम बिननेवाले) १५०९० राभा, १३९७० कैवट, ९४१८ डोम, (मछुहा), ८९२९ ब्राह्मण, ८७९८ गनक और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं; क्षत्री केवल ७२४ थे। जिलेमें सबसे बड़ा कसबा तेजपुर, सबडिवीजन मङ्गलदाई और तिजारती बस्ती विश्वनाथ, हवाला मोहनपुर, नलबाड़ी और करुआगाँव हैं।

नवगाँव।

तेजपुरके दक्षिण ब्रह्मपुत्रके दूसरे पार अर्थात् उससे दक्षिण और कलंगा नदीके पूर्व किनारेपर आसाम प्रदेशमें जिलेका सदर स्थान नवगाँव एक छोटा कसबा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उसमें ४२४८ मनुष्य थे। नवगाँवमें जिलेकी सरकारी इमारतें और आफिस बने हुए हैं और लकड़ी, बाँस तथा फूससे बनी हुई झोपड़ियोंमें वहाँके लोग रहतेहैं।

नवगाँव जिला–इसके उत्तर ब्रह्मपुत्र नदी बाद दरङ्ग जिला; पूर्व शिवसागर जिला और नागा पहाड़ियाँ; दक्षिण खासिया और जयन्ती पहाड़ियाँ जिला और पश्चिम कामरूप जिला है। वह जिला ३४१७ वर्ग मील क्षेत्रफलमें फैला है। जिलेके पूर्वोत्तरके कोनेमें मिकिर पहाड़ी और पूर्व भागमें ब्रह्मपुत्रके दक्षिण किनारेसे कलङ्गा नदीके उत्तर किनारे तक कामाख्या पहाड़ी फैली है। उसके एक शिखरपर दुर्गादेवीका मन्दिर है। पहाड़ीके ढालुओंपर चायकी खेती होती है। कामाक्षाका प्रसिद्ध मन्दिर कामरूप जिलेमें है।

जङ्गलोंमें लाही मधुमक्खियोंका मोम, गोंद इत्यादि वस्तु होती हैं। जङ्गली जन्तु प्रतिसाल बहुतेरे लोगोंको मार डालते हैं। उनको मारनेवाले मनुष्योंको गवर्नमेण्टसे नियमित इनाम मिलता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ३१०५७९ मनुष्य थे, अर्थात २४३७१० हिन्दू, ४८४७८ पहाड़ी जङ्गली कोम, अर्थात् मिकिर, गारो और कूकी १२०७४ मुसलमान, २५४ कृस्तान, ३२ जैन और ३१ ब्रह्मो। जातियोंके खानेमें ४७४९७ मिकिर, ४२८७८ कोच, ४१६९५ लालुन, २५५५३ डोम, २३१४४ कलिता, १७८९६ केवट, १६६०९ काटनी, १२५५५ कचारी और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। इनमें ७५०२ ब्राह्मण, २३१२ कायस्थ और केवल ७७ राजपूत थे। नवगाँव जिलेके जल वायु अत्यन्त रोगवर्द्धक हैं।

शिवसागर।

नवगाँवसे १०० मीलसे आधिक पूर्वोत्तर और डिब्रुगढ़से तीस चालिस मील दक्षिण पश्चिम ब्रह्मपुत्र नदीके दक्षिण किनारेसे ९ मील दूर एक छोटी नदीके किनारेपर (२६ अंश ५९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ३८ कला, १० विकला, पूर्व देशान्तरमें) आसाम प्रदेशके जिलेका सदर स्थान शिवसागर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शिवसागरमें ५८६८ मनुष्य थे; अर्थात्४४२५ हिन्दू, १३५१ मुसलमान और ९२ कृस्तान।

शिवसागर अहम वंशके राजाओंकी राजधानियोंमेंसे एक था। अब तक उस समयका एक उत्तम तालाब ११४ एकड़ क्षेत्रफलमें फैला हुआ है। उसके किनारेपर बहुतेरे पुराने मन्दिर विद्यमान हैं। नदीके दोनों किनारोंके बाजारोंमें लोहेसे छाये हुए बहुतेरे मकान और कई एक अच्छी दुकानें बनी हैं प्रति दिन हाट लगता है। मारवाड़ी सौदागर रहते हैं। चावल और खास करके चाय शिवसागरसे अन्य स्थानोंमें भेजे जाते हैं। तालाबके बाँधके आस पास सरकारी इमारतें और यूरोपियन लोगोंकी कोठियाँ बनी हैं।

शिवसागर जिला—जिलेका क्षेत्रफल २८५५ वर्ग मील है। इसके उत्तर और पूर्व लक्खिमपुर जिला; दक्षिण नागा पहाड़ियाँ जिला और पश्चिम नवगाँव जिला है। जिलेमें जङ्गल घास और, ब्रह्मपुत्रकी सहायक बहुत नदियाँ हैं। जिलेके भीतर कोई पहाड़ी नहीं है। उत्तरकी सीमापर ब्रह्मपुत्र नदी बहती है। खेती योग्य अच्छी भूमि है। जंगलोंमें हाथी गैंड़े, बाघ, भालू, भैंसे इत्यादि सब प्रकारके बनजन्तु मिलते हैं। सन् १८८२—१८८३ में जङ्गली हाथियोंको बझानेवाले लोगोंने सरकारको ८००० रुपया दिया था।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ३७०२७४ मनुष्य थे, अर्थात् २१५२२४ आदि निवासी, जो अपने मतपर अब तक चलते हैं और जो अब हिन्दूके मतपर चलते हैं, १३९०७५ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, ३०७ यूरोपियन और यूरेशियन, और ३ चीनी। इनमें मजहबके अनुसार ३३९६६२ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, १३८२९ आदिनिवासी जो अपने पुराने मतपर चलते हैं, ८०४ कृस्तान, २७६ बौद्ध, ३७ जैन और 1 ब्रह्मो थे। जातियोंके खानेमें ११७८७२ अहम, ३३८१२ कलिता, ३९९५२ चटिया, २४२४८ कोच, २२८६७ डोम, १८४९२ भूमिज, १९७५३ कचारी, १७७३६ केवट, ११६०७ ब्राह्मण, १०८३६ मीरी, ५४०४ कतानी और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं; जिनमें ३१०९ कायस्थ, और १४२८ राजपूत थे। इस जिलेके जोरहाट और गोलाघाटमें सौदागर लोग रहते हैं। नजीरामें आसामके चाय कम्पनीका सदर स्थान है। जिलेमें मारवाड़ी खास करके सौदागरी करते हैं।

इतिहास—शिवसागर जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार होनेसे पहिले अहम वंशके राजाओंने ४०० वर्ष तक राज्य किया था। उनसे पहिले चटिया लोगोंका अधिकारः था। अहम लोगोंकी पहली राजधानी शिवसागर कसवेसे थोड़ा दक्षिण-पूर्व गढ़वालमें थी। वहाँ अब तक दूर तक खण्डहर देखनेमें आते हैं। राजमहल लगभग २ मील लम्बी; ईंटोंकी दीवारसे घेरा हुआ था। वहाँ सम्पूर्ण स्थानमें जङ्गल लग गया है। अहम लोगोंकी दूसरी राजधानी शिवसागर कसवेके दक्षिण रङ्गपुर था, जिसको सन् १६९८ ईस्वीमें राजा रुद्रसिंहने नियत किया था। उसके महलका खण्डहर और उसका वनवाया हुआ 'जयसागर' में एक मन्दिर घने जंगलमें अब तक विद्यमान है। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा रुद्रसिंहके बड़े पुत्र शिवसिंहने लगभग सन् १७२२ में ११४ एकड़में शिवसागरके बड़े तालावको वनवाया। सन् १७८४ तक रङ्गपुर अहम लोगोंकी राजधानी थी। उस वंशके राजा गौरीनाथ अपनी प्रजाओंके वागी होनेपर डिसाई नदीके किनारे पर जोराहाटमें भाग गया। वहाँ वह सन् १७९३में मरगया।

अङ्गरेजी सरकाने इस देशके हुकूमत करनेवाला पुरन्दरसिंहको नियत खिराजपर शिवसागर देदिया था, किन्तु सन् १८३८ में उसको राज्यच्युत करके शिवसागरको अपने अधिकारमें कर लिया।

कोहिमा।

आसाम प्रदेशमें नागा पहाड़ी जिलेका प्रधान स्थान कोहिमा एक गाँव और फौजी छावनी है। वहाँ जिलेके सिविल आफिस वने हैं। कोहिमासे १८ मील दूर माओ है। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८८३ ई० में माओसे मनीपुर तक घोड़े चलनेके योग्य सड़क बनवा दी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोहिमा और फौजी छावनीमें १३८० मनुष्य थे, अर्थात् १३५१ पुरुष और २९ स्त्रियां। इनमें १२५९ हिन्दू, ९४ मुसलमान, २५ क्रस्तान और २ दूसरे थे।

नागा पहाड़ी जिला—यह जिला नौगाँव जिला और मनीपुरके राज्यके मध्यमें है। इसके उत्तर शिवसागर जिला; पश्चिम नवगाँव जिला और दक्षिण मनीपुरका राज्य है। इसका क्षेत्रफल लगभग ६४०० वर्गमील है। जिलेका सदर स्थान कोहिमा स्टेशन है। जिलेमें सर्वत्र जङ्गल, पर्वत और नदियां हैं। सर्वत्र मनुष्य नहीं जासकते। घाटियाँ और पहाड़ियाँ सघन वनोंसे ढपी हुई हैं। स्थान स्थानपर छोटी गहड़ी झील और दलदल हैं। मधुमक्खीका मोम, अनेक भाँतिकी दारचीनी और रंग जङ्गली पैदावार है। कोयला, पत्थरभाठ और स्लेट खानोंसे निकाले जाते हैं। वहुतेरे स्थानोंमें गरम झरने हैं। वनोंमें हाथी, गैंडे, बाघ, तेंदुये इत्यादि वहुत होते हैं। ढाँग, धनेश्वरी और यमुना नामक नदी इस जिलेमें प्रधान नदियाँ हैं। इनमें बरसातमें छोटी नाव चलती हैं।

सन् १८८१ में मोटे तौरके अनुमानसे जिलेमें ११०३०० मनुष्य थे; अर्थात् ९४००० अनेक भाँतिके नागा, ८८०० मिकिर, ३५०० कचारी, २६०० कूकी, १००० आसामी और ४०० एटानिया। इन लोगोंका खास हथियार वर्छी, दाव और ढाल है।

इतिहास—सन् १८६७ ई० में नागा पहाड़ी एक डिपुटी कमिश्नरके आधीन एक जिला बनाया गया। अबतक उस देशकी पैमाइश ठीक तौरसे नहीं हुई है। उसमें प्रायः

सम्पूर्ण आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी जातियाँ बसती हैं, जिनको नागा कहते हैं। वे आसामके अहम राजाओंके साथ मेलसे रहते थे; किन्तु देशपर अङ्गरेजी अधिकार होनेपर उत्तर और नौगाँव और शिवसागर जिलोंमें और दक्षिण-पश्चिम कचारमें लूट पाट करने लगे। सन् १८३२ और १८५१ के बीचमें उनको डरवानेके लिये हथियार बन्द अङ्गरेजी सेनाओंने १० बारसे अधिक उनके देशी पहाड़ियोंमें आक्रमण किये। नागा लोग अगम स्थानोंमें रहते हैं। १२ वें आक्रमणके पीछे सन् १८८१ की फरवरीमें भारत गवर्नमेन्टने निश्चय किया कि कोहिमाका अङ्गरेजी अधिकार कायम रहे; एक अङ्गरेजी रेजीमेंट सर्वदा पहाड़ियोंमें रहा करे और जिलेका प्रवन्ध अङ्गरेजी राज्यके तौर पर किया जावे, उसके बाद ऐसाही सब प्रवन्ध हो गया।

डिब्रू गढ़।

शिवसागरसे ४० मीलसे अधिक पूर्वोत्तर (२७ अंश, २८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ५७ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) ब्रह्मपुत्र और डिब्रू नदीके संगमसे ४ मील दूर डिब्रू नदीके किनारेपर आसाम प्रदेशमें लक्खिमपुर जिलेका प्रधान कसबा और सदर स्थान डिब्रूगढ़ है। तेजपुरसे डिब्रूगढ़ तक मार्गके पास चायके बाग फैले हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय डिब्रूगढ़ और छावनीमें ९८७६ मनुष्य थे; अर्थात् ७१०१ हिन्दू, २३९५ मुसलमान, २३८ एनिमिष्टिक, ९० कृस्तान, ४७ जैन, ४ बौद्ध और १ दूसरे।

छावनीमें लगभग ५०० लड़ाके सिपाही रहते हैं। आसपास हजारहां एकड़ भूमिपर चायकी खेती होती है और कई एक झरने और अनेक कोयलेकी खान हैं। चाय डिब्रूगढ़से दूसरे स्थानोंमें भेजे जाते हैं।

लक्खिमपुर जिला—यह जिला आसाम प्रदेशके पूर्वमें ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों ओर लगभग ११५०० वर्गमीलमें फैला हुआ है। जिलेके अधिक विभागोंमें पहाड़ी जातियोंके लोग रहते हैं, जो अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके साधारण अधिकारको स्वीकार नहीं करते। जिलेका बन्दोबस्ती हिस्सा हालके पैमाइशसे ३७२३ वर्गमील हुआ है। जिलेके उत्तर डफला, मीरी, अवर, और मिशमी पहाड़ियाँ; पूर्व मिशमी और सिगाफो पहाड़ियाँ; दक्षिण नागा पहाड़ियाँ इत्यादि और पश्चिम शिवसागर और दरंग जिला है। उत्तर और पूर्वकी सीमा निश्चय नहीं हुई है। ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक अनेक छोटी नदियाँ जिलेमें बहती हैं। जिलेके सब भागों में विना जोती हुई चरागाहकी भूमि फैली हुई है। जङ्गली पैदावारोंमें प्रधान रेशम, मधुमक्खीका मोम, रंग और भाँति भाँतिकी जड़ी बूटी हैं। इनको पहाड़ी लोग हाटोंमें बेचते हैं। जङ्गलोंमें हाथी, गेंडे, भैंसे, बनैली गाय, भालू इत्यादि सब भाँतिके बनैले जन्तु रहते हैं। गवर्नमेंटको हाथी बझाने वालोंसे प्रति वर्ष २०००० रुपयेसे ३०००० रुपये तक मिलता है। इसके अलावे गवर्नमेंट हाथी पकडनेवालोंसे प्रति हाथी १००) लेती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हालकी पैमाइश की हुई ३७२३ वर्ग मील बन्दोबस्ती हिस्सेमें १७९८९३ मनुष्य थे। उनमें विना पैमाइश की हुई भूमिके कुछ पहाड़ी

कौम भी शामिल थे। इनमें १५२१९० हिन्दू, १६३८२ पहाड़ी कौम, जो अबतक अपने मतपर हैं; ५८२४ मुसलमान, ४६५७ बौद्ध; ८३७ कृस्तान, और ३ जैन थे। जातियोंके खानेमें ५१५८८ अहम, १८६९९ कचारी, १६७०८ चोटिआं, ११७६५ डोम, ११६८७ मीरी, ७७४२ कलिता, ४५९८ कोच, २८८३ कामटी, शेषमें दूसरी जातियाँ थीं, जिनमें २०७० कायस्थ, १७९१ राजपूत और १३६३ ब्राह्मण थे। जिलेमें लक्खिमपुर और सदियामें देशी कामके लिये कपडे तैयार होते हैं और थोड़ी तिजारत होती है।

परशुरामकुण्ड।

भारतवर्षके पूर्वोत्तरकी सीमापर जहाँ ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय पर्वतसे निकलकर आसामके मैदानमें प्रवेश करती है, परशुरामकुण्ड है। जो पूर्वकालमें ब्रह्मकुण्ड करके प्रसिद्ध था। कुण्डके चारों ओर पहाड़ियाँ हैं। ब्रह्मपुत्रकी खास धारा पूर्वोत्तरसे कुण्डके समीप आई है। ऐसा प्रसिद्ध है कि ब्रह्मपुत्र नदी पर्वतसे आकर इस कुण्डमें गुप्त हो गई और फिर आसामके मैदानमें प्रकट हुई, इसी कारणसे अर्थात् ब्रह्मकुण्डमें गुप्त होकर फिर प्रकट होनेसे इस नदीका नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा। उस कुण्डके पास ब्रह्मपुत्र नदी देवपाणिक नामसे प्रसिद्ध है और वहाँसे कुछ दूर नीचे आकर ब्रह्मपुत्रके नामसे विख्यात हुई है। कुण्डके निकट कोई गृह नहीं है; दूरकी पहाड़ी पर एक पहाड़ी वस्ती है। कुण्डके समीप गुफाके भितर १ झरना और वाहर २ झरने हैं। कुण्डका जल वड़ा ठण्ढा है। यात्रीगण विशेष करके साधु संन्यासी दूर दूरसे आते हैं और कुण्डमें गोता मारकर झरनेके जलसे स्नान करते हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णुके अवतार परशुरामजीने २१ बार क्षत्रियोंका विनाश करके अन्तमें ब्रह्मकुण्ड पर परशुको त्याग दिया और वहाँ तपस्या करके वह पापसे विमुक्त हुए तभीसे उस कुण्डका नाम परशुराम कुण्ड हुआ।

ग्यारहवां अध्याय।

(सूबे बङ्गालमें) बुगड़ा, रामपुरबौलिया, कुष्टिया, ग्वालंडो, पवना, सिराजगञ्ज, फरीदपुर, नोआखाली, सीताकुण्ड, वलवाकुण्ड, चटगाँव, कोमिला, टिपरा, नारायणगञ्ज, ढाका और मैमनसिंह।

बुगड़ा।

पार्वतीपुर जंक्शनसे ४९ मील दक्षिण नवावगञ्ज रेलवेका स्टेशन है। स्टेशनसे ३० मीलसे अधिक पूर्व सूबे वङ्गालके राजशाही विभागमें वुगड़ा नदीके पश्चिम किनारे पर जिलेका सदर स्थान वुगड़ा एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वुगडामें ६१७९ मनुष्य थे; अर्थात् ३४६३ मुसलमान; २६६७ हिन्दू, और ४९ दूसरे। कसवेमें देखने योग्य कोई इमारत या दूसरी वस्तु नहीं है, कालीतला और माळतोनगर दो हाट हैं।

बुगड़ा जिला—यह जिला ब्रह्मपुत्र नदीके पश्चिम १४९८ वर्ग मील क्षेत्रफलमें फैला है। जिलेमें बहुतेरी छोटी नदियाँ बहती हैं। जङ्गली पैदावारोंमें अनेक भाँतिके रंग और मधुमक्खियोंका मोम है। जङ्गलोंमें बाघ, भैंसे, सूअर और तेंदुए रहते हैं। जिलेमें गाजी-मियाँके नामसे मुसलमानोंके बहुतेरे तिहवार और मेले होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेमें ७३४३५८ मनुष्य थे; अर्थात् ५९३४११ मुसलमान, १४०८६० हिन्दू, ५४ जैन, ३७ क्रस्तान, २ बौद्ध और ४ दूसरे। जातियोंके खानेमें ११९५५ कोच, पाली और राजवंशी १५५६६ कैवर्त, ११३१४ वैष्णव इत्यादि, ९८९२ चण्डाल और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं; जिनमें ४६१४ ब्राह्मण, ३७४९ कायस्थ और केवल ३७२ राजपूत थे।

इतिहास—बुगड़ाका कोई खास इतिहास नहीं है। सन् १८२१में राजशाही दीना-जपुर और रंगपुरसे निकालकर यह एक जिला बनाया गया। सन् १८६९ में यह स्वाधीन जिला बना और जिलेमें कलक्टर और मजिष्ट्रेट नियत हुए।

रामपुरबौलिया।

नव्वाबगंजसे ३९ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे ८८ मील) दक्षिण नाटउरका रेलवे स्टेशन है। नाटउर राजशाही जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान एक कसबा है; जिसमें सन् १८८१ में ९०९४ मनुष्य थे, अर्थात् ५३६८ मुसलमान, ३७२१ हिन्दू और ५ दूसरे। कसबेके मध्यमें नाटउरके राजाका 'जो ब्राह्मण हैं' सुन्दर मकान बना हुआ है।

नाटउरके रेलवे स्टेशनसे ३० मील पश्चिम (२४ अंश, २२ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३८ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) पद्मा नदीके बायें सूबे बंगालके राजशाही विभागमें राजशाही जिलेका सदर स्थान और प्रधान कसबा रामपुरबौलिया है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रामपुरबौलियामें २१४०७ मनुष्य थे; अर्थात् ११३५५ हिन्दू, १००४९ मुसलमान, ७८ क्रस्तान, १३ जैन, १० बौद्ध और २ दूसरे।

कसबेकी उन्नति हालमें हुई है। इसमें तिजारत बहुत होती है। पद्माकी बाढ़ कसबेमें घुसजाती है। रामपुरबौलियामें जिलेके प्रधान हाकिमोंके अतिरिक्त कमिश्नर साहब भी रहते हैं।

कसबेसे १५ मील पूर्व पोठिया गाँवमें एक बंगाली ब्राह्मण राजा है। वहाँ महाराज जगतनारायण रायकी स्त्री महारानी भुवनमयीका बनवाया हुआ भुवनेश्वरनाथ महादेवका विशाल मन्दिर देखनेमें आता है।

राजशाही जिला—यह जिला राजशाही विभागके दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें २३६१ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैलता है। इसके उत्तर दीनाजपुर और बुगड़ा जिला; पूर्व बुगड़ा और पबना जिला; दक्षिण गङ्गा अर्थात् पद्मा नदी और नदिया जिला; और पश्चिम मालदह और मुर्शिदाबाद जिला है। सदर स्थान रामपुरबौलिया है। जिलेमें जगह जगह ऊँचे स्थानोंपर वृक्षोंके कुञ्जोंके बीचमें बस्तियाँ देखनेमें आती हैं। सर्वत्र पोस्तेके खेत फैले हुए हैं। जङ्गल विशेष नहीं है। जिलेके बहुतेरे लोग कीड़ोंको पालकर रेशम तैयार करते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेमें १३३८६३८ मनुष्य थे; अर्थात् १०४९७०० मुसलमान, २८८७४९ हिन्दू, १२१ क्रस्तान, ५५ बौद्ध, ४ जैन, २ यहूदी और ७

दूसरे। जातियोंके खानेमें ६३१३४ कैवर्त, २९७९२ चण्डाल, १७०८१ वैष्णव, १६५२३ ब्राह्मण, १३७७४ जलिया, ९२७३ ग्वाला और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। राजपूत केवल १२३३ थे। जिलेमें रामपुरबौलिया, नाटउर और पोठिया यही ३ में ५००० से अधिक मनुष्य थे।

इतिहास—नाटउरके राजवंशका पहला राजा बड़ा धनी जिमींदार था। उसकी मिलकियत राजशाही करके प्रसिद्ध थी। वही राजशाही नाम अङ्गरेजी जिलेका रक्खा गया। प्रथम इस जिलेका सदर स्थान नाटउर था; किन्तु वहाँके जलवायु रोगवर्धक होनेके कारण उसको छोड़कर रामपुरबौलिया सदर स्थान बनाया गया।

कुष्टिया।

नाटउरसे ५३ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे १४१ मील) दक्षिण पोड़ादह जंक्शन और पोड़ादहसे १० मील पूर्व कुष्टियाका रेलवे स्टेशन है। पहले सांराघाटसे दामुकदिया घाट तक पद्मा नदीमें १२ मील आगबोटमें जाना होता है। सूबे बङ्गालके नदिया जिलेमें पद्मा-गङ्गाके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर सबडिवीजनका सदर स्थान कुष्टिया एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुष्टियामें ११११९९ मनुष्य थे; अर्थात् ६०४९ मुसलमान, ५१३२ हिन्दू और १८ कृस्तान।

कुष्टियामें सबडिवीजनकी कचहरियोंके मकान हैं और साधारण तिजारती होती है। वहाँ कोई देखने योग्य प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

पवना।

कुष्टियाके रेलवे स्टेशनसे दस पन्द्रह मील पूर्वोत्तर सूबे बंगालके राजशाही विभागमें इच्छामती नदीके किनारोंपर जिलेका सदर स्थान पवना एक कसवा है। कुष्टियासे पवना आगबोट जाता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पवना कसबेमें १६४८६ मनुष्य थे, अर्थात् ९०१४ मुसलमान, ७४४४ हिन्दू, २७ कृस्तान और १ बौद्ध।

कसवा इच्छामतीके दोनों किनारोंपर बसा है। इसमें ५ बड़े बाजार, कई एक पक्की सड़कें, अस्पताल, स्कूल, नीलकी कोठी और जिलेकी कचहरियाँ हैं।

पवना जिला—यह राजशाही विभागके दक्षिण-पूर्वके कोनेमें १८४७ वर्गमीलमें फैला है। इसके पूर्व ब्रह्मपुत्र नदीकी प्रधान धारा यमुना; और दक्षिण पश्चिम गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा बहती है। जिलेका सदर स्थान पवना कसवा है; किन्तु ज़िलेमें सबसे बड़ा कसवा और तिजारती स्थान सिराजगञ्ज है। जिलेमें अनगिनत नदियाँ बहती हैं इस लिये बरसातमें प्रत्येक गाँवमें नाव जा सकती है। सम्पूर्ण जिलेमें धानकी खेती होती है। बस्तियोंके आस पास बाँस और वृक्षोंके झुण्ड हैं। जिलेमें पद्माकी प्रधान शाखा इच्छामती नदी बहती है; बहुतेरी झील भी हैं और जगह जगह बाघ, तेंदुये और बनैले सूअर मिलते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पवना जिलेमें १३११७२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९४९९१८ मुसलमान, ३६१४३९ हिन्दू, २२६ जैन, १४४ कृस्तान और १ बौद्ध। जातियोंके खानेमें ५३३१९ चण्डाल, ३९३७९ जालिया, ३४६०२ कायस्थ, ३६०४९ सुन्डी,

२३३०६ कैवरत, २०९७० ब्राह्मण और केवल ४५५ राजपूत थे; शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेका कसवा सिराजगञ्जमें २३२६७ और पवनामें १६४८६ मनुष्य थे।

इतिहास—प्रथम यह जिला राजशाही जिलेका एक बड़ा भाग था। सन् १८३२ में यहाँ एक जण्ट मजिष्टर और डिपुटी कलक्टर नियत हुए। सन् १८६९ में यहाँके अफसरको मजिष्टर और कलक्टरका पूरा अधिकार मिल गया। सन् १८७३ में एक बलवा हुआ था, जिसको पुलिसने दबाया। उस समय लगभग ३०० आदमी पकड़े गये, जिनमेंसे बहुतेरोंको सजा दी गई।

सिराजगञ्ज।

पवनासे लगभग ५० मील सीधा पूर्वोत्तर (२४ अंश, २६ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ४७ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमें) ब्रह्मपुत्र नदीकी प्रधान धारा यमुनाके निकट सूबे बङ्गालके पवना जिलेमें प्रधान कसवा और देशमें प्रसिद्ध दरियाई बाजार सिराजगञ्ज है। पवनासे सिराजगञ्ज होकर सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिराजगञ्जमें २३२६७ मनुष्य थे; अर्थात् १२३३१ मुसलमान, १०६९२ हिन्दू, २११ जैन और ३३ कृस्तान।

सिराजगञ्ज कसबेमें १ बाजार और १२ पतली सड़कें हैं। नदीके किनारेपर नावोंसे उतरनेके लिये ४ घाट बने हैं। बरसातमें यमुनामें बड़ी बांढ़ होती है। प्रति वर्ष उस नदीका स्थान कुछ बदल जाता है, इस कारणसे उसके किनारेपर गोदाम या वृक्ष नहीं रहते हैं।

नदीमें नावोंका आमदरफत बहुत रहता है। बड़ी नावें बीच धारेमें लङ्गड़ोंपर रहती हैं और छोटी नावें नदीके स्वाभाविक झुकावोंमें ठहरती हैं। तिजारती व्यापारी और दलाल लोग हलकी डोंगियोंमें इधर उधर फिरते हैं। झुण्डके झुण्ड कुली माल उतारने और चढ़ानेमें लगे रहते हैं। बहुत लोग प्रतिदिन अपने मकानोंसे नदीके किनारेपर जाते हैं।

सिराजगञ्जमें कई एक यूरोपियन कोठियाँ है। वहाँ देशी सौदागरोंमें प्रधान मारवाड़ी हैं, जिनको वहाँके लोग कैंआ कहते हैं। उनके अतिरिक्त बङ्गाली सौदागरभी बहुत हैं। व्यापारी लोग चारोंओरके देशके खेतोंके पैदावार छोटे छोटे व्यापारियोंसे सिराजगञ्जमें खरीदकर कलकत्ते भेजते हैं। सिराजगञ्जके व्यापारकी प्रधान वस्तु नमक, तेल, तेलके बीज जूट, पटशन, चावल, गल्ले, तम्बाकू चीनी और खुर्दा यूरोपियन चीजें हैं। अधिक व्यापार कलकत्तेके साथ होता है। रंगपुर, मैमनसिंह, कूचविहार, बुगड़ा, ग्वालपाडा, जल्पाईगोड़ी इत्यादिके साथ भी सिराजगञ्जकी सौदागरी होती है। सन् १८७३ के ३१ अगस्तको सिराजगञ्जमें नावोंकी गिनती हुई; उस दिन वहाँ १४३६ नावोंमें १६२००० मन माल लदा था। जिसमेंसे तीन चौथाई जूट था और सन् १८७४ के ४ थी सितम्बरकी गिनतीके समय ११८५ नावोंमें १९५००० मन माल था। सन् १८७६–७७ में उजान और भाटी दोनों ओरकी नावें ४९६४४ गिनी गई थीं।

इतिहास—उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें सिराजअली नामक एक मुसलमान जमीन्दारने कसबेमें एक बाजार बनाया; उसीके नामसे उस कसबेका नाम सिराजगञ्ज पड़ गया। उस समय कसबा यमुना नदीके किनारे पर था। सन् १८४८

की भारी वाढ़से जब सिराजगञ्ज बह गया तब वहाँके सौदागर लोग उस जगहसे लगभग ५ मील पीछे नदीके नए किनारे पर जा बसे। पीछे नदी अपने पुराने स्थान पर चली गई; किन्तु सौदागर लोग वहाँ ही रह गये। सन् १८७७ ई० में सिराजगञ्जमें बङ्गाल बंककी एक एजेंसी और ६ यूरोपियन कोठियाँ थीं।

ग्वालण्डो।

पोड़ादह जंक्शनसे ४८ मील पूर्व (पार्वतीपुरसे १८९ मील और कलकत्तेसे १५१ मील) ग्वालण्डोका रेलवे स्टेशन है। सूबे वङ्गालके ढाके विभागके फरीदपुर जिलेमें गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा और ब्रह्मपुत्र नदीके सङ्गमके निकट ग्वालण्डो एक कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ग्वालण्डोमें ८६५२ मनुष्य थे अर्थात् ४५०८ हिन्दू, ४१३० मुसलमान और १४ दूसरे।

ग्वालण्डोमें सर्वदा रहनेवाले मकान नहीं हैं; क्योंकि नदीके निकटकी भूमि बदलती रहती है। बरसातमें नदीकी तेजी बेहद वढ़जाती है। प्रति वर्ष ज्येष्ठ मासमें वहाँके निवासी गङ्गाके किनारेको छोड़कर ३ कोस दूर जा बसते हैं। रेलवेका स्टेशन भी उतनीही दूर चला जाता है। ग्वालण्डोमें बहुतेरी नाव रहती हैं।

लगभग २५ वर्ष पहले ग्वालण्डो मछली मारने वालोंका एक छोटा गाँव था जो अब बहुत प्रसिद्ध हुआ है। सन् १८७० में कुष्टियासे ग्वालण्डो तक रेलवे वढ़ाई गई। कसबेमें प्रति दिन वाजार लगता है, एक कचहरीका मकान है। और बहुतेरे वङ्गाली और मुसलमान खास करके मारवाड़ी सौदागर रहते हैं। तम्बाकू, नमक अनेक प्रकारके गल्ले और तेलके बीजकी तिजारत होती है। वहाँसे बहुत मछलियाँ कलकत्ते भेजी जाती हैं।

ग्वालण्डोसे आगबोट प्रतिदिन नारायणगञ्जको और तीन चार दिनपर आसामके लिये धोवरीको जाते हैं।

फरीदपुर।

ग्वालण्डोसे लगभग २९ मील दक्षिण-पूर्व छोटी पद्माके दहिने अर्थात् दक्षिण (२३ अंश, ३६ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ५३ कला, ११ विकला पूर्व देशान्तरमें) सूबे बङ्गालके ढाका विभागमें जिलेका सिविल स्टेशन फरीदपुर एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फरीदपुरमें १०७७५ मनुष्य थे; अर्थात् ५७११ हिन्दू, ५००८ मुसलमान, ५१ क्रस्तान और ४ बौद्ध।

कसबेके दक्षिण ढोलसमुद्र नामक मीठा पानीका झील और कसबेमें एक गिरजा है। फरीदपुरमें प्रति वर्षके माघमें खेतीकी नुमाइश होती है और सन् १८८३ से ब्रह्मोसमाजकी एक सभा नियत हुई है।

फरीदपुर जिला—इसके उत्तर और पूर्व गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा नदी; दक्षिण ननवा और भगनी नदी और दलदलोंकी लाइनें और पश्चिम कई छोटी नदियाँ हैं। जिलेका क्षेत्रफल २२६७ वर्ग मील है। जिलेकी वस्तियाँ खास करके नदियोंके किनारोंपर मट्टीकी झोपड़ियोंसे बनी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय फरीदपुर जिलेमें १६३१७३४ मनुष्य थे; अर्थात् ९७४९८३ मुसलमान, ६५३९९२ हिन्दू, २७४१ कृस्तान, १३ बौद्ध और ५ ब्रह्मो। जातियोंके खानेमें २४४९२३ चण्डाल, ८४१९३ कायस्थ, ४६९०५ब्राह्मण, ३४४९१ सूण्डी, ३८६०७ जलिया, ३४०१० कैबरत और शेषमें दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेके कसबे मदारीपुरमें १३७७२,, फरीदपुरमें १०७७४ और ग्वालण्डो तथा कुतबपुरमें दश हजारसे कम मनुष्य थे।

नोआखाली।

ग्वालण्डोके रेलवे स्टेशनसे ७९ मील दक्षिण-पूर्व ब्रह्मपुत्र नदीमें आगबोट द्वारा चान्दपुर जाना होता है। चान्दपुरसे आसाम बङ्गाल रेलवे गई है। चान्दपुरसे ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्समसे २५ मील दक्षिण-पूर्व फेनीका रेलवे स्टेशन है। फेनीसे लगभग २५ मील दूर (२२ अंश, ४८ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ८ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें) सूबे बङ्गालके चटगाँव विभागमें नोआखाली खालके दहिने किनारे पर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा नोआखाली है, जिसको देशी लोग सुधाराम कहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नोआखाली कसबेमें ५१२४ मनुष्य थे; अर्थात् २५६० हिन्दू, २५२८ मुसलमान और ३६ दूसरे।

कसबेमें अनेक मसजिदें, सरकारी कचहरियां और तालाब बने हुए हैं। एक समय यह कसवा समुद्रके किनारे पर था; किन्तु अब समुद्र वहाँसे लगभग १० मील दूर है।

वहाँके जमीन्दार सुधाराम मजुमदारने वहाँ एक बड़ा तालाव बनवाया, तबसे नोआखालीको देशी लोग सुधाराम कहते हैं।

नोआखाली जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल १६४१ वर्ग मील है। इसके उत्तर टिपराका देशी राज्य और अङ्गरेजी जिला; पूर्व टिपराका राज्य और चटगाँव जिला; दक्षिण बङ्गालकी खाड़ी और पश्चिम मेगना है। इस जिलेमें ऊँची भूमिपर बस्तियां बनी हैं। वर्षा कालमें बस्तियोंके अतिरिक्त देशमें सर्वत्र जल फैल जाता है। तालाबोंके चारोंओर बाँध बनाये गये हैं। जिलेके पश्चिमोत्तरकी सीमाके समीप समुद्रके जलसे ६०० फीट ऊँची एक पहाड़ीका भाग है। समुद्रके किनारे पर नदियोंसे कई एक टापू बन गये हैं। इस जिलेमें बाघ, तेन्दुये, सूअर, जंगली भैंसे इत्यादि बनैले जन्तु होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नोआखाली जिलेमें ८२०७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ६०८५९२ मुसलमान, २११४७६ हिन्दू, ५८८ कृस्तान, ११४ बौद्ध और २ दूसरे। जातियोंके खानेमें ३७८७९ जोगी, ३७५६५ कायस्थ, १८८४४ चण्डाल, १६१५१ कैबरत, १५१५१ धोबी, १२६७१ नापित, १०९६३ ब्राह्मण, ८६०२ जालिया (अर्थात् मछुहा), ५९८१ सूण्डी थे; शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। जिलेमें कोई कसवा नहीं है। एक या दो बाजारोंके अतिरिक्त इस जिलेमें सिलसिलेसे बसी हुई बस्ती नहीं है। प्रत्येक झोपड़ी वृक्षोंके बीचमें अकेली खड़ी है। केवल नोआखाली जिसको सुधाराम कहते हैं, एक बड़ा गाँव है।

इतिहास—सन् १७५६ ई० में ईष्टइण्डियन कम्पनीने नोआखाली और टिपरामें अपनी कोठियाँ नियत कीं, जिनमेंसे चन्दकी निशानियां अब तक विद्यमान हैं। समुद्रके डाकू इस

देशमें बहुत दिनोंसे लूटपाट करते थे । पीछे उनको सजा देनेके लिये एक ज्वाइंट मजिष्ट्रेट कायम किया गया । इस नये प्रवन्धके होनेसे इस जिलेका नाम नोआखाली पड़गया ।

सीताकुण्ड ।

फैनीके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील (लक्सम जंक्शनसे ५७ मील) दक्षिण-पूर्व सीताकुण्डका रेलवे स्टेशन है । वङ्गालके चटगाँव जिलेमें (२२ अंश, ३७ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४१ कला ४० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे ११५५ फीट ऊपर सीताकुण्ड नामक पवित्र पहाड़ीका सिलसिला है । उसकी सबसे ऊँची चोटीपर पवित्र सीताकुण्ड है, जिसका जल सदा गर्म रहता है । उसके जलके निकट जलती हुई बत्ती लेजानेसे उसकी वाफ वारूतके समान भभक उठती है । हिन्दुस्तानके प्रति विभागोंके वहुतेरे यात्री वहाँ जाते हैं । सीताकुण्डसे लगभग ३ मील उत्तर एक पवित्र झरना है ।

बलवाकुण्ड ।

सीताकुण्डके स्टेशनसे ४ मील दक्षिण वलवाकुण्डका रेलवे स्टेशन है । उसके निकट चटगाँव जिलेमें वलवाकुण्ड एक प्रसिद्ध तीर्थ है । उस स्थानके कुण्डमें पानीके ऊपर ज्वालामुखीकी भाँति सदा आग वलती रहती है । सीताकुण्डके समान वहाँ भी वहुत यात्री जाते हैं ।

चटगांव ।

सीताकुण्डसे २४ मील और लक्सम जंक्शनसे ८१ मील दक्षिण-पूर्व (ग्वालण्डोसे १९१ मील) चटगाँवका रेलवे स्टेशन है । सूवे वङ्गालमें समुद्रके किनारेसे दस वारह मील पूर्व (२२ अंश, २१ कला, ३ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ५२ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें) कर्णफूली नदीके दहिने किनारेपर किस्मत और जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा और वङ्गालमें प्रसिद्ध बन्दरगाह चटगाँव है, जिसको चिटागङ्ग और इसलामावाद भी कहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके चटगाँव म्युनिसिपल्टीके भीतर २४०६९ मनुष्य थे; अर्थात् १४२५४ पुरुष और ९८१५ स्त्रियां । इनमें १६७५३ मुसलमान, ६२७५ हिन्दू, ७४२ क्रस्तान और २९९ वौद्ध थे ।

पहाड़ियोंपर यूरोपियन लोगोंकी वहुतेरी कोठियां बनी हुई हैं । प्रधान सड़कें, जो उत्तरसे दक्षिणको गई हैं, दीवान वाजार और चन्दनपुरा वाजार कहलाती हैं । यूरोपियन और देशी निवासियोंके मकानोंके अतिरिक्त अनेक सरकारी आफिस, गिरजे, डाकवंगले और वड़ी वड़ी मसजिदें ईटोंकी वनी हुई हैं । और कई एक अस्पताल और स्कूल हैं । वहुतेरे कुण्ड और तालाव होनेसे और दूसरे अनेक कारणोंसे चटगाँवका जल वायु वहुतही रोग वर्द्धक है ।

चटगाँव क्रम क्रमसे वढ़कर अब बड़ा तिजारती स्थान हुआ है । वन्दरगाहमें विदेश और हिन्दुस्तानके शहरोंसे वहुत जहाज आते हैं । वन्दरगाहकी सौदागरी वढ़ रही है ।

सन् १८८१-८२ में चटगाँवमें लगभग ७७१ जहाज आये और गवर्नमेन्टको ६०८२० रुपया बन्दरगाहका महसूल मिला। वहाँ खास कर निमक बहुत आता है और वहाँसे धान चाय इत्यादि वस्तु दूसरे देशोंमें भेजी जाती हैं।

चटगाँव जिला—जिलेका क्षेत्रफल २५६७ वर्गमील है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर फेनी नदी है, जो नोआखाली और टिपराके अङ्गरेजी जिले और टिपराके राज्यसे इस जिलेको अलग करती है; पूर्व चटगाँवका पहाड़ी देश और ब्रह्माका आराकान देश; दक्षिण ब्रह्मा और पश्चिम बङ्गालेकी खाड़ी है।

बङ्गालेकी खाड़ी और चटगाँव और आराकानके बीचमें नीची पहाड़ियोंके सिलसिले हैं। कर्णफूली और संगू उस जिलेकी प्रधान नदियाँ हैं। जिलेमें सीताकुण्ड, सातखनिआ इत्यादि पाँच प्रधान पहाड़ी सिलसिले हैं, जिनमेंसे सीताकुण्डके सिलसिलेपर सीताकुण्ड और चन्द्रनाथ नामक पवित्र चोटी (जिलेमें सबसे अधिक) ११५५ फीट ऊँची है। गल्ला, मट्टीका बर्तन, जलावनकी लकड़ी, सूखी मछली और बाँसकी तिजारत नावों द्वारा होती है। समुद्र और नदियोंकी मछलियोंसे आबादीके एक बड़े हिस्सेका निर्वाह होता है। सूखी मछलियाँ खास करके चटगाँवको भेजी जाती हैं। जङ्गलोंमें नरकट, बेंत और बाँस बहुत उत्पन्न होते हैं और हाथी, बाघ, गेंडे, सूअर और तेंदुये बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चटगाँव जिलेमें ११३२३४१ मनुष्य थे; अर्थात् ८०१९८६ मुसलमान, ३७५१७७ हिन्दू, ५४११० बौद्ध, १०५५ क्रस्तान, ८ ब्रह्मा और ५ सिक्ख। जातियोंके खानेमें ७२३७० कायस्थ, २९३३४ शूद्र, २७३५१ योगी, (पटहेरा) २१३५५ ब्राह्मण, १५३८२ नाई, १५३१२ जालिया, ११४४६ धोबी, ८०३० बनियाँ और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं; इनमें केवल १०४० राजपूत थे। जिलेके काक्स बाजार नामक छोटे कसबेमें चायकी खेती होती है।

इतिहास—पूर्व कालमें चटगाँव जिला टिपराके हिन्दु राजाओंके राज्यका एक हिस्सा था। १३ वीं या १४ वीं सदीमें अफगान मुसलमानोंने इस जिलेको जीता। १६ वीं सदीमें जब बङ्गालके राज्यके लिये मोगल और अफगानोंमें विवाद था, तब आराकानके राजाने चटगाँवको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १५८२ में अकबरके मन्त्री टोडर मलने इसके लगानका प्रबन्ध किया। उस समय चटगाँव आराकानका एक देश था, जो सन् १६६६ तक वैसेही रहा। सन् १६६४-६५ में बङ्गालके गवर्नर शाइस्ताखाँने अपनी बड़ी फौज भेजकर आराकानियोंको परास्त करके चटगाँवको बङ्गालमें मिला लिया और चटगाँवका नाम बदलकर इसलामाबाद नाम रक्खा। सन् १७६०में बर्दवान और मिदनीपुर जिलेके साथ चटगाँव जिला अङ्गरेजी अधिकारमें आया।

सन् १८५७ के १८ वीं नवम्बरकी रातमें ३४ वीं देशी पैदलकी दूसरी, तीसरा और चौथी कम्पनियाँ अचानक बागी हो गई। उन्होंने खजाना लूट लिया, जेलखानेसे कैदियोंको छोड़ दिया और एक सिपाहीको मार डाला। जब उन्होंने पहाड़ी टिपराकी राह ली तब अङ्गरेजोंने पीछा करके उनको छितर बितरकर दिया। पहाड़ी टिपराके राजा और पहाड़ी लोगोंने इधर उधर फिरनेवाले बागी सिपाहियोंको पकड़कर अङ्गरेजी अफसरोंके पास भेज दिया।

कोमिला ।

लक्सम जंक्शनसे १५ मील उत्तर (ग्वालण्डोसे १३५ मील) कोमिलाका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके चटगाँव विभागमें गोमती नामक नदीके किनारे पर (२३ अंश, २७ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, १२ कला, १८ विकला पूर्व देशान्तरमें) टिपरा जिलेका सदर स्थान कोमिला एक कसवा है। एक सड़क चटगाँवसे कोमिला होकर ढाका गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोमिलामें १४६८० मनुष्य थे; अर्थात् ८५२० मुसलमान, ६०२३ हिन्दू, ८१ कृस्तान, और ५६ बौद्ध ।

कसवेको बरसातके पानीसे बचानेके लिये एक बाँध बाँधा गया है प्रधान सड़कके बगलोंमें सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं। एक मील घेरेका धर्मसागर नामक तालाव है, जिसको १५ वीं सदीमें टिपराके राजाने बनवाया था। इसके किनारोंपर यूरोपियन अफसरोंकी कोठियां और जिला स्कूल बना है। कोमिलामें मामूली सरकारी कचहरियां और इमारतें; यूरोपियन लोगोंके मकान, एक गिरजा और पोस्ट आफिस ईटोंके बने हुए हैं । इनके सिवा ईंटोंके मकान बहुत कम हैं, क्योंकि टिपराका राजा, जिसकी वह जमींन्दारी है, बहुत भारी भेंट लेकर ईटोंका मकान बनाने देता है। कोमिलासे दाउदकण्डी चटगाँव, कम्पनीगञ्ज, हाजी-गाँव, लक्सम, बीबी बाजार और लालमाईको गाड़ीकी सड़कें गई हैं। सड़कोंके नीचे स्थान स्थानपर पुल बनाये गये हैं।

टिपरा जिला—इसका क्षेत्रफल २४९१ वर्गमील है। इसके उत्तर मैमनसिंह और सिलहट जिला, पूर्व पहाड़ी टिपरा, दक्षिण नोआखाली जिला और पश्चिम मेगना नदी बाद मैमनसिंह, ढाका और बाकरगंज जिले हैं। जिलेका सदर स्थान कोमिला है; किन्तु ब्राह्मण बेरिया सबसे बड़ा कसबा है। जिलेमें केवल लालमाई सिलसिला पहाड़ी देश है। मैदानमें अच्छी तरहसे खेती होती है। खाल और नदियाँ सर्वत्र हैं। प्रायः सम्पूर्ण गाँव ताड, बाँस और केलोंके बागोंमें बसे हैं। इस जिलेमें सीतलपाटीका खर्ह बहुत उपजता है। जङ्गलोंमें बाघ और तेन्दुये होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १५१९३३८ मनुष्य थे; अर्थात् १००७७४० मुसलमान, ५११०२५ हिन्दू, ३७४ बौद्ध और १९९ कृस्तान । जातियोंके खानेमें ८३०२३ चण्डाल, ७९३७३ कायस्थ, ५५८४८ योगीजात, ५०२९० कैवर्त, ३२९९० सूँडी, ३१५०२ ब्राह्मण, २२२५५ नाई और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। राजपूत केवल ११६३ थे। सन् १८९१ में इस जिलेके कसबे ब्राह्मणबेरियामें १८००६ और कोमि-लाम १४६८० मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १७६५ में टिपरा जिला ईस्टइन्डियन कम्पनीके अधिकारमें हुआ। सन् १७७२ में नोआखाली और टिपराके लिये एक कलक्टर नियत हुआ। सन १८२२ में टिपरा एक अलग जिला बनाया गया।

टिपरा राज्य।

टिपराके अङ्गरेजी जिलेसे मिला हुआ पहाड़ी टिपरा एक देशी राज्य है। जिसको त्रिपुरा भी कहते हैं। इसके उत्तर सिलहट जिला; पूर्व लुशाई देश और चटगाँवका पहाड़ी

देश; दक्षिण नोआखाली और चटगाँव जिला और पश्चिम अङ्गरेजी टिपरा जिला और नोआखाली जिला है। राज्यका क्षेत्रफल ४०८६ वर्ग मील है। अगरतालामें जो एक गाँव है, वहाँ टिपराके राजा और अङ्गरेजी पोलिटिकल रहते हैं। पहाड़ियोंके ५ अथवा ६ सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको समानान्तर रेखामें गये हैं। औसत फासिले एक दूसरेसे लगभग १२ मील है। पहाड़ियोंका बड़ा भाग बाँसके जङ्गलसे छिपा है। नीची भूमि पर अनेक भाँतिके वृक्ष और दलदल हैं। जङ्गलोंमें हाथी बहुत मिलते हैं और गेंडे, बाघ, भालू, तेंदुए और अनेक भाँतिके बहुत साँप रहते हैं। राज्यकी प्रधान फसिल धान है। राजाको राज्यसे २५०००० रुपया मालगुजारी आती है, किन्तु अपने राज्य और अङ्गरेजी राज्यकी जमीदारी दोनों मिलकर लगभग ५००००० रुपया मालगुजारी होजाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय टिपरा—राज्यमें ९५६३७ मनुष्य थे; अर्थात् ४९९१५ पहाड़ियोंपर और ४५७२२ मैदानोंमें। इनमेंसे पहाड़ियोंपर ३५२५७ टिपरा लोग, जो तीन प्रकारके होते हैं; ११६८८ रिआंग और हलाम; २७३३ कूकी, २११ चकमा, और २६ खासी और मैदानोंमें;—२६९९१ बङ्गाली मुसलमान, ९७३९ बङ्गाली हिन्दू, ८८१३ मनीपुरी, ११३ बङ्गाली क्रस्तान और ६६ आसामी थे। इस राज्यमें कोई कसबा नहीं है। राजधानी अगरताला मामूली गाँव है।

अगरताला—कोमिलासे ३८ मील उत्तर अगरताला तक सड़क बनी है। टिपरा राज्यमें एक नदीके उत्तर किनारे पर टिपरा राज्यकी राजधानी अगरताला एक गाँव है। जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २१४४ मनुष्य थे। उसमें टिपराके महाराजका एक महल, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना और पुलिस स्टेशन बने हैं। कभी कभी राजा उस महलमें रहते हैं।

पुराना अगरताला—वर्तमान राजधानी अगरतालासे ४ मील पूर्व पुराना अगरताला है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ११८६ मनुष्य थे।

प्रथम टिपराके राजा उस गाँवमें रहते थे; किन्तु सन् १८४४ में नये अगरतालामें चले गये। वहाँ टिपराके राजा और रानीके कई एक स्मारक चिह्न बने हुए हैं। पुराने महलके स्थानपर नई इमारतें बनी हैं। टिपराके राजा सन् १८७५ ई० से साधारण प्रकारसे वहाँ रहते हैं। महलके निकट एक छोटे पवित्र मन्दिरमें सोने, चाँदी और दूसरी धातुओंसे बने हुए १४ सिर हैं। पहाड़ी लोग टिपराके देवता समझ कर उस मन्दिरका बड़ा मान्य करते हैं।

उदयपुर—पुराने उदयपुरसे कई एक मील दूर गोमती नामक नदीके दक्षिण अर्थात् बायें किनारे पर टिपराके राजा उदयमानिक्यकी पुरानी राजधानी पुराना उदयपुर है। उदयमानिक्यने सोलहवीं सदीमें राज्य किया था। टिपराके राजा प्रथम उदयपुरमें रहते थे। अब वह छोटीसी बस्ती है। वहाँ जङ्गल लग गया है। रुई, लकड़ी और बाँसका बाजार लगता है। उदयपुरमें त्रिपुरेश्वरका पुराना मन्दिर है। वह तीर्थस्थान समझा जाता है। सालाना हजारों यात्री वहाँ जाते हैं। उसी मन्दिरके नामसे उस देशका नाम त्रिपुरा पड़ा जिसका अपभ्रंश टिपरा है।

इतिहास—इस राज्यमें उदयपुर एक पुरानी पवित्र वस्ती है। उसके त्रिपुरेश्वरके मन्दिरके नामसे देशका नाम त्रिपुरा पड़ा, जिसका अपभ्रंश टिपरा है। टिपराका राजवंश बहुत पुराना है। इसका इतिहास राजमाला नामक बङ्गला पुस्तकमें और इतिहास लिखनेवाले मुसलमानोंकी कितावमें लिखा हुआ है। टिपराके राजा अपनेको चन्द्रवंशी राजा ययातिके पुत्र द्रुह्युका वंशधर कहते हैं।

लोग कहते हैं कि धर्ममानिक्यके राज्य (सन् १४०७—१४३९ ई०) तक सालाना लगभग १००० मनुष्य वलिदान दिये जाते थे; किन्तु धर्ममानिक्यने आज्ञा दी कि तीन वर्ष पर नर वलिदान दिया जाय। इन्हींकी इच्छासे राजमाला पुस्तकका पहला भाग वना था टिपराका राज्य अनेक वार पश्चिममें सुन्दर वनसे पूर्वमें ब्रह्मातक और उत्तरमें कामरूप पर्यन्त फैला था। सोलहवीं सदीमें राजा शिधन्यने अपने राज्यके चारोंओरके देशोंपर आक्रमण किया। सन् १५१२ में टिपराके जनरलने चटगांवको जीता था और उसको वचानेवाली गौड़की फौजको परास्त किया था। उसी राजाके राज्यमें मुगलोंकी भारी सेना बङ्गालसे आक्रमण करके नाकामयाव लौट गई; किन्तु वादशाह जहाँगीरके राज्यके समय सन् १६२० में मुगलोंने टिपरापर आक्रमण करके उदयपुर राजधानीको लेलिया और राजाको कैदकर दिल्लीमें भेज दिया। वादशाहने खिराज लेनेकी शर्तपर राजाको छोड़ दिया; किन्तु राजाने खिराज देना अस्वीकार किया। सन् १६२५ में जव राजा कल्यानमानिक्य राजसिंहासनपर वैठा तव वादशाहने फिर राजासे खिराज लेनेके लिये टिपरापर आक्रमण किया; किन्तु मुसलमानी सेना परास्त होकर लौट गई। पीछे मुसलमानोंने वारवार आक्रमण करके नीचेकी जमीनोंको अपने अधिकारमें किया। सन् १७६५ में वह भूमि, जो टिपराका अङ्गरेजी राज्य है, अङ्गरेजोंके अधिकारमें आई।

सन् १८०८ से अङ्गरेजी सरकार टिपराके सव राजाओंको राजसिंहासनपर वैठाती है और उनसे नजर लेती है। हिन्दुस्तानके देशी राजाओंसे टिपरा अधिक स्वाधीन है। लोग कहते हैं कि वर्तमान टिपरानरेश महाराज वीरचन्द्रमानिक्यदेव वर्मन ९२ वाँ राजाहै। इनकी अवस्था इस समय लगभग ५० वर्षकी है।

नारायणगञ्ज।

नदीके मार्गसे ग्वालण्डोसे ७९ मील पूर्व-दक्षिण पूर्व कथित चाँदपुर और चाँदपुरसे २५ मील उत्तर (२३ अंश, ३७ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ३२ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमें) लखमिया और धत्रलेश्वरी नदीके सङ्गमके निकट लखमियाके पश्चिम किनारेपर ढाका जिलेमें नारायणगञ्ज एक तिजारती कसवा है। प्रति दिन आगबोट ग्वालण्डोसे नारायणगञ्ज जाता है। नारायणगञ्जसे उत्तर मैमनसिंह तक रेल वनी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नारायणगञ्जमें १७७१५ मनुष्य थे; अर्थात् ९७१७ हिन्दू, ७९०८ मुसलमान, ८९ क्रस्तान और १ दूसरे।

कसबा नदीके किनारे ३ मीलकी लम्बाईमें फैला है। म्युनिसिपल्टीके भीतर मदनगञ्ज है। नारायणगञ्जके आसपास सत्रहवीं सदीके मीर जुल्माके वनवाये हुए कई एक किले और प्रायः सामने कदमरसूल नामक एक मसजिद है। कसवेसे नमक, तम्बाकू, जूट,

कपास इत्यादि दूसरे शहरोंमें भेजे जाते हैं। और जूट, नमक, चावल, चीनी, तम्बाकू, अनेक भाँतिके तेलके बीज इत्यादि सामग्री अन्य स्थानोंसे वहाँ आती हैं। वहाँ जूट दबानेकी कई एक कल हैं।

ढाका।

नारायणगञ्जसे १० मील पश्चिमोत्तर (ग्वालण्डोसे ११४ मील) ढाकाका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालमें बूढीगङ्गाके बायें किनारेपर (२३ अंश, ४३ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २६ कला, २५ विकला पूर्व देशान्तरमें) किस्मत और जिलेका सदरस्थान ढाका एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ढाकेमें ८२३२१ मनुष्य थे; अर्थात् ४५१९९ पुरुष और ३७१२२ स्त्रियाँ। इनमें ४१५६६ हिन्दू, ४०१८३ मुसलमान, ४६७ क्रस्तान, ७६ बौद्ध, १३ जैन, ९ एनिमिष्टिक, और ७ दूसरे थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत-वर्षमें ३५ वाँ और सूबे बङ्गालमें तीसरा शहर है।

शहर नदीके साथ साथ लगभग ४ मीलकी लम्बाईमें बसा है। नदीकी ओर उत्तम मकान बने हुए हैं। शहरकी २ प्रधान सड़कें एक दूसरीको समान कोनमें काटती हैं, जिनमेंसे एक लालबाग महल्लेसे दोलाईकोल तक नदीके समानान्तर रेखामें २ मीलसे अधिक लम्बी और दूसरी चौड़ी सड़क, जिसके बगलोंमें सुन्दर मकान बने हैं, शहरके उत्तर ओर पुरानी छावनी तक १$\frac{3}{4}$ मील लम्बी है। पश्चिम ओर सड़कोंके मेलके पास, जहाँ एक बागहै, चौक बना है। शहरके मकान चौमञ्जिलेतक हैं। शहरके बीचमें नदीके निकट यूरोपियन लोगोंका महल्ला देखनेमें आता है। शहरमें ढाकाके नव्वाब सरख्वाजा अबदुलगनी के. सी. एस. आई. का सुन्दर मकान बना हुआ है, जिनके बापने एक खैराती मकान बनवाया, एक स्कूल नियत किया, शहरकी सफाईके लिये म्युनि-सिपलिटीको ५० हजार रुपया दिया और जलकल अपने खर्चसे बनवाया। नव्वाबके मह-लसे आगेजाने पर अस्पतालकी उत्तम इमारत मिलती है। कमिश्नरकी कोठीसे १०० गज दक्षिण एक गिरजा और गिरजासे $\frac{1}{2}$ मील दूर कबरगाह है। इनके अतिरिक्त 'ढाका कालिज' की उत्तम इमारत और कई एक स्कूल हैं।

सत्रहवीं सदीका बना हुआ पुराना किला अब नहीं है। कटरा और लालबागका महल, जो तैयार नहीं हुए थे, उजाड़ पड़े हैं। कसबेसे ८ मील दूर धवलेश्वरी नदी और बूढ़ी गङ्गाका संगम है।

ढाकेका मलमल प्रसिद्ध है। सोने और चांदीकी उत्तम प्रकारकी वस्तु वहाँ बनती हैं और खास करके कलकत्तेमें भेजी जाती हैं। कसीदेका काम, डोरिया, जामदानी चारखाना इत्यादि सामान अब तक वहाँ बहुत तैयार किये जाते हैं। ढाकेमें मुहर्रमका तेहवार बड़ी धूमधामसे होता है। यूरोपियन और मारवाड़ी वहाँ अधिक तिजारत करते हैं।

ढाका जिला—इसके उत्तर मैमनसिंह जिला; पूर्व टिपरा; दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम बाकरगञ्ज और फरीदपुर जिला और पश्चिम थोड़ी दूरके लिये पवना जिला है। अनेक नदियाँ इसकी स्वाभाविक सीमा बनती हैं; पूर्व मेंगना दक्षिण और दक्षिण पश्चिम पद्मा और पश्चिम यमुना नदी। जिलेका क्षेत्रफल २७९७ वर्ग मील है। धवलेश्वरी नदी जिलेके

मध्यमें पूर्वसे पश्चिमको वहती है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी नदियाँ जिलेमें हैं। मधुपुर जङ्गलको छोड़कर दूसरा कोई बड़ा जङ्गल नहीं है। बहुतेरे लोग बरसातमें अपने मवेशियोंको चरनेके लिये मधुपुरके जङ्गलमें भेजते हैं। जिलेकी नदियोंकी मछलियोंसे प्रतिवर्ष लगभग १ लाख रुपयेकी आमदनी होती है। वहाँ भूकम्प बहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ढाका जिलेमें २११६३५० मनुष्य थे अर्थात् १२५०६८७ मुसलमान, ८५६६८० हिन्दू, ८७९९ क्रस्तान, ४९ बौद्ध, ४३ ब्राह्म और ९२ दूसरे। जातियोंके खानेमें २०२५१० चण्डाल, ९२९०९: कायस्थ, ६०५४२ ब्राह्मण, ५७९१७ सूँड़ी, ४९२७४ जलिया, ४०४२२ कैवर्त, २५३२७ ग्वाला और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जिलेके कसबे ढाकेमें ८२३२१ और नारायणगञ्जमें १७७१५ मनुष्य थे। मानिकगञ्ज इत्यादि कई दूसरे छोटे कसबे हैं। जिलेका प्रधान बाजार नारायणगञ्ज है। मुन्सीगञ्जमें प्रति वर्ष एक बड़ा तिजारती मेला होता है और ३ सप्ताह तक रहता है। सन् १८८१ में इस जिलेमें ७९ इञ्च वर्षा हुई थी।

इतिहास--ढाके वृक्षके नामसे या ढाकेश्वरी देवीके नामसे ढाका नामकी उत्पत्ति है। अति पूर्व कालमें बलवान हिन्दू राजाओंसे ढाका शासित होता था। जान पड़ता है कि मुसलमानोंके आक्रमणके पहले ढाका जिलेका केवल एक भाग, जिसकी सीमापर धवलेश्वरी नदी थी; बङ्गालके हिन्दू राज्यके आधीन था। नदीके दक्षिण विक्रमादित्य नामक एक राजा राज्य करता था। जिसके नामसे विक्रमपुर परगना है और उत्तर पाल खांदानके भुइया राजाओंका राज्य था; इनकी राजधानी और महलोंके खँडहर बङ्गालके पूर्वी: भागके ब्रह्मपुत्र घाटीमें अनेक जगह विद्यमान हैं। धवलेश्वरी नदीके उत्तर ढाका जिलेके मधुवनपुर सामर और दुरदुरियामें उनके समयका बहुतेरे मट्टीका काम और इंटोंके टीले देखनेमें आते हैं।

लगभग सन् १३२५ में महम्मद तोगलकने वर्तमान ढाका जिलेको गौड़के राज्यमें मिला लिया। सन् १५७५ में सुनहर गाँव प्रधान तिजारती शहर था। सत्रहवीं सदीके आरम्भमें बादशाह जहांगीरके समय उसके सूबेदार इसलामखाँने राजमहलको छोड़कर ढाका शहरको बङ्गालका सदर स्थान बनाया। उस समय ढाका शहरका नाम जहांगीरनगर रक्खा गया और शहर उन्नतपर हुआ। पीछे अङ्गरेज फरासीसो और डचवालोंने वहाँ अपनी अपनी कोठियाँ कायम कीं। ढाकेका मलमल यूरपमें प्रसिद्ध हुआ। सन् १६४५में बादशाह शाहजहांके पुत्र सुलतानशुजाने नदीके दक्षिण किनारेपर बड़ा कटरा बनवाया। सन् १६७७में औरंगजेबके पुत्र महम्मद आजिमने शहरके पूर्व लालबागके महलका काम आरम्भ किया; किन्तु उसका काम पूरा नहीं हुआ। सन् १६८३ में साइस्ताखाँने छोटे कटरेको बनवाया। सन् १६९० में इब्राहिमखाँने किला बनवाया। अठारहवीं सदीके आरम्भमें ढाका शहरकी घटती हुई, क्योंकि सन् १७०४ में बङ्गालके सूबेदार मुर्शिदकुलीखाँने ढाकेको छोड़कर मुर्शिदाबादको बङ्गालकी राजधानी बनाया। लोग कहते हैं कि उस समय ढाका शहरकी शहरतलियाँ उत्तर ओर १५ मील तक फैली हुई थीं। अब तक बहुतेरी मसजिदें और ईंटोंके मकान जङ्गलमें छिपे हुए मिलते हैं। सन् १७५७ में ढाकेपर अङ्गरेजी अधिकार हुआ।

सन् १८५७ के बलवेके समय ढाकेके किलेमें सिपाहियोंकी २ कम्पनी थीं। मेरठके बलवेके पीछे एक जङ्गी जहाज ढाकेको बचानेके लिये कलकत्तेसे भेजा गया। किलेके सिपाही बागी हो गये। अन्तमें ४१ बागी लड़ाईमें मारे गये, बहुतेरे भागते समय नदीमें डूब गये अथवा गोलीसे मरगये और चन्द भूटानके जङ्गलमें चले गये।

मैमनसिंह।

ढाकेसे ७५ मील (नारायणगञ्जसे ८५ मील) उत्तर मैमनसिंहका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके ढाका विभागमें ब्रह्मपुत्र नदीकी धाराके पश्चिम किनारे पर (२४ अंश, ४५ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २६ कला, ५४ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान मैमनसिंह एक कसबा है, जिसको नसीराबाद भी लोग कहते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैमनसिंह कसबेमें ११५५५ मनुष्य थे; अर्थात् ६५०८ हिन्दू, ४९२९ मुसलमान, ८८ कृस्तान, २७ जैन और ३ एनिमिष्टिक। कसबा तिजारतके लिये प्रसिद्ध नहीं है; उसमें २ पुराने मन्दिर, १ खैराती अस्पताल और छोटे बड़े कई स्कूल हैं। कसबेमें सूर्यकान्त आचार्य बहादुर एक जमीन्दार राजा हैं, जिन्होंने ३० हजार रुपयेके खर्चसे टाउनहाल बनवाया और अपनी रानीके स्मरण चिह्नके अर्थ मैमन-सिंहके जलकलके लिये १ लाख १३ हजार रुपया चन्दा दिया।

मैमनसिंह जिला—जिलेका क्षेत्रफल ६२८७ वर्ग मील है। इसके उत्तर गारो पहाड़ी जिला; पूर्व आसामका सिलहट जिला; दक्षिण-पूर्व टिपरा जिला; दक्षिण ढाका जिला और पश्चिम यमुना नामक नदी, बाद पवना, बुगड़ा और रङ्गपुर जिले हैं। जिलेका बड़ा भाग समतल और मैदान है। मधुपुर जङ्गलके अतिरिक्त सर्वत्र खेती होती है। मधुपुर जङ्गल ढाका जिलेके उत्तरी भागसे मैमनसिंह जिलेके भीतर प्रायः ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला हुआ है। इसकी औसत ऊँचाई मैदानसे ६० फीट और सबसे अधिक ऊँचाई १०० फीट; लम्बाई लगभग ४५ मील और चौड़ाई ६ मीलसे १६ मील तक; और क्षेत्रफल ४२० वर्ग मील है। यमुना नामक नदी जिलेके पश्चिम सीमापर ९४ मील बहती है। इसके अलावे ब्रह्मपुत्र, मेगना और अनेक छोटी नदियां जिलेमें हैं। जिलेमें बाघ अब कम हैं। मधुपुरके जङ्गलमें भालू मिलते हैं। गारो और सुसङ्ग पहाड़ियोंमें प्रतिवर्ष बहुतसे हाथी पकड़े जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उस जिलेमें ३०५१९६६ मनुष्य थे; अर्थात् २०३८५०५ हिन्दू, ९८७३५५ मुसलमान, २५९५५ आदि निवासी और १५१ कृस्तान। जातियोंके खानेमें १४८३८० चण्डाल, ९४२१७ कैवर्त, ५०६१५ नाई, ५०१५२ ब्राह्मण, ४४३०८ सूँडी, ४३३९३ योगी, ३२०११ जलिया, ३१९७९ कोच, २८७२४ बढ़ई और शेषमें दूसरी जातियां थीं। राजपूत केवल २१६७ थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके कसबे टङ्गइलमें १७९७३, जमालपुरमें १५३८८, किशोरगञ्जमें १३९८८ मैमनसिंहमें ११५५५ और शेरपुरमें १०७४४ मनुष्य थे। जमालपुर एक समय फौजी स्टेशन था। प्रतिवर्ष सावन मासमें किशोरगञ्जमें मेला होता है।

बारहवाँ अध्याय।

(सूबे बंगालमें) कृष्णनगर, नदिया, शान्तिपुर जशर, खुलना, वैरीसाल, नइहाटी, बारकपुर, दमदम और बारासत।

कृष्णनगर।

पोड़ादह जंक्शनसे ४५ मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे १८६ मील) दक्षिण और कलकत्ताके स्यालदहसे ५८ मील उत्तर वगुलाका रेलवे स्टेशन है। वगुलासे १२ मील पश्चिम कृष्णनगर तक पक्की सड़कपर घोड़ा गाड़ी चलती है। मार्गमें हाँसनगरका घाट उतरना होता है। सूबे बङ्गालके नदिया विभागमें जलंघी नदीके बायें किनारेपर (२३ अंश, २३ कला, ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३२ कला, ३१ विकला पूर्व देशान्तरमें) नदिया जिलेका सदर स्थान कृष्णनगर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कृष्णनगरमें २५५०० मनुष्य थे; अर्थात् १२४४४ पुरुष और १३०५६ स्त्रियाँ। इनमें १७१०६ हिन्दू, ७७५७ मुसलमान, और ६३७ कृस्तान थे।

कृष्णनगर तिजारती कसबा है। वहाँ मट्टीकी रंगदार मूर्त्तियाँ बहुत सुन्दर बनती हैं और एक कालिज है। ग्वाड़ी महल्लेमें मामूली सरकारी कचहरियाँ और आफिस बने हुए हैं। कृष्णनगरमें नदियाके राजाका महल है।

नदिया।

कृष्णनगरकी कचहरीसे ६ मील (वगुलाके रेलवे स्टेशनसे १८ मील) पश्चिम सूबे बङ्गालके प्रेसिडेन्सी विभागके नदिया जिलेमें (२३ अंश, २४ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २५ कला, ३ विकला पूर्व देशान्तरमें) भागीरथीके दहिने अर्थात् पश्चिम किनारेपर नदिया एक कसबा है, जिसको नवद्वीप भी कहते हैं। पहले यह भागीरथीके पूर्व किनारेपर था। अब तक कसबेके पश्चिम भागीरथीका खाल देख पड़ता है। कसबेके निकट खड़ुआ नदी भागीरथीमें मिली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नदियामें १३३३४ मनुष्य थे; अर्थात् १२८५६ हिन्दू, और ४७८ मुसलमान।

पूर्व कालमें नदिया संस्कृत पाठशालाओंके कारण प्रसिद्ध थी; वहाँके पण्डित न्याय शास्त्रमें बड़े प्रवीण होते थे। अब भी नदियामें संस्कृतकी अनेक पाठशाला हैं, जिनमें दूर दूरसे विद्यार्थी आकर विद्या पढ़ते हैं।

नदियाँ कसबेसे लगभग २ मील दूर विद्यानगर, जो एक समय बड़ा गाँव था, एक छोटी बस्ती है। उसी जगह चैतन्य महाप्रभुने विद्या पढ़ी थी। वहाँ एक मन्दिरमें उनकी मूर्ति है।

चैतन्य महाप्रभु—नदिया कसबा चैतन्य महाप्रभुकी, जिनको कृष्णचैतन्य और गौरांग प्रभुभी कहते हैं, जन्म भूमि है। नदियाके एक मन्दिरमें गौरांग प्रभुकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। यात्रीगण प्रथम पुड़ामाव और बूढ़ाशिवके दर्शन करके तब गौरांग प्रभुके दर्शन करते हैं। प्रति वर्ष माघमें वहाँ एक मेला होता है। मेलेमें पाँच सात हजार वैष्णव एकत्रित होते हैं।

चैतन्य महाप्रभुने सन् १४८५ ईस्वी में नदियाके जगन्नाथ मिश्र ब्राह्मणकी स्त्रीके गर्भसे जन्म लिया। वह सम्पूर्ण बङ्गाल और उड़ीसेमें विष्णुकी भक्तिका उपदेश करते रहे। उन्होंने एक सन्तकी पुत्रीसे अपना विवाह किया था, किन्तु २४ वर्षकी अवस्थामें वह गृहको छोड़ कर उड़ीसेमें चले गये। उसके पश्चात् वह १८ वर्ष तक विष्णुके उपासनाका प्रचार करके सन् १५३७ ईस्वीमें परमधामको चले गये।

चैतन्य महाप्रभुका ऐसा मत था कि सब जातिके मनुष्य विष्णुकी पूजाके समान अधिकारी हैं। सचाई और सर्वदाका भजन उनके उपदेशका सारांश था। उनके उपदेशके अनुसार केवल भक्तिहीसे नहीं किन्तु उसके साथ ज्ञान होनेसे मोक्ष मिलती है। और मोक्षका माने केवल सत्ताका नष्ट होनाही नहीं है, किन्तु उसमें शरीरके दुर्गुण और विकारको दूर होजाना खास कर शामिल है।

चैतन्यके मतके सन्त लोगोंमेंसे अधिक लोग अपना व्याह करते हैं और अपनी स्त्री पुत्रोंके साथ कृष्णके मन्दिरके निकटके गृहमें निवास करते हैं। चैतन्य महाप्रभुको लोग कृष्ण भगवान्का अवतार समझते हैं। उनकी पूजा बङ्गाले, खासकर उड़ीसेमें घर घर होती है। बहुतेरे लोग अपने अपने घरके छोटे मन्दिरोंमें नित्य उनकी पूजा करते हैं।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजीने भक्तमाला ग्रन्थ पद्य भाषामें बनाया। उसमें भक्त और सन्तोंका यश वर्णन किया गया है भक्तमालामें लिखा है कि श्रीनित्यानन्द कृष्ण-चैतन्यकी भक्ति दशों दिशाओंमें फैल गई। उन्होंने गौड़ देश (बङ्गाल) के पाखण्डको दूर करके वहाँके मनुष्योंको भजनमें निरत किया और कृपा दृष्टिसे असंख्य मनुष्योंको सुगति दी।

नदिया जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३४०४ वर्गमील है इसके उत्तर राजशाही जिला; पूर्व पवना और जशर जिला; दक्षिण चौबीसपरगना जिला; पश्चिम बीरभूम, बर्द्दवान, और हुगली जिला, और पश्चिमोत्तर मुर्शिदाबाद जिला है। नदिया जिलेको गङ्गाकी प्रधान धारा पद्मा नदी पवना और राजशाही जिलेसे जलंघी नदी मुर्शिदाबाद जिलेसे, एक छोटी नदी दक्षिण-पूर्वकी सीमापर जशर जिलेसे अलग करती है और नदियाकी पश्चिमी सीमाके पास भागीरथी बहती है। भागीरथीसे जगह बदलकर जिलेका एक पतला भाग, जिसमें नदिया कसबा है, भागीरथीके पश्चिम हो गया है। जिलेका सदर स्थान कृष्णनगर है। सीमाकी नदियोंके अतिरिक्त पद्माकी बहुतेरी शाखा और जलङ्गी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियाँ जिलेमें बहती हैं। उस जिलेमें नदियोंके किनारे पर कालीगञ्ज, सन्तीपुर, करीमपुर, कृष्ण-नगर, स्वरूपगञ्ज, मुंशीगञ्ज, गोपालनगर, आलमडङ्गा; कुष्टिया इत्यादि तिजारती जगह हैं। नदिया जिलेमें जङ्गली सूअर, तेन्दुआ और साँप बहुत हैं, प्रति वर्ष लगभग ५०० मनुष्य साँपके काटनेसे और ५० जङ्गली जानवरोंके मारनेसे मर जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नदिया जिलेमें २०१७८४७ मनुष्य थे; अर्थात् ११४६६०३ मुसलमान, ८६४७७३ हिन्दू, ६४४० कृस्तान, २८ ब्राह्म और ३ दूसरे।

जातियोंके खानेमें १२६०६३ कैवर्त, ९३३८२ ग्वाला ५९८९४ ब्राह्मण, ४०७८० कायस्थ, २३२३४ नाई और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। केवल ६०४७ राजपूत थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस जिलेके कसबे सन्तीपुरमें ३०४३७, कृष्णनगरमें २५५००, नवद्वीप अर्थात् नदियामें १३३३४, कुष्टियामें १११९९ और चगड़ा, रानाघाट, कुमारखाली, मिहरपुर, वीरनगरमें दश हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—नदिया कसवेमें राजा वल्लालसेनके पुत्र: वंगालके अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेन रहते थे। लोग कहते हैं कि उन्हीने सन् १०६३ ईस्वीमें नदियाको वसाया और गौड़को छोड़कर इसको अपनी राजधानी वनाया। सन् १२०३ ई० में वख्तियार खिलजीके आधीन मुसलमानोंने नदियाको ले लिया और हिन्दू राजाके वंशका विनाशकर दिया।

नदियाके वर्तमान राजा, भट्टनारायणके वंशधर हैं। वंगालके राजा आदिशूरने, जिनकी राजधानी गौड़ थी, कन्नोजसे ५ ब्राह्मणोंको वुलाया, जिनसे सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ये ५ प्रकारके ब्राह्मण हुए, जो पंचगौड़ करके प्रसिद्ध हैं; उन्ही पांचोंमेंसे एक भट्टनारायण थे। उनके वंशमें सबसे अधिक प्रसिद्ध महाराज कृष्णचन्द्र हुए, जो सन् १७२८ ईस्वीमें राजसिंहासनपर वैठे। वह वड़े विद्वान् और दानी थे। सन् १७५७ में जब शिराजुद्दौला अङ्गरेजोंसे लड़ा, तब महाराज कृष्णचन्द्र अङ्गरेजोंके सहायक थे। उसकी कृतज्ञतामें अङ्गरेजी सरकारने उनको राजेन्द्र वहादुरकी पदवी और १२ तोपें नजर दीं, जो अब तक महलमें देखी जाती हैं। कृष्णचन्द्रके पीछेके राजा भी पण्डित और दानी होते आये हैं, इस लिये नदिया कसवा और जिलाने न्यायशास्त्र और पण्डितोंका घर होनेकी प्रसिद्धता प्राप्तकी है। कृष्णचैतन्य महाप्रभुके जन्म होनेके कारण नदिया कसबा पवित्र समझा जाता है।

सन्तीपुर।

भागीरथी (अर्थात् हुगली नदी) के किनारे पर (२३ अंश, १४ कला २४विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २९ कला, ६ विकला पूर्व देशान्तरमें) नदिया जिलेमें सबसे वड़ा कसवा सन्तीपुर है।

सन् १८९१ मनुष्य-संख्याके समय सन्तीपुरमें ३०४३७ मनुष्य थे; अर्थात् २११९७ हिन्दू, ९२३१ मुसलमान और ९ कृस्तान।

सन्तीपुर कपड़ेकी दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध है। उसमें देशी तिजारत वहुत होती है और गङ्गास्नानका वह एक प्रसिद्ध स्थान है। वहाँ कार्तिककी पूर्णिमाके समय श्रीकृष्णकी रासयात्राका मेला होता है। जो ३ दिन रहता है। अन्तिम दिन प्रधान सड़क होकर बड़ी धूमधामसे श्रीकृष्ण भगवान्की सवारी निकलती है। मेलेमें पचीस तीस हजार आदमी आतेहैं।

जशर।

वगुलाके स्टेशनसे १२ मील (पार्वतीपुरसे १९८ मील) दक्षिण रानाघाट जंक्शन, रानाघाटसे २१ मील पूर्व बनगाँव जंक्शन और बनगाँवसे २६ मील पूर्वोत्तर जशरका रेलवे स्टेशन है। सूवे बङ्गालके प्रेसीडेंसी विभागमें (२३ अंश, १० कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १५ कला; पूर्व देशान्तरमें) भैरव नदीके पश्चिम किनारे पर रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा जशर

है, जिसको उस देशके लोग कसवा कहते हैं। उसका शुद्ध नाम यशहर है जिसका अपभ्रंश जशर होगया है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जशरमें ८४९५ मनुष्य थे; अर्थात् ४५११ हिन्दू, ३८२२ मुसलमान और १६२ दूसरे। म्युनिसिपल्टीकी सीमाके भीतर पुराना कसबा शंकरपुर, चच्चरागाँव और वदाहर है।

कसबेके चौकका नाम मछुहा बाजार है। कसबेके पश्चिम जिलेकी मामूली कचहरियाँ; जेलखाना और पुलिसकी लाइन पक्की वनी हुई हैं। इनके अतिरिक्त जशरमें स्कूल, गिर्जा, एक खैराती अस्पताल, सन् १८८३ का बना हुआ श्रीरघुनाथजीका १ मन्दिर और २ कवरगाह हैं। कसबेसे १ मील दक्षिण चच्चरा बस्तीमें जशरके राजाके महलकी निशानी देखी जाती है। उस महलके निकट जशरके एक राजाका बनवाया हुआ चोरमारा नामक एक बड़ा तालाव है। लोग कहते हैं कि इस तालावके पास राजाका जेलखाना था; इस लिये तालावका चोरमारा नाम पड़ा।

जशर जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल २९२५ वर्गमील है। इसके उत्तर और पश्चिम नदिया जिला, दक्षिण खुलना जिला और पूर्व फरीदपुर जिला है। जिलेमें कई एक छोटी नदियाँ बहती हैं।

सन् १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय जशर जिलेमें १५७७२४९ मनुष्य थे; अर्थात् ९४५२९७ मुसलमान, ६२१४३९ हिन्दू, ४७४ क्रस्तान और ३९ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें ७८००३ जालिया, कैबर्त, मलाह पोड़ी इत्यादि; ६२६११ कायस्थ, ३७७५२ ब्राह्मण, ९०३ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियाँ थी। इस जिलेके जशर कसबेमें ८४९५ कोटचान्दपुरमें ९२३१ और केशवपुरमें ६४०५ मनुष्य थे।

सन् १७८१ ई० में गवर्नरजनरलने जशर कसबेके निकट मुरलीमें एक कचहरी नियत होनेकी आज्ञा दी और पूरे तौरसे जिलेमें अङ्गरेजी प्रबन्ध कायम होगया।

खुलना।

जशरसे ३५ मील दक्षिण-पूर्व (रानाघाट जंक्शनसे ८२ मील) खुलनाका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके प्रेसीडेंसी विभागमें (२२ अंश, ४९ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ३६ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान खुलना एक छोटा कसबा है।

खुलनाके निकट भैरव नदी सुन्दर बनमें मिल गई है। ऐसा कहा जा सकता है कि खुलना सुन्दरवनकी राजधानी है। इसमें ३ वाजार हैं, जिनमेंसे सेनका वाजार जो सवमें प्रधान है, भैरव नदीके पूर्व और दूसरे २ उस नदीके पश्चिम किनारे पर हैं। खुलनामें सरकारी कचहरियाँ वनी हुई हैं। खुलना होकर ढाका और बाकरगञ्जसे चावल, सिलहटसे चूना और नारंगी; सुन्दरबनसे लकड़ी और राजशाही, पवना और फरीदपुरसे तीसी और दाल कलकत्ता भेजी जाती हैं।

खुलना जिला—इसका क्षेत्रफल विना नाप किया हुआ सुन्दरवनको छोड़कर २०७७ मील है। इसके पूर्व बाकरगञ्ज जिला; दक्षिण सुन्दरवन, पश्चिम चौबीसपरगना जिला

और उत्तर जशर जिला है। इस जिलेके पश्चिमोत्तरके भागमें खजूर आदि वृक्षोंके सुन्दर कुञ्ज फैले हुए हैं। प्रत्येक वस्तियोंके समीप वाग और कुञ्ज लगे हुए हैं। नदीके किनारेके ऊँचे स्थानोंपर मकान वने हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खुलना जिलेमें १०७९९४८ मनुष्य थे; अर्थात् ५५५५४४ मुसलमान, ५२३६५७ हिन्दू, और ७४७ क्रस्तान। जातियोंके खानेमें २८६५४ ब्राह्मण, ५५१ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। इस जिलेके कसवे सतखीरामें ८७३८, कालामोआमें ५९९५, कालीगञ्जमें ५५५४, और देवहाटमें ५५१४ मनुष्य थे।

इतिहास—लगभग १०० वर्षसे खुलना कसवा प्रसिद्ध हुआ है। एक समय वह कम्पनीके नमक वनानेका सदरस्थान था। सन् १८८२ ई०में खुलना एक जिला वनाया गया।

वैरीसाल।

खुलनाके रेलवे स्टेशनसे लगभग ५० मील पूर्व (२२ अंश, ४१ कला ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) वैरीसाल नदीके पश्चिम किनारेपर सूवेवङ्गालके ढाका विभागमें वाकरगञ्ज जिलेका प्रधान कसवा और सदर स्थान वैरीसाल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वैरीसालमें १५४८२ मनुष्य थे, अर्थात् ८०४७ हिन्दू, ७०५४ मुसलमान, ३६७ क्रस्तान और १४ वौद्ध।

वैरीसालमें मामूली सरकारी कचहरियाँ वनी हुई हैं। देशियोंके मकान साधारण तरहसे लकड़ी, वाँस टट्टी और फूससे वने हैं।

वाकरगञ्ज जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल ३६४९ वर्गमील है। इसके पूर्व मेगना और शाहवाजपुर नदी, जिसके वाद नोआखाली और टिपरा जिला है, दक्षिण वङ्गालकी खाड़ी; पश्चिम जशर और फरीदपुर जिला और उत्तर ढाका और फरीदपुर दोनों जिले हैं। सदर स्थान वैरीसाल कसवा है। इस जिलेमें गङ्गा, ब्रह्मपुत्र और मेगना तीनोंकी मिली हुई धारा वहती है। दूसरी वहुतेरी छोटी छोटी नदियाँ हैं। कोई पहाड़ी या टीला नहीं है। वस्तियोंके चारोंओर वाँस और सुपारीके कुञ्ज लगे हुए हैं। जिलेमें वागिया, सालटी, रामसील इत्यादिक वहुतेरी झीलें हैं। भूमिसे वहुत नमक तैयार किया जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वाकरगञ्ज जिलेमें १९००८८९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६७६९४ मुसलमान, ६२४५९७ हिन्दू, ४७९७ वौद्ध, ३७१७ क्रस्तान, ८३ ब्राह्म और १ यहूदी। जातियोंके खानेमें २६०७७१ चण्डाल, ८७८३४ कायस्थ, ४४७३६ ब्राह्मण, ३३४९९ नापित, २१६२८ धोवी, २१५१८ जोगी, १८०८० कैवर्त, १६८४५ सूँडी और शेषमें दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वाकरगञ्ज जिलेके कसवे वैरीसालमें १५४८२, और फीरोजपुरमें १२२४६ मनुष्य थे।

वाकरगञ्ज, जो सन् १८०१ ई० से पहले इस जिलेका सदरस्थान था, खैरावाद और एक दूसरी नदीके संगमके पास है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ७०६० मनुष्य थे।

नइहाटी।

रानाघाट जंक्शनसे २२ मील (पार्वतीपुरसे २२० मील) दक्षिण और कलकत्ताके सियालदहसे २४ मील उत्तर नइहाटीका रेलवे जंक्शन है, जहाँसे ५ मीलकी रेलवे लाइन पश्चिमोत्तर हुगली कसबेके पास जाकर ईष्टइण्डियन रेलवेसे मिली है, बीचमें हुगली अर्थात् भागीरथी नदी पर रेलवे-पुल बना हुआ है। सूबे बङ्गालके प्रेसीडेन्सी विभागके चौबीस परगने जिलेमें नइहाटी एक तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नइहाटीमें २९७२४ मनुष्य थे अर्थात् २४७६६ हिन्दू, ४८०६ मुसलमान, १३५ क्रस्तान और १७ बौद्ध।

बारकपुर।

नइहाटीसे १० मील (पार्वतीपुर जंक्शनसे २३० मील) दक्षिण और सियालदहसे १४ मील उत्तर बारकपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके चौबीस परगना जिलेमें भागीरथीके बायें किनारे पर श्रीरामपुरके आमने सामने बारकपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ बारकपुरमें ५६६२७ मनुष्य थे;—इनमेंसे दक्षिणीय बारकपुरमें ३५६४७ (अर्थात् २६१५१ हिन्दू, ८५१२ मुसलमान, ९५२ क्रस्तान, २४ सिक्ख २ पारसी, १ बौद्ध और ५ दूसरे) और उत्तरीबारकपुरमें जिसको नवाबगञ्ज भी कहते हैं २०९८० (अर्थात् १६३३४ हिन्दू; ४५०५ मुसलमान, १३६ क्रस्तान और ५ जैन) थे।

छावनीसे दक्षिण २५० एकड़ भूमि पर एक सुन्दर पार्क बना हुआ है उसमें खूबसूरतीके साथ वृक्ष लगाये गये हैं और हिन्दुस्तानके वाइसरायकी दिहाती कोठी बनी है, जिसको लार्डमिण्टोने जो सन् १८०६ से १८१५ तक भारतवर्षका गवर्नरजनरल था; बनवाया और उसके बादके गवर्नरजनरल मार्किस आफ हेस्टिंग्सने बढ़ाया। बड़े लाटसाहब समय समय पर कलकत्तेसे आकरके इस गवर्नमेंट हौसमें रहते हैं। छावनीमें यूरोपियन और देशी पलटन रहती है और लेडी केनिङ्गकी कबर है।

रेशकोर्सके निकट हाथियोंके सिखलानेका अस्तबल है। जो हाथी पूर्वी बङ्गालके जङ्गलोंसे पकड़ कर आते हैं वे खास तरहसे सिखलानेके लिये वहाँ भेजे जाते हैं और तालीमके लिये चन्द महीनोंतक अस्तबलमें रक्खे जाते हैं।

इतिहास—सन् १७७२ ई० में बारकपुरमें फौजी छावनी नियत हुई इस लिये उसका नाम बारकपुर पड़ गया। सन् १८२४ में ४७ वीं बङ्गाल पैदल फौजको जो बारकपुरमें थी, ब्रह्माकी लड़ाईमें जानेका हुक्म हुआ। उसके अफ़सर और सिपाहियोंने कहा कि हम लोग समुद्रकी राहसे नहीं जायँगे। हम लोगोंको खुसकी मार्गसे भेजा जाय और भत्ता दुगुना कर दिया जाय तब जा सकेंगे। तारीख १ नवम्बरको वे लोग बागी हो गये। उन्होंने हथियार रख देनेसे इनकार किया। जब यूरोपियन आरटिलरीका एक बैटरी बागियोंपर खोली गई तब वे लोग अपने हथियारोंको फेंक कर नदीकी राहसे भागे। उनमेंसे चन्द गोलीसे मार दिये गये। चन्द पानीमें डूब गये; बहुतेरोंको फाँसी दी गई और उस रेजीमेंटके लोग कामसे अलग कर दिये गये।

सन् १८५७ ई० में बारकपुरमें बगावत हुई। वर्षके आरम्भमें फौजी स्टेशनोंमें यह बात फैली कि नया टोटा अपवित्र है। अङ्गरेजी सरकार देशी सिपाहियोंकी जात भ्रष्टकरके कृस्तान बनाना चाहती है। यह झूठा खियाल दिन पर दिन बढ़ने लगा। तारीख २९ मार्चको बारकपुरकी छावनीके मङ्गलपांडेने एक यूरोपियन अफसरको गोलीसे मारा किन्तु बगावत बढ़ी नहीं।

दमदम।

बारकपुरसे ९ मील दक्षिण और कलकत्तेके सियालदहसे ५ मील पूर्वोत्तर दमदमका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे रेलवे शाखा दमदम छावनी और बारासत होकर बनगाँव गई है। सूबे बङ्गालके २४ परगना जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान और फौजी छावनी दमदम है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणके दमदममें ११०३७ (अर्थात् ६२८६ हिन्दू, ४६९१ मुसलमान और ६० कृस्तान) और उत्तरके दमदममें जिसमें फौजी छावनीहै; १०३९६ मनुष्य, (अर्थात् ६३८८ हिन्दू, २७१८ मुसलमान और १२९० कृस्तान) थे।

दमदममें सन् १८८३ ई० से फौज रहती है। बारक ईटोंके बने हुए हैं। लैनसे थोड़ी दूरपर बाजार है। गोली बनानेके लिये बहुत बड़ा कारखाना बना है।

बारासत।

दमदम जंक्शनसे पूर्वोत्तर बनगाँवकी लाइनपर २ मील दमदम छावनीका और १० मील बारासतका रेलवे स्टेशन है। बारासत चौवीस परगना जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान (२२ अंश, ४३ कला, २४ विकला उत्तर अक्षाँस और ८८ अंश, ३१ कला, ४७ विकला पूर्व देशान्तरमें) एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बारासतमें १०५३२ मनुष्य थे;अर्थात् ५७०३ हिन्दू, ४८०७ मुसलमान, और २४ दूसरे।

बारासतमें सबडिवीजनकी सरकारी इमारतें बनी हैं और थोड़ी तिजारत होती है।

इतिहास—सन् १८३४ ई०में नदिया और जशरके कई एक परगनेसे बारासत जिला बना; किन्तु सन् १८६१ में ज्वाइंट मजिष्ट्रेट बारासतसे उठा दिया गया; बारासत चौवीस परगना जिलेका एक सबडिवीजन बनाया गया।

तेरहवाँ अध्याय।
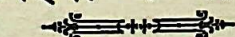
❀ कलकत्ता।

गङ्गाकी पश्चिमी शाखा भागीरथीके, जिसको हुगली नदी भी कहते हैं, बायें अर्थात् पूर्व किनारे पर हवड़ाके सामने पूर्व (२२ अंश, ३४ कला, २ विकला उत्तर अक्षाँश और ८८ अंश, २३ कला, ५९ विकला पूर्व देशान्तरमें समुद्रसे ८० मील उत्तर भारतवर्षकी राजधानी और बंगालका प्रधान शहर कलकत्ता है।

कलकत्तेके पासके सियालदहके रेलवे स्टेशनसे उत्तर ५ मील दमदम जंक्शन, ३४ मील नइहाटी जंक्शन, २४४ मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३७९ मील दार्जिलिङ्ग और दक्षिण ३८ मील "डायमण्ड हारबर" और कलकत्तेके निकटके हवड़ेके रेलवे स्टेशनसे पश्चिमोत्तर ६७ मील बर्दवान, ७५ मील खाना जंक्शन, २६२ मील (कार्ड लाईनसे) लक्षीसराय जंक्शन, ३३२ मील पटना, ३३८ मील बांकीपुर जंक्शन, ३६८ मील आरा, ४६९ मील मुगलसराय जंक्शन, ४७६ मील बनारस, ५६४ मील इलाहाबाद, ६८४ मील कानपुर जंक्शन, ८२७ मील तुण्डला जंक्शन, ८४३ मील आगरा किला, और ९५४ मील दिल्ली; हवड़ेसे पश्चिम ओर १३२ मील आसनसोल जंक्शन, ७५९ मील नागपुर, १११७ मील मनमार जंक्शन, और १२७८ मील बम्बईका विक्टोरिया स्टेशन और स्टेशन और हवड़ेसे नागपुर और मनमार जंक्शन होकर २१९३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास है।

खास कलकत्ता शहर भागीरथीके किनारेपर लगभग ७ वर्ग मीलके क्षेत्रफलमें फैला है। इसकी लम्बाई चितपुरसे दक्षिण और खिदिरपुरसे उत्तर ४½ मील और औसत चौड़ाई भागीरथी गङ्गासे पूर्व और सर्कुलर रोडसे पश्चिम १½ मील है। खास शहरसे पूर्व और दक्षिण-पूर्व नर्कुलडाङ्गा, शिमला, सियालदह, एंटाली, बालीगञ्ज, भवानीपुर, अलीपुर और खिदिरपुर (शहरतालियाँ) हैं। शहरमें सड़कोंकी लम्बाई १२० मील है। सड़कोंपर रात्रिमें गैसकी लालटेनसे रोशनी होती है। ट्रामगाड़ी चलनेपर भी प्रधान सड़कोंपर घोड़ेगाड़ी और एक्कोंकी भीड़ रहती है। सन् १८८९-१८९० ई० में कलकत्तेकी म्युनिसिपेल्टीकी आमदनी ४३१७१२१ रुपये और उसका खर्च ४१२७८३१ रुपये थे।

हवड़ा स्टेशनके पास आरमेनियन घाटके सामने भागीरथी गङ्गाकी चौड़ाई लगभग ६०० गज है। राजमहलसे आगे गङ्गाकी दो धारा हो गई हैं। उनमेंसे प्रधान धारा पद्मा, जिसको पद्दा भी कहते हैं, फरीदपुर और ग्वालण्डो होकर कलकत्तेसे बहुत पूर्व समुद्रमें गिरती है और दूसरी धारा भागीरथी, (जिसको हुगली भी कहते हैं) जो एक समय प्रधान धारा थी, चन्दरनगर हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिणको बहती हुई कलकत्तेसे लगभग ८० मील दक्षिण समुद्रमें मिली है। पहिले समयमें भागीरथी कालीजीके मन्दिरके निकट होकर बहती थी। उसका भागर अर्थात् नाला, जिसमें यात्री लोग स्नान करके कालीजीका पूजन करते हैं, अब तक विद्यमान है।

कलकत्तेके पास भागीरथीमें नावके पुलसे दक्षिण कोसों तक सैकड़ों जहाज और आगबोट सर्वदा देखनेमें आते हैं। इनके मस्तूल और गुनरखोंका सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कलकत्तेकी हवा सर्द है, वहाँ बार बार और भारी वर्षा हुआ करती है; किन्तु लगातार नहीं। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा ६० इञ्च होती है। कलकत्तेका समय मदरासके समयसे ३३ मिन्ट और दिल्लीके समयसे ४६ मिन्ट अधिक और बम्बईके समयसे २९ मिन्ट कम है।

कलकत्तेके आस पास कागज इत्यादिके अनेक कल कारखाने हैं। कागजके कारखानेसे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके दफतर खानेके लिये सरकारने २७० टन कागज खरीदा था। कलकत्तेमें ओरियन्टल इन्सियोरेन्स कम्पनीके पास जिन्दगीका बीमा होता है।

वह आदमीसे उसके जीवन पर्यन्त प्रति महीने नियत रुपया लेकर उसके मरनेपर उसके वारिसको एक नियत रकम देती है। प्रतिवर्ष आषाढ़ सुदी २ को कलकत्तेमें जगन्नाथ घाटसे जगन्नाथजीकी धूमधामसे रथयात्रा होती है। कलकत्तेमें महाराज यतींद्रमोहनठाकुर इत्यादि कई वङ्गाली जमीन्दारोंको सरकारसे महाराज तथा राजाकी पदवी मिली है। यद्यपि वम्बईकी मनुष्य-संख्या कलकत्तेसे कम नहीं है, किन्तु कलकत्तेके समान विशाल और दृढ़ इमारतें वम्बईमें वहुत कम हैं।

रेलवे—कलकत्तेके निकटसे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है। महसूल तीसरे दर्जेका फी मील २½ पाई लगता है।

(१) कलकत्तेसे दक्षिण ईष्टर्नवङ्गाल स्टेट रेलवेके सदर्न सेक्सन—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३ वालीगञ्ज।
१० सोनारपुर जंक्शन।
२८ डायमण्ड हारवर।

सोनारपुर जंक्शनसे १८ मील दक्षिण पूर्व केनिंग।

(२) कलकत्तेसे उत्तर ईष्टर्नवङ्गाल स्टेट रेलवे—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

५ दमदम जंक्शन।
७ वेलघँरिया।
१० सोदपुर।
१४ वारकपुर।
२४ नइहाटी जंक्शन।
४६ रानाघाट जंक्शन।
५८ वगुला।
१०३ पोड़ादह जंक्शन।
१२० दामुकदियाघाट (पद्मा गङ्गाके दहिने किनारेपर)
१३२ सांराघाट (गङ्गाके वायें)।
१५६ नाटउर।
१९५ नव्वावगञ्ज।
२४४ पार्वतीपुर जंक्शन।
३०५ जल्पाईगोड़ी।
३२८ सीलीगोड़ी।
३७९ दार्जिलिङ्ग

दमदम जंक्शनसे पूर्वोत्तर ३ मील दमदम छावनी, १० मील वारासत, और ३६ मील वनगांव जंक्शन।

नइहाटी जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन।

रानाघाट जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ३१ मील वनगाँव जंक्शन और ८२ मील खुलना।

पोड़ादह जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया और ४८ मील ग्वालण्डो।

दामुकदियाघाटसे आगवोट गङ्गाके उस पार सांराघाटको जाते हैं। दोनों स्टेशनोंका फासिला १२ मील है। सूखी ऋतुओंमें इसके वड़े हिस्सेपर चन्दरोजा लाइन बैठाई जाती है। सांराघाटके पास 'उत्तरी वङ्गाल रेलवे' आरम्भ होती है।

ग्वालण्डोसे पूर्व थोड़ा दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदीमें आगबोट जाती है, जिसकी राहसे ७९ मील चाँदपुर और १०४ मील नारायणगञ्ज है।

नारायणगञ्जसे उत्तर रेलके रास्तेसे १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह।

चाँदपुरसे 'आसाम बङ्गाल रेलवे' द्वारा ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन।

लक्सम जंक्शनसे दक्षिण थोड़ा पूर्व ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील बलवाकुण्ड और ८१ मील चटगाँव स्टेशन।

दामुकदियाघाटके स्टेशनसे १२ मील पूर्व कुछ उत्तर सांराघाट स्टेशन तक, जो दूसरे पारमें हैं पद्मागङ्गामें आगबोट चलती है।

पार्वतीपुर जंक्शनसे पूर्वोत्तर २३ मील रङ्गपुर, ३९ मील तिष्टा-जंक्शन और ५३ मील मगलहाट और तिष्टा जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर २६ मील यात्रापुर।

पार्वतीपुर जंक्शनसे पश्चिम कुछ दक्षिण १९ मील दीनाजपुर ६५ मील बरसुई जंक्शन और ८९ मील कठिहर जंक्शन।

(३) हवड़ेसे पश्चिमोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१२ श्रीरामपुर।

१४ सेंबड़ाफुली जंक्शन।

२१ चन्दरनगर।

२४ हुगली जंक्शन।

२९ मगरा।

६७ बर्दवान।

७५ खाना जंक्शन।

खाना जंक्शनसे पश्चिमोत्तर कार्ड लाइन पर ४१ मील अण्डाल जंक्शन, ४६ मील रानीगञ्ज, ५७ मील आसनसोल जंक्शन, ६३ मील सीतारामपुर जंक्शन, १०८ मील मधुपुर जंक्शन, १२६ मील वैद्यनाथ जंक्शन और १८७ मील लक्षीसराय जंक्शन।

खाना जंक्शनसे लूपलाइन पर उत्तर ६१ मील रामपुरहाट, ७० मील नलहाटी जंक्शन, १२० मील तीन पहाड़ जंक्शन १४४ मील साहबगञ्ज।

साहबगञ्जसे पश्चिम ४६ मील भागलपुर, ६१ मील सुलतानगञ्ज, ७९ मील जमालपुर जंक्शन और १०४ मील लक्षीसराय जंक्शन।

खास करके कूड़ा फेंकने और घाटोंसे माल लेजानेके लिये कलकत्ते शहरके बगलोंपर नदीके किनारे और सर्कुलररोडपर रेलवे बनी हैं।

रेलवे सबसे पहले सन् १८१८ ई० में विलायतमें जारी हुई और सन् १८५२ ई० में हिन्दुस्तानमें बनी। इस समय तक हिन्दुस्तानमें १५ हजार मीलसे अधिक रेलवे लाइन बन चुकी है।

स्टीम् कम्पनियाँ—पेनिनसुलारऐंड ओरिएण्टल स्टीम् नेवीगेशन कम्पनीके आगबोट १५ दिनपर कलकत्तेके जटियोंसे लन्दनके लिये खुलते हैं और मदरास कोलम्बो, एडन, पोर्ट सेड मार्सिलस और प्लाईमौथमें मुसाफिरोंको उतारते चढ़ाते हैं।

'एक कम्पनीके आगबोट नम्बर २३ गार्डनरीचसे मार्सिलसके लिये दो हफ्ते पर खुलते हैं. और मदरास, पाण्डीचरी, कोलम्बो, गेली एडन, स्वेज, पोर्टसेड, मेसिना, नेपुल्स और जेनवामें मुसाफिरोंको चढ़ाते उतारते हैं।

एक कम्पनीके आगबोट पन्द्रहवें दिन लन्दनके लिये,६ हफ्तेपर आष्ट्रेलियाके लिये और हफ्तेपर बम्बेके लियेखुलते हैं. और किनारेके सब बन्दरोंपर लोगोंको चढ़ाते उतारते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट रंगून, सिंगापुर, सिलोन, वम्बे मरीटियस और एंडमन जातेहैं।

एक कम्पनीके आगवोट हर पन्द्रहवें दिन लन्दनके लिये खुलते हैं और कोलम्वो, स्वेज, पोर्टसेड, और मालटामें मुसाफिरोंको चढ़ाते उतारते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट पन्द्रहवें दिन लन्दनके लिये कलकत्तेको छोड़ते हैं और मार्सिलेस और लिवरपुलके लिये वम्बेसे खुलते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट पन्द्रहवें दिन कलकत्तेसे खुलकर मद्रास, कोलम्वो, स्वेज केनाल और मालटा होकर लन्दनको जाते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट महीनेमें एकवार कलकत्तेसे लन्दनके लिये खुलते हैं आर कोलम्वोमें मुसाफिरोंको चढ़ाते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट करीव हर महीनेमें पेनेंग, सिंगापुर, और हङ्गकङ्गके लिये कलकत्तेसे खुलते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट हर शुक्रके दिन आसामके लिये और हर मङ्गलको कचारके लिये खुलते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट मामूली दिनोंपर वीचके स्टेशनोंपर होतेहुए आसाममें डिब्रूगढ़को और हफ्तावारी उड़ीसेमें चान्दवालीको जाते हैं।

एक कम्पनीके आगवोट हररोज आरमेनियन घाटसे मिदनीपुर और वीचके स्टेशनोंके लिये खुलते हैं और उलवड़ियामें मोसाफिरोंको चढ़ातेहैं।

ट्रामवे—कलकत्ता ट्रामवे लाइने यह हैं;—(१) सियालदह स्टेशनसे वहूवाजार ष्ट्रीट, डलहौसी स्केयर और हेयर ष्ट्रीट होकर ष्ट्रेण्ड तक, (२) चितपुरसे चितपुररोड, सामिल करते हुये नम्बर १ पुलिस कोर्टके नजदीक ष्ट्रेण्ड तक, (३) रशापुग्लासे भवानीपुर, चौरङ्गी,एस्प्लानेड और वोलडकोर्ट हौस ष्ट्रीट होकर डलहौसी स्केयर तक। इनके अलावे धर्मतला ष्ट्रीट, वेलस्ली ष्ट्रीट, एलियट रोड, कालिज ष्ट्रीट, कर्नवालिस ष्ट्रीट, ष्ट्रेण्ड रोड इत्यादि होती हुई कई लाइनें बनी हैं। एक लाइन मैदान और पुल होकर खिदिरपुर गई है। इस भांतिसे करीव ५० मील सड़क पर ट्रामवेकी लाइनें वनी हैं, जिनपर ट्रामगाड़ी चलती हैं। एक ट्रामगाड़ीको एक या दो घोड़े खैंचते हैं और उसपर पचीस तीस आदमी चढ़ते हैं। उसपर बैठनेके लिये बेंच बने हुए हैं। आदमी जिस स्थान पर चाहे वहाँ उसपर चढ़ जाता है और जिस स्थानमें इच्छा करे वहाँ उतरता है।

मनुष्य-गणना—सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय कलकत्तेमें २६०७० पक्के और ४७३५१ कच्चे मकान थे। खास शहर और शहर तलियोंमें ८१०७८६ मनुष्योंकी गणना हुई थी, जिनमेंसे खास शहरमें ६८१५६० मनुष्य थे; अर्थात्त ४४६७४६ पुरुष और २३४८१४ स्त्रियाँ। इनमें ४४४८४५ हिन्दू,२०३१७३ मुसलमान,२८९९७ क्रस्तान, २१९९ वौद्ध, १३९९ यहूदी, ४९४ जैन, २८७ सिक्ख और १६६ पारसी थे। शहरसे वाहर दो शहर तलियोंमें ५९५८४ मनुष्य थे, अर्थात् ३५८४२ पुरुष और २३७४२ स्त्रियाँ। इनमें ४३६८७ हिन्दू, १४९८५ मुसलमान, ९०७ क्रस्तान, ३ जैन, १ वौद्ध और १ पारसी थे, और दक्षिणी शहरतलीमें ६९६४२ मनुष्य थे; अर्थात् ३७७९४ पुरुष और ३१८४८ स्त्रियाँ। इनमें ३९१३१ हिन्दू, २९९६४ मुसलमान, ४६६ क्रस्तान, ५१ वौद्ध, १ जैन और २९

दूसर थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार कलकत्ता भारत वर्षमें दूसरा शहर है; किन्तु आस पासकी शहरतलियाँ और हवड़ाके साथ वह पहला शहर होता है।

कलकत्तेमें यूरोपियन, यूरेशियन, पोर्चुगीज, आरमेनियन, ग्रीक, यहूदी, चीनी, पारसी इत्यादि परदेशी और हिन्दुस्तानके प्रत्येक विभागके हिन्दुस्तानी लोग बसे हैं।

कलकत्तेमें गङ्गाजीके ज्वार भाटेका समय,—

	ज्वार आरम्भ				भाटा आरम्भ			
तिथि	दिन		रात		दिन		रात	
	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	घटा	मिनट
दशमी	६	८	६	१३	१०	५८	११	३
एकादशी	६	५६	७	१	११	४६	११	५१
द्वादशी...	७	४४	७	४९	१२	३४	१२	३९
त्रयोदशी	८	३२	८	३८	१	२२	१	२७
चतुर्दशी	९	२०	९	२५	२	१०	२	१५
अमावस्या पूर्णिमा ...	१०	८	१०	१३	२	५८	३	३
प्रतिपदा...	१०	५६	११	१	३	४६	३	५१
द्वितीया...	११	४४	११	४९	४	३४	४	३९
तृतीया	१२	३२	१२	३७	५	२२	५	२७
चतुर्थी	१	२०	१	३५	६	१०	६	१५
पंचमी	२	८	२	१३	६	५८	७	३
षष्ठी	२	५६	३	१	७	४६	७	५१
सप्तमी	३	४४	३	४९	८	३४	८	३९
अष्टमी	४	३२	४	३७	९	२२	९	२७
नवमी	५	२०	५	२५	१०	१०	१०	१५

प्रति दिन ज्वारके समय पानीकी ऊँचाई एकही समान अधिक होती है। समुद्र अपने हद्दसे अधिक (विना भारी तूफानके) नहीं बढता; परन्तु अमावस्या और पूर्णिमाके ज्वारका जल प्रति दिनके नियमसे अधिक ऊँचा होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(उद्योगपर्व्व—१५१ वाँ अध्याय) जैसे अमावस्या और पूर्णमासीको समुद्रकी तरंग उठती है, वैसेही पाण्डवोंकी सेनाका महा कोलाहलशब्द आकाशमण्डलको स्पर्श करने लगा। (मत्स्यपुराण—१२२ वाँ अध्याय) चन्द्रमाके बढ़ने घटनेके अनुसार समुद्र बढता घटता है। पूर्णिमा और अमावस्याके दिनोंमें समुद्र १५००

अंगुल बढ़ता और घटता है। वाल्मीकिरामयण–(अयोध्याकाण्ड–१४ वाँ सर्ग) सत्यताके कारण समुद्र अपने थोड़ी भी मर्य्यादाको नहीं छोड़ता (अर्थात् अपनी हद्दसे अधिक नहीं बढ़ता) है।

पानीकी नल—वारकपुरसे २ मील उत्तरके मनीरामपुरसे हुगली नदीका पानी कलद्वारा कलकत्तेमें पहुँचाया जाता है। पम्पका स्टेशन और पानीके सब हौज वेलिंटन स्केयरमें हैं और वैसाही पम्पका स्टेशन हेलीडे स्ट्रीटके पास हालमें बना है। पीने लायक पानीकी नल लगभग २३३ मील लम्बी है। प्रति दिन २ करोड़ गेलन पानी खर्च होता है। इसके सिवा सड़कोंपर छिड़कनेके लिये विना तय्यार किया हुआ पानी आता है, जिसकी नल ६६ मील लम्बी है। सन् १८७० ई० में पानीकी नल खुली। सन् १८९१ की जनवरी तक १ करोड़ ५५ लाख रुपये इस काममें खर्च पड़े थे। पम्पका नया स्टेशन भवानीपुरमें बना है, जिसमें नित्य ४० लाख गेलन पानी तय्यार होकर शहरके दक्षिण हिस्सेमें (पश्चिम) खिदिरपुरके डकसे (पूर्व) बालीगञ्ज तक जाता है।

कलकत्तेकी पुलिस—कलकत्ता शहर हाईकोर्टके मातहत है। पुलिसका प्रधान हाकिम पुलिस कमिश्नर कहलता है, जिसको और डिपुटी कमिश्नरको वङ्गालके 'लेफ्टिनेंटगवर्नर' मोकर्रर करते हैं। पुलिसके लिये कलकत्ता शहर उत्तरीय, दक्षिणीय और मध्य तीन भागोंमें विभक्त है। प्रत्येक भागमें एक सुपरिंटेंडेन्ट और ६ थाने रहते हैं। प्रत्येक थानेमें १ इन्सपेक्टर है। चौथा भाग हुगली नदी है, जिसके लिये १ सुपरिंटेन्डेन्ट और ३ थाने हैं। तीनोंमें एक एक इन्सपेक्टर रहते हैं। एक शाखाभी है, जिसमें एक सुपरिंटेंडेन्ट है।

खास शहरके प्रवन्धके लिये ३ सुपरिंटेन्डेन्ट, २५ इन्सपेक्टर, ८ दारोगा, ३१ सर्जिएन्ट (हवलदार) ६९ करपोरल (नायक), ५१ स्पेशल कांसटिबल और ११०० कांस्टेबल हैं। सुपरिंटेंडेंटोंके साथ रिजर्वड् फोर्स १६२ आदमी और सवार पुलिस और गवर्नमेंट गार्डमें ५ इन्सपेक्टर और ३०५ आदमी हैं।

पुलिस कचहरीकी नई इमारत, जिसका नम्बर १७ है, लालबाजार स्ट्रीटमें सन् १८९० ई० के अकतूबरमें खुली।

मजिष्ट्रेटके कामके लिये उत्तरीय और दक्षिणीय दो भागोंमें कलकत्ता तकसीम है;—उत्तरीय भागके मोकदमेंको उत्तर–भागके प्रेसीडेंसी मजिष्ट्रेट और दक्षिणी भागके मोकदमेको चीफ प्रेसीडेंसी मजिष्ट्रेट देखते हैं। फौजदारी मुकदमे देखनेके लिये हफतेमें ३ रोज बेंच बैठती है, जिसमें मामूली तरहसे ३ मजिष्ट्रेट रहते हैं, जो अपनेमेंसे एक प्रधान चुन लेते हैं। म्युनिसिपल्टीके मुकदमे देखनेके लिये हफतेमें ३ दिन कचहरी होती है, जिसको एक आनरेरी मजिष्ट्रेट देखते हैं।

सवर्बन पुलिस—यहभी पुलिस कमिश्नरके मातहत है। चौबीस परगने जिलेमें कमिश्नर और डिपुटी कमिश्नर दोनोंको मजिष्ट्रेटका अख्तियार दिया गया है। कलकत्ता शहरसे बाहरके हिस्से उत्तरी और दक्षिणी दो भागोंमें तकसीम हैं। हर एकमें एक सुपरिंटेंडेंट और ७ थाने हैं। प्रत्येक थानेमें १ इन्सपेक्टर या सब इन्सपेक्टर रहते हैं। फौजदारी मुकदमे देखनेके लिये दो पुलिस कचहरी हैं। उत्तरी हिस्सेके मुकद्दमोंको खियालदहका सबडिविजनल, अफसर और दक्षिणी हिस्सेके मुकद्दमोंको अलीपुरका डिपुटी मजिष्ट्रेट देखता ह। बाहरी

हिस्सेकी खबरदारीके लिये २ सुपरिंटेंडेंट, १३ इन्सपेक्टर, ४ सब इन्सपेक्टर, ३ दारोगा, १६ हवलदार, २६ नायक, और ६२५ कान्स्टेबल हैं।

नाम मुल्क आदि	नम्बर आफिस	पता
अमेरिका-आफिस	३	एस्प्लानेड रोड पूर्व।
वेल्जियम	७	लियन्स रेंज।
डेनमार्क	४	फेर्लोप्लेस।
फ्रांस कंसल जनरलका आफिस	४	रसल ष्ट्रीट।
जरमन एम्पायर कंसल जनरलका आफिस	४०	चौरङ्गी रोड।
ए० कंसलका आफिस	२—३	क्लैव रोड।
ग्रीसकंसलका आफिस	२३	केनिङ्ग ष्ट्रीट।
इंपीरियल और रायल अष्ट्रो हङ्गारियन कंसलका आफिस	१३६	केनिङ्ग ष्ट्रीट।
इटली आफिस	५५	पार्क ष्ट्रीट।
नेदरलेंड्स आफिस	११	लालबाजार।
परसिया—आफिस	५	वेटिङ्ग ष्ट्रीट।
पोर्चुगाल—आफिस...	१	वैंसी टार्ट रोड।
स्याम—आफिस	१९	राधाबाजार।
स्पेन—आफिस	१	वैंसी टार्ट रोड।
स्वेडिस् नरवेजियन—आफिस	१	लालबाजार।

धर्मशाले—नीचे लिखी हुई धर्मशालाओंमें ३ दिन तक मुसाफिर टिक सकते हैं। सबमें रसोईके चौके और पायखाने बने हैं। हर मंजिलोंमें मुसाफिर रहते हैं।

हेरिसनरोड (नई सड़क) और चितपुर रोडके मेलके पास हेरिसनरोडके उत्तर बगलमें (नम्बर १६५) रामकिसुनदास और गिरधारीमलकी धर्मशाला है, जिसके आङ्गनके बगलोंमें तीनमंजिले मकान बने हैं।

रामकिसुनदास, गिरधारीमलकी धर्मशालाके पास हेरिसन रोडके दक्षिण बगल (नम्बर १५०) रामदेव बनियाकी तीन मञ्जिली छोटी धर्मशाला है।

ऊपर लिखी हुई धर्मशालाओंसे पश्चिम-दक्षिण मलिक ष्ट्रीटके पूर्व बगलमें (नम्बर ५४३) राय सूर्य्यमल बहादुरकी तीन मञ्जिली धर्मशाला है।

शहर—कलकत्ते शहरके दो भाग हैं, उत्तरी और दक्षिणी; सर्कुलर रोडसे पश्चिम हुगली नदी तक बैठक खाना, बहूबाजार स्ट्रीट, और लालबाजार—स्ट्रीट है, जिससे दक्षिणके शहरको दक्षिणी भाग और उत्तरके शहरको उत्तरी भाग कहते हैं।

उत्तरी भागमें डलहौसी—स्केयरके पश्चिमोत्तरके कारबारी हिस्सेको छोड़कर प्रायः सब हिन्दुस्तानी लोग रहते हैं। सड़क चौड़ी नहीं हैं। चन्द हिस्सोंमें ऊँचे मकान बने हैं और बहुतेरे हिस्सोंमें देहाती मकान हैं।

उत्तरी भागमें प्रधान स्ट्रीट अर्थात् सड़क, जो उत्तरसे दक्षिण गई हैं; ये हैं;–स्ट्रेण्डरोड; चितपुररोड; कार्नवालिस-स्ट्रीट और कालिज–स्ट्रीट, जो एकही लाइनमें हैं और दोनोंके निकट एक एक स्केयर और एक एक तालाव है; और ऐम्हरेष्ट–स्ट्रीट और पूर्वसे पश्चिम जानेवाले स्ट्रीट ये हैं;–कोलूटोला०स्ट्रीट, जिसको लाइनमें पश्चिम केनिङ्गस्ट्रीट और पूर्व मिर्जापुर स्ट्रीट है, हेरिसन रोड,जो हुगलीके पुलसे सियालदहके रेलवे स्टेशन तक है; मछुआ बाजार रोड, जिसकी लाइनमें पश्चिम काटन स्ट्रीट है; वीडनस्ट्रीट, जिसकी लाइनमें पश्चिम नीमतल्ला स्ट्रीट है और उसके वीचमें एक स्केयर वना है,और ग्रेस्ट्रीट जिसकी लाइनमें पश्चिम शोभावाजार–स्ट्रीट है। इनमेंका हेरिसनरोड ७५ फीट चौड़ा है, वह सन् १८९२ में तैयार हुआ; उसपर विजुलीकी रोशनी होती है।

उत्तरीय भागमें राधावाजार, पुराना और नया चीनावाजार और वड़ावाजार प्रधान वाजार हैं। राधावाजार और चीनावाजारमें सराव, तेल, और अनेक प्रकारके असवाव, कपड़ा और वहुत किसिमके माल विकते हैं। वहाँ जानकार आदमियोंको उचित दामपर चीज मिलती हैं; पर सौदागर लोग पहले दूना तक दाम कहते हैं। वड़ावाजारमें खुरदा माल, कश्मीरीशाल, जौहरीकी चीजें, वेशकीमती पत्थर, वर्तन,दवा,कपड़े इत्यादि वस्तु विकती हैं।

दक्षिणीय भागके वहूवाजारसे दक्षिण, धर्मतल्लासे उत्तर और वेंटिकष्ट्रीटसे पूर्वके हिस्सेमें हिन्दुस्तानी लोग नीचेके दरजेके यूरोपियन, पोर्चुगीज और वहुत वहाँके वासिन्द रहते हैं। वहाँ घनी वस्ती देहाती मकान, तंग गली और खराव नाले हैं।

धर्मतल्लासे उत्तर चाँदनी चौक नामक वाजार है और उस हिस्सेमें निऊ मारकेट नामका भी एक वाजार वनी है।

धर्मतल्लासे दक्षिण वेंटिक-स्ट्रीटके पाससे करीव २ मील लम्बा और ८० फीट चौड़ा चौरंगीरोड नामक सड़क है जिसके पूर्व किनारे पर उत्तम मकान बने हुए हैं, जिनमें वहुतेरे अपने हातेमें और वहुतेरे वागमें खड़े हैं। मकानोंके आगे (पश्चिम) किलेका मैदान हुगली गङ्गा तक फैला है। दक्षिणकी तरफके मकानोंके आगे सुन्दर वरण्डे बने हैं। उनमें वहुतेरे मकान तीन मञ्जिले हैं जिनमें लम्बे, चौड़े तथा ऊँचे कमरे वने हुए हैं।

चौरंगीरोडके समानान्तर पूर्व वेलस्ली-ष्ट्रीट नामक उत्तम सड़क हैं, जो करीव करीव सीधी चली गयी है। वह चौड़ी सड़क वेलस्ली स्केयर और वेलिण्टन स्केयर होकर गई है। वेलिण्टन स्केयरमें वड़ा हौज और नया वाटर वर्क्स (पानीकी कल) का पम्पिङ्ग-स्टेशन है।

वेलस्ली ष्ट्रीटके पूर्व टोटोला महल्ला है; जिसके उत्तर धर्मतल्ला; दक्षिण कलिङ्गा और पूर्व सर्कुलर रोड है। उसमें खास करके मुसलमान खलासी और लेसकार रहते हैं।

चौरंगीरोडसे पूर्व-दक्षिण सर्कुलर रोड तक पार्कष्ट्रीट है। पार्कस्ट्रीट और उसके दक्षिणके महल्लोंमें प्रायः यूरोपियन लोग वसे हैं। कलकत्तेके उत्तम मकानोंमें चन्द मकान वहाँ हैं। २५ वर्षके अन्दर वहाँ अङ्गरेजी मकान वहुत वढ़ गये हैं और कई नई सड़कें कई स्केयर और वहुतेरे मकान वने हैं। पहले वहाँ देशी लोगोंकी वस्ती थी।

कलकत्ते शहरके पूर्वकी सीमापर सर्कुलर रोड है। वहाँ कई उत्तम मकान देखनेमें आते हैं और सड़कके किनारोंपर खूब सूरतीके साथ दरख्त लगाये गये हैं। मैदानमें कई उत्तम तालाव हैं।

शहरके यूरोपियन हिस्से, जिनमें वहुत कारोबार होता है, क्लैव ष्ट्रीट, हेयर ष्ट्रीट, होस्टिङ्ग-स्ट्रीट, क्लैवरो, एस्प्लानेड, ओल्डकोर्ट, हौस-ष्ट्रीट, और डेलहौसी स्केयर हैं और प्रधान यूरोपियन दूकाने, जिनमेंसे कई एक वहुत उमदे हैं, डेलहौसी स्केयर, ओल्डकोर्ट हौस स्ट्रीट और गवर्नमेंट प्लेसमें देख पड़ती हैं ।

फौर्ट विलियम (किला)—कलकत्ता शहरके दक्षिण हुगली गङ्गाके पूर्व किनारेपर फोर्ट विलियम नामक उत्तम किला है । किलेके पश्चिम गङ्गा और तीनओर वहुत वड़ा मैदान है। सन् १७५७ ई० में लार्ड क्लैवने इसकी नेव दी । करीव सन् १७७३ ई० में २ करोड़ रुपयेसे अधिकके खर्चसे किला तैय्यार हुआ । उसकी शकल ८ पहली है पर बराबर नहीं। उनमेंसे ५ पहल जमीनकी ओर और ३ गङ्गाकी तरफ है । किलेके चारों तरफ ३० फीट गहड़ी और ५० फीट चौड़ी सूखी खाई है, जो जरूरत होने पर गङ्गाके पानीसे भर दी जा सकती है । किलेमें सेंटजर्ज गेट, ट्रेजरी गेट, चौरंगी गेट, पलासी गेट, कलकत्ता गेट और वाटर गेट नामसे ६ फाटक हैं । प्रत्येक फाटकपर एक मकान है जिनमें फौजका कमाण्डर इनचीफ और प्रधान अफसर लोग रहते हैं । किलेके भीतर वारकोंकी कत्तार तोपखाना, भण्डार घर, मेगजीन और परेड की जमीन हैं । वारकोंमें यूरोपियन और देशी फौजोंके लोग रहते हैं वाटर गेटके पास उत्तम तोपखाना है, जिसमें दुश्मनों और दूसरोंसे लियेहुए हर किसिमके छोटें बड़े गोलोंके नमूने हर किसिमके हथियार, और हजारों हथियार जो इस्तमालके लिये तय्यार हैं; रक्खे हुए हैं । कोयले घाट स्ट्रीटमें तोपखानेके इन्स्पेक्टर जनरलके आफिसमें दरखास्त करने पर तोपखाना देखनेकी इजाजत मिलती है । किलेमें एक यूरोपियन रेंजीमेंट और एक देशी पैदल रेजीमेंट रहता है और १०००० आदमी रह सकते हैं । किलेसे ६०० तोप दग सकती हैं पृथ्वीमें पहले पहल सन् १३७५ ई० में अग्नि अस्त्र (अर्थात् तोप, वन्दूक) का व्यवहार हुआ । सन् १८०७ ई० में टोपीकी कल्पना हुई और सन् १८३४ से वन्दूकोंके काममें टोपी लाई जाती हैं पहले वन्दूकके घोड़ेमें चकमकका टुकडा लगाया जाता था । सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय किलेमें ३४६८ मनुष्य थे;अर्थात् ३११९ पुरुष और ३४९स्त्रियाँ।

सन् १६९८ ई० में दिल्लीके वादशाहकी तरफसे ईष्ट इण्डियन कम्पनीको अपनी हिफाजतके लिये किले वनानेका हुक्म मिला । उस समयके इङ्गलेण्डके वादशाह 'विलियम' के नामसे पहला फोर्ट विलियम किला बनाया गया । कोयलाघाट स्ट्रीटसे उत्तर और फेरली प्लेससे दक्षिण वह किला था । उसके चारों तरफ खाई नहीं थी। उसका विस्तार पूर्वसे पश्चिम २१० गज, दक्षिण १३० गज और उत्तर १०० गज था। उसमें ४ वुर्ज थे, हर एक पर १० तोप रक्खी जाती थीं । उसी किलेके नामसे वर्तमान किलेका नाम फोर्ट विलियम पड़ा ।

लार्ड नेपियरकी प्रतिमा——किलेसे पश्चिम-दक्षिण घास जमी हुई गोलाकार जमीनपर कमाण्डर इञ्चीफ लार्ड नेपियरकी धातुकी प्रतिमा है; वह जङ्गी पोशाक पहने हुए प्रिंसेप्स घाटकी तरफ मुख किये हुए घोड़ेपर सवार हैं ।

लार्ड डफरिनकी प्रतिमा—यह सन् १८८४ ई० से १८८८ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। किलेसे करीव २०० गज पूर्व चौमुहानी सड़कके बीचमें, जहाँसे किलेमें २ रास्ते गये हैं, एक खूवसूरत पायसतूनपर इनकी उत्तम पत्थरकी प्रतिमा है, जो चन्देसे वनी है । इसके वनानेमें ४१ हजार रुपया खर्च पड़ा है ।

लार्ड सर जेम्स उटरमकी प्रतिमा—यह लार्ड डफरिनकी प्रतिमासे पूर्व पार्कस्ट्रीटके फाटकके सामने धातुसे बनी हुई घोड़ेपर सवार है। यह लेफ्टिनेन्ट जनरल और बड़ा जवामर्द था, जो ६० वर्षका होकर सन् १८६३ ई० में मरा।

एशियाटिक सोसाइटी—यह नम्बर ५७ पार्क स्ट्रीटमें है, जो सन् १७८४ ई० में एशियाखण्डके इतिहास, शिल्प, साहित्य, आदिके शोध करनेके लिये कलकत्तेमें. कायम हुई। महीनेके पहिले बुधको इसकी बैठक होती है। इसमें करीब ३०० मेम्बर और एक बड़ी लाइब्रेरी (पुस्तकालय) है, जिसमें १५ हजार जिल्दसे अधिक पुस्तकें रक्खी हैं, जिनमें ५ हजारसे अधिक संस्कृत, अरबी, ब्राह्मी, नैपाली, पारसी, और हिन्दीकी पुस्तकें हाथकी लिखी हुई हैं। सोसाइटीमें सिक्के, ताम्बाकी सनदें, तस्वीरें, नकशे इत्यादि जो रक्खे हैं वे देखने लायक हैं। आनरेरी सेक्रेटारियोंके पास दरखास्त करनेपर लाइब्रेरी और सिक्कोंको आदमी देख सकते हैं।

अर्ल मेयोकी प्रतिमा—यह सन् १८६९ ई० से हिन्दुस्तानके गवर्नरजनरल और वाइसराय थे, जो सन् १८७२ की तारीख १८ फरवरीको एण्डेमन टापूमें एक खूनीके हाथसे ५० वर्षकी उमरमें मारे गये। अर्ल मेयो बड़े नेक और सर्व हितैषी थे। लार्ड डफरिनकी प्रतिमासे पूर्वोत्तरकी ओर मीनारसे तीन चार सौ गज दक्षिण चौमुहानी सड़क पर धातुसे बनी हुई घोड़ेपर सवार इनकी उत्तम प्रतिमा है।

किलेके मैदानका मीनार—गवर्नमेंटहौससे पूर्व-दक्षिण और धर्मतल्ला बाजारसे दक्षिण १६५ फीट ऊँचा सर डेविड अकतरलोनीका मनुमन्ट अर्थात् समाधितम्भ है उसके सिरपर चढनेके लिये उसके भीतर २६३ सीढ़ियाँ बनी हैं। ऊपर चढ़नेसे सारा शहर दिखाई देता है। पुलिस कमिश्नरके पास दरखास्त करनेपर उसकी कुञ्जी मिलती है अकतरलोनीने हैदर अलीके समयसे हिन्दुस्तानकी लड़ाइयोंमें काम किया था और सन् १८२३ ई० में मालवे और राजपूतानेमें रेजीडेंट था।

मसजिद—धर्मतल्ला स्ट्रीटके कोनेके पास श्रीरङ्गपट्टनके सुविख्यात टीपू सुलतानके पुत्र प्रिन्स गुलमहम्मदने सन् १८४२ ई० में एक बड़ी मसजिद बनवाई,जिसमें नित्य सैकड़ों मुसलमान निमाज पढ़ते हैं।

पारसियोंका अग्निमन्दिर—यह २६ नं० एजरा स्ट्रीटमें है। प्रसिद्ध पारसी सौदागर मिष्टर रुस्तमजी कवासजीने सन् १८३७ में इसको बनवाया।

पारसी टावर—यह बेलियाघाट रोडमें है। इसको नौरोजी सोरावजी पारसी सौदागरने सन् १८२२ में तैय्यार कराया था।

म्युनिसिपल बाजार—यह म्युनिसिपल आफिस स्ट्रीटके दक्षिण बड़ा भारी तीन रोखका चौखुण्ठा मकान है, जो सन् १८७४ ई० में ६ लाख ६५ हजार रुपयेके खर्चसे तय्यार हुआ इसमें यूरोपियन लोगोंके खर्चकी सामग्री बिकनेके लिये सजी रहती है। इसके बाद जष्टिस लोगोंने धर्मतल्ला बाजारको ७ लाख रुपयेमें खरीद किया।

प्रेसीडेन्सी जेल—यह जनरल हसपिटलके पास मैदानमें १८ फीट ऊँची दीवारसे घेरा हुआ है। इसमें एक तिमञ्जिला मकान है, जो खियाल किया जाता है कि सिराजुद्दौलाका दिहाती मकान था। इस जेलमें औसत १३०० कैदी रहते हैं, जिनमें ८० से १०० तक

यूरोपियन, यूरेसियन, आरमेनियन, और यहूदी हैं। इनमेंसे बड़े मैयाद वाले लगभग ७०० कैदी बङ्गाल गवर्नमेन्टके लिये छापे और किताबकी जिल्द बन्दीके काम और छोटे मैयाद वाले कैदी तेल पेरने और गेहूँ पीसनेका काम करते हैं। जेलके छापेखानेसे हर महीनेमें औसत ७० लाखसे ८० लाख तक फार्म निकलते हैं। कैदियोंके वर्ष दिनके कामकी कीमत लगभग १२०००० रुपये हैं। सुपरिंटेन्डेंटके पास दरखास्त करने पर जेलखाने देखनेकी इजाजत मिलती है।

अलीपुरका जेल–यह जेल बेलबेडियर और भवानीपुरके पुलके बीचमें अत्युत्तम जेलखानेका नमूना है। इसमें १७३४ कैदी रह सकते हैं। लगभग ११०० कैदी दस्तकारीके काममें लाये गये हैं। खास करके बिनाईका काम होता है। सुतरी कल द्वारा काती जाती है। बिनाई हाथसे होती है। इसके अलावे इस जेलमें बङ्गालके छोटे जेलोंके कामके लिये खाने, पीने और पकानेके बरतन बनते हैं और लोहे और लकड़ीका काम होता है। बढ़ई और लोहारसी दूसरे जेलके कामके लिये यहां सिखलाये जाते हैं। जेल देखनेकी दरखास्त २४ घण्टे पहले सुपरिंटेंडेंटके पास देना चाहिये। ऐतवारके दिन कोई जाने नहीं पाता है।

मुजरिम लड़कोंकी चाल सुधारनेका स्कूल–यह अलीपुरके जेलके सामने सन् १८८०-८१ ई० में कायम हुआ। नवजवान मोजरिमे तालीमके कैदमें रक्खे जाते हैं। उनको अच्छा और सेहतवर खोराक दिया जाता है और तरक्कीके लिये पेशा शिखलाया जाता है। वे डेस्क अलमारी, कुरसी, पलंग, इत्यादि चीजें बनाते हैं। उनमें लोहे और टीनके काम करने वाले, जिल्द बान्धने वाले और छापने वाले भी हैं। सुपरिंटेंडेंटसे दरखास्त करनेपर इसको देखनेका हुक्म मिलता है।

सेंटपाल्स कैथेड्रल—यह गिरजाके मैदानके अखीर दक्षिणमें है। इस इमारतकी सबसे अधिक लम्बाई २४७ फीट, चौड़ाई, ८१ फीट और उँचाई २०१ फीट है। खास गिरजा १२७ फीट लम्बा और ६१ फीट चौड़ा है। इसमें ५० हजार पाउण्ड अर्थात् ५ लाख रुपया खर्च पड़ा, जो हिन्दुस्तान और इंगलेण्डके लोगोंके चन्देसे आया था। गिरजा सन् १८४७ में खुला। इसके पास अङ्गरेजोंके बहुत मनूमेंट अर्थात् समाधि चिह्न हैं, जिनमें १६ मशहूर हैं।

सेंट जान्स—चर्च–यह पुराने कबरगाहकी जमीनपर सन् १७८७ में २ लाखके खर्चसे तैय्यार हुआ। सन् १८११ और १८६३ में इसकी तरक्की हुई। इसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं। यहां प्रसिद्ध अङ्गरेजोंकी बहुत कबरें हैं।

सेंट जेम्स चर्च—यह लोवर सर्कुलर रोडपर २४४ फीट लम्बा, १९४ फीट चौड़ा और ६५ फीट ऊँचा है, जिसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं। यह सन् १८६४ में तैय्यार हुआ। जमीनकी कीमतके अतिरिक्त इसमें २ लाख रुपया खर्च पड़ा।

स्कूल और कालिज—कलकत्तेमें प्रेसीडेंसी कालिज, संस्कृत कालिज, मेडिकल कालिज इंजीनियरिंग कालिज, विशप्स कालिज, कलकत्ता मदरसा, डाक्टर डफका स्कूल इत्यादि हैं, जिनमें कई स्कूल लड़कियोंके लिये भी हैं। किसीमें बिना फीसके लोग पढ़ाये जाते हैं और किसीमें यतीम यानि बिना मा बापके लड़के शिक्षा पाते हैं; किसीमें गाना बजाना और किसीमें हुनरके काम सिखलाये जाते हैं।

अस्पताल---कालिज-स्ट्रीटपर मेडिकल कालिजका अस्पताल दुनियाँके बड़े अस्पतालोंमेंसे एक है । इसमें ३०० मरीज रह सकते हैं । इसके पास तीन मञ्जिला एडिन हस्पिटल है ।

अस्पतालके पूर्वोत्तर आई इनफर्मरी याने आँखकी दवाका सफाखाना है। इसमें ५०० मरीज रह सकते हैं ।

प्रेसीडेंसी हस्पिटलमें मरीजोंको प्रतिदिन डवल कमरोंके लिये ५ रुपये और १ कमरेका २ रुपये देना पड़ता है । इसमें १२१ मरदोंके लिये, १८ औरतोंके लिये और १२ लड़कोंके लिये बिस्तर हैं ।

स्ट्रेण्ट रोडके उत्तर मेओ नेटिव हस्पिटल है । इसमें १२० रोगी रह सकते हैं । अस्पतालके सामने दरियाके किनारेके घाटपर शहरके मुर्दे जलाये जाते हैं ।

कोढ़ी खाना---यह एम्हर्ष्ट स्ट्रीटमें है ।

इण्डियन मिउजियम--(अजायवखाना)-यह किलेके मैदानके पूर्व चोरंगी रोड पर (नम्बर २७ और २८) है । यह ता० १ फरवरीसे ता० १ नवम्बर तक १० बजेसे ५ बजे तक और ता० १६ नवम्बरसे ३१ जनवरी तक १० वजेसे ४ बजे तक हर रोज आम लोगोंके लिये खुला रहता है, पर विद्यार्थियोंके सिवा दूसरे लोगोंके लिये वृहस्पति और शुक्रको वन्द रहता है । ता० १ मईसे १५ मई तक और ता० १ नवम्बरसे १५ नवम्बर तक सफाई और मरम्मतके लिये वन्द रहता है । वन्दके दिनोंमें अफिसरोंमेंसे एकके पास दरखास्त करने पर आदमी वरामदोंमें जासकता है ।

अजायवखानेका अगवास चौरंगी रोडपर ३०० फीट लम्वा है और इसकी चौड़ाई सदर स्ट्रीट की तरफ२७० फीट है । अगवासकी तरफका दो मञ्जिला मकान वहुत ऊँचा है। दो बाजुओंमें, जो आगे निकले हुए हैं; और मध्यके पेशगाहमें उमदे खम्भे लगे हैं । एक चौड़ी सीढ़ी, जो दोनों ओर खुली हुई है, पेशगाहमें ऊपर तक चली गई है । एक कमरेमें जो ८० फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा है, मेहरावोंके ३ कतार डवल सीढ़ीके घरमें चले गये हैं, जहाँसे दहिने और वायें ऊपरको सीढ़ी गई हैं ।

अजायवखानेका आंगन १८० फीट लम्वा और १०५ फीट चौड़ा है, जिसमें घास पेड़ और पौधे लगे हैं । आंगनके चारों वगलोंपर मेहरावदार सायवान हैं, दो तलेपर भी चारों तरफ वरण्डा है । पूर्व और पश्चिम ग्यारह ग्यारह और उत्तर और दक्षिण सात सात मेहरावियाँ वनी हैं ।

इमारतके चारों कोनोंके प्रत्येक कमरा ४४ फीट लम्बा और ४० फीट चौड़ा है । अजायवखानेकी इमारत सन् १८७५ ई० के पीछे तय्यार हुई । इसके वनानेमें १ लाख ४० हजार पाउण्ड खर्च पड़ा ।

इसमें सम्पूर्ण एसियाकी अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं । जल और थलके अद्भुत धातु, वनस्पति तथा जीव कृत्रिम और स्वाभाविक दोनों प्रकारके लाकरके इसमें रक्खे गये हैं । फल फूल, पेड़ोंकी टहनिया, मरे हुए जीव जन्तु और नए नए भाँतिके पक्षी. कीट, पतङ्ग इत्यादि शीशोंके भीतर ऐसे दवेके अर्क देकर रक्खे गये हैं कि सब ताजे और जीवित जान पड़ते हैं । इनके अलावे इसमें भाँति भाँतिके अन्न, वस्त्र, वर्तन,

पसारीकी चीजें इत्यादिके नमूने रक्खे गये हैं। इसके समान अजायबखाना भारतवर्षमें दूसरा नहीं है।

पहले नीचेवाले कमरोंमें चारों तरफ देखकर तब प्रधान सीढ़ीसे चढ़कर ऊपरके मञ्जिलमें चारों तरफ देखना चाहिये।

नीचेके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिणके कमरोंमें अशोकके समयकी बौद्ध मूर्त्तियाँ जो २००० वर्षसे पहलेकी हैं; एक बहुत पुराना तोरन (फाटक) पटनेकी दो बड़ी मूर्त्तियाँ; बुद्ध गयासे लाये हुए अशोकके समयके कई खम्भेके नमूने और पत्थरके हिस्से और मथुराकी संगतराशी और लेख हैं। कमरेके दक्षिण खिड़कीके आगे ६ फीट ऊँची बुद्धकी मूर्त्ति है। दरवाजेके बायें गुप्त बरामदेमें दीवारके आसपास बुद्ध सम्बन्धी सङ्गतराशीका उत्तम सिलसिला है। दूसरा गुप्त-बरामदा १६० फीट लम्बा और ४० फीट चौड़ा है। (गुप्त राजाओंने चौथी और पाँचवीं शतकमें उत्तरी हिन्दुस्तानमें राज्य किया था)। बौद्ध सम्बन्धी सङ्गतराश दहिने और ब्राह्मण सम्बन्धी और जैन सम्बन्धी बायें तरफ है। उड़ीसेके हिन्दूके मन्दिरोंकी सङ्गतराशीके नमूनेका सिलसिला बायें की दीवारमें लगा है। दूसरा सिलसिला बम्बेका है। बनारसके पासके सारनाथसे जो चीजें आई है, वह अधिक मशहूर हैं। एक मार्बुलका टुकड़ा है; जिससे बुद्धका जन्म, शिक्षा और मौत जाहिर होता है। बरामदेके सामने ब्राह्मण सम्बन्धी सङ्गतराशी है, जिनमेंसे बहुतेरे कालिञ्जर, विहार, गौड़, कटक इत्यादिसे और चन्दजावा टापूसे आये हैं। बीचमें शीशे लगेहुए बाक्श हैं, जिनमेंसे एकमें अनेक भाँतिके वेश कीमती पत्थर और दूसरे टुकड़े हैं, जो सन् १८८१ में बुद्धगयाके मन्दिरके पास उसको खोदते समय मिले थे। दूसरोंमें पुराने समयके कुम्हारके बरतन और धातु और पत्थरके औजार हैं। एक दूसरे बाक्समें पत्थरकी कुल्हाडी और (लड़ाई वाला) पत्थरका हथियार, जो पुराने समयमें हिन्दुस्तानमें बनते हैं। चौथे बरामदेमें पत्थरपर लेख, बहुतेरी किसिमकी इल्मी इमारतें और एफ्रिकाके इजिप्ट देशका एक मोमी भी है। मोमी मुर्देकी लाशको कहते हैं, जिसको इजिप्टके लोग मोम आदि मसाले देकर ऐसी तरकीबसे रखते थे कि वह सड़ती गलती नहीं।

पूर्वके कमरेमें लम्बे बाक्सोंमें समुद्रके जानवरोंके नमूने हैं। उनमेंसे चन्द समुद्रके घास पातके समान मालूम होते हैं, पर वे सब मरेहुए जानवर हैं। बायें तरफ और बीचके टेबुल बाक्सोंमें सीप, घोंघा कौड़ी, बड़ा केकड़ा, हर किसिमकी तितलियाँ, उचुरुंग, कीड़े, रेशमके कीड़े, बिच्छी इत्यादि मृत जानवर हैं।

उत्तरके कमरेमें हर किसिमके धातु और पत्थरके टुकड़े इत्यादि हैं और पश्चिमोत्तरके कोनेके कमरेमें बहुत नकशे टँगे हुए हैं।

सोंढोघरके सिरके पास बर्दवानके महाराज महताबचन्द बहादुरकी (सन् १८८७) दी हुई महारानी विक्टोरियाकी मार्बुलकी प्रतिमा है, जिसके पीछे पेशगाहके ऊपर ५९ फीट लम्बा, ५० फीट चौड़ा और ५० फीट ऊँचा लाइब्रेरीका बड़ा हाल है, जिसमें सन् १८८७ ई०में करीब १२००० जिल्द पुस्तकें थीं। लाइब्रेरीके पास बरामदेमें कीड़े, मकोड़के नमूने हैं।

दक्षिणके वरामदेमें मरे हुए चिड़ियोंका झुण्ड है। इससे दक्षिण पूर्वके कमरेमें सूखे हुए कीड़े मकोड़े हैं। वहाँ चमड़े और मांस निकालकर जानवरोंकी समूचीदेहकी हड्डियाँ जैसीकी तैसी खड़ी की गई हैं, जिनमें एक बड़ी कच्छूकी हड्डी है।

पूर्वके कमरेमें बाघ, सिंह, गेंडा, हरिन, भैंसे, बिल्ली नेवला, खरगोश, गद्ध, आदि दूध पिलानेवाले जानवरोंकी देहके सिलसिले उत्तम तरहसे लगे हैं। समुद्रके एक महा मच्छकी तमाम हड्डी ४१ फीट लम्बी। एक बड़ा मच्छका जबरा है, जो मच्छ १०० फीट लम्बी होगी। ११ फीट ऊँचे एक हाथीकी समूची हड्डी है। दीवारोंमें बहुत किसिमके जानवरोंकी सींग लटकाये गये हैं वहाँ शिवालिक पहाड़की एक बिल्ली शेरके समान बड़ी है। कीडोंके दर्मियान एक मगर १८ फीट और एक सांप १८ फीट लम्बा है। पूर्वोत्तरके कमरेमें खास करके मछलियाँ हैं।

अजायब घरके पूर्वोत्तरके कोनेसे पूर्व उसमें लगा हुआ तीन मञ्जिला नया अजायब खाना बना है, जिसकी लम्बाई दीवारकी सदर स्ट्रीटके अगवास पर २५६ फीट और छतकी ऊंचाई ८४ फीट है। इस इमारत और उसके असबाबमें ३ लाख रूपया खर्च पड़ा है। नीचेके मञ्जिलेमें हिंदुस्तानकी अनेक कोमोंकी जिन्देके समान मूर्तियाँ उनकी पूजाकी चीजें पोशाक, जेवर, हथियार, कामका औजार, बर्तन इत्यादि सामान हैं।

दूसरे मञ्जिलमें नफीस कारीगरीकी चीजें, असली और नकली जवहरियोंकी चीजें चाँदी पीतल और ताम्बेकी चीजें; कारचोबी और फुलकारीका काम; कुम्हारकी बनाई चीजें; बार्निस किया हुवा काम; लकड़ी हाथीदाँत और मार्बुल काटकर बने हुए असबाब, सींगके असबाब चमकीले हथियार; चटाई, दौरी इत्यादि सामान हैं।

इनके अलावे अजायबखानेमें अनेक भाँतिके कपड़े, लैस, कारचोबीके काम, लकड़ी और हाथीदाँतकी बनी चीजें धातकी दस्तकारी, हिन्दुस्तानके मैदान और पहाड़के बसनेवाले खास कोमों अर्थात् कोल, संथाल, मुंडा, जाट, राजपूत, ब्रह्माके कैरेन, ऐंडमनके नेग्राइट इत्यादिकी प्रतिमूर्तियों रङ्ग, तेल,तेलके बीज दवा, सूत सींझने वाली चीजें इत्यादि हैं

गवर्नमेण्ट हौस (बड़े लाटकी कोठी) यह टेलीग्राफ आफिससे दक्षिण पश्चिम है इसके दक्षिण २ मील तक किलेका मैदान है ६ एकडके बागके उत्तर भागमें यह खडा है। बाहरके घेरेमें उत्तर और दक्षिण दो दरवाजे बने हैं पूर्व और पश्चिम दो उमदे फाटकके रास्ते है। गवर्नर जनरल मार्किस आफ वेलस्लीके हुकुमसे सन् १७९९ ई० में इसकी नेव पड़ी और सन् १८०४ में १३ लाख रुपयेके खर्चसे यह तय्यार हुआ।

गवर्नमेन्टहौसके ४ बाजू हैं। इसका बड़ा दरवाजा उत्तर है। प्रवेश करनेपर देवढ़ीके भीतर दहिने मार्किस आफ वेलस्लीकी उजले मार्बुलकी प्रतिमा देख पड़ती है। खाना खानेके कमरेमें सफेद मार्बुलका फर्श लगा है। एक थ्रोनरूम याने शाहीतख्तका कमरा है। सुल्तान टीपूका शाहीतख्त इसमें रक्खा गया, इस लिये इसका नाम थ्रोनरूम पड़ा। इनके अतिरिक्त नास्ताका कमरा, कौन्सिल-कमरा इत्यादि हैं। खाना खानेके कमरे और उसके पासके कमरोंके ऊपर नाचघर हैं कमरोंमें हिन्दुस्तानके बहुतेरे गवर्नर जनरलोंकी और दूसरे बहुतेरे सर्राफोंकी तस्वीरें हैं।

दक्षिणके दरवाजेके सामने सिक्ख-लड़ाईसे लाईहुई पीतलकी एक उत्तम तोप है, जिसके दोनों तरफ सेरङ्गापाटनकी लड़ाईसे लाईहुई २ पीतलकी तोपें हैं। जिनपर शेरोंके सिर और पञ्जे अजब तरहसे बने हैं और उत्तरके दरवाजेके सामने एक तरफ काबुलकी लड़ाईसे लाईहुई और दूसरी ओर हैदराबादसे लाईहुई पीतलकी तोपें हैं।

ट्रेजरी-यह गवर्नमेंट हौससे पश्चिम बहुत बड़ी तीन मञ्जिली इमारत है, जिसके कई बाजू बने हैं। इसका काम सन् १८८२ ई० में आरम्भ होकर सन् १८८४ में समाप्त हुआ।

लार्ड हार्डिङ्गकी प्रतिमा-यह गवर्नमेन्ट हौसके पूर्व-दक्षिण तीन कोनी जमीनपर मिले हुए धातुसे बनीहुई घोड़ेपर सवार है प्रतिमा और घोड़ेकी बनावट उत्तम है, जो आम लोगोंके चन्देसे बनी है। लार्ड हार्डिङ्ग सन् १८४४ ई० से १८४८ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे।

लार्ड लारेन्सकी प्रतिमा—गवर्नमेन्ट हौसके दक्षिण दरवाजेके पास मिले हुए धातुसे बनी हुई पूरी लम्बी इनकी प्रतिमा खड़ी है। लार्ड लारेन्स सन् १८६४ ई० से १८६९ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वायसराय थे।

लार्ड केनिङ्गकी प्रतिमा–यह गवर्नमेन्ट हौसके पश्चिम-दक्षिण तीन कोनी जमीनपर मिले हुए धातुसे बनीहुई घोड़ेपर सवार है। लार्ड कनिङ्ग सन् १८५६ ई० से १८६२ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वायसराय थे।

सर इस्टुआर्ट काल्विनकी प्रतिमा–यह गवर्नमेन्ट हौसके पश्चिम सड़कके पास तीन कोनी जमीनपर खडी है प्रतिमा मार्बुलकी बनी हुई पूरी लम्बी है सर इस्टुआर्ट काल्विन सन् १८८७ से १८९० ई० तक बङ्गालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नर थे।

टाउनहाल–गवर्नमेन्ट हौससे पश्चिम और हाईकोर्टसे पूर्व टाउनहाल है जिसको सन् १८०८ ई० में कलकत्तेके बासिन्दोंने ७० हजार पाउण्डके खर्चसे बनवाया (इस समय १६ रु० का एक पाउण्ड होता है)। इसमें आम लोगोंकी कमीटी होती है।

यह इमारत दो मञ्जिली है। गाड़ी खड़ी होनेका बरण्डा उत्तर तरफ बना है, जिसमें गोलेकार बहुत मोटे और ऊँचे ८ स्तम्भ लगेहैं। दक्षिणके कमरेमें कूचबिहारकी वर्तमान महारानीके पिता केशवचन्द्रसेनकी बड़ी तस्वीर और अन्य लोगोंकी मार्बुलकी ४ आधी मूर्तियाँ और पूर्व तथा पश्चिम दो मञ्जिलेपर जानेकी सीढ़ियाँ हैं दोनों सीढ़ियोंपर मार्बुल की दो दो आधी प्रतिमा देखनेमें आती हैं। कमरेके दक्षिण १७२ फीट लम्बा और ६५ फीट चौड़ा बडा हाल (कमरा) है, जिसमें गोलेकार बीस बीस खम्भोंके दो कत्तार हैं। हालके मध्यमें उत्तर तरफ महाराज रामनाथ टैगोर बहादुर सी. एस. आईकी मार्बुलकी प्रतिमा मार्बुलकी कुर्सीपर बैठी है और पश्चिम किनारेपर हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (१७८६–१७९३) मार्किस आफ कार्नवालिसकी मार्बुलकी प्रतिमा खड़ी है। इस हालके दक्षिण एक दक्षिण रूखका दालान है, जिसमें हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (१७७४—१७८५) वारेन हेष्टिङ्गकी मार्बुलकी प्रतिमा खड़ी है जिसके दोनों बगलोंपर दो छोटी प्रतिमा हैं।

ऊपरके उत्तरवाले कमरेमें जिसमें दोनों बगलोंपर नीचेसे सीढ़ी गई हैं छोटी बड़ी २३ तस्वीरें और मार्बुलकी ४ आधी प्रतिमा हैं, जिनमें मार्किस आफ वेलस्ली, महारानी

विक्टोरिया, लार्ड मेटकाफ, लार्डलेक्, द्वारिकानाथ टैगोर इत्यादिकी तस्वीरें और राजासर राधाकान्त बहादुर, प्रसन्नो कुमार टैगोर इंत्यादिकी प्रतिमा हैं। इस कमरेके दक्षिण नीचे वाले बड़े हालके ठीक ऊपर नीचेहीके समान हाल है। इसमें मानिकजी रुस्तमजी, सर विलियमग्रे, क्लैव इत्यादिकी ६ तस्वीरें हैं। हालसे दक्षिण नीचेके दालानके ऊपर दोनों कोनोंपर ४३ फीट लम्बे और २१ फीट चौड़े दो कमरे हैं और मध्यमें ८२ फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा एक कमरा है, जिसमें २ तस्वीरें लगी हैं।

नीचेका मञ्जिल ३३ फीट और ऊपरका २९३ फीट ऊँचा है। नीचेके मञ्जिलमें मार्बुलका और ऊपरके मञ्जिलमें टीककी लकड़ीके तख्तोंका फर्श है।

लार्ड विलियम बेंटिककी प्रतिमा—टाउन हालके सामने दक्षिण पूरी लम्बी, मिले हुए धातुसे बनी हुई, इनकी प्रतिमा खड़ी है। यह सन् १८२८ से १८३५ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे।

हाईकोर्ट—टाउनहालसे थोड़ा पश्चिम नई हाईकोर्ट है, जो सन् १८७२ ई० में तैय्यार हुई। इस जगहपर पुराना सुप्रीमकोर्ट और ३ मकान थे।

वडा चौगान (अंगनई) के पूर्व और पश्चिम बगलोंपर दो मञ्जिली और उत्तर और दक्षिण तीन मञ्जिली इमारत हैं। चौगान पूर्वसे पश्चिमको लम्बा है। इसके उत्तर और दक्षिण सत्रह सत्रह और पूर्व और पश्चिम नव नव मेहराबियाँ बनी हैं; तीन तरफ एकहरा और दक्षिण तरफ दोहरा बरंडा है। बरंडोंके पीछे कमरे हैं। चौगानमें फुलवाड़ी और इसके मध्यमें कलके पानीका एक छोटा हौज है। प्रधान दरवाजा दक्षिण, आम लोगोंकी गाड़ीके (३) दरवाजे पूर्व और पीछेके (३) दरवाजे पश्चिम हैं।

उत्तरको छोड़कर तीन तरफ ऊपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। प्रधान सीढ़ी दक्षिणके टावरमें है। उसी जगह सर एडवार्ड हाइड ईष्टकी प्रतिमा देखनेमें आती है।

दूसरे मञ्जिलमें ७ कचहरियाँ, जज लोगों और वारिष्टरोंके कमरे, जज लोगोंकी लाइब्रेरी, और वार लाइब्रेरी, वकीलोंके कमरे, और एटर्नियोंके कमरे इत्यादि हैं। दूसरे मञ्जिलमें चारोंओर चौगानकी तरफ और वाहर दक्षिण तरफ तीनों मञ्जिलमें बरंडे हैं।

दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें चीफ जस्टिसकी कचहरीमें तीन चीफ जस्टिसोंकी तस्वीरें हैं। दक्षिण-पूर्वके कोनेके पासके सेशन जजकी कचहरीमें तीन अङ्गरेजोंकी वड़ी तस्वीरें हैं, जिनमें २ चीफ जस्टिस थे। अपीलके दूसरे दरजेकी कचहरीमें, जो प्रधान सीढ़ीघरसे पश्चिम है, हाईकोर्टके पहला देशी जज कश्मीरके रहनेवाले शम्भुनाथपण्डितकी वड़ी तस्वीर है। पूर्व वारिष्टरोंकी लाइब्रेरी और पूर्वके कोनेमें एटर्नियोंकी लाइब्रेरी है। प्रायः सब कचहरियाँ दक्षिण तरफ हैं। उनमें और उनके आगेके वरण्डेमें बारिष्टर, वकील और साधारण लोगोंकी भीड़ रहती है। कचहरियोंमें सर्वसाधारण लोगोंके वैठनेके लिये बहुत सी बेञ्च और कुर्सियाँ रक्खी हुई हैं।

ऊपरवाले तीसरे मञ्जिलमें टैक्सिगञ्ज आफिसर; क्लार्क आफ दी क्राउन, कोर्ट रिसीवर; इनसालवेन्ट कचहरीका प्रधान क्लार्क, लीगल रिमेंब्रेसर और ऐडवोकेट जनरलके चेम्बर आदिके आफिस हैं।

इस समय हाईकोर्टमें एक चीफ जस्टिस और १२ जज हैं, जिनमें २ हिन्दू, १ मुसलमान और बाकी सब अङ्गरेज हैं। इस हाईकोर्टके आधीन बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा, छोटा नागपुर और आसाम है, जो २००५४७ वर्गमीलमें फैलते हैं और उनमें ७६८२३८२० आदमी रहते हैं।

हाईकोर्टमें इन्साफके काम इप्तदाई और अपील २ हिस्सोंमें तकसीम हैं। इप्तदाईमें केवल कलकत्ते शहरके मुकद्दमे होते हैं और अपीलमें फौजदारी और दीवानी मुकद्दमे; अपील और निगरानी होकर जिले और दूसरी मातहतकी कचहरियोंसे आते हैं; हाईकोर्टकी इप्तदाई कचहरीकी अपीलभी इसीमें होती है। कचहरी बेञ्चोंमें तकसीम हैं। हर एक बेञ्चमें एक, दो या इससे अधिक जज रहते हैं। जिस बेंचमें एक जज है, उसकी अपील अधिक जजोंकी बेंचमें होती है। सुप्रीमकोर्ट और सदर दीवानी अदालत दोनों मिलकर सन् १८६२ ई० में हाईकोर्ट बनी।

लार्ड नार्थब्रूककी प्रतिमा—यह सन् १८७२ से १८७६ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। हाईकोर्टके दक्षिणके खास दरवाजेके सामने पायसतूनपर इनकी पूरी लम्बी प्रतिमा है, जो आम लोगोंके चन्देसे बनी थी। पायसतूनपर अङ्गरेजी, बंगला, पारसी, और हिन्दी लेख हैं।

बङ्गाल बंक—हाईकोर्टसे पश्चिम हुगली गङ्गाके किनारेपर कलकत्तेकी उत्तम इमारतोंमेंसे बङ्गाल बंककी इमारत है। इसका अगवास गङ्गाकी ओर है। इसकी छत और दीवारोंमें सुनहरी मीनाकारीका काम बना है और इसके फर्शमें काले और सफेद मार्बुलके तख्ते जड़े हुए हैं। यह बंक सन् १८०९ ई० में कायम हुआ था। इसमें परामिसरी नोट इत्यादिका सरकारी काम होता है।

एडेनगार्डन—बङ्गाल बंकसे दक्षिण बाबूघाटके पास एडेनगार्डन है। इस बागमें हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (सन् १८३६ से ४२ तक) लार्ड आकलेण्डकी बहिन मिस एडेनकी प्रतिमा खड़ी थी, जो थोड़े दिनोंसे हाईकोर्टके पासकी सड़कपर रक्खी गई है। यह स्थान सुबह और शामको टहलनेके लिये बहुत खुशनुमा है। इसमें लम्बी चौड़ी जमीनपर घास जमाई गई है; घुमावके रास्ते बने हैं; जगह २ फूल और झाड़ लगे हैं; रातमें रोशनी होती है और अच्छे मौसिममें शामको सैकड़ों आदमी टहलते हैं। बागके पश्चिम हिस्सेमें नियत दिनके शामको एक सुन्दर अठपहले बङ्गलेमें अङ्गरेजी बाजे बजते हैं। बागके पास कलकत्तेके क्रिकेटकी जमीन है। एक जगह पानीके बगलपर एक बरमिज पैगोडा (ब्रह्मा देशका मन्दिर) खूबसूरतीके साथ खड़ा है, जो सन् १८५४ की ब्रह्माकी लड़ाईके पीछे ब्रह्माके शहर प्रोमसे लाया गया और सन् १८५६ में यहाँ बनाया गया। इसके पांच खम्भाओंके चार कत्तारोंके ऊपर अजब तरहसे एकके ऊपर दूसरे; चारों तरफसे क्रमसे छोटे होते हुए ८ छप्पर हैं।

लार्ड आकलेंडकी प्रतिमा—यह सन् १८३६ से १८४२ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे। इनकी धातुकी प्रतिमा एडेनगार्डनके उत्तर फाटकके सामने खड़ी है।

सर विलियमकी प्रतिमा—यह जङ्गी जहाजकी फौजके कमाण्डर थे; इनकी सफेद मार्बुलकी प्रतिमा एडेनगार्डनके दक्षिण हुगली नदीके किनारे पर खड़ी है।

वालंटियरोंकी इमारत–हाईकोर्टसे दक्षिण स्वीमिंगबाथ (तैरनेका हम्माम) और एडन गार्डनके बीचमें गङ्गाकी तरफ मुख करके कलकत्तेके वालंटियरोंकी इमारत खड़ी है। हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड लैंसडौनने सन् १८८९ ई० की पहली अप्रेलको इसकी नेवका पत्थर रक्खा। सन् १८९० की फरवरीमें चन्देके खर्चसे इमारत तय्यार हुई। इमारत और इसके सामानमें करीब ८०००० रुपया लगा है। इसमें ५०००० हथियार आदि सामान रह सकते हैं और एक बहुत बड़ा कमरा है, जिसमें पांच छः सौ मेम्बर, जिनका नाम लिखा है, बैठते हैं।

तैरनेका हम्माम––इसको सन् १८८७ में लेफ्टिनेंट गवर्नरने खोला। रेजिष्टरमें ४०० से अधिक नहानेवाले आदमियोंका नाम लिखा है इमारतका काम बहुत अच्छा है। इसकी छत लोहेकी है। हम्माम १०० फीट लम्बा और ३४ फीट चौड़ा है इसके पानीकी गहड़ाई ६ फीटसे ९½ फीट तक बदला करती है। महीनेमें एक दफे पानी निकालकर हम्माम साफ कर दिया जाता है। असबाव पहननेके कमरे टीककी लकड़ीके बने हैं। हर दरजे और हर कोमके लोगोंको इस हम्माममें नहानेका समान अधिकार है।

छोटी अदालत––हेयर स्ट्रीटके उत्तर बगलपर पोष्ट–आफिससे दक्षिण पुराने पोष्ट–आफिसकी जगहपर छोटी अदालतकी तीन मञ्जिली इमारत है। सन् १८७२ ई० में इसका काम आरम्भ हुआ; १८७४ में यह खुली। यह ३३० फीट लम्बी और औसतमें ६० फीट चौड़ी है। इसके हर एक मञ्जिलमें उत्तर और दक्षिण बरण्डे हैं। नीचेके मञ्जिल १८ फीट और दूसरे और तीसरे मञ्जिल पचीस पचीस फीट ऊँचे हैं। आम लोगोंके जानेका दरवाजा बंकहाल स्ट्रीटमें पूर्व तरफ है। ऊपरके मञ्जिलोंकी कचहरियोंमें जानेके लिये ३ चौड़ी सीढियाँ बनी हैं। इस समय छोटी अदालतमें ५ जज रहते हैं। देशी जजको छोड़ कर दूसरे सम्पूर्ण जज और रजिष्टार वारिष्टर हैं। इस अदालतमें २००० रुपये तक करजेके मुकद्दमें देखे जाते हैं।

मेटकाफ हाल–यह हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल (सन् १८३६ ई०) लार्ड मेटकाफके यादगारमें हेयर स्ट्रीट और स्ट्रेण्डरोडके मेलके पास छोटी अदालतसे पश्चिम दरियाके किनारे पर सन् १८४४ई० में चन्देके खर्चसे तैय्यार हुआ। हालदो मञ्जिला है, जिसके चारों तरफ गोलेकार बड़े बड़े २८ खम्भे लगे हैं। प्रधान दरवाजा पूर्व है। नीचेके मञ्जिल खेती और बागवानीकी सोसाइटी (मजलिस) क दखलमें है और ऊपर वालेमें कलकत्ता पबलिक लाइब्रेरी (आम पुस्तकालय) है। दरवाजेके सामने लार्ड मेटकाफकी आधी प्रतिमा देखनेमें आती है।

डलहौसी स्केयर और लालदीगी—टेलीग्राफ आफिसके उत्तर और करेंसी बंकके पश्चिम डलहौसी स्केयर है। इसके मध्यमें एक बड़ा तालाब है, जिसके चारोंतरफ सड़क बनी है और उत्तम बाग लगा है। स्केयरके चारोंओर लोहेके जङ्गलेका घेरा; चारों कोनोंपर टीनके पायखाने और दक्षिण बगलपर मध्यमें इमारतके बरण्डेमें लार्ड हेष्टिङ्गकी मार्बुलकी प्रतिमा खड़ी है। यह सन् १७७४ से १७८५ ई० तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल थे।

पोष्ट आफिस––डलहौसी स्केयरके पश्चिम किनारेके निकट कोयलाघाट स्ट्रीटके कोनेके पास पुराने किलेकी जगहपर खूबसूरत बनावटका पोष्ट-आफिस है, जो ६३०५१०

रुपयेके खर्चसे तय्यार होकर सन् १८६८ ई० में खुला। इसमें ऊँचे ऊँचे २ मञ्जिल हैं। पूर्व और दक्षिण खूबसूरत खम्भे लगे हैं। दक्षिण-पूर्वका कोन अर्ध गोलाकार है। वहाँ उत्तम खम्भे लगे हैं और उससे होकर एक ऊँचे गोलाकार हालमें जाना होता है, जिसमें लेटर वक्स है।

टेलीग्राफ आफिस—इसका काम सन् १८७३ ई० में आरम्भ हुआ। यह शहरके उत्तम और बड़ी इमारतोंमेंसे एक है। इसके प्रधान हिस्सेका चेहरा उत्तर ओर डलहौसी स्क्वेयरकी तरफ है। इसके तीन बाजू हैं। पूर्व ओर १२० फीट ऊँचा एक टावर बना है। पूर्वके बाजूका रोख पुराना कोर्टहौस स्ट्रीटकी तरफ है। दूसरा बाजू पश्चिम और तीसरा बीचमें है। इनमें इमारतका प्रधान हिस्सा और पूर्वका बाजू तीन मञ्जिला है और दूसरे दोनों बाजू दो मञ्जिले हैं। यह इमारत ईंटोंसे बनी हुई ७० फीट ऊँची है। इसमें उत्तर तरफ मध्यमें आमलोगोंके आमदरफ्तका दरवाजा बना है।

इस इमारतमें बङ्गाल डिविजनका सुपरिंटेंडेंट डाइरेक्टर जनरल, डिपोटी डाइरेक्टर जनरल, ऐसिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट, टेलीग्राफके माष्टर आदि बहुत अफसर रहते हैं और यह टेलीग्राफका प्रधान आफिस है।

करेंसी आफिस—यह डलहौसी स्क्वेयरके पूर्व, पश्चिम मुखकी ऊँची इमारत है। इसके नीचेके मञ्जिलमें करेंसीनोटकी खरीद बिक्री और छोटे बड़े नोटोंकी परस्पर बदली होती है। कोई आदमी हो चोरी गये हुए नोटोंके नम्बरोंसे मिलाकर उसको नोटके बदलेमें रुपये या रुपयेके बदलेमें नोट मिलजाता है।

दरवाजेपर लोहेका खूबसूरत फाटक लगा है। मध्यका हाल बहुत बड़ा है। प्रवेश करनेवालेके बाँये नये नोटोंके फारमोंके सन्दूकोंका कत्तार है, जिनमें लाखों किरोड़ों रुपयेके नोट रहते हैं। चाँदी किलेके तहखानेमें रहती है, किन्तु जरूरी कामके लिये यहाँके तहखानेमें रक्खी जाती है। ऊपर वाले कमरे खूबसूरत हैं, जिनमें इटालियन मार्बुलके फर्श लगे हैं।

यह इमारत पहले आगरा और माष्टरमैनके बंकके लिये बनी थी। उसके काम बन्द होजानेपर सरकारने इसको खरीद लिया।

आगरा बंक—करेंसी आफिसके पूर्व उसमें लगा हुआ आगरा बंककी तीन मञ्जिली खूबसूरत इमारत है। इसके नीचेके मञ्जिलमें दक्षिण-पूर्वके कोनेके पास बंकका आफिस है। तीन मञ्जिलेपर बंकका अफसर रहता है। मैं इसी बंकमें टिका था।

इस बंकका हेड आफिस लन्दनमें है, जिसकी शाखा मदरास; बम्बे, आगराई, करांची लाहौर, रंगून, सङ्घाई और एडिम्बरामें हैं।

पशु क्लेश निवारिनी सभा—इसका आफिस राधाबाजार स्ट्रीट पर १११ नम्बरका है यह सभा सन् १८६२ में कायम हुई; तबसे सन् १८९० ई० तक इसके एजेण्टों द्वारा पशुओंको क्लेश देनेवाले ८३६९३ आदमीकी सजा हो चुकी है। पशु क्लेश निवारनके लिये पहले सन् १८६९ में एक्ट १ और सबसे पीछे सन् १८९० में एक्ट ११ पास हुए। इस समय इसका सभापति आनरेबल्लमिष्टर जष्टिस नरीश हैं। सभाका खर्च चन्दे और जुर्मानेसे चलता है। सभाकी तरफसे जानवरोंके पानी पीनेके लिये ३ तालाब और सड़कोंपर जगह जगह ४९ चरन बने हैं।

वङ्गाल सक्रेटरीयट (कम्पनी वारक)—यह डलहौसी स्क्वेयरके उत्तर सड़कके वगल पर तीन मञ्जिली इमारतोंका सिलसिला है। जिसके दक्षिणका अगवास ६६० फीट लम्वा है। इमारतोंके वढ़ाव और तबदील करनेमें १० लाख रुपये खर्च पड़े हैं। इसमें वङ्गाल सेक्रेटरीयट जुडिसियल, पोलिटिकल, रेवीन्यू एजूकेशनल, पवलिक वर्क, इरीगेशन आदि आफिसें वनी हैं।

कष्टम हौस—डलहौसी स्क्वेयरके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास स्टेण्ड रोडपर सन् १८२० ई० का वना हुआ कष्टम हौस है, जिसमें आमदनी और रफतनी मालका महसूल लिया जाता है। इसमें लगे हुए वहुत गोदाम हैं।

सन् १८९०–९१ ई० में यहाँके वन्दरगाहमें ३३९६१३७२२ रुपयेका माल आया और वन्दरगाहसे ४३७०९०६६१ रुपयेका माल गया और हर किसिमकी रफतनीसे १८६८००६ रुपया और आमदनीसे २६३८९१६ रुपया और निमकसे २१९६८१५४ रुपया महसूल आया।

पोर्ट ऐंड शिपिङ्ग आफिस—गवर्नमेंटने सन् १८९० ई० में कष्टम हौस और पोर्ट कमिश्नरके आफिसके वीचमें इसको वनवाया। सन् १८९१ की पहली जनवरीसे इसमें पोर्ट अफसरका काम आरम्भ हुआ और शिपिङ्ग माष्टर और पोर्टका हेल्थ अफसर रहने लगे। वन्दरगाह सम्वन्धी कामके योग्य यह उत्तम आफिस है।

वङ्गाल वराडेड वेयर हौस—यह केनिङ्ग-स्ट्रीटसे पश्चिम क्लैव स्ट्रीटमें है। जो सन् १८३८ ई० में कायम हुआ। यह आफिसोंका कत्तार है और कमर्सियल विल्डिङ्ग कहलाता है। जो चीजें वाहरसे आती हैं और जिन पर महसूल लगता है वे इसके जिन्सखाने और गोदामोंमें जमे होती हैं। वाहर जानेवाली चीजोंके रहनेका यहाँ कम काम पड़ता है।

निऊ सिनेगग—यह केनिङ्ग-स्ट्रीट पर यहूदी लोगोंकी मजहवी पूजाकी इमारत है, जो सन् १८८४ में खुली। यह १४० फीट लम्वी और ८२ फीट चौड़ी है। इसके खम्भे और दरवाजे इत्यादिमें मार्वुलके तख्ते लगे हैं और सोनहुले काम हैं। गुम्वजकी शकलकी छतमें नीले रङ्गपर सोनेकी सितारें वनी हैं। इसका खास हिस्सा ९२ फीट लम्वा, ३३ फीट चौड़ा और ५२ फीट ऊँचा हैं। फर्श मार्वुलका लगा है। एक वुर्ज १४० फीट ऊँचा है, जिसके ऊपर चढनेके लिये भीतर सीढ़ियाँ हैं। इसमें एक घड़ी लगी है जिसके चारों तरफ ४ डायल हैं।

ईष्ट इण्डियन रेलवे कम्पनीका आफिस—यह कष्टम हौससे उत्तर; फेयर्ली प्लेसमें दक्षिण तरफ ४०० फीट लम्वा और १८० फीट चौड़ा है। इसके वनानेमें लगभग ३५०००० रुपया खर्च पड़ा था। इसमें पत्थरका काम वहुत है। प्रधान आफिसका फर्श मार्वुलसे वना है।

टकसालघर—यह हवड़ाके पुलसे २०० गज उत्तर स्ट्रेण्डरोड पर सड़कके पूर्व वगलकी वड़ी जमीन पर है। यहाँ चाँदी और ताँवेकी दो टकसाल हैं। चाँदीकी टकसालकी उत्तम इमारत सन् १८३१ ई० में खुली खास इमारतसे दक्षिण टकसालके अञ्जनके लिये पानीका तालाव वना है। ताँवेकी टकसाल सन् १८६५ ई० में खुली। चाँदीकी टकसालके मध्यके चौगानमें सोना चाँदीके तहखाने हैं। ताँवेके और

चाँदीकी टकसालके बीचकी बड़ी जमीन पर लोहा और पीतल गलानेका घर और बढ़ई और लोहारोंका कारखाना है।

सिक्के बनानेके लिये, चान्दी और सोना जिसमें $\frac{11}{12}$ या इससे अधिक निराला हो, बंक और सौदागरोंसे लिया जाता है। सोना एक महीनेमें १ हजार तोलेसे अधिक नहीं लिया जाता। सोना चान्दी आदि धातु ३ घंटे आगपर गलनेपर साँचेमें ढाले जाते हैं; पीछे जाँच होकर उसके सिक्के तय्यार होते हैं।

टकसालमें नीचे लिखे हुए सिक्के बनाये जाते हैं;—हिन्दुस्तान–गवर्नमेंटके लिये सोनेके मोहर, चान्दीके रुपये, अठनी, चौअनी, दोअनी और ताम्बेके पैसे, आधे पैसे और पाई।

अलवर–राज्यके लिये चान्दीके रुपये।

बीकानेर–राज्यके लिये चान्दीके रुपये।

धार–राज्यके लिये ताम्बेके पैसे, आधे पैसे और पाई।

देवास–राज्यके लिये ताम्बेके पैसे और पाई।

सिलोन–गवर्नमेंटके लिये ताम्बेके ५ सेण्ट, सेण्ट, आधा सेण्ट और चौथाई सेण्ट।

स्ट्रेट्स–गवर्नमेंटके लिये ताम्बेके सेण्ट; आधा सेण्ट और चौथाई सेण्ट।

इम्पीरियल ब्रिटिश ईष्ट एफ्रिकाके लिये ताम्बेके पैसे।

इनके अतिरिक्त फौजी अफसर और सिपाहियों तथा कालिज और स्कूलके विद्यार्थियोंको इनाम देनेके लिये तगमा भी यहाँ बनते हैं।

जान पड़ता है कि कलकत्तेकी टकसाल दुनियाँके सब टकसालोंसे बड़ी है। ताम्बे और चान्दीके करीब १० लाख सिक्के इसमें एक दिनमें तय्यार हुए हैं।

जो आदमी टकसाल देखना चाहे उसको गुरुवारको टकसाल देखनेके लिये पहिलेही मंगलके दिन मिन्टके माष्टरके पास दरखास्त करना चाहिये। ५ आदमीसे अधिकको एक साथ जानेकी इजाजत नहीं मिलती और १० पास तक मिलता है। बीफेके सिवा दूसरे दिनके लिये भी मिन्टके माष्टर खास पास देते हैं। मिन्ट देखनेका उत्तम समय ११ बजेसे १ बजे तक है। उस समय गली हुई चान्दी ढाली जाती है।

जैन मन्दिर—मानिकतलेके बागमें राय बदरीदास मुकीम बहादुरका जैन मन्दिर है, यह कलकत्तेके सब मन्दिर और मसजिदोंसे बहुत सुन्दर है। मन्दिर एक सुन्दर बागमें बना है। बागमें तालाब, सड़क, चबूतरा और मकान बने हुए हैं। जैनोंकी सालाना यात्रा बड़े खर्च और धूमधामसे कलकत्तेकी सड़कोंसे निकलती है।

मदनमोहनजीका मन्दिर—यह प्रसिद्ध मन्दिर बाग बाजारमें है। हजारहाँ आदमी इसमें दर्शनको आतेहैं। जन्माष्टमी और रथयात्राके दिनोंमें यहाँ बड़ी भीड़ होती है।

सत्यनारायणजीका मन्दिर–बड़ी बाजारकी तूलापट्टीमें सत्यनारायणका विशाल मन्दिर है। यहाँ नित्य कलकत्तेके बहुत लोग दर्शनको आते हैं।

कलकत्तेकी शहर तलियाँ—चौबीसपरगने जिलेके मजिष्ट्र और कलक्टरके आधीन कलकत्तेकी शहरतलियाँ २३ वर्ग मीलमें फैलती हैं, जिनमें नीचे लिखी हुई प्रधान हैं—

काशीपुर—शहरसे उत्तर काशीपुर एक गाँव है, जहाँ सरकारी तोप बननेकी कल, चीनीके कारखाने और अमीरोंके कई त्रिले (मुफसिलके-मकान) बने हैं। काशीपुरके पास

एक कृषिशाला है, जिसमें अमेरिका इत्यादि कई देशोंके हर तरहके फूल, कन्द फल, सागके बीज और पेड़ बिकते हैं और विद्यार्थियोंको कृषी विद्या सिखलाई जाती है।

साततालाब—काशीपुरसे उत्तर बाबू श्यामाचरण मलिकका प्रसिद्ध विला (मुफस्सिलका मकान) है, जिसमें अच्छी चित्रकारी हुई है और खोदकर मूर्तियाँ बनाई गई हैं। विलेके चारों तरफकी छोटी नहर तालाबोंसे मिली है। नहरपर जगह जगह पुल बने हैं। सातता-लावके पास सील घराने वालेका एक उत्तम विला है।

चितपुर—काशीपुरसे दक्षिण चितपुर गाँव ३०० वर्षसे अधिकका पुराना है। यहाँ पूर्व समयमें चित्रुकालीको आदमी बलि दिये जाते थे।

नर्कुलडङ्गा—चितपुरके पुल लांघने पर एक बस्तीसे आगे दक्षिण तरफ नर्कुलडङ्गा मिलता है, जहाँ गैस कम्पनीका बड़ा कारखाना है।

सियालदह—खास कलकत्ते शहरके पूर्व हेरिसन रोडके पूर्वी छोरके पास सियाल-दह है, जहाँसे 'कलकत्ता और सौथ ईष्टर्न रेलवे' ३८ मील दक्षिण-पूर्व डायमण्ड हारबर तक और 'ईष्टर्न बङ्गाल रेलवे' २०८ मील उत्तर सीलीगोड़ी तक गई है।

एंटाली—यह सियालदहसे दक्षिण एक बड़ी बस्ती है, जहाँ यूरोपियन लोगोंके बहुत मकान हैं। और म्यूनिसिपेल्टीका कारखाना बना है।

बालीगञ्ज—यहाँ खुला हुआ मैदान है जिसके पास अनेक बारक अर्थात् सैनिक-गृह और गवर्नर जनरलके अङ्गरक्षक फौजकी कवायतकी जगह हैं। मैदानके चारों तरफ और सड़कोंके पास फैली हुई जमीन पर यूरोपियन लोगोंके रहनेके लिये उत्तम मकान बने हैं।

भवानीपुर—कलकत्तेसे दक्षिण भवानीपुरमें देशी लोगोंकी घनी बस्ती है। इसमें धातुके बरतन बनाने वाले बहुतसे हिन्दू कारीगर रहते हैं। और एक पागल खाना और जलकलके पम्पका नया स्टेशन है।

कालीजी—भवानीपुरसे दक्षिण हाईकोर्टसे लगभग ४ मील दूर भागीरथी गङ्गाकी छोड़ी हुई नालेके निकट कालीघाट नामक बस्तीमें कालीजीका मन्दिर है। बस्तीमें पण्डे लोगोंहीके अधिक मकान देखनेमें आते हैं। यह नाला हेष्टिङ्गस पुलके निकट भागीरथीमें मिला है।

कालीके वर्तमान मन्दिरको सन् १८०९ ई० में बेहालाके चौधरियोंने बनवाया। मन्दिरसे नाले तक पत्थरकी सड़क बनी है। मन्दिरके पास महादेवजीका मन्दिर है। दर्शक लोग नालेमें स्नान करके कालीजीकी पूजा करते हैं। दर्शकोंसे पैसे माँगनेवाली बहुत गरीब लड़की और स्त्रियाँ मन्दिरके पास रहती हैं। चैत्र और आश्विनके नवरात्रोंमें दर्शन और पूजाकी अधिक भीड़ होती है।

कोई कोई कहता है कि जब शिवजी सतीके मृत शरीर लेकर फिरते थे तब सतीके चरणकी अँगुलियाँ यहाँ गिरी थीं; तभीसे यह स्थान हुआ। यहाँ पहले भागीरथी गङ्गाकी प्रधान धारा थी, जिसके स्थान पर वर्तमान नाला है। इसी कालीके नामसे पूर्वकालमें कल-कत्ताका नाम कालीकोटा था। पहले समयमें यहाँ देवीजीको मनुष्य बलि दिये जाते थे।

टालीगंज—कालीघाटसे दक्षिण टालीगंजमें चर्चमिशनरी सोसाइटीका स्टेशन है। जिसके पास रामनाथ मण्डलके (सन् १७९६ ई० के) वनवाये हुए बहुत देवमन्दिर स्थित हैं।

रसापुगला—यहाँ मैशूरके टीपूसुलतानके खान्दानके लोगोंके मकान हैं।

अलीपुर—भवानीपुरसे दक्षिण-पश्चिम अलीपुर बस्ती है। यहाँ बङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरकी कोठी, देशी पल्टनके मकाम जिलेका जेलखाना, २४ परगना जिलेका, सदर मकाम, साधारण और लड़ाई सम्बन्धी आफिस, टेलीग्राफकी सामग्री तय्यार करनेका कारखाना और सरकारी चिड़ियाखाना है।

लेफ्टिनेंट गवर्नरकी कोठी—अलीपुरकी फैली हुई भूमि पर बङ्गालके लेफ्टिनेण्ट गवर्नरकी उत्तम कोठी बनी है। इसके ऊपरके मंजिलमें लेफ्टिनेंट गवर्नरके रहनेका सलतनत और दरवार हाल इत्यादि हैं। कोठीके आसपास बहुत दरख्त लगे हैं और एक तालाव वना है। पश्चिमके फाटकके आगे अलीपुरकी सड़क है।

चिड़ियाखाना—लेफ्टिनेण्ट गवर्नरकी कोठीके पास टोलीज नालाके दक्षिण किनारे पर अलीपुरका सरकारी चिड़ियाखाना अर्थात् पशुशाला है। यहाँ बड़े घेरेके भीतर एक बड़ा वाग है, जिसमें जगह जगह पशु, पक्षी; कीड़े और दरियाई जानवरोंके रहनेके लिये योग्य-स्थान वने हैं, जिनमें हालकी गिनतीके अनुसार ५०० मेमल (अर्थात् दूध पीनेवाले जानवर) ४०० चिड़ियें और १३४ कीड़े हैं। मेमलोंमें वहुतेरे किस्मके वाघ, हरिन, वन्दर, कई एक गेंडे, भालू, भेड़िया, शृगाल, नीलगाय, साहिल खरगोस, मूसा, सुसूँडी और एक सिंह, एक जुराफ (जङ्गली ऊँट) पक्षियोंमें बहुतेरे तरहके सुतुरमुर्ग, विलायती मुर्गी, चील्ह, वतक, सूगे मोर, कवूतर और कीडों और जलजन्तुओंमें वहुतेरे किसिमके साँप, मछली और घड़ियाल शामिल हैं। जुराफ ऊँटके समान होता है. पर इसका मुख वैलके समान है; इसकी पीठपर कूवड़ नहीं होता यह दौडनेमें वहुत तेज होता है।

सन् १८७५ ई० में इसवागका काम आरम्भ हुआ। सन् १८७६ की पहली जनवरीको महारानी विक्टोरियाके पुत्र प्रिंस आफ वेल्सने उसको जलूस किया। उसी सालकी मईमें सर्व साधारण लोगोंके लिये यह खुल गया। तीन चार वर्षमें इसके सब काम पूरे हो गये। नुमायसके साल १८ लाख ८ हजार ५३२ आदमियोंने इसको देखा। देखनेवालेको एक आना महसूल लगता है।

अलीपुरका वाग—यह वाग हिन्दुस्तानकी खेती और वागवानीकी सोसाइटीका है, जिसके कमरे मेटकाफ हालमें हैं। यहाँ मेम्वरोंको बाँटनेके लिये दरख्त लगाये जाते हैं। और सालाना फूलकी नुमायश होती है। बागके एक हिस्सेमें गुलावोंकी वड़ी कियारियाँ और दरख्तोंके उत्तम नमूने हैं।

खिदिरपुर—अलीपुरसे पश्चिमोत्तर कलकत्ते शहरके दक्षिणकी सीमा पर खिदिरपुरमें देशी लोग फैलसे वसे हैं। वहाँ एक गिरजा मिलीटरी आर्फन स्कूल और सरकारी डकयार्ड्स हैं।

खिदिरपुरका डक इसका काम सन् १८८६ ई० में आरम्भ होकर अब तय्यार हुआ है ४३ एकड़ जमीनपर डकका पानी है इसके बनानेमें २ करोड़ ५० लाख रुपया खर्च पड़ा है। इसमें सबसे बडे १४ ष्टीमर रह सकती हैं जहाज और ष्टीमरोंको इसमें रहनेसे तूफानका डर नहीं रहता।

गार्डनरीच–यह हेष्टिंग्स पुलके दक्षिण बहुत पुरानी और प्रसिद्ध जगह है हुगली नदीके किनारे ३ मील तक खूबसूरत मकान बने हुए हैं, जो सन् १७६८ से १७८० ई० तक बने थे। यहाँ अवधके नवाब वाजिद अलीशाह सन् १८५७ से सरकारी पेन्सन पाकर रहते थे। सन् १८८७ ई० में उनके मरनेपर सरकारने उनकी जायदाद नीलाम करदी।

कम्पनी बाग– इस शाही नवातीबागको सन् १७८६ में ईष्ट इन्डिया कम्पनीने कायम किया। यह गार्डनरीचके मटियाबुर्जके सामने गवर्नमेन्ट एनजिनियरींग कालेजके पास हवड़ा जिलेमें भागीरथीके पश्चिमी किनारे पर एक मील फैला है। बागका फाटक भागीरथीके पुलसे ३½ मील दक्षिणहै। हवड़ा और शिवपुर गाँव होकर एक अच्छी सड़क वहाँ गई है, जिससे आदमी आसानीसे बागमें पहुँचते हैं और भागीरथीकी नावद्वाराभी आदमी बागमें जाते हैं। बाग दिन भर खुला रहता है।

यह बाग २७२ एकड़ जमीनपर है बागमें बहुतेरी सड़कें बनी हैं। गाँड़ी पर चढ़कर सब जगह आदमी जा सकता है। बागके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास हवड़ा फाटकसे प्रवेश करने पर पहिले एक बटके वृक्षके दोनों तरफ दो पीपलके वृक्ष मिलते हैं। फाटकके दोनों तरफ दो पतली सडक और सामने एक चौड़ी सडक गई है। देखनेवालोंको चौडी सडकसे आगे जाना चाहिये।

थोडे आगे जाने पर सडकके दोनों तरफ पानीकी दो चादर मिलती हैं। उससे आगे कजुआरिनके दरख्तोंके कुञ्जसे बाहर निकलकर एक भूमिके बड़े टुकड़े पर सडक जाती है, जहाँ सडकके दोनों तरफ खजूर लगे हैं। उससे आगे एक नहर पर ३ पुल हैं। नहर पार होने पर दहिने फूल-बाग मिलता है, जहाँ कियारियोंमें खजूर, फूल और फलोंके वृक्ष लगे हैं

फूल और पौधेका एक बँगला है; जिसके फूलोंकी शोभा गरमीकी ऋतुओंमें जाहिर होती है और दूसरे ऋतुओंमें उन पौधोंकी डाँटी और पत्तियोंकी खूबसूरती फूलोंसे भी अधिक देख पड़ती है। बँगलेके खम्भे और सत्तीर लोहेके हैं। बँगलेके सामने बागके कायम करने वाले जनरल कीडका मनूमेन्ट है। उससे आगे जाने पर एक सडक मिलती है। जिसके चन्द सौ गज आगे जाने पर एक चौडी सीधी सडक दहिने देख पडती है, जो बटके वृक्षके पास गई है।

यह बट वृक्ष करीब १२५ वर्षका है जमीनसे ५½ फीट ऊपर उसकी जडका घेरा ५१ फीट और इसके सिरका घेरा लगभग ९०० फीट है इसकी शाखोंसे करीब ३०० बरोह निकलकर नीचे जमीन पकड़ गये हैं। बहुतेरे लटके हुए बरोह गाँठ फोड़े हुए बाँसोंको खड़े करके उनके पोरोंमें कर दिये गये हैं। उससे वे बाँसोंके अन्दर होकर जल्दी जमीन पकड़ लेते हैं। बट वृक्षसे आगे जानेपर एक मनुमेंट मिलता है,जिससे आगे देवदारुके दोहरे कत्तार होकर सड़क दहिने झुकती है।

बहुत आगे जाकर दहिने घूमने पर पौधोंसे पूर्ण अठपहले बनावटका एक बंगला मिलता है। उसका ढाँचा लोहेका है, जिसपर लोहेके जाल लगाये गये हैं, ऊपर घासका पतला छप्पर और मध्यमें गुम्बज है। बङ्गलेका व्यास २१० फीट है, उसका हर एक पहल ८५ फीट लम्बा है। उसके मध्यके गुम्बजकी ऊँचाई ५० फीट है। बङ्गलेमें बहुतेरे घुमावके रास्ते बने हैं और भूमिपर तथा बहुतेरे गमलोंमें अनेक भांतिके पौधे लगाये गये हैं। उसको अङ्गरेजीमें पामहौस कहते हैं।

पामहौसके पश्चिम तरफ आगे जानेपर झीलके किनारे आदमी पहुँचते हैं, जिसमें थोड़े पानीके चिड़ियें हैं। झीलके पास फूल और पौधेका एक तीसरा बङ्गला है, जिसकी ऊँचाई पामहौस और अर्चिडहौसके बीच बीच है।

कम्पनीबागमें प्रायःसब देशोंके दरख्त लगाये गये हैं। लोहेके पत्तरोंपर बहुतेरे वृक्षोंका वृत्तान्त लिख करके उनके पास खड़ेकर दिये गये हैं।

हुगली गङ्गाके पासके कल कारखाने—शिवपुर और रामकृष्टोपुरके पास जूट दबाने और इसकी दस्तकारीके लिये बहुत बड़ी इमारते हैं।

हवड़ाके उत्तर गुसरी गाँवमें रुईका मिल (कारखाना) है।

हवड़ासे ६ मील उत्तर रेलवे-स्टेशनके पास वाली नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८९१ में १६७०० मनुष्य थे। वह पवित्र स्थान समझा जाता है और उसमें हजारों घर ब्राह्मण रहते हैं। उसके पास गङ्गाके किनारे पर एक उत्तम मकानमें एक बड़ा पुस्तकालय और पढ़ने और लेक्चर देनेके कमरे हैं और बालीमें कागजका एक मिल है।

बालीके सामने 'बड़ानगर' बस्तीमें बोरा बनानेका एक मिल है। उससे थोड़े उत्तर एक बस्तीमें सन् १८५२ के बने हुए बहुतेरे देव मन्दिर हैं।

रिसेरा नामक एक छोटे गाँवके पास जूटका मिल है। वहाँ रिसेरा हौस नामक एक उत्तम पुराना मकान है।

रिसेराके सामने नदीके बायें किनारे पर अगरपाड़ामें एक गिरजा और एक स्कूल है। उससे ½ मील आगे एकही जगह शिवके २४ मन्दिर हैं, जिससे १ मील आगे बारकपुर है।

सोदपुर—सियालदहके रेलवे स्टेशनसे १० मील उत्तर सोदपुरका रेलवे स्टेशन है। सोदपुरमें पिञ्जरापोल नामक प्रसिद्ध पशुशाला है। प्रति वर्ष गोपाष्टमी (कार्त्तिक शुक्ल अष्टमी) को पिञ्जरापोलका मेला होता है। आर्य्य–सन्तान वहाँ गौवोंकी पूजा करते हैं। मेलेके समय कलकत्तेसे स्पेशल गाड़ी खुलती हैं।

सात वर्ष हुए कलकत्ते–बड़ेबाजारके अनेक मारवाड़ी, खत्री, भाटिये और बंगाली इत्यादि धार्मिक पुरुषोंने गौवंशकी रक्षाके निमित्त पिञ्जरापोल स्थापित किया। उसमें सन् १८९० ई० में ७०९ गौ, बैल और बछड़े, १३० घोड़े इत्यादि बीमार तथा लङ्गड़े चार पायें और ३५५ चिड़ियें थीं।

इतिहास—कालीके नामसे कलकत्ता नामकी सृष्टि है। अठारहवीं सदीकी किताबोंमें कलकत्ताका नाम कालीकोटा लिखा है।

सन् १६३६ में मुगल बादशाह शाहजहँने इष्टइंडियन कम्पनीको बंगालेके साथ तिजारत करनेकी आज्ञा दी। सन् १६४० में अङ्गरेजी कोठी हुगलीमें कायम हुई।

सन् १६८६ ई० में अङ्गरेजी एजेंट हुगलीकी कोठी छोड़कर सतानतीको चले गये, जो हुगली अर्थात् भागीरथी नदीके किनारे पर एक गाँव था। अब वह जगह टकसालसे सोभा-बाजार तक कलकत्तेका हिस्सा बनी है। पीछे बादशाह औरङ्गजेबके फौजदारने अङ्गरेजी एजेंटपर हमला किया, जिससे अखीरमें एजेंटको सतानती छोड़कर मद्रास जाना पड़ा। उसके पश्चात् बादशाहने अङ्गरेजी तिजारतसे अपना फायदा समझकर लूटी हुई चीजोंका ६० हजार रुपया हर्जा देकर अङ्गरेजी एजेंट मिष्टर चार्नकको मद्राससे बोला लिया। चार्नकने सन् १६९० ई० के २४ अगस्तको वर्तमान कलकत्ता शहरकी नेव दी।

सन् १६९८ में बादशाहकी तरफसे कम्पनीको अपनी हिफाजतके लिये किला बनाने का हुकुम मिला। जिस जगहपर अब कष्टमहौस और जनरल पोष्ट-आफिस है उसी जगह किला बना और उस समयके इङ्गलैंडके बादशाह विलियमके नामसे किलेका नाम फोर्ट विलियम पड़ा।

सन् १७०० ई० में औरङ्गजेबके पुत्र प्रिंस आजीमने कीमती नजर लेकर कम्पनीको सतानती, कलकत्ता और गोविन्दपुर इन ३ गाँवोंको खरीदनेका हुकुम दिया, जो हुगली गङ्गाके किनारेपर चितपुरसे कूलीबाजार तक थे और कलकत्ता क्लाइव स्ट्रीटके उत्तर बाबूघाट तक करीब १०० गजकी लम्बाई में था।

सन् १७१६ में फर्रुखशियरकी तरफसे कम्पनीको कलकत्तेके दक्षिण हुगलीनदीके दोनों किनारे ३७ गाँव खरीदनेका हुकुम मिला; पर बङ्गालके नव्वाब मुर्शिदकुलीखांने जमीन खरीदनेसे उसको गुप्त भावसे रोका; परन्तु उस हुकुमसे कम्पनीको सौदागरीमें बहुत मदद मिली; इससे कलकत्तेकी उन्नति होने लगी।

सन् १७२० में कलकत्तेमें जमीन्दारी आफिस कायम हुआ। वह कलकत्तेके लोगोंके दीवानी और फौजदारी मुकदमोंको देखता था। सन् १७२४ में यूरोपियन लोगोंके मुकदमें देखनेके लिये एक महकमा कायम हुआ। सन् १७२६ में मद्रास, वम्बई और बङ्गाल जुदे जुदे ३ हाते बनाये गये।

सन् १७४२ में महाराष्ट्रोंने बङ्गालपर आक्रमण करके बालासोरसे राजमहलतक मुल्कको बरबाद करके अन्तमें हुगलीको दखल करलिया। वहाँके वासिन्दे कलकत्तेमें भाग गये। उस समय अङ्गरेजी प्रेसीडेंटको हुकुम मिला कि सतानतीनीके उत्तर हिस्सेसे गोविन्दपुरके दक्षिण हिस्से तक कम्पनीकी जगह खाइसे घेर दी जाय। ६ मासमें ३ मील खाई तय्यार हुई, जो मरहठोंकी खाई कही जाती थी वह पीछे भरदी गई। सन् १७४८ में महाराष्ट्रोंके हमलेसे बचनेके लिये एक कमीटी नियत हुई।

सन् १७५६ई० में बङ्गालके नव्वाब अलीवर्दीखांके मरनेपर उसका पोता सिराजुद्दौला नव्वाब बना। सन् १७५७ में उसने कलकत्तेपर आक्रमण करके अङ्गरेजोंको निकाल दिया; पर थोड़ेही दिन बाद अङ्गरेजोंने सिराजुद्दौलाको जीतकर कलकत्तेको दखल करके अलिवर्दीखांके दमाद मीरजांफरको बङ्गालका नव्वाब बनाया (मुर्शिदाबादके वृत्तान्तोंमें देखो)।

सन् १७५७ में वर्तमान फोर्टविलियम किलेका काम आरम्भ हुआ। नया किला तय्यार होनेपर पुराना किला धीरे धीरे बरबाद होगया।

सन् १७७३ में पार्लियामेंटकी तरफसे कम्पनीको नया अहद्नामा हुआ, जिसके अनुसार यह नियम बना कि कलकत्तेके गवर्नरको गवर्नर जनरल बनाया जाय, इनको २५ हजार पाउण्ड तनखाह मिलै, मददके लिये कौंसल कायम हो और तमाम अङ्गरेजी हिन्दुस्तान इनके मातहत रहे और एक सुप्रिमकोर्ट (बड़ी कचहरी), जिसमें एक चीफ जस्टिस और ३ जज रहें कलकत्तेमें कायम हो। सन् १७७४ में २५०००० रुपये सालाने तनखाहपर वारेन हेष्टिंग पहले पहल हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल हुए।

हिन्दके गवर्नर और गवर्नर जनरलोंकी फिहरिस्त, जो 'ईष्ट इण्डिया कम्पनी' के राज्यमें हुए, नीचे हैं—

नम्बर नाम और हिन्दमें आनेका समय।

(१) पहला गवर्नर लार्डक्लैब सन् १७५८ई०।
(२) हारीवरिलस्ट सन् १७६७।
(३) जानकारटियर सन् १७६९।
(१) पहला गवर्नर जनरल बारेन हेष्टिंग सन् १७७४।
(२) सरजान मेकफर्सन सन् १७८५
(३) मार्किस आफ कार्नवालिस—सन् १७८६।
(४) सरजान शोर (लार्ड टेनमथ) सन् १७९३।
(५) सर एल्ह्रेड क्लार्क सन् १७९८।
(६) लार्ड मारिंगटन (मार्किस आफ वेलस्ली) सन् १७९८।
(७) मार्किसआफ कर्नवालिस दूसरी बार सन् १८०५।

नम्बर नाम और आनेका समय।

(८) सरजार्जबार्ली सन् १८०५।
(९) अर्ल आफ मिन्टो सन् १८०६।
(१०) अर्ल आफ माइरा (मार्किस आफ हेष्टिंग) सन् १८१५।
(११) जान एडम सन् १८२३।
(१२) अर्ल एम्हरेष्ट सन् १८२३।
(१३) लार्ड विलियम केवेंडिस वेंटिक सन् १८२८।
(१४) सर चार्ल्स मेटकाफ सन् १८३५,
(१५) लार्ड आलकेंड सन् १८३६।
(१६) अर्ल आफ एलेनवरा सन् १८४२।
(१७) वैकौन्ट हार्डिंग सन् १८४४।
(१८) अर्ल आफ डलहौसी (पीछेसे मार्किस) सन् १८४८।
(१९) अर्ल केनिंग सन् १८५६।

हिन्दके वाइसराय, जो बादशाही राज्यमें हुए, नीचे लिखे जाते हैं;—

नम्बर नाम और आनेका समय।

(१) अर्ल केनिङ्ग सन् १८५८।
(२) अर्ल आफ एलजिन सन् १८६२।
(३) सर जान लारेंस (लार्ड लारेंस) सन् १८६४।
(४) अर्ल आफ मेओ सन् १८६९।
(५) अर्ल आफनार्थ ब्रूक सन् १८७२।

नम्बर नाम और आनेका समय।

(६) अर्ल आफ लिटन सन् १८७६।
(७) मार्किस आफ रिपन सन् १८८०।
(८) लार्ड डफरिन सन् १८८४।
(९) लार्ड लैंसडौन १८८८।
(१०) लार्ड एलगिन सन् १८९२।

चौबीस परगना जिला—यह प्रेसीडेंसी विभागके दक्षिण-पश्चिमका जिला है इसके उत्तर नदिया जिला, पूर्वोत्तर जशर जिला; पूर्व खुलना जिला और सुन्दर वन; दक्षिण समुद्र तक फैला हुआ सुन्दर बन और पश्चिम हुगली नदी अर्थात् भागीरथी है। इस जिलेका

क्षेत्रफल (सुन्दर वनकी विना नांपी हुई भूमि और कलकत्तेका ३१ वर्ग मील क्षेत्रफलको छोड़कर) २०९७ वर्ग मील है। कलकत्तेकी दक्षिणी शहरतली अलीपुर जिलेका सदर स्थान है। एक खास अफसर सुन्दरवनकी मालगुजारीका प्रबन्ध करता है। इस जिलेके उत्तरका भाग बड़ा उपजाऊ है और पूर्वोत्तरका भाग ऊँचा है। इसमें जगह जगह ताड़के कुञ्ज लगे हैं। प्रत्येक वस्तियोंके आस पास वाग लगे हुए हैं। जिलेके दक्षिणके भागमें ३ जङ्गल हैं, इनके अतिरिक्त सुन्दरवनसे उत्तर इस जिलेमें परती जमीन नहीं है। जिलेमें हुगली, विद्याधरी पियाली, कालिंदी और इच्छामती ये ५ प्रधान नदियाँ और कई एक नहर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चौबीस परगना जिलेमें १६१८४२० मनुष्य थे; अर्थात् १००३११० हिन्दू, ६०४७२३ मुसलमान; ९९२८ क्रस्तान, ४१४ पहाड़ी और जङ्गली, ३३० बौद्ध, १० पारसी और ५ ब्राह्म। जातियोंके खानेमें २१७१८७ मलाह मछुहा, इत्यादि; १४५४९६ कैवर्त, ७८६५४ वागड़ी, ६२६७० ब्राह्मण, ५६६८२ ग्वाला, ३७१७१ तियर, ३६५८६ चमार, ३००१३ कायस्थ, ६०५४ वनियाँ, ४०७२ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शहर कलकत्तेको छोड़कर चौवीस परगना जिलेके कसवोंमें इस भांति मनुष्य थे;—कलकत्तेकी दक्षिणी शहरतलीमें ६९६४२, दो शहर-तलियोंमें ५९५८४; दक्षिणी वारकपुरमें ३५६४७, वड़ानगर अर्थात् उत्तरी शहरतलीमें ३४३७८, नइहाटीमें २९७२४, उत्तरीय वारकपुरमें २०९८० वसीरहाटमें १५१०९, बदु-रियामें १३७४४, दक्षिणी दमदममें ११०३७, राजपुरमें १०९४०, उत्तरी दमदम और छावनीमें १०३९६ और वारासत, जयनगर, गोवरडङ्गा, इटण्डामें दश हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—मुगलोंके राज्यके समय चौवीसपरगना 'सातगाँव' सरकारका एक हिस्सा था। सातगाँव, जो अव हुगली जिलेमें हुगली नदीके पश्चिम किनारे पर एक साधारण वस्ती है, एक समय वङ्गालका प्रधान वन्दरगाह था।

सन् १७५७ ई० के २० सितम्बरकी संधिके अनुसार वङ्गालके नव्वाव मीरजाफरने इस जिलेकी जमीन्दारी हक इष्ट इन्डियन कम्पनीको दे दिया। उस समय यह कलकत्तेकी जमीन्दारी या चौवीसपरगनाकी जमीन्दारी करके प्रसिद्ध था और इसका क्षेत्रफल केवल ८८३ वर्ग मील था। सन् १७५९ में दिल्लीके वादशाहने लार्ड क्लाइवको चौविसपरगनामें जागीरकी सनद दी, जिसके अनुसार पूरा मालिकाना हक जिन्दगीभरके लिये क्लाइवको और उसके वाद सर्वदाके लिये ईष्टइन्डियन कम्पनीको मिलगया। कलकत्ते शहर और वन्दरगाहपर पहिलेहीसे कम्पनीका अधिकार हो गया था।

चौवीसपरगना जिलेके हाकिमोंको अखतियार कलकत्ते शहर पर नहीं है। सन् १८६१ में चौवीसपरगना जिलेमें ८ सवडिवीजन नियत हुए;—डायमण्ड हारवर, अलीपुर, वरुईपुर, दमदम, बारकपुर, वारासत, वसरहाट और सतखीरा। सन् १८८२ में खुलना जिला बनने पर सतखीरा सवडिवीजन उसमें कर दिया गया।

वङ्गाल प्रदेश—इसमें ४ सूबे हैं;—वङ्गाल, बिहार, उड़ीसा और छोटा नागपुर। बङ्गाल प्रदेशके पूर्व आसाम; दक्षिण वङ्गालेकी खाड़ी; पश्चिम मदरास हाता, मध्यदेश, रीवाँका राज और पश्चिमोत्तर देश; और उत्तर नैपाल, शिकम और भूटानके राज्य हैं। यह

लेफ्टिनेंटी सन् १८५९ ई० में नियत हुई इसके लेफ्टिनेंट गवर्नर कलकत्तेके पास अलीपुरमें रहते हैं। सन् १८९१ के अनुसार इस प्रदेशके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल १५१५४३ वर्ग मील और देशी राज्योंका क्षेत्रफल ३५८३४ तथा दोनोंका १८७३७७ वर्ग मील है। यह देश भारतवर्षके सम्पूर्ण देशोंसे अधिक आबाद और उपजाऊ है । इसमें धान बहुत उत्पन्न होता है ।

बङ्गाल प्रदेशमें ९ भाग और ४७ जिले इस भाँति हैं;—(सूबे बङ्गालमें) (१) वर्द्वान विभागमें हुगली, हवड़ा, वर्द्वान, वीरभूमि, बाँकुड़ा और मेदनीपुर; (२) प्रेसीडेंसी बिभागमें चौबीस परगना (और कलकत्ता), नदिया, जशर, मुर्शिदाबाद और खुलना; (३) राजशाही विभागमें पवना, राजशाही; बुगड़ा, रङ्गपुर, दीनाजपुर, दार्जिलिङ्ग, जलपाइगोड़ी और बाकरगंज (४) ढाका विभागमें फरीदपुर, ढाका और मैमनसिंह; (५) चटगाँव विभागमें नोआखाली, चटगाँव, पहाड़ी चटगाँव और टिपरा; (सूबे विहारसें) (६) भागलपुर विभागमें मालदह, पुर्निया, भागलपुर, मुङ्गेर और सन्थाल परगना; (७) पटना विभागमें गया पटना, शाहाबाद, सारन, चम्पारन, मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा; (सूबे उड़ीसेमें) (८) उड़ीसा विभागमें वालासोर, कटक, पुरी, बाँकी और अङ्गोल (सूबे छोटा नागपुरमें) (९) छोटा नागपुर विभागमें हजारीवाग, लोहारडागा मानभूमि और सिंहभूमि जिला ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बङ्गालके अङ्गरेजी राज्यमें ७१३४६९८७ मनुष्य थे; अर्थात् ३५५६३२९९ पुरुष और ३५७८३६८८ स्त्रियाँ । इनमें ४५३२०१३४ हिन्दू, २३४३७५९१ मुसलमान, २२९४५०६ जङ्गली जातियाँ इत्यादि. १९०८२९ कृस्तान १८९१३२ बौद्ध, ७०४२ जैन, १४४७ यहूदी, ४१२ सिक्ख, १७९ पारसी, ५७१८ जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया और १७ छोटे छोटे मजहबवाले थे। इनमें सैकड़े पीछे ५३ बङ्गला भाषा वाले, ३६½ हिन्दी भाषावाले ६½ उड़िया भाषावाले, २संथाली भाषावाले और २ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे ।

बङ्गाल प्रदेशमें अर्थात् बङ्गालके लेफ्टिनेण्ट गवर्नरके आधीनके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय १० हजारसे अधिक मनुष्य थे;—

नं०	शहर या कसवा	जिला	जन-संख्या
१	कलकत्ता	२४ परगना	६८१५६०
	दो शहर तलियाँ	तथा	५९९८४
२	पटना और बाँकीपुर	पटना	१६५१९२
३	हवड़ा	हवड़ा	११६६०६
४	ढाका	ढाका	८३३२१
५	गया	गया	८०३८३
६	दरभङ्गा	दरभङ्गा	७३५६१
७	कलकत्तेकी दक्षिणी शहर-तली	२४परगना	६९६४२
८	भागलपुर	भागलपुर	६९१०६
९	छपरा	सारन	५७३५२
१०	मुङ्गेर	मुङ्गेर	५७०७७
११	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९
१२	टिहार	पटना	४७७२३
१३	कटक	कटक	४७१८६
१४	आरा	शाहाबाद	४६९०५
१५	दानापुर	पटना	४४४१९
१६	श्रीरामपुर	हुगली	३५९५२
१७	दक्षिण बारकपुर	२४ परगना	३५६४७
१८	मुर्शिदाबाद	मुर्शिदाबाद	३५५७६

नं०	शहर या कसवा	जिला	जन-संख्या
१९	वर्द्वान	वर्द्वान	३४४७७
२०	बड़ानगर	२४ परगना	३४२७८
२१	हुगली और चिसुरा	हुगली	३३०६०
२२	मेदिनीपुर	मेदनीपुर	३२२६४
२३	संतीपुर	नदिया	३०४३७
२४	नइहाटी	२४ परगना	२९७२४
२५	पुरी	पुरी	२८७९४
२६	कृष्णगढ़	नदिया	२५५००
२७	चटगाँव	चटगाँव	२४०६९
२८	वरहमपुर	मुर्शिदाबाद	२३५१५
२९	सिराजगंज	पवना	२३२६७
३०	वेतिया	चम्पारन	२२७८०
३१	सहसराम	शाहाबाद	२२७१३
३२	हार्जीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
३३	रामपुर वौलिया	राजशाही	२१४०७
३४	उत्तरीय वारकपुर	२४ परगना	२०९८०
३५	वालासोर	वालासोर	२०७७५
३६	रांची	लोहारडागा	२०३०६
३७	बांकुण्डा	बांकुण्डा	१८७४३
३८	डुमरांव	शाहाबाद	१८३८४
३९	वैद्यवटी	हुगली	१८३८०
४०	विष्णुपुर	बांकुण्डा	१८१९०
४१	जमालपुर	मुङ्गेर	१८०८९
४२	ब्राह्मण बैरिया	टिपरा	१८००६
४३	टङ्गैल	मैमनसिंह	१७९७६
४४	नारायणगञ्ज	ढाका	१७७१५
४५	सिवाँन	सारन	१७७०९
४६	केंद्रपाड़ा	कटक	१७६४७
४७	मधुवनी	दरभंगा	१७५४४
४८	वाली	हवड़ा	१६७००
४९	हजारीबाग	हजारीवाग	१६६७२
५०	पवना	पवँना	१६४८६
५१	बक्सर	शाहाबाद	१५५०६
५२	वरिशाल	वाकरगञ्ज	१५४८२
५३	जमालपुर	मैमनसिंह	१५३८८
५४	वसरहाट	२४ परगना	१५१०९
५५	कुमिला	टिपरा	१४६८०
५६	पुर्निया	पुर्निया	१४५५५
५७	रंगपुर	रंगपुर	१४२१६
५८	दार्जिलिंग	दार्जिलिंग	१४१४५
५९	किशोरगञ्ज	मैमनसिंह	१३९८०
६०	घटाल	मेदनीपुर	१३९४२
६१	इंगालिसवाजार	मालदह	१३८१८
६२	रानीगञ्ज	वर्द्वान	१३७७२
६३	मंदारीपुर	फरीदपुर	१३७७२
६४	रिविलगञ्ज	सारन	१३४७३
६५	सोनामुखी	वांकुण्डा	१३४६२
६६	नवद्वीप	नादिया	१३३३४
६७	मोतीहारी	चंपारन	१३१०८
६८	वहुरिया	२४ परगना	१२७४४
६९	लालगञ्ज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
७०	जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
७१	बाढ़	पटना	१३३६३
७२	फीरोजपुर	वाकरगञ्ज	१२२४६
७३	दीनाजपुर	दीनाजपुर	१२२०४
७४	पुरुलिया	मानभूमि	१२१२८
७५	जाजपुर	कटक	११९९२
७६	मैमनसिंह	मैमनसिंह	११५५५
७७	टेकारी	गया	११५३२
७८	चन्द्रकोना	मेदनीपुर	११३०९
७९	साहवगञ्ज	संथालपरगना	११२९७
८०	कुष्टिया	नदिया	१११९९
८१	कांडी	मुर्शिदावाद	१११३१
८२	दक्षिण दमदम	२४ परगना	११०३७
८३	राजपुर	२४ परगना	१०९४०
८४	रोसरा	दरभंगा	१०८८७
८५	चत्तरा	हजारीवाग	१०७८३
८६	फरीदपुर	फरीदपुर	१०७७४
८७	शेरपुर	मैमनसिंह	१०७४४
८८	उत्तरीयदमदम	२४ परगना	१०३९६
८९	भवुआ	शाहावाद	१०३१६
९०	खरवार	मेदनीपुर	१००८३

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बङ्गालके देशी राज्योंके ३५८३४ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३२९६३७९ मनुष्य थे; अर्थात् १६७३१८६ पुरुष और १६२३१९३ स्त्रियाँ। इसमें २६०३८९० हिन्दू, ४५८५५५ जङ्गली जातियाँ, २२०७५६ मुसलमान, ५६७९ जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया, ५५९५:बौद्ध, १६५५क्रस्तान, २२८ जैन, १६ अन्य, और५ सिक्ख थे। इनमें सैकड़े पीछे ४५$\frac{}{४}$ उड़िया भाषा वाले१९$\frac{३}{८}$ बङ्गला बोलने वाले, १५$\frac{१}{४}$ हिन्दी वाले, ८$\frac{१}{८}$ संथाली भाषावाले, ३$\frac{१}{४}$ टिपरा भाषाके, ३$\frac{}{४}$ मुण्डा आदि और ५ अन्य भाषा वाले मनुष्य थे। बङ्गालके देशी राज्योंके केवल २ कसबेमें ५ हजारसे अधिक मनुष्य थे;–कूचबिहार राज्यके कूंचबिहारमें ११४९१ और उड़ीसा महालके खांडपाड़ामें ५०५१।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बङ्गाल प्रदेशकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे।

जाति	प्रति १००० में	
	पुरुष	स्त्री
वैद्य	७३४	१३९
करन	६०४	१६
कायस्थ ...	५५५	४१
ब्राह्मण	४७७	२३
बनियाँ	२८०	४

सूबे बङ्गाल—सूबे बङ्गाल अर्थात् खास बङ्गालके; जिसके निवासी बङ्गाली कहे जाते हैं, पूर्व आसाम, दक्षिण बङ्गालेकी खाड़ी, दक्षिण-पश्चिम बङ्गाल प्रदेशमें उड़ीसा पश्चिम बङ्गाल प्रदेशमें सूबे बिहार और छोटा नागपुर; और उत्तर स्वतंत्र राज्य भूटान है। खास बङ्गालमें बर्दवान, प्रेसीडेन्सी; राजशाही, ढाका और चटगांव इन ५ किस्मतोंमें २६ जिले हैं सूबे बङ्गालमें गङ्गा, ब्रह्मपुत्र, तिष्टा, दामोदर, रूपनारायण इत्यादि नदियाँ बहती हैं; बर्दवान जिलेमें कोयलेकी प्रसिद्ध खाने हैं; कई एक जिलोंसे कपड़े और रेशमकी दस्तकारी होती है और खजूरकी चीनी बनती है।

महाभारत और पुराणोंमें बङ्गालका नाम बङ्ग लिखा है; किन्तु ठीक नहीं जान पड़ता है कि बङ्गदेशकी सीमा किस स्थानसे किस स्थान तक थी महाभारत आदिपर्वके १०४ वें अध्यामें लिखा है कि वली नामक एक राजाकी सुदेष्णा स्त्री थी उसने एक अन्धे ऋषिसे संभोग किया, जिससे अङ्ग बङ्ग कलिङ्ग पुण्ड्र और सुह्म ५ पुत्र उत्पन्न हुए। उनके नामसे एक एक देश प्रख्यात हुआ; अर्थात् अङ्गके नामसे अङ्गदेश, बङ्गके नामसे बङ्गदेश, कलिङ्गके नामसे कलिङ्गदेश, पुण्ड्रके नामसे पुण्ड्रदेश और सुह्मके नामसे सुह्मदेश।

बंगलाबर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ ৠ ঌ এ ঐ ও ঔ অং অঃ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ
ক খ গ ঘ ঙ চ ছ জ ঝ ঞ ট ঠ ড ঢ ণ ত থ

द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह
দ ধ ন প ফ ব ভ ম য র ল ব শ ষ স হ

का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
কা কি কী কু কূ কে কৈ কো কৌ ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ ৮ ৯

सूबे बङ्गालके दिहाती मकानोंकी दीवारें टट्टियोंकी और छप्पर फूसके होती हैं। बस्तियोंके मकानोंके झूँड अलग अलग रहते हैं। बहुतेरे मकानोंके आस पास केले, खजूर, नारियल, इत्यादिके, वृक्ष लगाये जाते हैं। बहुतेरे हिन्दू अपने अपने गृहके पास देवताके अर्थ एक कोठरी रखते हैं।

खास बङ्गालेमें अधिक धान उत्पन्न होता है और लाखों आदमी दूसरे देशोंसे आकर इस सूबेमें व्यापार या नौकरी करते हैं इसदेशके वहुतेरे लोग रेशमके कीड़ोंको पालते हैं और रेशम सम्बन्धी काम करते हैं। वङ्गालियोंकी भाषा बङ्गला है, जिसमें संस्कृत शब्द बहुत मिले हुए हैं। इनके शरीर निर्बल हैं; किन्तु इनकी बुद्धि प्रबल होती है; वे इस समय अङ्गरेजी शिक्षामें निपुण होकर बड़े बड़े ओहदे पाते हैं। बङ्गालेकी अनेक स्त्रियाँ भी प्रतिवर्ष बी. ए. एम. ए. पास करती हैं।

सर्वसाधारण बङ्गाली धोतीके ऊपर कुर्ता या कोट पहनकर कन्धेपर चादर रखते हैं। इनका शिर प्रायः सर्वदा उघार रहता है। भारतवर्षके अन्य हिन्दुओंके समान इनके शिखा रखनेकी रीति नहीं है। इनमें स्नान करनेकी चाल बहुत है। वे हिन्दू धर्ममें बड़े दृढ़ होते हैं और अपने धर्मके लिये बड़ा आन्दोलन करते हैं। बङ्गालकी स्त्रियोंमें परदेमें रहनेकी चाल बहुत कम है; वे प्रायः झीने कपड़े पहनती हैं; कुर्ते या चोली पहननेकी रीति इनमें नहीं है।

वङ्गालियोंका साधारण भोजन शाक भात और मछली है। बहुतेरे धनी लोग मछलीके वास्ते अपने मकानके पास दीर्गी बना रखते हैं।

आश्विनके नवरात्रमें बङ्गालेके स्थान स्थान पर कालीजीकी पूजाका उत्सव बड़े धूम धामसे होता है। कालीजी और शिव आदि देवताओंकी मृणमय विचित्र प्रतिमा बनाई जाती हैं। बङ्गाली लोग बड़े उत्साहसे कालीजीकी पूजा करते हैं और अंतमें दशहरेके दिन प्रतिमाओंको नदीके जलमें विसर्जन कर देते हैं।

बङ्गालेमें ब्राह्म समाज नामकी एक नई संप्रदाय नियत हुई है। सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय भारतवर्षमें इस संप्रदायके ३४०० मनुष्य थे जिनमें ७०८ कलकत्ते शहरमें थे। राजा राममोहनरायने इस समाजके मतकी नेव दी; जिनके उद्योगसे भारत–गवर्नमेन्ट ने सन् १८२९ ई० में आइन द्वारा सती होनेकी रीति बन्द करदी सन् १८३० में कलकत्तेमें इस मतकी नेव पड़ी। उसी सनसे ब्राह्म सम्वत् आरम्भ हुआ। राजा राममोहन रायके दश वर्ष हिन्दुस्तान छोड़ देनेसे ब्राह्म समाज निर्बल होगया था। सन् १८४२ में देवेन्द्रनाथ टैगोर इस समाजमें मिलकर लोगोंको धीरे धीरे एक ईश्वरकी पूजामें विश्वास दिलाने लगे। "एकमेवाद्वितीयंब्रह्मनेहनानास्तिकिञ्चन" इत्यादि श्रुति उन लोगोंका मूल है। ब्रह्मैव एकमिदमग्र आसीन्नान्यत्किञ्चनासीत्तदिदंसर्वमसृजत्। तदेवानित्यंज्ञानमनन्तंशिवं स्वतंत्रंनिरवयवमेकमेवाद्वितियंसर्वव्यापिसर्वनियन्तृसर्वाश्रयंसर्ववित् सर्वशक्तिमद्ध्रुवंपूर्णमप्रतिममिति। एकस्यतस्यैवोपासनयापारत्रिकमैहिकंचशुभम्भवति। तस्मिन्प्रीतिस्तस्यप्रियकार्यसाधनञ्चतदुपासनमेव॥ अर्थात्–पूर्वमें एक ब्रह्महीथा और कुछ न था उसने संपूर्ण पदार्थ उत्पन्न किये वही ब्रह्म नित्य, ज्ञानस्वरूप, अनन्त, कल्याणकारी, स्वतन्त्र, निरवयव, एकही, अद्वितीय, सर्वव्यापी, सर्वनियन्ता, सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, अचल, पूर्ण और अनुपम है। एकही

उसकी उपासनासे परलोक और इस लोकमें शुभ होता है। ब्रह्ममें प्रीतिः करना और उसके प्रिय काम करना उसकी उपासना ही है। यही ब्राह्म समाजियोंका मत है। वे लोग जाति-विभागकी रीतिको नहीं मानते हैं। सन् १८४५ में चारों वेदोंसे बातें निकालकर एक ग्रन्थ बनाया गया और इस मतके लोग उसको शिक्षाके कामोंमें लाने लगे। सन् १८४७ तक इस समाजके मतमें ७६७ मनुष्य शामिल हुए। सन् १८५८ में २० वर्षकी अवस्थाके बाबू केशवचन्द्रसेन इस समाजमें आमिले, उस समय १० वर्षके बीच समाज बहुत उन्नतिकर चुका था, बङ्गालके भिन्न भिन्न देशोंमें उसकी शाखा नियत हो चुकी थीं। देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशवचन्द्रसेनके मिले हुए असरसे चन्द इस्तमाली सुधार हो गये। केशवचन्द्रसेनकी वक्तृता बड़ी हृदय ग्राहक थी। वह ब्राह्म समाजमें बड़े प्रसिद्ध हुए। उनकी पुत्रीका व्याह कूचविहारके वर्तमान महाराजसे हुआ। वह सन् १८८४ ई० में मर गये। कलकत्तेसे ब्राह्म-समाज वालोंको "तत्त्वबोधिनी प्रतिका" नामक एक अखबार निकलता है।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय सुन्दरवन छोड़ करके सूबे बंगालका क्षेत्रफल ७०४३० वर्ग मील था। जातियोंके खानेमें २००६३४० कैवर्त, १५६४००० चण्डाल, १०७६८५४ ब्राह्मण, १०५६०९३ कायस्थ, ७२०३०२ बागड़ी, ६१३१३२ ग्वाला, ५४७७३२ सद्गोप, ५१५०४२ तेली और काल्ह, ४३८५४५ वैष्णव, ४०९६६२ चमार और मोची, ३८२५०६ सूण्डी, ३७४६५५ जालिया, ३२४५६८ पोड़, ३१७७८९ बनियाँ, २८५६२० लोहार, २५२४१८ बाउरी, २५२२९६ कुह्मार, २२८६७५ तियर, ११०५३९ राजपूत, ८७५३६ वैदिया और बाकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

इतिहास—सन् ईस्वीकी बारहवीं सदीके अन्त तक बङ्गालमें गङ्गाके नीचेकी घाटीमें बहुतेरे छोटे छोटे राजा राज्य करते थे। सन् १२०० से बङ्गालमें मुसलमानोंका विजय आरम्भ हुआ लगभग सन् १२१० से १३३६ तक बंगालकी हुकूमत करनेवाले गवर्नरोंको मुसलमान बादशाह लोग कायम करते थे। सन् १३३६ से १५३९ तक मुसलमान गवर्नर स्वाधीन रहे। सन् १५३९ में पठानोंने बंगालको अपने अधिकारमें कर लिया। सन् १५७६ में दिल्लीके बादशाह अकबरने पठानोंका विनाश करके बंगालको मुगलोंके राज्यमें मिला लिया। स १७६५ में ईष्टइन्डिया कम्पनीने बिहार और उड़ीसेके साथ बंगालको लेलिया। प्रथम मुसलमानोंने समय समयपर हिन्दुओंके तीर्थोंको नष्ट भ्रष्ट करते थे, मन्दिरोंको तोड़ते थे, इनकी धर्म पुस्तकोंको जलाते थे और इनके धर्म कर्ममें अनेक भांतिकी बाधा डालते थे; अङ्गरेजोंके राज्य होनेसे यह सब विपत्ति जाती रही; हिन्दू इत्यादि सब मतके लोग स्वतन्त्र भावसे अपने अपने मतका पालन करने लगे।

हवड़ा।

कलकत्तेके सामने पश्चिम भागीरथी गङ्गाके दूसरे पार अर्थात् दहिने किनारे पर सूबे बंगालके बर्द्धवान विभागमें जिलेका सदर स्थान हवड़ा एक शहर है, जिसको कलकत्तेकी शहरतली कहना चाहिये। जो लोग पश्चिमसे कलकत्ता जाते हैं, वे हवड़ेमें रेलगाड़ीसे उतर भागीरथीको पुल द्वारा पार होकर कलकत्तेमें पहुँचते हैं वहाँ भागीरथीपर नावोंका पुल बना है। मंगल और शुक्रवारको पुलका एक भाग ३ घण्टे तक खोल दिया जाता है; उस मार्गसे

सम्पूर्ण नाव और जहाज पुलसे निकल जाते हैं । पुलपर विजुलीकी रोशनी होती है । पुलसे दक्षिण बहुतेरी नाव तैयार रहती हैं, जो एक पैसा लेकर आदमीको पार उतार देती हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हवड़ामें ११६६०६ मनुष्य थे; अर्थात् ७०४७७ पुरुष और ४६१२९ स्त्रियां । इनमें ८६२४७ हिन्दू, २८३६६ मुसलमान, १८६७ क्रूस्तान, ५६एनिमिष्टिक, २९ बौद्ध, १० यहूदी, ७ जैन और ३४ दूसरे थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारत वर्षमें २४ वाँ और सूबे बंगालमें दूसरा शहर है ।

रेलवे स्टेशनसे लगभग ½ मील उत्तर चुरू वाले राजा शिवबक्स बागला बहादुरकी दुमंजिली धर्मशाला बनी हुई है जिसमें मुसाफिर लोग ३ दिन तक टिक सकते हैं । स्टेशनसे दक्षिण गङ्गाके किनारे पर बर्न कम्पनीका बड़ा कल कारखाना है, जिसमें रेल पुल, मकान इत्यादिके कामके लिये लोहे और पीतलके संरजाम तैयार होते हैं । इनके अतिरिक्त हवड़ेमें ईष्ट इण्डिया रेलवेका बड़ा स्टेशन, अनेक प्रकारके मिल अर्थात् कल कारखाने, बहुतेरे स्कूल और कलकत्तेके सौदागरोंके दिहाती मकान बने हुए हैं और एक मजिष्टर रहता है । शिवपुरके दक्षिण प्रसिद्ध कम्पनीबाग और इंजिनियरिंग कालिज है ।

हवड़ा जिला—यह जिला बर्द्दवान विभागमें हुगली जिलेके दक्षिण ४७३ वर्ग मीलमें त्रिभुजाकार फैला हुआ है । इसके उत्तर वालीखाल और हुगली जिलेकी दक्षिणी सीमा पूर्व भागीरथी नदी, दक्षिण भागीरथी और रूपनारायण नदी और पश्चिम रूपनारायण नदी है । जिलेमें बहुतेरी छोटी नदियाँ, उलबड़िया और मेदनीपुर नहर और अनेक झील हैं । इस जिलेमें हवड़ा और उलबड़िया २ सबडिवीजन हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हवड़ा जिलेमें ६३५३८१ मनुष्य थे; अर्थात् ५००८७० हिन्दू, १३२११८ मुसलमान, २०९१ क्रूस्तान, २४२ एनिमिष्टिक, ३७ बौद्ध, १३ यहूदी, ६ ब्राह्म, ३ जैन और १ पारसी । जातियोंके खानेमें १५५६५३ कैबर्त, ५४५४३ बागड़ी, ३९१४१ ब्राह्मण, १७३७० ग्वाला, १५८४९ कायस्थ, १५६२३ तियर, १४३५० तांती, १४१३८ पोड़ १२६९२ सदगोप और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे । राजपूत केवल १०३९ थे । सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके हवडा कसबेमें ११६६०६ और वालीमें १६७०० मनुष्य थे जिलेमें शामपुर भी एक छोटा कसबा है ।

चौदहवां अध्याय ।

गंगासागर ।

गंगासागर-स्नानका मेला मकरकी, संक्रान्तिको जो पौष या माघमें होती है, प्रति वर्ष होता है । मेलेके समय कलकत्तेमें साधुओंकी बहुत जमात आती हैं, जिनको वहाँके रईस लोग आगबोट और नावोंमें वहाँसे गंगासागर भेजते हैं और खाने पीनेकी सामग्री उनके साथ कर देते हैं दुकान्दार भी नावहीं पर जाते हैं । कलकत्तेसे ३८ मील दक्षिण 'डायमण्ड हारबर' तक रेल है; परन्तु उससे आगे बिना नावके काम नहीं चलता, इस लिए

प्रायः सब लोग कलकत्तेसे नाव और आगबाटाम चढ़कर गंगासागर जाते हैं । नाव समुद्रके भाठा होनेपर दक्षिण जाती है और ज्वार होने पर दक्षिणसे उत्तरको चलती है ।

मैं १६ रुपये पर आती जातीके लिये एक नाव भाड़ा करके उसपर सवार हो गंगासागर चला और खानेके सरंजाम और दो मटुकेमें पानी अपने साथ लेलिया । नाव भागीरथीमें दक्षिण चली ।

हवड़ेसे ७½ बजे नाव खुली और १¾ घण्टे पर कम्पनी बाग ३¾ घण्टेपर चण्डियल-हाट और बावड़ीगाँवके सामने और ५ घण्टे पर उलबड़िया पहुँची । कलकत्तेसे चण्डियल-हाट तक गंगाके दोनों किनारे जगह जगह कल कारखानोंके ऊँची ऊँची चिमिनी देख पड़ती हैं ।

कलकत्तेसे १५ मील दक्षिण भागीरथी गंगाके बांये किनारेपर हवड़ा जिलेके सबडिवी-जनका सदर स्थान उलबड़िया एक छोटा कसबा है । ष्टीमर हर रोज कलकत्तेके आरमेनियन घाटसे खुलकर उलबड़ियासे नहर द्वारा मेदनीपुर जाता है । उलबड़ियासे एक अच्छी सड़क मेदनीपुर बालासोर और कटक होकर जगन्नाथपुरी तक पहुँची है ।

उलबड़ियासे आगे दामोदर नदीके मोहानेके सामने फुल्टा नामक एक बड़ी बस्ती है । उससे आगे कलकत्तेसे २०मीलपर गङ्गाके दहिने मेदनीपुर जिलेमें लगभग ६००० मनुष्योंकी वस्ती तमलूक है । वह पूर्व समयमें बहुत मशहूर शहर और बौद्धोंका एक बन्दरगाह था, जहाँ चीनका मुसाफिर फाहियन पाँचवीं सदीके शुरूमें सिलोन जानेके लिये उतरा था । उससे लगभग २५० वर्ष पीछे चीनीयात्री ह्यायनतशाङ्गने इसको बौद्धोंका प्रसिद्ध बन्दरगाह लिखा था तमलूकमें एक मन्दिर है, जिसको वहाँके लोग 'दरगाह भामा' या भोना कहते हैं। वह स्थान एक अजीब तेहरी दीवारसे घेरा हुआ है । शुरूमें वह बौद्ध मन्दिर था ।

तमलूकसे १५ मीलसे अधिक दक्षिण जानेपर भागीरथी गङ्गाका जल छितरा गया है। दहिने और बायें उस खाडीका जल फैला हुआ है, जिसको लोग ढोल समुद्र कहते हैं । गङ्गासागरके यात्री बायें किनारेसे जाते हैं । बायें तरफ एकके बाद दूसरे ३ बङ्गले देख पड़ते हैं ।

बायें चलनेपर दो तीन घण्टेमें 'डायमण्डहारबर' में नाव पहुँच जाती है, जो कलकत्तेसे नदीकी राहसे ४८ मील और रेलवे द्वारा ३८ मील है ।

डायमण्ड हारबर चौबीसपरगने जिलेमें एक सबडिवीजनका सदर स्थान है । उसके उत्तर हाजीपुर एक बड़ी वस्ती है । डायमण्ड हारबरमें एक कस्टमहौस, मुनसिफी आदि सबडिवीजनकी कचहरियाँ, और चिम्रीखाल फोर्ट नामक एक छोटा किला है । रेलकी ५ ट्रेन कलकत्तेसे वहाँ जाती हैं । उससे ३ मील उत्तर रूपनारायण नदी गङ्गामें गिरती है । डाय-मण्डहारबरसे आगे जाकर जहाज और आगबोट दहिने घूमते हैं और कजरी होकर, जो डायमण्ड हारबरसे २० मील दूर भागीरथीके मुहानेके पास है, आगे समुद्रमें जाते हैं ।

डायमण्ड हारबरसे चलनेपर ¾ घण्टेके पीछे चौपहला बुर्ज, १¾ घंटेपर तीन महला बुर्ज, ६½ घण्टेपर लकड़ीका खम्भा और ३ घण्टे पीछे बायें तरफ टेंगराहाट गाँव मिला । वहाँ बाजार लगता है, वहाँसे कलकत्ते तक करीब ४८ मील एक सड़क गई है। टेंगराहाटके पास काशीपुर एक बस्ती है । उससे आगे नदीके समान तंग खाड़ी मिलती है ।

टेंगराहाटसे चलनेसे १० घण्टेपर एक दूसरी तङ्ग खाड़ीमें बायें किनारेके पास मेरी नाव लगी, जहाँसे १२ मील आगे गङ्गासागर लोग बतलाते हैं। वहाँ यात्रियोंकी सैकड़ों नाव लगी थीं और जंगलसे सूखी लकड़ी लाकर वे लोग रसोई बनाते थे। वहाँ मट्टीके बरतन बिकते थे।

वहाँसे चलनेपर ६ घण्टेमें गङ्गासागर नाव पहुँची। मार्गमें खाड़ीके दोनों तरफ सघन जङ्गल है और जगह जगह छोटी छोटी नालियाँ जंगलसे निकलकर खाड़ीमें मिली हैं।

कलकत्तेसे गङ्गासागर; अर्थात् सागर टापू जल मार्गसे लगभग ९० मील दक्षिण है। मेरी नाव पूरे ३ दिनमें वहाँ पहुँची, जो तीन दिनोंमें ३८ घण्टे चली। ज्वार होनेपर नाव बांध दी जाती थी। मैं गङ्गासागरसे लौटनेपर भी ३ दिनमें कलकत्ते पहुँचा।

गङ्गासागरमें एक खाड़ी उत्तरसे आकर समुद्रमें मिली है। मकरकी संक्रान्तिके समय उस सङ्गमसे उत्तर खाड़ीके पश्चिम किनारेपर करीब १ मील जंगल काटकर मेला बसाया जाता है मेलेमें सड़कें निकाली जाती हैं। कलकत्तेसे बहुत दुकानें और बंगालसे बहुत चटाइयाँ बिक्रीके लिये वहाँ जाती हैं। इस वर्ष १००० से अधिक नाव और सात आठ आगबोट उस खाड़ीमें लगे थे। मेलेमें लाखों आदमी जुटे थे। बहुतेरे लोग नावोंमें रहते थे और बहुतेरे आदमी टापूपर तारपत्रकी चटाइयोंके घर बनाकर उनमें ठहरे थे। किनारेके पास दोहरी और तेहरी नाव लगी थीं। वहाँका जमीन्दार नाववालोंसे फीडाण्ड ४ आना महसूल लेता है।

मेलेसे पश्चिम दूर तक जंगल है, जिसमें सूखी लकड़ी बहुत मिलती है और बाघ, हरिन, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। कई साल बाघोंने कई यात्रियोंको मारडाला था।

ऐसा लोग कहते हैं कि गङ्गासागरमें कपिलजीका स्थान गुप्त होगया था;उसको वैष्णव प्रधान रामानन्दजीने प्रकट किया। संगमके पास एक टट्टीके आसारेमें घिसी हुई बहुत पुरानी कपिलजीकी मूर्ति थी, जिनके दहिने राजा भागीरथ और बायें रामानन्दजीकी वैसीही बहुत पुरानी मूर्त्तियाँ खड़ी थीं। यात्री लोग संगमपर स्नान करके समुद्रको नारियल फल या फूल और कोई कोई पंचरत्न (मोती, हीरा, जमूरद, पोखराज, मूँगा) चढ़ाते हैं और कपिलजीका दर्शन और पूजन करते हैं। वहाँकी चढ़ी हुई पूजा अयोध्याके मठके साधुलेते हैं। कपिलजीके स्थानसे थोडा उत्तर मीठा जलका एक कच्चा पोखरा है, जिसमें मेलेके समय कोई स्नान नहीं करने पाता, पीनेके लिये घड़ेमें भरकर पानी लोग लेजाते हैं। पोखरेके भीण्डेपर फूस टट्टीकी बनी हुई छोटी छोटी ४ कुटियाँ हैं। उससे कुछ दूर उत्तर खारा जलका दूसरा पोखरा और उससेभी उत्तर खारा जलका एक छोटा तीसरा पोखरा है, जिसके भीण्डेपर फूस टट्टीसे बनी हुई साधुओंकी ३ कुटियाँ बनी हैं।

समुद्र और खाड़ियोंका जल खाने पीनेके काममें नहीं आता और अन्धियारी रातमें उछालनेपर गोड़सारकी भोर आगके समान देख पड़ता है।

गङ्गासागर तीर्थमें कोई पण्डा नहीं रहता। मकरकी संक्रातिके समय वहाँ तीन दिन स्नान होता है; किन्तु मेला ५ दिन तक रहता है। मकरकी संक्रातिके अतिरिक्त कार्तिककी पूर्णिमाको भी कुछ लोग गङ्गासागर जाते हैं, पर उस समय बाजार तथा दूकानें नहीं जातीं।

इस समय वहाँ सागर और गङ्गाके संगमका चिह्न नहीं है। पहिले उस जगह संगम था। अब उस जगह समुद्रकी खाड़ी है; गङ्गाका मुहाना पीछे हट आया है। कुछ कालसे राजमहलसे कुछ आगे बढ़कर गङ्गा दो धाराओंमें बंट गई हैं,–उनमेंसे प्रधान धारा पूर्वमें ग्वालण्डोंके पास ब्रह्मपुत्रसे मिलकर सहबाजपुर नामक टापूके सामने समुद्रमें गिरती है, इसको पद्‌मा तथा पद्मा कहते हैं और दूसरी धारा भागीरथी और हुगलीके नामसे हुगली और कलकत्ते होकर दक्षिणको बहनेके उपरान्त सागर टापूके पास समुद्रमें मिली है। दोनों मुहानेके बीचमें डेढ़ दो सौ मीलके फासिलेमें गङ्गाकी सैकड़ों धारा समुद्रमें गिरती हैं; पानीकी बहुतायतसे उस जगह सघन जङ्गल रहता है; उसी जङ्गलका नाम सुन्दर बन है। आस पासके लोग गङ्गासागरको सागर तीर्थ और उस टापूको सागर टापू कहते हैं। पहिले बहुतेरे अशुभ समयके उत्पन्न लड़के गङ्गासागरके समुद्रमें फेंक दिये जाते थे। अङ्गरेज महाराजने उस चालको रोक दिया।

एक आगबोट मकरकी संक्रांतिके समय यात्रियोंको कलकत्तेसे गङ्गासागर पहुँचाता है और वहाँसे जगन्नाथ पुरीमें उनको जगन्नाथजीका दर्शन करा कर फिर कलकत्तेमें पहुँचा देता है।

सागर टापूमें अब बहुत कम लोग रहते हैं। लोग कहते हैं कि उसमें एक समय २००००० मनुष्य बसते थे, जो सन् १६८८ ई० की एक रातमें बाढ़से बह गये। हालमें टापूकी कुछ भूमि जोती जाती है। सन् १८१२ ई० की नापसे टापूकी सूखी भूमि १४३२६५ एकड़ हुई थी। कुछ दिनों तक टापूमें नमक बनाया जाता था। सागर टापूमें एक लाइट-हाउस, जिसका काम सन् १८०८ में आरम्भ हुआ; टापूके उत्तर टेलीग्राफ आंफिस और दक्षिण-पश्चिमके अन्तमें एक अबझरबेटरी है। सन् १८६४ की तुफानसे सागर टापूके ५६२५ मनुष्योंमेंसे केवल १४८८ बचे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–अत्रिस्मृति—(६५ वाँ श्लोक) जिस मनुष्यको साँपने काटा हो वह समुद्रके दर्शनसे शुद्ध होता है।

महाभारत—(वनपर्व्व–८४ वाँ अध्याय) गङ्गा और समुद्रके संगममें स्नान करनेसे दश अश्वमेधका फल होता है।

(१०७वाँ अध्याय) राजा सगरका यज्ञ-अश्व उनके ६० हजार पुत्रोंसे रक्षित होकर जल रहित समुद्रके तटपर आनेपर अन्तर्द्धान होगया। सगरके पुत्रोंने एक स्थानपर पृथ्वीको फटी हुई देखा। तब वे उस बिलको खोदने लगे। वह बिल समुद्र था। वे खोदते खोदते पाताल तक चले गये। उन्होंने वहाँ देखा कि कपिलजीके पास घोड़ा घूम रहा है। तब वे लोग कपिलजीको निरादर करके घोड़ा पकड़नेको दौड़े किन्तु कपिलजीके तेजरूपी अग्निसे सब लोग जलकर भस्म होगये। (१०८ वाँ अध्याय) राजा सगरके पुत्र असमंजस, असमंजसके अंशुमान, अंशुमानके दिलीप और दिलीपके पुत्र राजा भागीरथ हुए। भागीरथने जब सुना कि हमारे पितरोंको महात्मा कपिलने भस्मकर दिया था उस कारणसे उनको स्वर्ग नहीं मिला तब हिमाचलपर जाकर एक सहस्र वर्ष घोर तप किया तब गंगाजी प्रकट होकर बोली कि हे राजन्! तुम क्या चाहते हो? भगीरथ बोले कि कपिलके क्रोधसे जले हुए हमारे पुरुषोंको तुम अपने जलसे स्नान कराकर स्वर्गमें पहुँचावो। गंगाने कहा कि हे राजन्! तुम शिवजीको

प्रसन्न करो; स्वर्गसे गिरती हुई हमको वही अपने सिरपर धारण करेंगे। भगीरथने कैलासमें जाकर घोर तपस्या करके शिवजीको प्रसन्न किया और उनसे यही वरदान माँगा कि आप गंगाको अपने सिरपर धारण करें (१०९वां अध्याय) जब भगवान शिवने राजाके बचनको स्वीकार किया तब हिमाचलकी पुत्री गंगा बड़ी धारासे स्वर्गसे गिरी। गंगाको शिवजीने भूषणके समान अपने सिरपर धारण कर लिया। गंगा शिवके शिरपर मोतीकी मालाके समान शोभित होने लगी। उसने राजासे कहा कि कहो अब मैं किस मार्गसे चलूँ। राजा भगीरथ जिधर राजा सगरके ६० हजार पुत्र मरे पड़े थे उधर ही चले उन्होंने गंगाको समुद्र तक पहुँचा दिया। गंगाने समुद्रको (जिसको अगस्त्य मुनिने पीलिया था) अपने जलसे पूर्ण कर दिया। भगीरथने अपने पुरुषोंको जलदान दिया।

(११४ वाँ अध्याय) पाण्डव लोग गंगा और समुद्रके सङ्गम पर पहुँचे। उन्होंने ५०० नदियोंके सङ्गममें स्नान किया। अनन्तर वे लोग समुद्रके किनारे किनारे कलिङ्ग देशकी ओर चले, जहाँ वैतरनी नदी बहती है।

(सगरके पुत्रोंके भस्म होनेकी और गंगाके समुद्रमें आनेकी कथा बाल्मीकिरामायणमें बालकाण्डके ३८ वें अध्यायसे ४३ वें अध्याय तक; पद्मपुराणके स्वर्ग खण्डके ७८ वें अध्यायमें बृहन्नारदीय पुराणके ८ वें अध्यायमें; दूसरे शिवपुराणके ११ वें खण्डके २१ वें अध्यायसे २२ वें अध्याय तक और श्रीमद्भागवतके ९ वें स्कन्धके ८ वें और ९ वें अध्यायमें है)।

वाराहपुराण—(१७० वाँ अध्याय) गंगासागर सङ्गममें स्नान करनेसे मनुष्यकी ब्रह्महत्या दूर होती है।

कूर्म्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता–उत्तरार्द्ध–३६ वाँ अध्याय) सब समुद्र विशेष रूपसे पुण्य देने वाले हैं।

श्रीमद्भागवत—(तीसरा स्कन्ध, ३३ वाँ अध्याय) भगवान कपिलदेवजी अपने पिताके आश्रम (सिद्धपुर) से माताकी आज्ञा लेकर ईशान कोणकी ओर (गंगासागरमें) गये। वहाँ समुद्रने उनका पूजन कर उनके रहनेका स्थान दिया। अब तक कपिलदेवजी त्रिलोकको शान्तिके निमित्त योग धारण करके उसी स्थान पर विराजमान हैं।

पन्द्रहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसेमें) कटक, तप्तकुण्ड, भुवनेश्वर, और खण्डगिरि।

कटक।

कलकत्तेके कोयलेघाटसे सप्ताहमें कई बार कई कम्पनीके आगबोट यात्रियोंको लेकरके खुलते हैं। एक आदमीका भाड़ा दो रुपया लगता है और आगबोटपर चढ़ानेवाली डोंगीका महसूल प्रति आदमीको दो आना अलग देना पड़ता है। चाँदबालीमें आगबोटसे उतरना होता है। वहाँसे छोटे छोटे आगबोट नदी और नहरके मार्गसे यात्रियोंको कटक

पहुँचाते हैं। कटकसे ५३ मील जगन्नाथपुरी तक सुन्दर सड़क बनी है। मकरकी संक्रान्तिके समय कलकत्तेसे एक कम्पनीका आगबोट समुद्रके मार्गसे पुरी तक जाता है। वह यात्रियोंको मकरकी संक्रान्तिसे एक दिन पहले गंगासागरमें पहुँचाता है; संक्रान्तिके दूसरे दिन वहाँसे चलकर तीसरे दिन कलकत्तेसे २७७ मील दूर पुरीमें पहुँच जाता है। ३ रात पुरीमें रहकर वहाँसे लौटता है। और यात्रियोंको लेकर उसके दूसरे दिन कलकत्ता पहुँच जाता है। एक आदमीके जाने आनेका भाडा पहले दरजेका ५०) दूसरे दरजेका ३०) दरमियानी दरजेका १८) और तीसरे दरजेका १३) रुपया लगता है। समुद्र साधारण तरहसे कार्त्तिकसे फागुन तक हलकी हवेके साथ शान्त रहता है, इसके भीतरकी यात्रा अच्छी है।

मैं एक बड़े आगबोटमें, जिसपर रात्रिमें बिजलीकी रोशनी होती है, कोयलेघाट पर चढ़ा। आगबोट सबेरे ५ बजे खुला और १० बजे रातको चाँदबालीमें पहुँचकर बैतरनी नदीमें लग गया। वहाँ बाजार है और यात्रियोंके टिकनेके लिये मोदियोंके मकान बने हैं। कलकत्तेसे जलके मार्गसे ३ मील कम्पनी बाग, ६ मील रायगञ्ज, २९ मील फल्टाहौस, ३६ मील लोअर फल्टा, ४८ मील डायमंड हारबर, ६८ मील कजरी और लगभग २०० मील चाँदबाली है। चाँदबालीसे १२ कोस पश्चिम बैतरनी नंदीके किनारे पर जाजपुर है, जिसका वृत्तान्त आगे मिलेगा। चाँदबालीसे छोटे छोटे आगबोट कटक जाते हैं। मैं दूसरे दिन दश बजे दिनमें आगबोट पर चढ़ा। आगबोट बैतरनी नदी; ब्राह्मणी नदी और एक नहरमें क्रम क्रमसे चलकर २३ घंटेमें कटकके जोबरा घाटपर (महानदीके दहिने तीर पर पहुँच गया। मार्गमें स्थान २ पर नहरके फाटकोंके पास मुसाफिर आगबोट पर चढ़ते उतरते थे।

कटक कसबेसे कई एक सड़कें निकली हैं; –एक सड़क दक्षिण पुरीको; दूसरी पूर्वोत्तर जाजपुर, बालेश्वर, और मेदिनीपुरको तथा मेदिनीपुरसे पूर्व कलकत्तेको और उत्तर बांकुड़ा होकर रानीगञ्जको; तीसरी पश्चिमोत्तर अंगोल होकर सम्भलपुरको और चौथी सड़क दक्षिण-पश्चिम रम्भा, गञ्जाम, ब्रह्मपुर, राजमहेन्द्री और बैलोर होकर विजवाड़ेको गई है।

सूबे उड़ीसामें (२० अंश, २९ कला ४ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ५४ कला, ९ विकला, पूर्व देशान्तरमें) महानदीके दहिने किनारे पर महानदी और उसकी शाखा काठजूड़ीके मेलके निकट सूबे उड़ीसेकी राजधानी कटक जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान शहर कटक है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कटकमें ४७१८६ मनुष्य थे; अर्थात् २५२३५ पुरुष और २१९५१ स्त्रियाँ। इनमें ३६५०८ हिन्दू, ८३९२ मुसलमान, २२४० क्रस्तान ४१ जैन ३ बौद्ध और २ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ८१ वां और सूबे उड़ीसेमें पहिला शहर है।

कटक शहरके उत्तर और पूर्व महानदी और पश्चिम काठजूड़ी नदी बहती है। बरसातमें महानदी बहुत बढ़जाती है। शहरको बाढ़से बचानेके लिये काठजूड़ीके एक किनारे पर नीचेसे ऊपर तक पत्थरके ढोकोंसे बाँध बनाया गया है। नदियोंकी धाराओंको काबूमें लाने के लिये कटकके पास मशहूर बाँध बनाये गये हैं; जिनमेंसे विरूपा नदीका बाँध लगभग दो

हजार फीट लम्बा और ९ फीट ऊँचा, जिससे उड़ीसेके खेतोंको पटानेके लिये २ नहर निकली हैं और महानदीका बाँध ६४०० फीट लम्बा और १२½ फीट ऊँचा है। महानदीका बाँध सन् १८६९–१८७० ई० में तैयार हुआ; उसके वनानेमें लगभग १३ लाख रुपया खर्च पड़ा।

कटकके जोवरा नदीके पास जोवरा घाट पर महानदीमें आगवोट लगते हैं और उसी घाटके पास आगवोट वनानेका कारखाना है। जोवराघाटसे १ मील कटक शहरका वक्सी बाजार और २ मील वालू वाजार और चौधरी बाजार है। वालू वाजारमें प्रधान दूकानें हैं। कटक शहर सोने और चाँदीके गहनेके लिये प्रसिद्ध है इसके समान साफ और सुन्दर चाँदी के गहने हिन्दुस्तानमें दूसरी किसी जगह भी नहीं वनते हैं। कटक सूवे उड़ीसेमें प्रधान तिजारती जगह है बीमारी फैलनेके डरसे सर्वसाधारण यात्री शहरके भीतर जाने नहीं पाते हैं।

छावनियोंके बीचमें और किलेको जाती हुई सड़कके दहिने डाक वँगला है उससे करीब ४०० गज बाद परेडकी जमीन है। शहरसे लगभग १ मील दूर काठजूड़ी नदीके दक्षिण किनारेपर १४ वीं सदीके राजा अनङ्गभीमदेवका वनवाया हुआ "वारह बटी" नामक एक पुराना किला है, जो अब मट्टीके टीलोंका सिलसिला होगया है। उसकी खाईके पत्थर सन् १८७३ में एक अस्पताल वनानेके लिये और किलेके पत्थर "फल्सपाइन्ट" के पास "लाइटहौस" वनानेके लिये ले लिये गये थे किलेके पूर्वकी दीवारमें एक फाटक और फतेहखाँकी मसजिद है नहरके पुलके आगे दहिने और कमिश्नरकी कचहरी एक वडी इमारत है इनके अलावे कटकमें दीवानी और फौजदारीकी कचहरियाँ, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल और स्कूल हैं।

कटकसे बुधके दिन तीन कम्पनियोंके छोटे छोटे कई आगवोट खुलकर चाँदवाली जाते हैं जिनके यात्री वड़े आगवोटों पर चढ़कर चाँदवालीसे समुद्रकी राहसे कलकत्ते पहुँचते हैं। हर शनीचरको एक छोटा आगवोट कटकसे खुलकर आवाके पास समुद्रमें जानेवाले आग-बोट पर मोसाफिरोंको चढ़ाता है; वह वड़ा आगवोट कलकत्ते जानेके लिये आवासे सोम-वारको खुलता है। एक गवर्नमेंट आगवोट कटकसे नहर होकर सप्ताहमें दो वार भद्रकको जाता है। बी. आइ. एस. एन. कम्पनीका आगवोट मदरास और दूसरे वन्दरगाहोंके लिये "फल्स पाइंटके पास मोसाफिरोंको चढ़ाता है। एक छोटा आगवोट कटक और फल्सपाइन्टके बीचमें आता जाता है और कलकत्ते और वम्बे और किनारोंके दूसरे बन्द-रगाहोंके मोसाफिरोंको उतारता चढ़ाता है। कटकसे ६४½ मील फल्सपाइंट है; इसमेंसे ५४ मील नहरकी राह है। आम तौरसे मार्गमें २५ घंटे लगते हैं। कटक छोडनेके आधे घण्टे बाद वोट फाटकसे निकलता है और केन्द्रपारा नहरमें प्रवेश करता है। नहरके दो हिस्सोंमें हो जानेकी जगहपर वह ६ घण्टेमें पहुँचता है। नहरकी दहिनी शाखा मरसूघाटको और वायें वाली चान्दवालीके लिये आवाको गई है।

महानदी मध्य देशके रामपुर जिलेमें नवगढ़के पाससे निकलकर सम्भलपुर होकर ५२० मील पूर्व-दक्षिण बहनेके उपरान्त कटकसे पचास साठ मील पूर्व "फल्सपाइंट" के

पास समुद्रमें मिली है। फल्सपाइंट लाइट हाउससे एक तरफ कलकत्ता २१७ मील और दूसरी तरफ जगन्नाथपुरी ६० मील है।

रेलवे लाईन दक्षिण—पश्चिमसे वेजवाड़ा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटकके पास तक तैयार हो चुकी है और पूर्वोत्तरसे मेदनीपुर तथा बालेश्वर होकर कटक तक कई एक वर्षोंमें तैयार हो जायगी।

कटकसे दक्षिण-पश्चिम "सदर्न मरहठा रेलवे" के वेजवाड़के स्टेशन तक "ईष्ट कोष्ट रेलवे" की लाइन बनगई है; पर अभी गाड़ी नहीं चलती।

(१) कटकसे दक्षिण—पश्चिम "ईष्ट कोष्ट रेलवे," जिसका महसूल फी मील २ पाई होगा—

मील प्रसिद्ध स्टेशनोंके फासिले; शहरसे ६ मील कटक रोडसे—

१२ भुवनेश्वर।
२२ खुरदा रोड (जटनी)।
८४ रम्भा।
११४ ब्रह्मपुर।
१२९ इच्छापुर।
२०५ चीकाकोल रोड।
२४८ विजयानगरम्।
२८४ विजगापट्टन।
३६९ कोकानद बन्दर।
३७८ समालकोट जंक्शन।
४१० राजमहेन्द्री।
५०८ वेजवाड़ा जंक्शन।

खुरदा रोडसे एक लाइन जगन्नाथपुरीको जायगी।

(२) वेजवाड़ेसे पश्चिम-दक्षिण "सदर्न मरहठा रेलवे," जिसके तीसरे दर्जेका महसूल फी मील २ पाई है—

मील प्रसिद्ध स्टेशन—

७ मंगलगिरि।
१९ गंतूर।
१८८ नंदियाल।
२३६ कर्नूल रोड।
२७९ गुंटकल जंक्शन।

(३) कटकसे रामेश्वरका फासिला रेलवे द्वारा—

मील एक जगहसे दूसरी जगह—

५०८ कटकसे वेजवाडा जंक्शन।
२७९ वेजवाड़ासे गुँटकल जंक्शन।
१९२ गुंटकलसे रेनिगुंटा जंक्शन।
४१ रेनिगुंटासे आरकोनम् जंक्शन।
१८ आरकोनम्से काञ्चीवरम्।
२२ काञ्चीवरम्से चिङ्गलपटम्।
११६ चिङ्गलपटम्से चिदम्बरम्।
४२ चिदम्बरम्से कुम्भकोनम्।
२५ कुम्भकोनम्से तंजोर जंक्शन।
३४ तंजोरसे त्रिचनापली फोर्ट।
९३ त्रिचनापली फोर्टसे मदुरा।

१३७० जोड़।
१०१ सड़क द्वारा मदुरासे रामेश्वर।

१४७१ कटकसे रामेश्वर।

रेनिगुंटा जंक्शनसे ६ मील त्रिपती (बालाजी), आरकोनम् जंक्शनसे ४३ मील मदरास और त्रिचनापली फोर्टसे सड़क द्वारा ३ मील श्रीरङ्गजी हैं।

जो आदमी एकही यात्रामें जगन्नाथजी, रामेश्वर, द्वारिका और बदरीनारायण जाना चाहें उनको नीचे लिखे हुए रास्तेसे जाना चाहिये।

मील नाम स्थान—

१३७० कटकसे मदुरा; बेजवाड़ा गुण्टकल जंक्शन, आरकोनम् जंक्शन, कांची और त्रिचनापल्ली होकर।

११०२ मदुरासे बम्बई, गुण्टकल और पूना होकर।

१००९ पोरबन्दरसे हरिद्वार; महसाना जंक्शन अजमेर गाजियाबाद; और सहारनपुर होकर।

९१९ मील काठगोदामसे कलकत्ता; सीतापुर, लखनऊ, बनारस, मुगलसराय, पटना और बैद्यनाथ होकर।

४४०० मिजान रेलके रास्तेका कटकसे कलकत्ते तक।

१०६ कटकसे जगन्नाथपुरी और जगन्नाथपुरीसे कटकतक बैलगाड़ीकी सड़क।

३०२ मदुरासे रामेश्वर औरं रामेश्वरसे मदुरा तक; बैल गाड़ीकी सड़क।

३७५ बम्बईसे द्वारिका; आगबोट द्वारा।

५६ द्वारिकासे पोरबन्दर, आगबोट द्वारा।

४१७ हरिद्वारसे काठगोदाम, केदारनाथ, बदरीनाथ और मील चौरी होकर पहाड़ी राह।

२६० कलकत्तासे कटक आगबोट द्वारा।

१४१६ जोड़ खुसकी और जलके मार्गका।

५८१६ जोड़ रेलवे खुसकी और जलके मार्गसे; कटकसे, पुरी, रामेश्वर, द्वारिका और बदरीनाथ होकर कटक तक।

कुछ लोग रामेश्वर जानेके लिये कटकसे जल और थल (अर्थात् सड़क) के मार्गसे प्रायः समुद्रके किनारे किनारे रम्भा, गञ्जाम, ब्रह्मपुर, चिकाकोल, विजयानगरम्, सावलकोटा, राजमहेन्द्री, धवलेश्वर, वेलौर, बेजवाड़ा, नैलोर, व्यंकटगिरि आदि प्रसिद्ध स्थानोंको होकर रैनिगुण्टा जंक्शनमें जाकर रेलगाड़ीमें चढ़ते हैं। कोई कोई आदमी बेजवाड़ेके स्टेशन पर रेलगाड़ीमें सवार हो गुण्टकल जंक्शन होकर रैनिगुण्टा जाते हैं। राजमहेन्द्रीके समीप गोदावरी नदी और बेजवाड़ेके निकट कृष्णा नदी पार उतरना पड़ता है। बेजवाड़ेसे ३ कोस मङ्गलगिरि पर पन्नानृसिंह हैं। यह पैदलका मार्ग क्लेश दायक है, किन्तु अब इस मार्गमें रेल बन गई।

कटक जिला—यह उड़ीसा विभागके मध्यका जिला ३५१७ वर्ग मीलमें फैलता है। इसके उत्तर बैतरनी नदी और ढमरा कोल, जो बालेश्वर जिलेसे इसको अलग करते हैं; पूर्व बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण पुरी जिला और पश्चिम उड़ीसाका मालगुजार राज्य है। जिलेका सदर स्थान कटक है। इस जिलेकी अनेक पहाड़ियोंपर देव स्थान और छोटे छोटे पुराने किले देखनेमें आते हैं। उदयगिरि पहाड़ी पर पवित्र तालाब और हीन दशामें पड़े हुए अनेक मन्दिर और गुफायें हैं। जिलेकी सबसे ऊँची पहाड़ी २५०० फीट ऊँची है। देशी राज्यमें एक पहाड़ीकी महाविद्या चोटी पर एक प्रसिद्ध शिव मंदिर है। जिलेके उत्तरी सीमापर बैतरनी नदी, दक्षिण भागमें महानदी और मध्यमें ब्राह्मणी नदी

वहती है । ये तीनों नदियाँ ढमरा, महानदी और देवी इन तीन समुद्रके कोलों द्वारा समुद्रमें मिली हैं। वालेश्वर जिलेमें ढमरा गाँवके निकट वन्दरगाह है । कटक जिलेमें ४ नहर भी वनी हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कटक जिलेमें १७३८१६५ मनुष्य थे; अर्थात् १६८७६०८ हिन्दू, ३७२५९ मुसलमान, २३३१ कृस्तान, ८५७ आदि निवासी इत्यादि १०४ सिक्ख, ३ वौद्ध और ३ ब्राह्म । जातियोंके खानेमें ३३९४३५ खण्डाइत, १७७१९३ ब्राह्मण १४०८७० ग्वाला, १०३३१४ चासा, ७८९६७ पान, ७३८८२ कन्धारा, ५८५५९ तेली; ५६८१९ वाउरी, ५३४३६ शूद्र, ४६८९८ केंवट, ४१७७७ तांती, ४१७६१ कान, ३२७०९ वनियाँ, २४७९२ गोंड, १०७८२ राजपूत और शेषमें भुइयाँ खरवार, खांद सवर इत्यादि थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कटक जिलेके कसवे कटकमें ४७१८६ केन्द्रपाड़ामें १७६४७ और जाजपुरमें ११९९२ मनुष्य थे; उस जिलेमें खुर्दा एक प्रसिद्ध वस्ती है।

इतिहास—कटक जिलेका इतिहास उड़ीसेके इतिहासमें शामिल है। केशरी वंशके एक प्रतापी राजा नृपति केशरीने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको वसाया और केशरीवंशकी राजधानी भुवनेश्वरको छोड़कर कटकमें रहने लगा। अङ्गरेजोंने सन् १८०३ ई० में उड़ीसा देशके विजय करनेके समय कटकके पुराने किलेको ले लिया । वह किला हीन दशामें अबतक विद्यमान है ।

सूवा उड़ीसा—बङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके आधीन विहार, वङ्गाल, छोटानागपुर और उड़ीसा ये ४ सूवे हैं;—इनमेंसे सूवे उड़ीसेका प्रधान शहर और उसकी राजधानी कटक है। सूवे उड़ीसेके उत्तर और पूर्वोत्तर सूवे छोटा नागपुर और सूवे वङ्गाल पूर्व और दक्षिण पूर्व वङ्गालकी खाड़ी; दक्षिण मदरास हाता और पश्चिम मध्यदेश है। इस सूवेका क्षेत्रफल २४२४० वर्गमील है, जिनमेंसे भीतरकी ओर १५१८७ वर्गमील उड़ीसेके मालगुजार राज्य और समुद्रके किनारेकी ओर ९०५३ वर्गमील अङ्गरेजी राज्य है। उड़ीसेकी नदियोंमें महानदी, ब्राह्मनी, वैतरनी, सुवर्णरेखा और सिलन्दी नदी और मन्दिरोंमें भुवनेश्वर; जगन्नाथजी और कोनार्कके मन्दिर प्रधान हैं। उस सूवेकी पहाड़ियोंमें कई वौद्ध गुफायें वनी हुई हैं ।

उड़ीसेके अङ्गरेजी राज्यमें कटक, पुरी, वालेश्वर; वाँकी और अंगोल ये ५ जिले हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अङ्गरेजी राज्यमें ३७३०७३५ मनुष्य थे; अर्थात् ३६३४०४९ हिन्दू, ८५६११ मुसलमान, ६९३० जङ्गली और पहाड़ी इत्यादि, ३९८२ कृस्तान, १५२ सिक्ख, ७ वौद्ध, ३ ब्राह्म, और १ यहूदी। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कटक जिलेके कसवे कटकमें ४७७४६ केंद्रपाड़ामें १७६४७ और जाजपुरमें

११९९२, पुरी जिलेके पुरी कसबेमें २८७९४ और बालेश्वर जिलेके बालेश्वर कसबेमें २०७७५ मनुष्य थे।

सूबे उड़ीसेके अङ्गरेजी राज्यके ५ जिलोंमेंसे बाँकी और अंगोल ये दोनों पहिले देशी मालगुजार राज्य थे। सन् १८४० में बाँकी और सन् १८४७ में अंगोलका राज्य अङ्गरेजी सरकारने छीन लिया। अब ये अङ्गरेजी मिलकियत हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकी जिलेके ११६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ५६९०० मनुष्य थे; अर्थात् ५६६१९ हिन्दू, २७० मुसलमान, और ११ कृस्तान और अंगोल जिलेके ८८१ वर्गमील क्षेत्रफलमें १०१९०३ मनुष्य थे; अर्थात् १००३६६ हिन्दू, २७५ मुसलमान, ६ कृस्तान और १२५६ आदिनिवासी इत्यादि।

सूबे उड़ीसेके प्रायः सब लोग काले और साँवले रंगके होते हैं। वे अपने सिरपर बड़े घेरेका शिखा रखते हैं। प्रायः सब हिन्दू सर्वदा अपनी दाढ़ी और मूछ मुड़वाते हैं। उड़ीसेमें बहुतेरे लोगोंको हाथीपाँवकी बीमारी होती है। बङ्गालकी अपेक्षा वहाँके लोग गँवार होते हैं। सूबे बंगालके समान वहाँके लोगोंका भी साधारण भोजन मछली और भात है। वे लोग पान बहुत खाते हैं।

उड़ीसेमें उड़िया अक्षर प्रचलित हैं। सरकारी कचहरियोंमें भी उड़िये अक्षरमें काम होता है। बहुतेरे ग्रन्थ ताड़पत्रोंपर उडिये अक्षरोंमें लिखे हुए हैं और लिखे जाते हैं। ताड़के पत्रोंपर एक तरहके कांटेसे विना स्याहीके अक्षरोंकी लकीरें लिखी जाती हैं।

वहाँके लोग २½ या ३ मीलको एक कोस कहते हैं। वहाँ आटा कम होता है; वर्तन काले रंगके होते हैं; परन्तु पुरीमें नहीं। समुद्रके निकट नमक बनता है। उड़ीसेमें १०५ रुपयेके वजनका सेर चलताहै। चावल आदि कच्ची रसोईकी सामग्री सर्वत्र मिलती हैं। बहुतेरे तालावों और पोखरियोंके जल गन्दे होते हैं। उड़िये लोग उन्हींका जल पीते हैं और उसीके किनारे मल मूत्र त्याग करते हैं। उड़ीसेका जल वायु बड़ा रोगकारक है। सरकार बीमारी फैलनेके भयसे कटक आदि शहरोंमें सर्व साधारण परदेशी मुसाफिरोंको जाने नहीं देती है। शहर और बड़ी चोटियोंके मकानोंमें आइनके नियमके मुताबिक मुसाफिर टिक सकते हैं; अधिक मुसाफिरोंको टिकानेसे मकानके मालिककी सजा होती है। वहाँके लोग चैतन्य महाप्रभुको विष्णुका अवतार मानकर उनकी पूजा करते हैं और अपने अपने मकानके पास उनकी पूजाके लिये एक छोटा गृह खाली रखते हैं। चैतन्यने वैष्णवके मतकी शिक्षा सम्पूर्ण बंगाल और उड़ीसेमें फैलाई। चैतन्य महाप्रभुका जीवनचरित्र भारतभ्रमणके इसी खण्डके नदियाके वृत्तान्तमें है।

उड़ीसेमें १७ मालगुजार राज्य हैं। उनके उत्तर सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पूर्व उड़ीसेका अङ्गरेजी राज्य; दक्षिण मदरास हातेका गञ्जाम जिला और पश्चिम मध्य देशमें टना, सोनपुर, बामड़ा इत्यादि देशी राज्य और छोटे नागपुरमें कई छोटे देशी राज्य हैं।

उडिया बर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

ଅ ଆ ଇ ଈ ଉ ଊ ଋ ୠ ଌ ୡ ଏ ଐ ଓ ଔ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ

କ ଖ ଗ ଘ ଙ ଚ ଛ ଜ ଝ ଞ ଟ ଠ ଡ ଢ ଣ ତ ଥ

द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

ଦ ଧ ନ ପ ଫ ବ ଭ ମ ଯ ର ଳ ବ ଶ ଷ ସ ହ

का कि की कु कू के कै को कौ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

କା କି କୀ କୁ କୂ କେ କୈ କୋ କୌ ୧ ୨ ୩ ୪ ୫ ୬ ୭ ୮ ୯

उड़ीसेके मालगुजार राज्योंका त्रिज नीचे है—

नंबर	माल गुजार राज्य	क्षेत्रफल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ई०	तसखोसी मालगुजारी रुपया	गवर्नमेन्ट का 'कर' रुपया
१	मीरभञ्ज...	४२४३	३८५७३७	३३२०९०	१०६०
२	धंकेल......... ...	१४६३	२०८३१६	१०९१००	५९००
३	बोड़	२०६४	१३०१०३	१००००	८०
४	क्योंझोर	३०९६	२१५६१२	९००००	१९७०
५	नयागढ़	५८८	११४६२२	५००००	५५२०
६	वरवा......	१३४	२९७७२	२८३६०	१४००
७	खाण्डपाड़ा	२४४	६६२९६	२४४५०	४१२०
८	दसपला	५६८	४१६०८	२००००	६६०
९	नीलगिरि...	२७८	५०९७२	१९४५०	३९००
१०	रानापुर	२०३	३६५३९	१५०००	१४००
११	अठगढ़	१६८	३१०७९	१४९४०	२८२०
१२	नरसिंहपुर	१९९	३२५८३	१२०००	१४५०
१३	तालचर	३९९	३५५९०	१२०००	१०३०
१४	अठमलिक	७३०	२१७७४	११०००	४८०
१५	हिन्डोला...	३१२	३३८०२	१००००	५५०
१६	टिगरिया...	४६	१९८५०	८०००	८८०
१७	पलहरा	४५२	१४८८७	५०००	+
	जोड़ ।	१५१८७	१४६९१४२	७७१३९०	३३२२०

इन राजाओंमें मोरभञ्ज, धंकेल, वोड़, क्योंझोर, नयागढ़ इत्यादिके बहुतेरे राजा राजपूत हैं। पलहरा राज्यके गवर्नमेंटका कर क्योंझोरमें शामिल है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इन राज्योंमेंसे केवल खांण्डपाड़ा वस्तीमें ५ हजारसे अधिक याने ५०५१ मनुष्य थे।

उड़ीसेके मालगुजार राज्योंमें बहुत पहाड़ी सिलसिले हैं। भीतरकी ऊँची भूमिपर महानदी, ब्राह्मणी और वैतरनी ये ३ बड़ी नदियाँ बहती हैं। जंगलोंका दृश्य मनोरम है। समतल भूमिपर हिन्दू उड़िया लोग, जो आबादीके तीन चौथाई हैं, बसते हैं और पहाड़ियोंपर आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली लोग निवास करते हैं। उनमें खान्द अधिक प्रसिद्ध हैं, जो केवल खेती और लड़ाईका काम करते हैं। उनके देवते बहुत हैं, जिनको वे लोग रुधिर चढ़ाते हैं। उनमें पृथ्वी देवी प्रधान हैं, जिसको वर्षमें दो बार खेत बोने और काटनेके

समय मनुष्य बलि दिये जाते थे; उस मनुष्यको खम्भेमें बान्धकर उसको टुकड़े टुकड़े करके प्रत्येक खेतमें एक टुकड़ा गाड़ा जाता था। जब सन् १८३५ ई० में वहाँ अङ्गरेजी राज्य हुआ, तब नर बलिदान रोका गया और उस कामके लिये अङ्गरेजी अफसर नियत किये गये।

एक जाति जुआङ्ग या पटुआ कहलाती है, उस जातिके लोग पहले नङ्गे रहते थे। उनकी स्त्रियाँ अपने आगे पीछे पत्तोंके गुच्छे लटकाती थीं। सन् १८७१ ई० में वहाँके अङ्गरेजी अफसरने उनको पहननेके लिये कपड़ेके टुकड़े दिये, तबसे वे कपड़े पहनने लगीं।

इतिहास—उड़ीसेके पूर्व कालका इतिहास तारके पत्तोंपर लोहेके कलमसे विना रोशनाईके लिखा हुआ है। उसमें महाभारतके समयसे वर्तमान समय तकके १०७ राजाओंके नाम हैं और लिखा है कि पहलेके १२ राजाओंने, ३ हजार वर्षसे अधिक राज्य किया था, जिनमेंसे पहलेके ३ राजाओंने, जिनके नाम महाभारतमें हैं, लगभग १३०० वर्ष राज्य किया।

उड़ीसेका ठीक इतिहास सन् ईस्वी के पहिले १४०७ और १०३६ वर्षके बीचसे या राजा शंकरदेवके उत्तराधिकारी गौतमदेवके समयसे आरम्भ होता है। उस वंशके छठवें राजा महेन्द्रदेवकी राज्यके समयमें राजमहेंद्री शहर बसाई गई और राजधानी बनी वह राजा सन ईस्वीके पहिले १०३७ और ८२२ के बीचमें था सन् ईस्वीके चार पाँच सौ वर्ष पहिलेसे उसके आरम्भ तक उड़ीसेमें बौद्ध लोगोंका राज्य था सन् ईस्वीके ५० वर्ष पहिलेसे ३१९ वर्ष पीछे तकका इतिहास ताड़के पत्तोंके लेखमें नहीं है। यह जान पड़ता है कि उसी समयमें उड़ीसेकी पहाड़ियों और चट्टानोंमें काटकर गुफा और मठ बनाये गये। उड़ीसेके चट्टानों परके राजा अशोकके समयके शिला लेखोंसे और बौद्ध गुफाओंसे निश्चय होता है कि ईशाके ४०० वर्ष पहिलेसे और लगभग ३०० वर्ष पीछे तक उड़ीसेमें खास करके बौद्धोंकी प्रधानता थी।

सन् ४७४ ई०में केशरी वंशके राज्यके नियत करनेवाला राजा ययातिकेशरी उड़ीसे पर आक्रमण करनेवाले यावानोंको खदेरकर उड़ीसेका राजा बना। उसकी राजधानी भुवनेश्वर कसबा था। उसी समय भुवनेश्वरका बड़ा मन्दिर बनाया गया। केशरी वंशके राजाओंके पहिलेके उसदेशके राजा बौद्ध मतके थे। केशरी वंशके एक प्रतापी राजाने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको बसाया। सन् ११३२में केशरी वंशके राज्यका अंत होगया गङ्गा वंशका एक राजा दक्षिणसे आकर उड़ीसेमें राज्य करने लगा। केशरी वंशके राजा शैव थे किन्तु गङ्गावंशके राजा वैष्णव हुए। इस वंशके पाँचवें राजा अनङ्गभीमदेवने जिसने सन् ११७५ से १२०२ तक राज्य किया था, जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको बनवाया। यह उड़ीसेके सबसे बड़े राजाओंमेंसे एक था कबीरजीने सन् १३८० और १४२० के बीचमें उड़ीसेमें धर्म उपदेश किया था और चैतन्य महाप्रभुने, जो सन् १४८५ से १५२७ तक थे; उड़ीसेके लोगोंको शिक्षा दी थी। उसीमें घर घर चैतन्य महाप्रभुकी पूजा होती है। सन् १५३२ में गङ्गा वंशका अंतिम राजा मर गया उसके दीवानने सन् १५३४ में उस वंशके सब लोगोंको मारकर उस राज्यको ले लिया।

सन् १५६७-६८में बङ्गालके अफगान मुसलमान सुलेमानने उड़ीसेके स्वाधीन हिन्दू राजाको जाजपुरके दीवारके भीतर परास्त किया। उसने पुरीको भी ले लिया। हिन्दू राज्यका अंत होगया सुलेमानका पुत्र दाउदखाँ दिल्लीके बादशाहकी आधीनता छोड़कर स्वाधीन बन गया, इस लिये मुगल और अफगानोंकी लड़ाई हुई। सन् १५७४ में अफगान लोग परास्त हुए। सन् १५७८ में दूसरी बार अफगानोंके परास्त होनेपर उड़ीसा देश अकबरके राज्यका एक भाग बना। सन् १७५१ में महाराष्ट्रोंने मुगलोंसे उसको जीत लिया सन् १८०३ में अङ्गरेजोंने उड़ीसे पर आक्रमण करके उसको अपने अधिकारमें कर लिया।

उड़ीसेके मालगुजार राजाओंमेंसे अङ्गोलके राजाने सन् १८४७ में बगावत किया, इसलिये उसका राज्य अङ्गरेजी सरकारने छीन लिया और बाँकीके राजापर सन् १८४० में खूनका मुकदमा साबित हुआ. इस कारणसे उसका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-महाभारत-(आदिपर्व, १०४ वाँ अध्याय) बली नामक राजाकी सुदेष्णा स्त्रीसे अन्धे ऋषिने सम्भोग किया जिससे अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग पुंड्र और सुह्म ये ५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नामसे एक एक देश हो गए। उनमेंसे कलिङ्गके नामसे कलिङ्ग देश हुआ। (वनपर्व ११४ वाँ अध्याय) युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण वनवासके समय पर्य्यटन करते हुए गङ्गासागर तीर्थमें स्नान करके समुद्रके तीर तीर चले। उन्होंने कलिङ्गदेशमें वैतरनी नदी पार उतर कर वहाँ पितरोंका तर्पण किया। पीछे वे लोग उसस्थानसे दक्षिणको चलते चलते महेन्द्राचल पर्वत पर पहुँचे। कूर्मपुराण (ब्राह्मीसंहिता, उत्तरार्द्ध, ३८ वाँ अध्याय) कलिङ्गदेशके पश्चिमार्द्धमें अमरकण्टक पर्वतसे नर्मदा नदी निकली है (ऊपरके लेखोंसे ज्ञात होता है कि सूबे उड़ीसे और मध्यदेश दोनोंमें कलिङ्ग देश है)

लिंगपुराण—(६५ वाँ अध्याय) सूर्य्यका पुत्र मनु और मनुका पुत्र सुद्युम्न सुद्युम्नके उत्कल, गय और विनताश्व ये ३ पुत्र जन्मे, जिनके नामसे एक एक देश हो गये। उनमेंसे उत्कलके नामसे उत्कल देश हुआ। आदि ब्रह्मपुराण–(४१ वाँ अध्याय) समुद्रके उत्तर भागमें विराज क्षेत्र(जाजपुर)में बैतरनी नदी है; इस तीर्थके अतिरिक्त उत्कल देशमें अन्यभी अनेक पवित्र तीर्थ हैं और पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं (ऊपरके लेखोंसे जान पड़ता है कि कलिङ्ग देशका एक भाग उत्कल देश है)।

आदि ब्रह्मपुराण–(२७ वाँ अध्याय) दक्षिणके समुद्रके समीपमें ओंड्र देश विख्यात है, जिसमें कोंणादित्य सूर्य (अर्थात् कोंणार्क) रहते हैं (ओंड्र देशका अपभ्रंश उड़ीसा देश है; उड़ीसेका नाम उत्कल और ओंड्र पुराणोंसे सिद्ध होता है)।

तप्तकुण्ड।

कटक शहरसे २५ मील पश्चिम पुरी जिलेका एक सब डिवीजनका सदर स्थान खुरदा एक बड़ी बस्ती है, जिसमें जगन्नाथपुरीके राजाके पूर्वज लोग रहते थे। वहाँ पुराने किलेकी निशानी अबतक विद्यमान है; एक मर्जीष्टर रहता है और बाजार लगता है। सन् १८१८ ई० से १८२८ तक जिलेका सदर स्थान खुरदा था। एक सड़क कटकसे खुरदा होकर गञ्जामको गई है।

खुरदासे ६ मील पश्चिम बाघमारी गाँवके समीप तप्तकुण्ड नामक एक कूप है, जिसका उष्ण जल सर्वदा खौलता रहता है। कूपसे थोड़ी दूरपर एक पोखरेके निकट हाटकेश्वर महादेवका मन्दिर है। वहाँ मकरकी संक्रांतिके समय एक मेला होता है। मेला एक मास रहता है। उसमें कपड़े, बर्तन आदिकी दूकानें जाती हैं।

भुवनेश्वर।

कटकसे दक्षिण जगन्नाथ-पुरी तक ५३ मील बैलगाड़ीकी सड़क है। सड़कके किनारों पर मीलके पत्थर लगे हैं। दो ढाई रुपयेके किरायेपर एक बैलगाड़ी कटकसे पुरी तक जाती है।

कटकसे१९मील दक्षिण भुवनेश्वर वस्ती है। कटकसे चलनेपर २ मील आगे एक चट्टी, (उससे आगे १ मील तक नदीका बालू) ३½, ४½, ७½, और १३½ मील पर एक चट्टी मिलती है। पिछली चट्टीसे आगे नदीके बालूका मैदान है, जिसमें आगे पुरीकी सड़क और दहिने ओर भुवनेश्वरकी राह गई है। पिछली चट्टीसे लगभग ५½ मील भुवनेश्वर है।

सूबे उड़ीसेके पुरीमें (२० अंश, १४ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश, और ८५ अंश, ५२ कला, २६ विकला पूर्व देशान्तरमें) भुवनेश्वर, रामेश्वर, कपिलेश्वर और भास्करेश्वरके मन्दिरोंके मध्यमें भुवनेश्वर नामक वस्ती है, जिसमें लगभग ४००० आदमी बसते हैं, जिनमेंसे आधे पण्डे तथा पुजारी हैं। भुवनेश्वर क्षेत्रका नाम पुराणोंमें एकाम्र क्षेत्र लिखा है। यह एक समय उन्नति करता हुआ राज्यकी राजधानी था। इसके आस पास दूर दूर तक पथरीली भूमि और जङ्गल है, जिसमें पहिले ७००० शिव-मन्दिर थे, जिनमेंसे पांच छः सौ अबतक विद्यमान हैं। इन मन्दिरोंका सुधार कभी नहीं हुआ। सब मन्दिर प्रायः एकही प्रकारके हैं और सबमें एकही ढंगका पत्थर लगा है। पत्थरोंपर फूल और बेलबूटोंके अतिरिक्त पत्थर खोदकर असंख्य मूर्त्तियाँ बनाई गई हैं। इनमेंसे अनेक मन्दिर बड़े बड़े और सुन्दर हैं; किन्तु भुवनेश्वरका मन्दिर सबसे विशाल है। यहाँके मन्दिर जर्जर होगये हैं; इनके सुधारकी बड़ी आवश्यकता है।

मन्दिर—भुवनेश्वर बस्तीके पास पुरीके जगन्नाथजीके मन्दिरसे पहिलेका बना हुआ भुवनेश्वरका विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर कारीगरी और बनावटमें जगन्नाथजीके मन्दिरसे भी अच्छा है। प्रधान मन्दिर १६० फीट ऊँचा है। इसके प्रत्येक इंच खास करके खड़े हिस्से नकाशीके कामसे पूर्ण हैं। मन्दिरके शिखरपर त्रिशूल लगा है। इसके भीतर ८ फीट व्यासके अर्घेपर ½ हाथ ऊँचे भुवनेश्वर शिवलिङ्ग हैं, जिनको वहाँके पण्डे लोग हरिहरात्मक कहते हैं। मन्दिरमें अँधियारा रहता है इस लिये दिनमें भी भीतर दीप जलाया जाता है।

भुवनेश्वरका मन्दिर पूर्व मुखका है। मन्दिरके आगे जगमोहन, जगमोहनके आगे नृत्यमंडप और उसके आगे भोगमन्दिर (एक दूसरेसे लगा हुआ) है। मन्दिरके चारों तरफ बड़े बड़े पत्थरोंसे बनी हुई ७ फीट मोटी ऊँची दीवार है, जिसके भीतर देवताओंके बहुतेरे छोटे मन्दिर बने हैं। भोग मन्दिरके पूर्व सिंह दरवाजे पर सिंहकी २ मूर्त्तियाँ हैं। घेरेके भीतर हिन्दुओंके सिवाय दूसरा कोई नहीं जाने पाता है।

उडीसा देशका प्रसिद्ध भुवनेश्वर का मन्दिर।

भुवनेश्वर शिवकी पूजा नीचे लिखे हुए क्रमसे नित्य होती है;—

१ भोरको घण्टी बजाकर वह जगाये जाते हैं।
२ आरती की जाती है।
३ मुख धोलाया जाता है।
४ स्नान कराया जाता है।
५ कपड़ा पहनाया जाता है।
६ दाना, मिठाई, दही और नारियलका जलपान कराया जाता है।
७ पूरी आदिसे प्रधान भोग लगाया जाता है।
८ छोटा जलपान कराया जाता है।
९ मामूली जलपान कराया जाता है।
१० कच्ची और पक्कीका भोग लगाया जाता है।
११ दोपहरके बाद बाजा बजाकर शिव जगाये जाते हैं।
१२ मिठाईका भोग लगाया जाता है।
१३ दोपहरके बाद स्नान कराया जाता है।
१४ वस्त्र पहनाये जाते हैं।
१५ दूसरा भोग लगाया जाता है।
१६ दूसरा स्नान कराया जाता है।
१७ बहुमूल्य वस्त्र पहनाकर पुष्प और इतर चढ़ाया जाता है।
१८ भोग लगाया जाता है।
१९ एक घण्टे बाद रातको भोग लगाया जाता है।
२० डमरू लिये और नृत्य करते हुए पञ्च-मुखी महादेवकी मूर्ति रक्खी जाती है।
२१ सोनेके समय आरती होती है।
२२ सोनेके लिये शय्या बिछाई जाती है।

बहुतेरे यात्री नृत्यमण्डपके भीतर जगन्नाथपुरीके समान सब वर्ण एकही पंक्तीमें बैठकर भोग लगी हुई कच्ची रसोई खाते हैं, पर मण्डपसे बाहर कोई नहीं खाता और बहुतेरे लोग पक्कीका प्रसाद लेते हैं। पण्डे लोग कहते हैं कि जमीनकी आमदनीसे भोग रागमें नित्य २५ रुपया खर्च होता है। पुरीके यात्री पुरी जानेके समय या पुरीसे लौटने पर भुवनेश्वरमें जाते हैं।

घेरेके बाहर बहुतेरे छोटे मन्दिर और पूर्वोत्तरके कोनेके पास चबूतरा है। उसके बाद पूर्व १०८ छोटे मन्दिरोंसे घेरा हुआ एक तालाब है। बड़े मन्दिरके दक्षिण २० एक-ड़का जङ्गल है। लोग कहते हैं कि ललित इन्द्रकेशरीका महल इसी जगह था। प्रत्येक जगह नेव और पाटनोंकी निशानियाँ देख पड़ती हैं।

बड़े मन्दिरके उत्तर बिन्दु सरोवर नामक बड़ा तालाब है। तालाबके जलके मध्यमें एक मन्दिर और स्थान बना है, जहाँ उत्सवोंके समयमें देवतोंकी चल मूर्त्तियाँ बैठाई जाती हैं। तालाबके किनारेके पास वासुदेव अर्थात् कृष्णजी और अनन्त अर्थात् बलदेवजीका मन्दिर है। मन्दिरके आगे जगमोहन, नृत्यमण्डप और भोगमन्दिर क्रमसे बने हैं। तालाबके पूर्व बगलसे भुवनेश्वरके मन्दिरकी शकलके (पर उससे छोटे) कई एक मन्दिर देख पड़ते हैं।

वासुदेवके मन्दिरसे $\frac{3}{4}$ मील पूर्वोत्तर ४० फीट ऊँचा कोटितीर्थेश्वरका मन्दिर है। कोटितीर्थेश्वरके मन्दिरसे $\frac{1}{2}$ मील पूर्व एक टीले पर नवीं सदीके अन्तका बना हुआ ब्रह्मेश्वर शिवका मन्दिर है। इसमें भीतर और बाहर बहुत नकासीका काम है। मन्दिरके पश्चिम ब्रह्मकुण्ड नामक एक तालाब है।

बड़े मन्दिरके पूर्वोत्तर छठवीं सदीके आरम्भका बना हुआ हीन दशामें भास्करेश्वर शिवका मन्दिर है। भास्करेश्वरसे $\frac{1}{2}$ मील पश्चिम राजरानीका मन्दिर है, जो एक समय

खूबसूरत था। मन्दिरके ताकोंमें ३ फीट ऊँची मूर्त्तियाँ हैं। राजरानीके मन्दिरसे ३०० गज पश्चिम आमके वृक्षोंका एक कुञ्ज है, जहाँ बहुतेरे मन्दिर बने हैं; जिनमें २० से अधिक अभी तक पूरे हैं; इनमें मुक्तेश्वर, केदारेश्वर, सिद्धेश्वर और परशुरामेश्वर प्रसिद्ध हैं। मुक्तेश्वरका मन्दिर ३५ फीट ऊँचा बहुत खूबसूरत है; इसमें बहुत कारीगरीकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। मन्दिरके पीछे एक तालाब और उससे ३० फीट दक्षिण मछलियोंसे भरा हुआ गौरीकुण्ड नामक छोटा तालाब है। पहिले तालाबका पानी इसमें आता है, परन्तु बहुत पानी बाहर निकलता है। गौरीकुण्डके पास ४१ फीट ऊँचा केदारेश्वरका मन्दिर है, जिसके पास एक कोठरीमें ८ फीट ऊँची हनुमानकी और सिंहासन पर खड़ी एक दुर्गाकी मूर्त्ति है। यह मन्दिर बहुत पुराना है। मुक्तेश्वरके पश्चिमोत्तर एक सुन्दर जगमोहनके साथ ४७ फीट ऊँचा सिद्धेश्वरका पुराना मन्दिर है। गौरी-तालाबके २०० गज पश्चिम सब मन्दिरोंसे अधिक पुराना परशुरामेश्वरका मन्दिर है। परशुरामेश्वरसे पूर्वोत्तर सुर्ख पत्थरसे बना हुआ अलम्बुकेश्वरका मन्दिर है, जिसको केशरी वंशके राजा अलम्बूकेशरीने सन् ६७७ ई० में बनवाया था।

बिन्दुसर तालाबके पश्चिम, सड़कके बगलपर नवीं सदीका बना हुआ वैताल-देवल है। वैताल-देवलके दक्षिण ३३ फीट ऊँचा और २७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा उत्तम नकाशी किया हुआ सोमेश्वरका मन्दिर है।

इतिहास—एक समय भुवनेश्वर कसबा बहुत समय तक उड़ीसेकी राजधानी था। केशरी वंशको नियत करनेवाला राजा ययातिकेशरीने, जिसने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसेमें राज्य किया था, उड़ीसेपर आक्रमण करनेवालेको खदेरकर राजा बना। उसने भुवनेश्वर कसबेको बसाकर उसको राजधानी बनाया और लगभग सन् ५०० ई० में भुवनेश्वरके वर्तमान बड़े मन्दिर (और जगमोहन) का काम आरम्भ किया। उसके पीछेके २ राजा मन्दिरको बनवाते रहे; तीसरे राजा ललितकेशरीने सन् ६५६ ई० में उसको तैयार किया। सन् ६७७ ई० में राजा अलंबुकेशरीने अलम्बुकेश्वरका मन्दिर बनवाया। केशरीवंशके राजा नृपतिकेशरीने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहरको बसाया और भुवनेश्वरको छोड़कर कटकको अपनी राजधानी बनाया। केशरी वंशके एक राजाने सन् १०९० और ११०४ ई०के बीचमें मन्दिरके जगमोहनके आगेका नृत्यमण्डप और भोगमन्दिर बनवाया। सन् ११३२ ई० में केशरी वंशके शैवराजाके राज्यका अन्त होगया; गङ्गा वंशका एक राजा दक्षिणसे आकर उड़ीसेका राजा बन गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—आदि ब्रह्मपुराण—(४० वाँ अध्याय) सम्पूर्ण पापोंको हरने वाला कोटि लिङ्गसे युक्त काशीके समान शुभ एकाम्रक्षेत्र है। पूर्व कालमें वहाँ एक आम्रका वृक्ष था इस लिये वह तीर्थ एकाम्रक्षेत्रके नामसे विख्यात होगया। वह तीर्थ विद्वान् गणोंसे पूर्ण, धन धान्यसे समन्वित, अनेक प्रकारके बलियोंसे आकीर्ण, गृहोंके अटारियोंसे संकीर्ण, श्रेष्ठ राजाओंके गृहोंसे सुशोभित और शङ्खोंसे पूरित है। श्रीमहादेवजी सब लोकोंके हितके लिये वहाँ विराजमान हैं उन्होंने पृथ्वीके समस्त तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाब, बावली, कूप और समुद्रोंसे एक एक बून्द इकट्ठे करके लोकके हितके अर्थ सब देवताओं सहित उस क्षेत्रमें बिन्दुसर नामक तीर्थ रचा। जो मनुष्य अगहन मासके शुक्लपक्षकी अष्टमीको जितेन्द्रिय हो

उस क्षेत्रमें जाकर विन्दुसरमें स्नान करके भक्तिपूर्वक देवता, ऋषि, मनुष्य और पितरोंको तिल और जलसे विधान पूर्वक तर्पण करेगा उसको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होगा। वहाँ ग्रहण और संक्रान्तिके दिन तथा समरात्रिंदिवकाल और युगादि तिथि अथवा अन्य शुभ तिथियोंमें ब्राह्मणोंको दान देनेसे अन्य तीर्थोंकी अपेक्षा सौगुना फल मिलता है। उस तीर्थमें पिण्डदान देनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है। वहाँ शिवजीके विधि पूर्वक पूजन और उनकी प्रदक्षिणा करनेसे मनुष्यको शिवलोक मिलता है और उसके २१ पुस्तका उद्धार होजाता है। वह क्षेत्र महादेवजीके चारों दिशाओंमें ढाई योजनमें विस्तृत है। उस क्षेत्रमें भास्करेश्वर महादेव हैं, जिनको पूर्व कालमें सूर्यने पूजा था। जो मनुष्य कुण्डमें स्नान करके शिवजीकी पूजा करता है वह शिवलोकमें जाता है।

जो पुरुष मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर, स्वर्णजालेश्वर, परमेश्वर विख्यातीश्वर, सूक्ष्मसूचिकेश्वर नामोंसे विख्यात इन शिवलिङ्गोंका दर्शन और विन्दुसर तीर्थमें स्नान करता है वह सब पापोंसे विमुक्त होकर विमानमें बैठे शिव लोकमें प्राप्त होता है। उस क्षेत्रमें जिस जिस स्थानोंमें शिवलिङ्ग स्थापित हैं सबकी पूजा करना उचित है। जो मनुष्य वैशाख आदिक महीनोंमें उस क्षेत्रके विन्दुसर तीर्थमें स्नान करके महादेव तथा पार्वती, कार्त्तिकेय, गणेशजी और सावित्रीका दर्शन करता है उसको शिवलोक मिलता है। कपिल तीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य अपने सब मनोरथ प्राप्त करके शिवलोकमें निवास करता है। एकाम्रक नामक शिव-क्षेत्र काशीजीके तुल्य है। वहाँ शरीर त्यागने वालेको मोक्ष हो जाती है।

स्कन्दपुराण—(उत्तरखण्ड) नीलगिरि (अर्थात् पुरुषोत्तमपुरके (नीलाचल) से ३ योजन दूर श्रीमहादेवजीका क्षेत्र एकाम्रक वन है। पूर्वकालमें महादेवजी पार्वतीके सहित अपने ससुर हिमाचलके गृहमें निवास करते थे। एक दिन उस नगरकी कई एक स्त्रियोंने उपहासके साथ पार्वतीसे कहा कि हे देवि! तुम्हारे पति अपने ससुरके गृहमें अनेक भाँतिके सुख भोग करते हैं, तुम कहो वह अपने घरको कब जायँगे ?। पार्वतीकी माताने पूछा कि पुत्री! तुम्हारे पतिमें कौन ऐसा अपूर्व गुण है कि तुम उनको इतना प्रिय समझती हो। पार्वतीने लज्जित होकर महादेवजीके पास जाकर कहा कि हे स्वामिन्! आपको ससुरालमें रहना उचित नहीं है; आप दूसरे स्थानमें चलें। शिवजी पार्वतीकी बातका कारण समझकर उनके साथ वैलपर सवार हो ससुरालसे चल दिये और भागीरथीके उत्तर तटपर बाराणसी नगरी बसा कर उसमें रहने लगे। द्वापर युगमें बाराणसीके काशिराज नामक राजाने घोर तपस्या करके महादेवजीको प्रसन्न किया। महादेवजीने राजाको ऐसा वरदान दिया कि मैं आवश्यकता होनेपर युद्धमें तुम्हारी सहायता करूंगा। एक समय विष्णुभगवान्‌ने क्रोध करके काशिराजपर अपना सुदर्शन चक्र चलाया। महादेवजी राजाकी रक्षाके-लिये अपने गणोंके साथ रणभूमिमें उपस्थित हुए। उन्होंने क्रोध करके पाशुपत अस्त्र छोड़ा, पर विष्णुके प्रभावसे वह व्यर्थ हो गया। उस पाशुपत अस्त्रसे काशीपुरीही दग्ध होने लगी। तब महादेवजी घबड़ाकर विष्णु भगवान्‌की स्तुति करने लगे। उस समय भगवान्‌ने कहा कि हे धूर्जटे! तुम्हारा पाशुपतास्त्र अजेय है; किन्तु मेरे चक्रके सामने उसकी शक्ति नहीं चलैगी। यदि बाराणसीको स्थिर रखनेकी तुम्हारी इच्छा है तो तुम पुरुषोत्तम क्षेत्रके नीलगिरिके उत्तर कोणमें जाकर पार्वतीके साथ निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी नन्दी

भृङ्गी आदि अपने गणों और पार्वतीजीको सङ्गमें लेकर एकाम्रकाननमें चले गय तबसे वह स्थान मुक्ति देनेमें काशीके समान प्रसिद्ध हुआ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वाँ अध्याय) पूर्व देशमें एकाम्र नामक शिवतीर्थ है। जो मनुष्य उस तीर्थमें महादेवजीकी पूजा करता है वह गणोंका स्वामी होता है वहाँके शिवभक्त ब्राह्मणोंको थोड़ीसी भूमिका दान देनेसे सार्वभौम राज्य मिलता है। मुक्ति चाहने वाले मनुष्यको वहाँ जानेसे मुक्ति मिलती है।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ८ वाँ खण्ड, पहिला अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्रमें जगन्नाथजीके गुरुस्वरूप भुवनेश्वर महादेव विराजते हैं, जिनके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पाप विनष्ट हो जाता है।

उदयगिरि और खंडगिरिके गुफा मन्दिर।

भुवनेश्वरसे ५ मील पश्चिम पुरी जिलेमें उदयगिरि और खण्डगिरि दो पहाड़ी हैं। छोटे वृक्षोंके जङ्गल होकर भुवनेश्वरसे मार्ग गया है। दोनों पहाड़ियोंके वीचमें एक तङ्ग घाटी है। दोनों पर पत्थर काटकर अनेक भाँतिकी वहुतेरी वौद्ध गुफा और मन्दिर वनाये गये हैं; जो ईशासे लगभग ५० वर्ष पहलेसे ५०० वर्ष पीछे तकके वने हुए हैं। सबसे पहलेकी गुफायें उदयगिरिपर और उनसे पीछेकी खण्डगिरिपर हैं। वैशाखमें खण्डगिरिका मेला होता है।

उदयगिरि—यह पहाड़ी ११० फीट ऊँची है। इसके कटि स्थानमें भीतरसे पत्थर निकालकर जगह जगह गुफा मन्दिर बने हैं;—

रानीनूर (याने रानीका महल)—सब गुफाओंसे नीचे एक दूसरेके ऊपर छोटी कोठरियोंके २ कतार हैं, जिनके आगे पायेदार वरण्डे और ४९ फीट लम्बी तथा ४३ फीट चौड़ी पहाड़ी काटकर बनी हुई अँगनई है। ऊपरके मञ्जिलमें, जो पूर्व मुखका है, ८ दरवाजे हैं, जहाँ २ द्वारपाल खड़े हैं, वरण्डा होकर (जो ६३ फीट लम्वा है) ४ छोटी कोठरियोंमें जाना होता है। बरण्डेके दोनों वगलोंमें ३ सिंह हैं। वहाँ हाथी और मनुष्योंकी वहुतसी मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं। निचले मञ्जिलमें भी ८ दरवाजे हैं। आगे जमीनके सतहपर ४४ फीट लम्वा सतूनदार वरण्डा है, जिससे ३ कोठरियोंमें जाना होता है।

गणेशगुफा—रानीनूर गुफाके प्रायः सीधा उत्तर उससे वहुत उँचाई पर २ कमरे हैं जिनके आगे ५$\frac{3}{4}$ फीट ऊँचा १ वरण्डा है। वरण्डेकी सीढ़ीके दोनों तरफ २ हाथी हैं।

स्वर्गद्वारी गुफा—रानीनूर गुफासे ५० गज पश्चिम एक सीढ़ी स्वर्गद्वार नामक दो मञ्जिली गुफाको गई है। उसके दोनों मञ्जिलोंमें दो कमरे और आगे एक वरण्डा है। वरण्डेके पाये अव टूट गये हैं।

जयविजय या हंसपुरकी गुफा—यह ऊपर लिखे हुए गुफाओंके उत्तर है। इसमें छोटी वड़ी वहुतसी मूर्तियाँ देखनेमें आती हैं।

गोपालपुरा—पूर्वोत्तरमें गोपालपुरा और मञ्चपुरा नामक गुफाओंके २ झुण्ड हैं। कमरेके पायोंपर खोदकर वने हुए लुलाट अक्षरोंमें २ लेख हैं जो अब पढ़े नहीं जाते।

वैकुण्ठ—यह गुफा और पाटलपुरा तथा जामपुरा दूसरी दो गुफायें जो थोड़ा पश्चिमोत्तर हैं, अव वहुत विगड़ गये हैं।

हाथीगुफा—७५ गज पश्चिमोत्तर हाथीगुफा है। वहाँ पत्थरके भीतर ५ फीट लम्बा और इतनाही चौडा खोखला है। उसके दरवाजेके ऊपर लाट अक्षरोंमें १ लम्बा शिलालेख है। जिसमें कलङ्गाके एरा राजाके यशका वर्णन हुआ है। वह राजा सन् ई० से करीव ४०० वर्ष पहले था। इसके अलावे उस गुफामें गुप्त अक्षर और कुटिला अक्षरोंमें कई छोटे शिलालेख हैं। हाथी गुफाके चन्द गज उत्तर पवनगुफा है।

सर्पगुफा—पवनगुफासे ७५ फीट दक्षिण-पश्चिम सर्पगुफा है। दरवाजेके सिर पर मोटी नकाशीका ३ सिरवाला एक साँप है जिसके नीचे वैठकर भीतर जाने योग्य द्वार है। उससे होकर ४ फीट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और इतनीही ऊँची गुफामें आदमी प्रवेश करता है। वहाँ १ शिलालेख है, जिसका हिन्दी अनुवाद "चूलाकर्मकी कोठरी और कर्म ऋषिका मन्दिर" होता है। उसके समीप भजन गुफा और थोड़ा उत्तर अलकपुरा गुफा है। इन दोनोंमेंसे कोई मशहूर नहीं है।

व्याघ्रगुफा—वह ५० फीट उत्तर पहाडीसे वाहर निकली हुई नाक और आँखियोंके साथ वाघके सिरके शकल की है। उसके दरवाजे पर दाँत लटके हुए हैं और सिरके ऊपरका हिस्सा ८$\frac{3}{4}$ फीट पहाड़ीसे लगा हुआ है। वह गुफा भीतरी ९ फीट चौड़ी है। जिसका छोटा दरवाजा वाघके हलककी जगह पर बना है। दरवाजेके दहिने लाट अक्षरोंमें ससेविनका गुफा लिखा है। वह गुफा ईशासे ३०० वर्ष पहले की होगी। वाघ-गुफाके उत्तर १२ फीट लम्बी और ६ फीट चौड़ी 'ऊर्धवांह' नामक कोठरी है, जिसके आगे एक वरण्डा बना है।

खण्डगिरि—यह पहाड़ी घने दरख्तोंसे छिपी हुई १३३ फीट ऊँची है। खड़ी राहसे ऊपर जाना होता है। करीव ५० फीट ऊपर २ रास्ते हो गये हैं; एक वायें पहाड़ीके पूर्व वगलमें काटे हुए गुफाओंका और दूसरा दाहिने 'अनन्ता गुफाको' गया है।

अनन्तागुफा—उस गुफाके आगे ४ द्वार और एक पायादार वरण्डा है। गुफामें पीछेकी दीवारके पास बुद्धकी मूर्त्ति है। दीवारमें मनुष्य, पशु और पक्षीकी बहुत सी मूर्त्तियाँ वनी हैं, जहाँ लाट अक्षरोंमें और कुटिला अक्षरोंमें २ शिलालेख हैं।

वायेंकी गुफायें—अनन्तागुफासे दो मुहानीं रास्तेके पास लौटकर वायेंके रास्तेसे जाना चाहिये। आगेकी गुफाओंके पास १२ वीं सदीका संस्कृत लेख है, जिसमें लिखा है कि आचार्य्य कलाचन्द्र और उसका विद्यार्थी बालाचन्द्रकी यह गुफा है। उससे आगे दो हिस्सोंमें पूर्व मुखकी गुफाओंका एक सिलसिला है। गुफाओंके भीतर पीछेकी दीवारमें अनेक बुद्धकी मूर्त्तियाँ और चन्द नई जैन देवताओंकी नई मूर्त्तियाँ हैं पूर्व छोरके पास एक चबूतरे पर वहुत जैनमूर्त्तियाँ हैं। दूसरी कोठरी भी ऐसी ही है। पीछेकी दीवारमें एक फीट ऊँची ध्यान करती हुई बुद्धकी मूर्त्तियोंका एक कतार है और नीचे: बैठी हुई स्त्रियोंकी अनेक मूर्त्तियाँ हैं जिनमें चन्द चतुर्भुजी और दूसरी सब ८ वाँह वाली हैं।

वहाँसे पहाड़ीके सिरे तक कड़ा चढ़ाव है। सिरोभाग पर १८ वीं शदीका बना हुआ पारसनाथका एक मन्दिर है। मन्दिरके दक्षिण—पश्चिम १५० फीट व्यासका 'देवसभा' नामक एक स्थान है; जिसके १०० गज पूर्व पत्थर खोदके वनाया हुआ आकाश-गङ्गा नामक तालाव है। तालावके नीचे एक गुफा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यहाँ उड़ीसेके राजा ललित इन्द्र केशरीका रिमेन्स रक्खा है।

सोलहवाँ अध्याय।

(सूबे उड़ीसेमें) जगन्नाथपुरी और कोणार्क।

जगन्नाथपुरी।

कटक कसबेसे ५३ मील दक्षिण जगन्नाथपुरीकी सरकारी कचहरी है जगन्नाथजीकी सड़क, जो कटकसे १३½ मील आगे भुवनेश्वरके यात्रीको छूट जाती है, भुवनेश्वरसे २ मील आगे छूटनेकी जगहसे ८ मीलपर फिर मिलजाती है। उस ८ मीलके भीतर २ चट्टी और एक सूखी नदी मिलती हैं। सड़कसे ५ मील तक भुवनेश्वरके मन्दिर देख पड़ते हैं। कटकसे आगे २६½, ३०½, ३१½, ३४. ३५½, ३८¼, और ४०¾ मीलपर एक एक चट्टी है । पिछली चट्टीसे करीब ½ मील दूर साक्षीगोपालका सुन्दर शिखरदार मन्दिर है । मन्दिरके आगे जगमोहन बना है। नियत समयपर मन्दिरका पट खुलता है । वहाँके पण्डे यात्राके साक्षीके लिये ताड़के पत्रपर यात्रियोंके नाम लिखते हैं और पुआका प्रसाद देते हैं। मन्दिरके पास मोदियोंकी कई दुकानें हैं। कटकसे ४२¼ मीलपर तालाव और बस्तीके पास चट्टी, ४५ मीलपर सूखी नदीके दोनों किनारोंपर बस्ती और चट्टी और ४८ मीलपर एक छोटी चट्टी है। उसके २½ मील पहलेसे जगन्नाथजीका मन्दिर देख पड़ता है। उस चट्टीसे आगे कोसों तक एक बड़ी झील है, इस लिये पुरीकी सड़क बायें घूमकर गई है।

छोटीसे १ मील आगे कई मन्दिर, २¾ मीलपर 'अठारह नाला' का पुल और ३½ मील पर अर्थात् कटकसे ५१½ मील दूर चन्दनतालाब है, जहाँसे सब यात्री गाड़ी छोड़कर पैदल जाते हैं। कितने यात्री तो उस स्थानसे कई मील पहिलेही अपने जूतेको रख देते हैं। "अठारहताला" का पुल जिसको मरहटा पुल भी कहते हैं, २७८ फीट लम्बा और ३८ फीट चौड़ा है; उसके नीचे १९ मेहराबियां बनी हैं और ऊपरसे सड़क निकली है। यह पुल बहुत पुराना है।

कटक और पुरीके बीचमें जगह जगह केलोंके बाग, केवड़ोंके जंगल और स्थम्भ, दीमकोंकेटीले (वल्मीक),जिनमें कोई कोई दो गज ऊँचे और चार गज घेरेके हैं और खजूर तथा नारियलके बाग देख पड़ते हैं। चट्टियोंपर यात्रियोंके टिकनेके मकान और खाने पीनेका सामान तैय्यार रहता है।

जगन्नाथपुरी सूबे उड़ीसेमें भारतवर्षके पूर्वके समुद्रके किनारे पर (१९ अंश, ४८ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५१ कला ३९ विकला पूर्व देशान्तरमें) पुरी जिलेका प्रधान कसबा और सदर-स्थान, भारतवर्षके ४ धामोंमेंसे एक पवित्र तीर्थ-स्थान है। जगन्नाथजीके कुछ यात्री कलकत्तेसे कटक तक आगबोट द्वारा और कटकसे सड़क द्वारा औरकुछ लोग रानीगञ्जसे बांकुडा, मेदनीपुर और कटक होकर पैदल सड़क द्वारा पुरीमें पहुँचते हैं। दक्षिण-पश्चिमके यात्री भी पैदलही आते हैं; किन्तु अब दक्षिण–पश्चिम वेजवाड़ा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटकके पास तक रेलवे लाइन तैयार होचुकी है और पूर्वोत्तर आसिनसोलसे मेदनीपुर, बालेश्वर और कटक होकर पुरी तक कई बरसोंमें रेलवे खुल

जायगी। पुरीकी सीमा समुद्रसे मधुपुर नदी तक १$\frac{१}{२}$ मील चौड़ी और बालिखण्डासे लोकनाथके मन्दिर तक ३$\frac{१}{२}$ मील लम्बी है। पुरी यात्रियोंके टिकनेका शहर है। यहाँ दस्तकारी और तिजारत बहुत कम है। मन्दिरकी आमदनी और पूजासे यहाँके लोग परवरिश पाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुरीमें २८७९४ मनुष्य थे, अर्थात् २८४७६ हिन्दू, २६९ मुसलमान, ४५ कृस्तान और ४ दूसरे। इनमेंसे १५९३० पुरुष और १२८६४ स्त्रियाँ थीं। लेकिन बड़े तिहवारपर १ लाख यात्री बढ़ जाते हैं। हर महीनेमें दिन और रात यात्रियोंके झुन्ड पुरीमें पहुँचते हैं। सालाना करीब ५० हजारसे अधिक और कभी कभी सालमें तीन लाख यात्री पुरीमें आते हैं। केवल रथयात्राके समय कभी कभी लगभग १ लाख यात्री इकट्ठे होजाते हैं। पण्डे लोगोंके हजारों नौकर या हिस्सेदार हिन्दुस्तानके हर जिलेसे यात्रियोंको खोजकर पुरीमें ले आते हैं। पण्डे लोग उनके टिकनेको मकान देते हैं।

जगन्नाथजीके मन्दिरसे जनकपुर तक चौड़ी सड़क गई है उसके सिवाय सब सड़कें तङ्ग और कच्ची हैं। कसबा नीची जमीनपर बसा है। बीचमें ऊँची बालूदार जमीन होनेके कारण कसबेका पानी समुद्रमें नहीं गिरता, इसलिये कसबेका जल वायु रोगकारक रहता है। यहाँके हर एक मकान करीब ४ फीट ऊँचे चबूतरे पर बना है। मकानोंकी दीवारें टट्टियोंकी हैं। टट्टियोंपर मट्टीका लेवार दिया हुआ है। प्रतिवर्ष सैकड़ों यात्री पुरीमें मरते हैं। उड़ीसेके जलवायू रोगवर्द्धक होनेके कारण यात्रियोंमेंसे प्रति वर्ष हजारों मनुष्य पुरी और पैदलके रास्तेमें मरजाते हैं, परन्तु अङ्गरेजी बन्दोबस्तसे तन्दुरस्तीमें अब तरक्की हुई है। टिकने वाले मकानोंके लिये मकानके मालिकको लेसन्स लेना पड़ता है और मकानोंमें टिकने वालोंकी संख्या नियत की जाती है।

पुरी जिलेका सदर स्थान है; पर यहाँकी दिवानी कटकके जजके आधीन है। पुरीकी सरकारी कचहरियाँ समुद्रके निकट बनी हैं। पण्डोंके मकानोंके अतिरिक्त यहाँ बड़ा छत्तामठ, समाधिमठ, रामगोपालमठ, आचारीमठ, संन्यासीमठ, साधुवैष्णवमठ, गौड़ियामठ इत्यादि बहुतेरे मठ हैं, जिनमें कई बड़े धनवान हैं। पण्डे लोग यात्रियोंसे उनके नाम और पते अपनी स्याही कलमसे बहीमें लिखवाते हैं; पर उड़ीसेके रीत्यनुसार वे लोग अपनी ताडपत्रकी बहीपर काटेंके कलमसे उड़िया अक्षरोंमें यात्रियोंके नाम और पते लिखलेते हैं। (आदि ब्रह्मपुराण—उत्तरार्द्धके प्रथम अध्यायमें ताल-पत्रपर देवाक्षरोंमें पुस्तक लिखनेकी कथा है)। पुरीमें बन्दर बहुत हैं।

मार्कण्डेय तालाब, चन्दनतालाब, श्वेतगङ्गातालाब, पार्वतीसागर (लोकनाथके पास) और इन्द्रद्युम्नतालाबको लोग पंचतीर्थ कहते हैं। पुरीमें ५ महादेव प्रख्यात हैं; लोकनाथ, मार्कंडेश्वर, कपालमोचन, यमेश्वर और नीलकण्ठ।

जगन्नाथजीका मन्दिर—पुरीके बीचमें प्रधान सड़कके अखीर पश्चिम समुद्रसे लगभग १ मील उत्तर आस पासकी भूमिसे लगभग २० फीट ऊँची जमीनपर, जिसको 'नीलगिरि' कहते हैं, जगन्नाथजीका मन्दिर है (उसके भीतर, अन्य धर्मी और नीच जातिके मनुष्य तथा चमड़ेकी कोई चीजें नहीं जाने पाती हैं।

मन्दिरके बाहरका घेरा ६६५ फीट लम्बा और ६४५ फीट चौड़ा है। इसकी कंगूरेदार दीवार लगभग २२ फीट ऊँची है, जिसके प्रत्येक बगलके मध्यमें एक बड़ा फाटक

बना है । उनमेंसे पूर्वका फाटक सब फाटकोंसे उत्तम है । उसका चौखट नकाशीदार काले पत्थरका और किवाड़ सालकी लकड़ीका बना है; फाटकके ऊपरके चौकुण्ठे मकानमें संगतरासीका उत्तम काम है; प्रतिमाओंमें कई मूर्त्तियाँ आदमीके समान बड़ी हैं । दरवाजेके दोनों तरफ दो सिंहकी मूर्त्तियाँ हैं, इससे इसका नाम सिंह दरवाजा पड़ा है । उत्तरके फाटकपर पत्थरके २ हाथी और काठके ३ सारथी हैं; जो यात्राके समय रथोंपर बैठाये जाते हैं और दक्षिणके फाटकपर पत्थरके २ घोड़े थे, जो अब नहीं हैं । दक्षिणका फाटक १५ फीट ऊँचा है, जिसके ऊपर बहुतसी मूर्त्तियाँ बनी हैं । मन्दिरके घेरेके बाहर चारों तरफ ४५ फीट चौड़ी सड़क है ।

सिंहदरवाजेके आगे काले रंगके एकही पत्थरका ३५ फीट ऊँचा १६ पहलका सुन्दर अरुणस्तम्भ खड़ा है, जिसके सिरपर सूर्यके सारथी अरुणकी मूर्त्ति है । लोग कहते हैं कि १८ वीं सदीके आरम्भमें महाराष्ट्र लोग कोणार्कके सूर्यके मन्दिरसे इस स्तंभको यहाँ लाए थे ।

सिंहदरवाजेके पूर्वके मैदानमें बाजार है, जिसमें सूखे भातका महाप्रसाद और जगन्नाथ आदिके पट यात्री लोग खरीदते हैं और कोई कोई यहाँसे बेंत तालपत्रका छाता और चन्दन भी प्रसाद लेजाते हैं ।

बाहरके घेरेके भीतर ४५० फीट लम्बा और ३०० फीट चौड़ा दूसरा घेरा है; जिसके भीतर जगन्नाथजी और दूसरे देवताओंके बहुतसे मन्दिर खड़े हैं । इसकी दीवार बाहरकी दीवारसे बहुत कम ऊँची है । इसमेंभी चारों तरफ ४ फाटक हैं ।

जगन्नाथजीके खास मन्दिरके आगे; अर्थात् पूर्व जगमोहन, जगमोहनके आगे नृत्यमन्दिर और इसके आगे भोगमन्दिर है; चारों परस्पर मिले हुए हैं । इतिहासोंसे जान पड़ता है कि जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको राजा अनङ्गभीमदेवने, जिसने हुगलीसे गोदावरी नदी तक राज्य किया था बनवाया । १४ वर्ष काम होनेके उपरान्त सन् ११९८ ई० में मन्दिर तैयार होगया । तबसे यह कई बार मरम्मत हुआ । इस समय भी मरम्मत हो रहा है; इसके लिये करीब १ लाख रुपया चन्दा हो चुका है । नृत्यमन्दिर पीछेका बना हुआ है । भोगमन्दिरको पिछले शतकमें महाराष्ट्रोंने बनवाया ।

जगन्नाथजीका निज मन्दिर १९२ फीट ऊँचा, ८० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है है । चारों ओर मन्दिर और जगमोहन पर स्त्रियों और पुरुषोंकी बहुतसी प्रतिमाएं बनी हुई हैं और लिखित चित्रभी हैं । मन्दिरके ऊपर अर्थात् इसके कटि स्थान पर दक्षिणकी कोठरी में बलिराजा, पश्चिम वालीमें नृसिंहजी और उत्तरकी कोठरीमें कलियुगकी प्रतिमा है और शिखरके ऊपर नील चक्र और पताका लगी है ।

मन्दिरके भीतर पश्चिम ओर ४ फीट ऊँची और १६ फीट लम्बी पत्थरकी बेदी है, जिसको रत्नबेदी कहते हैं रत्नबेदीके दहिने ओर बाएं ४ फीट और उसके पीछे अर्थात् पश्चिम ३ फीट चौड़ी गली है, जिससे होकर सब यात्री लोग जगन्नाथजी आदि मन्दिरके देवताओंकी परिक्रमा करते हैं रत्नबेदीके ऊपर उत्तर तरफ ६ फीट लम्बा सुदर्शनचक्र है, जिससे दक्षिण जगन्नाथजी, सुभद्रा और बलभद्रजी क्रमसे खड़े हैं । जगन्नाथजीके एक तरफ लक्ष्मीजी

और दूसरी ओर सत्यभामा और आगे राजा इन्द्रद्युम्नकी धातु-प्रतिमा हैं। बलभद्रजी ६ फीट ऊँचे गौरवरण जगन्नाथजी बलभद्रजीसे एक अंगुल छोटे श्याम रङ्ग और सुभद्राजी ४ फीट ऊँची पीत वरण हैं। तीनों मूर्तियां काष्ठमय हैं; इनके हाथ और पांव ठूँठे और नासिका बड़ी है। देखने में सुभद्राकी बांह नहीं हैं, पर वे कपड़ेके भीतर लटकी हैं। जगन्नाथजी और बलभद्रजीके ललाटपर एक एक हीरा लगा है। तीनों मूर्त्तियोंको नित्यही समय समयपर और उत्सवोंके समय भांति भांतिकी पोशाक और रङ्ग विरङ्गकी पगाड़ियाँ तथा सुनहले हाथ और दूसरी पोशाकें पहनाई जाती हैं और अनेक प्रकारके शृङ्गार होते हैं। बहुत सकाले जागरणके समय मंगला आरतीका सादा शृङ्गार होता है। तब अवकाश वेष, बाद प्रहर वेष और उसके बाद चन्दन लगा वेष बनाया जाता है। सबसे प्रसिद्ध बड़ा शृङ्गार वेष है, जो गोधूलीके बाद सन्ध्या धूपके तुरन्तही पीछे बनाया जाता है इनके अतिरिक्त समय समयपर जगन्नाथजीका दामोदर वेष, वामन वेष, बुद्ध वेष गणेश वेष आदि बनाये जाते हैं।

मूर्त्तियोंका पोशाक पहनाने और शृङ्गार होजानेके उपरान्त मन्दिरका फाटक खुलता है और यात्रीगण दर्शन करते हैं। मन्दिरमें अँधियारा रहनेके कारण दिनमें भी दीप जलाया जाता है, मंगला आरतीके समय पहर दिन चढ़नेपर प्रधान भोग लगजानेपर और गोधूलीके बादके बड़े शृङ्गारके समय नित्य ३ बार यात्रीगण खास मन्दिरमें जाकर रत्नवेदीकी परिक्रमा करते हैं और मूर्त्तियोंके चरणके पास अपना सिर नवाते हैं; बाकी समयोंमें जगमोहनसे दर्शन होता है।

मन्दिरके आगेका जगमोहन १२० फीट ऊँचा, ८० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। इसके मध्यमें चौखूटे ४ पाये और बगलमें दो बाजू हैं। जगमोहनमें ३ तरफ बड़े दरवाजे हैं। उत्तरके बाजूमें जगन्नाथजीका असवाब रहता है। यात्रीगण जगमोहनमें इकट्ठे होकर जगन्नाथ आदि देवताओंका दर्शन करते हैं; नियत समयोंमें वे लोग खास मन्दिरके भीतर जाते हैं।

जगमोहनसे पूर्व नृत्यमन्दिर है। इसके उत्तर और दक्षिणके बगलमें चार चार चौखूटे पाये और भीतर चार, चार पायोंके ४ कत्तार हैं। पायोंमें देवताओंके चित्र बनाये गये हैं। नृत्यमन्दिर भीतरसे ६९ फीट लम्बा और ६७ फीट चौड़ा है। इसके पश्चिमके द्वारपर, जो जगमोहनके पास है, जय और विजयकी मूर्त्तियाँ और पूर्वके हिस्सेमें एक स्तम्भपर गरुड़की मूर्त्ति है। इस मन्दिरमें समय समयपर स्त्रियाँ नाचती हैं और बाजा बजता है।

नृत्यमन्दिरके पूर्व १२० फीट ऊँचा, ६० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा भोगमन्दिर है, जिसपर नीचेसे ऊपर तक पत्थर खोदकर असंख्य मूर्त्तियाँ बनाई गई हैं। लोग कहते हैं कि पिछले शतकमें महाराष्ट्रोंने कोणार्कके काले मन्दिरके हिस्सेका पत्थर लाकर ४० लाख रुपयेके खर्चसे इसको बनवाया। पाकशालासे भोगमन्दिर तक एक पाटा हुआ रास्ता है। भोगकी सामग्री पाकशालासे तैय्यार करके इसमें लाई जाती हैं।

भीतरीवाले हातेमें जगन्नाथजीके मन्दिरसे दक्षिण एक पीपलका वृक्ष है। उसके पास ३८ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा, जिसमें पाये लगे हुए हैं, मुक्तिमण्डप है, जहाँ पण्डित लोग शास्त्रार्थ करते हैं। उसके बाद अक्षयवट है, जिसको यात्रीगण अङ्कमाल करते हैं। उसके पास प्रलयकालके विष्णुकी बालमूर्ति है, जिसको बालमुकुन्द कहते हैं। उसी तरफ रोहिनीकुण्ड नामक एक बहुत छोटा कुण्ड, जिसके पास पत्थरका चतुर्भुजी काक है और विमला देवी, नृसिंहजी, लक्ष्मीजी, एकादशी आदि बहुत देव देवियोंके मन्दिर हैं। बड़े

मन्दिरसे पश्चिम सरस्वती, कर्माबाई, कर्म लिखनेवाला विधाता, काली आदि देव मूर्त्तियाँ हैं। उत्तरके दरवाजेके पास शीतलाकी मूर्त्ति है। इनके अतिरिक्त घेरेके भीतर शिव, सूर्य्य, हनूमान, गणेश, मङ्गला आदि देव देवियोंके बहुतसे मन्दिर हैं। उस हातेमें लगभग ५० स्थान और मन्दिर बने हुए हैं।

बाहरके हातेमें सिंहदरवाजेपर घेरेके भीतर २१ सीढ़ियोंके ऊपर मन्दिरका फर्श है। दरवाजेसे प्रवेश करने वालोंके दहिने महाप्रसाद बेंचने वालोंकी दूकानें हैं, जहाँ बहुतसे लोग महाप्रसाद खरीदते हैं। फाटककी मेहरावीके एक ताकमें जगन्नाथजीकी छोटी मूर्त्ति है, जिसको लोग; पतितपावन कहते हैं। चमार इत्यादि नीच जातिके लोग, जो मन्दिरके हाते में नहीं जाने पाते, इसी मूर्त्तिका दर्शन करते हैं। इसी जगह १$\frac{1}{4}$ हाथके ताकमें २२ भुजवाले ठाकुरजी हैं। सिंहदरवाजेसे उत्तर स्नानकी वेदी है; जहाँ ज्येष्ठमें जगन्नाथजी स्नानके लिये लाये जाते हैं। दरवाजेके पास एक इमारत है, जिसमें स्नान देखनेके लिये लक्ष्मीजी बैठती हैं, और दरवाजेके दक्षिण एक दूसरी इमारत है, जिसमें भगवान्के फिरने पर स्वागतके लिये लक्ष्मीजी जाती हैं। बाहरके हातेके पूर्व-दक्षिणके कोनेके पास जगन्नाथजीकी पाकशाला है, जिसमें सैकड़ों चूल्हे बने हुए हैं। एक एक चूल्हेपर कई एक भांड़े चढ़ते हैं। उत्तरके हाथी फाटकसे पश्चिम-दक्षिण वैकुण्ठ नामक छोटा मकान है जहाँ बहुतसे पण्डे अपने यात्रियोंसे अटका संकल्प कराते हैं।

पुरीमें श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर।

जगन्नाथजीका मन्दिर।

उत्तर

दक्षिण

फीटका स्केल

५० १०० १५० २०० ३००
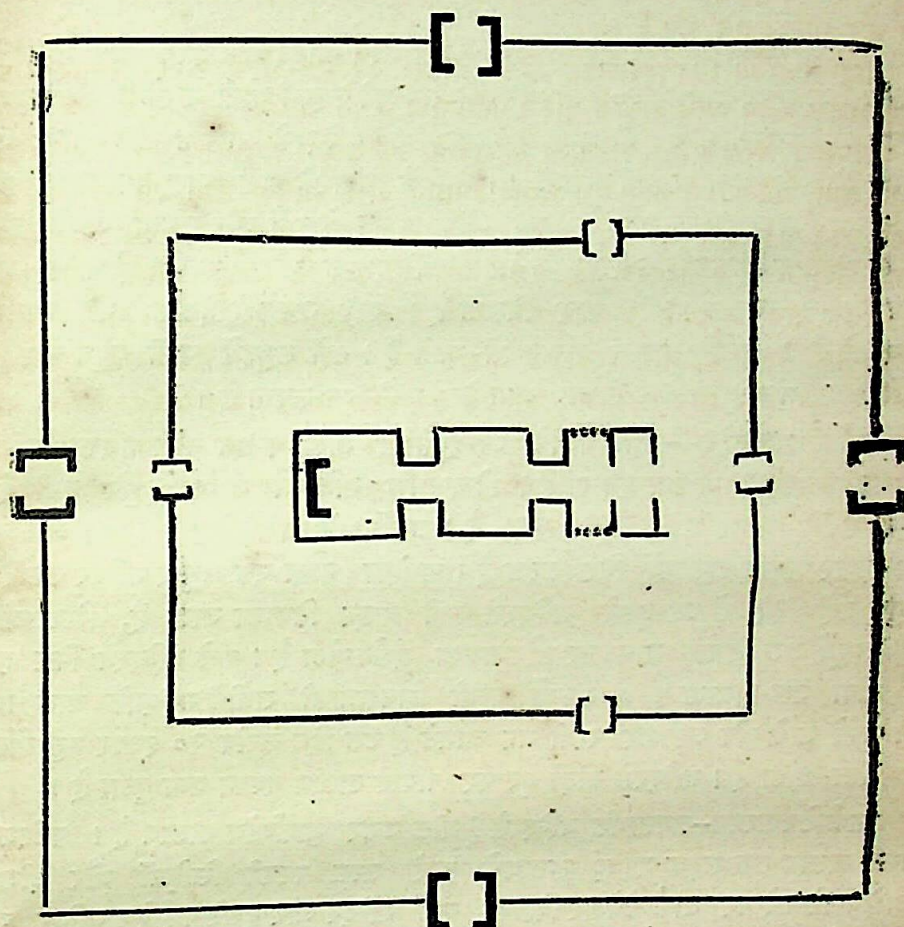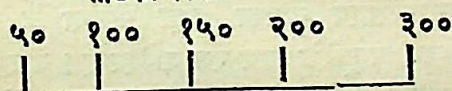
१ इञ्चका १५० फीट

कपालमोचन और यमेश्वर—जगदीशके मन्दिरके कोटके बाहर उसके पश्चिम-दक्षिण गहड़ी जमीनपर कई एक मन्दिरोंके साथ तीन मुख वाले कपालमोचन शिवका मन्दिर है। कपालमोचनसे $\frac{1}{2}$ मील दक्षिण एक मन्दिरमें यमेश्वर शिवलिङ्ग है। यमेश्वरसे थोड़ा दक्षिण गोपीनाथका मन्दिर है।

श्वेतगङ्गा—जगन्नाथजीके मन्दिरसे पश्चिम-दक्षिण स्वर्गद्वारके रास्तेके पास श्वेतगङ्गा नामक एक पक्का तालाव है, जिसके पूर्व किनारे पर श्वेतकेशवका मन्दिर बना हुआ है।

श्वेतकेशवकी मूर्त्ति जगन्नाथजीके समान काष्ठमय है। जगन्नाथजीके कलेवर बदलनेके समय इनका भी कलेवर बदलता है।

स्वर्गद्वार—जगन्नाथजीके मन्दिरसे १ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके किनारे पर एक चौथाई मीलकी लम्बाईमें स्वर्गद्वार है, जहाँ यात्री लोग समुद्रकी लहरमें स्नान करते हैं। बड़े तेहवारोंके समय लगभग ४० हजार आदमी समुद्रकी लहरमें गोता मारते हैं। समुद्रको नारियल और रत्नोंकी भेट दी जाती है। एक छोटे मन्दिरके पास ४ फीट ऊँचा एक स्तम्भ है जिसपर पूजा रक्खी जाती है। समुद्रके किनारेके पास वालू पर बहुतेरे छोटे छोटे मठ हैं। मलूकदासके मठमें उनकी मूर्तिका दर्शन होता है और टुकड़ा अर्थात् लीटी और साग प्रसाद मिलता है कबीरदासके मठमें कबीरदासके चौराका दर्शन होता है और तुर्रानी अर्थात् भातका पानी प्रसाद मिलता है। वहाँ नानकशाहियोंका भी एक मठ है। बहुतेरे लोग मरनेके समय स्वर्गद्वारमें जाते हैं। वहाँ समुद्रमें पानी बहुत कम है; किनारेसे १ मीलसे अधिक निकट आगबोट नहीं आ सकता है।

लोकनाथ महादेव—जगन्नाथजीके मन्दिरसे १ मील पश्चिम लोकनाथका मन्दिर है। सड़क कच्ची और वालूदार है। लोकनाथके मन्दिरमें जलकी भूरि फूटी है। मन्दिर सर्वदा अथाह जलसे पूर्ण रहता है। जलके भीतर शिवलिङ्ग है। वह जल एक नाला होकर पार्वती तालावमें गिरा करता है। पानीका नाला एक दूसरे मन्दिर तक है। फाल्गुण वदी ११ से उस दूसरे मन्दिरसे पानी बाहर निकाला जाता है, शिवरात्रीके दिन सम्पूर्ण जल निकल जाने पर लोकनाथका दर्शनहोता है। पीछे मन्दिरमें फिर दश हाथ ऊँचा जल होजाता है। सैकड़ों यात्री शिवरात्रीकी रात्रीमें मन्दिरके आस पास अपने अपने आगे दीप जलाकर रात्री भर जागते हैं उस दिन करीब २० हजार मनुष्योंका वहाँ मेला होता है। मन्दिरसे थोड़ी दूर पर पार्वती तालाव पक्का बना हुआ है।

मार्कण्डेयतालाव—जगन्नाथके मन्दिरसे ½ मील उत्तर मार्कण्डेय तालाव है। पश्चिमके फाटकसे तालाव तक सड़क गई है तालावके चारों तरफ पक्की सिढ़ियाँ और दीवारें हैं, दक्षिण किनारे पर मार्कण्डेयेश्वर शिवका बड़ा मन्दिर और दूसरे कई देव मन्दिर बने हैं। सम्पूर्ण यात्री वहाँ स्नान करके जगन्नाथजीका दर्शन करते हैं।

चन्दनतालाव—मार्कण्डेय तालावसे पूर्व कटककी सड़कके पास लगभग २२५ गज चौड़ा और इससे अधिक लम्वा चन्दनतालाव नामका बड़ा पोखरा है उसके चारों तरफ पक्की सिढ़ियाँ बनी हैं और मध्यमें चबूतरेके साथ एक मन्दिर है। नाव द्वारा उस मन्दिरमें जाना होता है। वैशाखकी अक्षय तृतीयाको देवताओंकी चल मूर्तियोंको नाव पर चढ़ाकर उस तालावमें जलकेलि कराई जाती है और वे उस मन्दिरमें बैठाई जाती हैं।

जनकपुर—जगन्नाथजीके मन्दिरसे १½ मील दक्षिण-पूर्व जनकपुर है, जिसका नाम पुराणमें गुढ़िच क्षेत्र लिखा है। उसी जगह काष्ठमूर्तियाँ रची गई थीं इस लिये उसको जनकपुर (जन्मस्थान) कहते हैं। एक चौड़ी सड़क, मन्दिरसे जनकपुर तक गई है सड़क के दक्षिण बगल पर पुरीके राजा मुकुन्ददेवका मकान है।

जनकपुरके मन्दिरके चारों तरफ दोहरी कोट है। बाहरकी कँगूरेदार दीवार करीब २० फीट ऊँची है मन्दिरका प्रधान फाटक पश्चिम तरफ है जिसके पास पत्थरके २ सिंह खड़े हैं पुरीके मन्दिरोंके समान वहाँ भी खास मन्दिर, जगमोहन, नृत्यमन्दिर और भोगमन्दिर लगातार बने हुए हैं। पर वहाँके मन्दिर पुरीके मन्दिरोंसे दरजेमें बहुत कम हैं। खास मन्दिर में ४ फीट ऊँची और १९ फीट लम्बी पत्थरकी रत्नवेदी (सिंहासन) है जिसपर रथयात्राके समय पुरीके जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा बैठाई जाती हैं। घेरेके भीतर एक जगह पाकशाला और दूसरे कई स्थान और मकान बने हुए हैं जनकपुरके मन्दिर बहुत पुराने हैं।

इन्द्रद्युम्न तालाब--जनकपुरके मंदिरसे थोड़ा पूर्व मार्कण्डेय तालाबसे कुछ छोटा इन्द्रद्युम्न तालाब है। उसके चारों बगलोंमें पत्थरकी सीढ़ियाँ हैं, तालाबमें कछुए बहुत रहते हैं। तालाबके पास एक मन्दिरमें नीलकण्ठ महादेव और इन्द्रद्युम्न और दूसरे मन्दिरमें पद्मनाभ भगवान हैं।

जगन्नाथजीके मन्दिरका प्रबंध-- मन्दिरकी वार्षिक आमदनी जागीर आदिसे लगभग ५ लाख रुपये और यात्रियोंकी पूजासे करीब ६ लाख रुपये हैं। मन्दिरके पुजारी, पण्डे मठधारी नौकर और दूसरे देशोंसे यात्रियोंको ले जानेवाले गुमास्ते तथा नौकर सब मिलकर ६ हजारसे अधिक मनुष्य हैं। २० हजारसे अधिक पुरुष स्त्री और लड़के जगन्नाथजीसे पर्वरिश पाते हैं। जिनमेंसे लगभग ६५० आदमी मन्दिरके कामोंमें मोकर्रर हैं। इनमेंसे कोई जगन्नाथजीका बिस्तर लगाता है कोई उनको जगाता है, कोई पानी कोई भोजन कोई पान देता है कोई कपड़ा धोता है कोई पोशाक गिनता है इत्यादि। ४०० रसोईदारोंके घरके लोग, १२० नृत्य करनेवाली लड़कियाँ और कई एक हजार पुजारी और पण्डे हैं। उनमें बहुतेरे बड़े धनी हैं। मन्दिरके प्रधान प्रबंधकर्त्ता पुरीके राजा हैं।

जगन्नाथजीकी नित्यकी सेवा--सुबहको घन्टी बजाकर जगन्नाथ, बलभद्र आदि देवता जगाये जाते हैं। बाद कपाट खोला जाता है और उनको धूप दिखलाया जाता है। ११ बजे आरामके लिये उनकी प्रार्थना की जाती है और भोजनकी सम्पूर्ण सामग्री सिंहासनके आगे लाकर रक्खी जाती है। समय समयके भोगोंमें सकाल भोग, द्विपहर भोग, सन्ध्य भोग और (उसके पीछेका) शृंगार भोग प्रधान हैं। बहुतसी सामग्री तैयार करके भोग मन्दिरमें रक्खी जाती हैं और फाटक खोलकर भोग लगाई जाती हैं। साधुओंकी खास सामग्रीभी भोग मन्दिरमें रक्खी जाती है। राजाकी सामग्री खास मन्दिरमें भोग लगती है। राजाकी गोपाल वल्लभ नामक एक खास सामग्री और महलकी बनी हुई मिठाई नित्यहीं भोग लगजानेके पीछे बेंच दी जाती हैं; उनका दाम राजाके खानगी हिसाबमें रक्खा जाता है चारों भोगोंके समय एक एक घंटे तक पट बन्द रहता है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि कर्माबाई नामक एक स्त्री वात्सल्य उपासक हुई वह नित्य प्रातःकाल उठकर बिना प्रातःकालकी क्रिया किए हुए अङ्गारों पर एक छोटे पात्रमें खिचड़ी बनाकर अत्यन्त प्रीति और प्यारसे भगवानको भोग लगाती थी। जगन्नाथजी पुरुषोत्तमपुरी से आकर उस खिचड़ीको खाते थे। एक दिन एक साधु आकर आचार पूर्वक भोग लगानेके लिये कर्माबाईको शिक्षा देकर चला गया। जब कर्माबाई स्नानादिक क्रिया करके आचार पूर्वक भोग लगाने लगी, तब जगन्नाथजीके भोजनमें बिलम्ब होने लगा

भगवानकी आज्ञानुसार उनके पण्डेने उस साधुको ढूँढकर उससे कहा कि तुम कर्माबाईको उपदेश दे आओ कि वह प्रथमहीके समान बिना आचारका सबेरे भोग लगाया करे। साधु ऐसीही शिक्षा दे आया; तब कर्माबाई अति प्रसन्न होकर पहलेकी भाँति बिना स्नानादि क्रिया किये हुए सबेरे खिचरी बनाकर भोग लगाने लगी। अबतक पुरुषोत्तमपुरीमें सब भोगोंसे पहिले कर्माबाईके नामसे जगन्नाथजीको खिचड़ीका भोग लगाया जाता है।

महाप्रसाद—भोजनकी सामग्रीमें भोग लगानेसे पहिले स्पर्शका भेद माना जाता है। सम्पूर्ण सामान पाकशालासे भोग लगानेके स्थान पर बड़े नियमसे लाया जाता है; पर भोग लग जानेके उपरान्त कुली लोग मन्दिरसे महाप्रसाद निकालते हैं। भोग लग जाने पर वह बड़ा पवित्र हो जाता है। हिन्दुस्तानके सब प्रदेशोंके यात्री सूखाहुआ भातका महाप्रसाद अपने घर ले जाते हैं। सभी जातिके सभीको भात परोसते हैं उच्छिष्ट प्रसाद भोजन करनेमें भी लोग दोष नहीं मानते हैं। परोसनेवाले जूठे पत्तलको स्पर्श करके भात परोसते हैं और किसी किसी यात्रीके मुखमें एक ग्रास खिला देते हैं या उसमेंसे एक ग्रास आप खालेते हैं; परन्तु यवन आदि अन्य धर्मी और चमार आदि नीच जातियोंसे पंक्तिभेद और स्पर्शदोष माना जाता है। वे मन्दिरके हातेके भीतर नहीं जाने पाते हैं। वहाँके लोग कहते थे कि पुरीके राजाकी ओरसे २५०) रुपयेकी सामग्री नित्य भोग लगाई जाती है। पण्डे लोग अपने यात्रियोंके भोजनके लिये, दूकानदार लोग बेचनेके लिये और कोई २ यात्री ब्राह्मण भोजनके लिये पाकशालामें भोगकी सामग्री तैय्यार कराकरके भोग लगवाते हैं। और पाक बनानेवालोंको नियत हिस्सा देते हैं। पुरीके लोगोंके घर जो रसोई बनती है वह मन्दिरमें भोग नहीं लगती उसमें स्पर्श-भेद माना जाता है।

पुरीका उत्सव—(१) स्नान यात्रा—यह यात्रा रथयात्राको छोड़कर पुरीके सब उत्सवोंमें प्रधान है। ज्येष्ठकी पूर्णिमाको जगन्नाथजी, बलभद्रजी और सुभद्राजी बाहरी हातेमें पूर्वोत्तरके कोनके पास स्नान वेदीपर लाई जाती हैं। अक्षयवटके पासके पवित्र कूपसे जल लाकर दो पहर दिनके समय इनको स्नान कराया जाता है और सुन्दर पोशाक पहना कर मन्त्रोंको पढ़कर इनकी पूजा कीजाती है। इसके उपरान्त जगमोहनके बगलकी कोठरियोंमेंसे एकमें, जिसका नाम अन्दर घर है, जगन्नाथजी आदि देवता १५ दिन रहते हैं। इतने दिन भोग नहीं लगता; पाकशाला और बाहरका फाटक बन्द रहता है कहा जाता है कि बहुत स्नान करनेसे वे लोग बीमार हैं। ऐसे समयमें किसी दूजा आषाढ़में इनके कलेवर बदलते हैं। उस वर्षकी रथयात्राके समय यात्रियोंका बहुत भारी मेला होता है। (२) रथयात्रा पुरीका प्रधान उत्सव है। जगन्नाथजी, बलभद्रजी, और सुभद्राजी रथमें बैठ बड़े सामान और तैय्यारीके साथ जनकपुरके अपने विश्राम वाटिकामें जाते हैं। जगन्नाथजीका रथ ४५ फीट ऊँचा और ६५ फीट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा है, जिसमें ७ फीट व्यासके १६ पहिये लगे हैं। बलभद्रजीका रथ ४४ फीट ऊँचा १४ पहियेवाला और सुभद्राजीका रथ ४३ फीट ऊँचा १३ पहियेका है। आषाढ़ सुदी २ के दिन तीनों मूर्त्तियाँ सिंहदरवाजेपर लाकर रथमें बैठाई जाती हैं। उस समय तीनों देवताओंको सुनहरे हाथ और पाँव लगाये जाते हैं। उसके बाद पुरीके राजा हाथी, घोड़े, पालकी, आदि असबाबोंके साथ वहाँ आते हैं। अगले रथमें

लगभग १०० गज दूर आनेपर वह गाड़ीसे उतरकर पैदल चलते हैं और रथके आगेकी भूमिको रत्न लगे हुए झाडूसे बहारते हैं और मूर्त्तियोंकी पूजा करते हैं। सबसे पहिले राजा क्रमसे तीनों रथकी डोरी पकड़कर छोड़ देते हैं; तब पड़ोसके जिलांके ४२०० कुली, जिनको इस कामके लिये विना लगानकी जमीन मिली है, रथको खींचते हैं और बहुतेरे यात्री भी बड़े प्रेम उत्साहसे इस काममें लगते हैं। रथोंके पहिये बालूमें गड़ जाते हैं, मार्गमें कई दिन लग जाते हैं। जगन्नाथजी जितने दिन मार्गमें रहते हैं, उतने दिन पक्की सामग्री भोग लगती है। जनकपुर पहुँचनेपर तीन दिन कच्ची भोगकी तैय्यारी होती है। चौथी रातको लक्ष्मीजी बहुत जलूसके साथ अपने स्वामीके दर्शनके लिये मन्दिरसे आती हैं। उस तिथीको लोग हरिपंचमी कहते हैं। जगन्नाथजी आदि देवता चार पाँच दिन तक जनकपुरमें रहकर दशमीको लौटते हैं और विजय द्वार होकर बाहर होते हैं। फिरनेके समय यात्रीलोगोंके कम हो जानेके कारण मार्गमें विलम्ब होता है। सिंहदरवाजेपर रथ पहुँचनेपर लौट आनेका उत्सव होता है। मन्दिरके सिंहासनपर आनेके पीछे स्पर्शदोष मिटानेके लिये मूर्त्तियोंके संस्कार होते हैं।

(३) हरि शयनी एकादशी—आषाढ़ शुक्ल एकादशीको भगवान्के शयनका उत्सव होता है। (४) झूलनउत्सव—श्रावण शुक्ल एकादशीसे पूर्णिमा तक मदनमोहनजी झूलन पर रहते हैं। उस समय नाच गानसे आनन्द मनाया जाता है। (५) जन्माष्टमीका उत्सव—भादों कृष्ण-अष्टमीको जन्मका उत्सव होता है। (६) पार्श्वपरिवर्तन—भादों शुक्ल एकादशीको विष्णुके करवट फेरनेका उत्सव होता है। (७) कालियदमन—कृष्णने कालिय नागका दमन किया था, उसका उत्सव होता है। (८) वामन जन्म—भादों शुक्ल द्वादशीको वामनजीके जन्मके दिन जगन्नाथजीको पोशाक पहनाये जाते हैं और वामनजीके मानिन्द इनको एक छाता और कमण्डलु दिया जाता है (९) शरत्पूनो—आश्विनकी पूर्णिमाको शरत्पूनोंका उत्सव होता है। (१०) देवोत्थान—कार्तिक शुक्ल एकादशीको विष्णुके जागनेका उत्सव होता है। (११) गरम कपड़े पहनानेका उत्सव—मार्गशीर्षमें जिस दिन मूर्त्तियोंको जाड़ेके कपड़े पहनाये जाते हैं; उस दिन उत्सव होता है। (१३) पुष्याभिषेक—यह उत्सव पौषकी पूर्णिमाको होता है। (१३) मकरकी संक्रांति—मकरके सूर्य्य होनेके दिन उत्सव होता है। (१४) फूलडोल—रथयात्रा और स्नानयात्राको छोड़ कर होली पुरीमें सबसे अधिक प्रसिद्ध उत्सव है। धुलहड़ीके दिन मदनमोहनजी झूलते हैं। यात्रीगण अबीर गुलाल चढ़ाते हैं। उसी दिन जगन्नाथजीका राजभेंट उत्सव होता है। (१५) राम नवमी—रामचन्द्रके जन्मके दिन जगन्नाथजीको रामचन्द्रके समान पोशाक पहनाई जाती है। (१६) दमनभंजिका यात्रा—दमन नामक दैत्यके बधका उत्सव होता है। (१७) चन्दन यात्रा—बैशाखकी अक्षय तृतीयाको चन्दनतालाब पर यात्रा होती है उस समय देवताओंकी चल प्रतिमाओंको नावमें बैठाकर चन्दनतालावमें जलक्रीड़ा कराई जाती है और फूलोंका बड़ा शृंगार किया जाता है। लतावृक्षोंसे वृन्दावन बनाया जाता है। (१८) रुक्मिणीहरण। इनके अतिरिक्त बीचबीचमें कई बार पुरीमें महोत्सव होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(पाताल खण्ड; १७ वाँ अध्याय) शत्रुघ्नजीने अश्वकी रक्षा करते हुए जाते जाते एक पर्वताश्रम देखकर अपने मन्त्रीसे पूछा कि यह क्या

है। सुमति नामक मन्त्री बोला कि यह नील पर्वत पुरुषोत्तम जगन्नाथजीसे शोभित है। यहाँ पुरुषोत्तमजी सदा टिके रहते हैं। इस पर्वतपर चढ़कर पुरुषोत्तमजीको नमस्कार कर उनकी पूजा करके नैवेद्य भोजन करनेसे प्राणी चतुर्भुज हो जाता है। इस विषयमें पण्डित लोग यह पुराना इतिहास कहते हैं,–

लोकमें प्रसिद्ध काञ्ची नामक पुरी है। उसमें महाराजा रत्नग्रीव राज्य करता था। उसने अपने पुत्रको राज्य देकर तीर्थ यात्राका विचार किया। एक दिन राजाने अपनी सभामें एक तपस्वी ब्राह्मणको देखकर उससे तीर्थोंका वृत्तान्त पूँछा; ब्राह्मण बोला कि हम पर्य्यटन करते हुए एक समय गङ्गासागरके जलसे प्रक्षालित नील नामक पर्वतपर गये। वहाँ हमने चतुर्भुजी मूर्त्तिवाले और शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुए भीलोंको देखा; तब उनसे चतुर्भुज होनेका कारण पूँछा। (१८ वाँ अध्याय) किरातोंने कहा कि हम लोगोंका एक छोटा बालक अन्य बालकोंके साथ खेलता हुआ इस पर्वतके शृंगपर चढ़ गया। तब उसने वहाँ मणियोंसे खचित सुवर्णकी दीवारोंसे बना हुआ एक अद्भुत देवालय देखा। वह एक मन्दिरमें लक्ष्मी नारदादिकोंसे सेवित श्रीहरिको देखकर समीप चलागया। जब देव-गण पूजा करके नैवेद्य लगाकर अपने अपने लोकोंको चले गये तब उस लड़केने नैवेद्यके एक भातका सीथ पडा हुआ पाया और श्रीहरिका दर्शन करके भातका सीथ खालिया, जिससे वह चतुर्भुज हो गया। उस बालकसे यह समाचार पाकर हमलोगोंनेभी इकट्ठे होकर देवदेवका दर्शन किया और स्वादुयुक्त वहाँका भात आदि नैवेद्य भोजन करके हम लोग चतुर्भुज रूप हो गये। (१९ वाँ अध्याय) ऐसा कह ब्राह्मणने रत्नग्रीवसे कहा कि हमभी गङ्गासागरके संगममें स्नान करके उस शृंगपर चढ़े। वहाँ देवदेवादिकोंसे वन्दित महाराज-को देख मैंने नमस्कार किया और वहाँके भातके भोजनसे शंख चक्रादिकोंसे चिह्नित चतुर्भुजत्व पाया। (२१ वाँ अध्याय) ऐसा ब्राह्मणका वचन सुन राजा रत्नग्रीव ब्राह्मणकी आज्ञासे पुरुषोत्तमजीके दर्शनको चला और गङ्गासागरसङ्गममें पहुँचकर ब्राह्मणसे बोला कि नीलपर्वत कितनी दूर है। तब ब्राह्मणने विस्मित होकर कहा कि नीलपर्वतका स्थल तो यहीं है; यहाँही भील दिखाई दिये थे और इसी मार्ग होकर हम पर्वतपर चढ़े थे। हे राजन्! जब तक पुरुषोत्तमजीका दर्शन नहीं तबतक आप यहीं ठहरे रहें। राजा श्रीहरिका ध्यान करने लगा। जब राजाको परमेश्वरके गुणगान करते पाँच दिन बीत गये तब भगवान् त्रिदण्डीका वेष धारण किये हुए राजाके समीप आकर बोले कि हे राजन्! कल्ह मध्याह्न समयमें श्रीहरि तुमको अपना दर्शन देंगे। तुम, तुम्हारा मन्त्री, तुम्हारी स्त्री, यह तपस्वी ब्राह्मण और तुम्हारे पुरका करम्ब नामक कोरी, जो बड़ा साधु है, ये सब नील पर्वतपर जायँगे और वहाँ श्रीहरिके धामको देखेंगे। (२२ वाँ अध्याय) दूसरे दिन मध्याह्नके समय नीलपर्वत राजाको दिखाई दिया, जो चाँदीके शृङ्गोंसे अति शोभित हो रहा था। तब पाँचों आदमी विजय मुहूर्तमें नीलपर्वतपर चढ़े। उसके एक शृङ्गके ऊपर सुवर्णसे बने हुए देवमन्दिरमें, सुवर्णके सिंहासनपर विराजमान, चतुर्भुजी मूर्त्ति धारण किये हुए श्रीहरिको देखकर सबोंने प्रणाम किया। उसके अनन्तर सब लोग चतुर्भुजरूप हो शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथोंमें लिये हुए विमानोंपर चढ़कर विष्णुलोकको चले गये।

(८० वाँ अध्याय)महादेवजीने पार्वतीजीसे कहा कि ज्येष्ठ मासमें विष्णु भगवान्को यत्नसे स्नान करानेसे ब्रह्महत्यादि सहस्रों पाप नष्ट होते हैं । आषाढ़में रथयात्रा और आषाढ़के शुक्ल पक्षकी एकादशीको विष्णुशयनका महोत्सव करना उचित है । श्रावणमें श्रवण नक्षत्र अर्थात् पूर्णिमासे श्रावणमें श्रवण नक्षत्रके दिन तक श्रावणी उत्सव अर्थात् झूलनोत्सव होना चाहिये । भादों मासमें जन्माष्टमी और वामन द्वादशीको उपवासमें तत्पर होना उचित है। भाद्रपदकी शुक्लाद्वादशीको शयन किये हुए भगवान्का परिवर्तन कराना चाहिये । आश्विनके शुक्ल पक्षमें महामायाकी पूजा, कार्त्तिकमें दामोदरजीके लिये दीपदान, मार्गशीर्षके शुक्ल पक्षकी षष्ठीको श्वेत वस्त्रोंसे जगदीशकी पूजा; पौष मासमें पुष्य जलसे भगवान्को स्नान, माघ मासमें संक्रान्तिके दिन गुड़ मिश्रित तण्डुल और तिलसे भगवान्की पूजा और माघ शुक्लापञ्चमीको केशवजीको स्नान कराना उचित है । मनुष्यको चाहिये कि फाल्गुन मासकी चतुर्दशीको आठवें पहरमें अथवा पौर्णमासीमें जब प्रतिपदाका संयोग होजाय तब विविध प्रकारके कुंकुमादि चूर्णोंसे परमेश्वरको तृप्त करें; एकादशीसे इस दोलोत्सवका आरम्भ करके फिर पंचमीको समाप्त करे अथवा ५ दिन वा ३ दिन दोलोत्सव करे । दोला पर चढ़े हुए कृष्णचन्द्रको एक बार भी देखकर मनुष्य अपराध समूहोंसे छूट जाते हैं । वैशाख मासमें दमनारोपण करके सब पदार्थ कृष्णचन्द्रको समर्पण करना चाहिये वैशाख मासकी शुक्ल तृतीयाको जलके मध्यमें बैठा कर अथवा दमनारोपणमण्डलमें श्रीहरिकी विशेष पूजा करनी चाहिये । गन्धाष्टकको अन्य सुगंधित वस्तुओंसे युक्त करके विष्णुके अङ्गोंमें लगावे, वहाँ पर वृन्दावन बनावे और उसमें सब प्रकारके फलित वृक्ष लगावे इत्यादि ।

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, ८३ वाँ अध्याय) चैत्र मासकी शुक्ला एकादशीको उत्सवके साथ दोलारूढ़ श्रीकृष्ण भगवान्की पूजा करनी चाहिये । दोलापर चढे हुए भगवान्के दर्शन करनेसे मनुष्य हजारों पापोंसे विमुक्त होजाते हैं और उनको झुलानेसे करोड़ों जन्मके पाप छूट जाते हैं । चैत्र और वैशाखमें दोलोत्सवके समय सम्पूर्ण देवता और पृथ्वीके सब प्राणी भगवान्के दोलोत्सवमें आते हैं । उस समय दोलामें स्थित विष्णु भगवान्के दर्शन करनेवाला मनुष्य अन्त कालमें विष्णुके साथ आनन्द करता है । दोलामें भगवान्के पास श्रीलक्ष्मीजीको और उनके आगे नारद आदि सुरर्षि और विष्वक्सेन, आदिक भक्तोंको स्थापित करके प्रत्येक प्रहर पर यत्नसे उनका पूजन करना चाहिये ।

(८४ वाँ अध्याय) चैत्र मासकी शुक्ला द्वादशीको अच्छी विधिसे दमनोत्सव करना उचित है । देवताओंके आनन्दसे उत्पन्न दिव्य दमनमञ्जरी है । उत्सव करनेवाले मनुष्यको उचित है कि बागीचेमें जाकर रति समेत मदनमञ्जरीका पूजन करे और गीत और बाजेके शब्दके सहित उसको अपने घर लावे; एकादशीकी रात्रिमें सर्वतोभद्र बनाकर रतिके सहित दमन अर्थात् कामदेवको स्थापित करके उसको पूजें; उसके पश्चात् दमनक मुष्टिको ग्रहण कर लक्ष्मीजी और विष्णु आदि देवताओंको अर्पण करे और फिर चन्दन आदि पदार्थोंसे महती पूजा और गीत, बाजा तथा नाचोंसे भारी उत्सव करे । ब्रह्मघाती आदि बड़े पापी मनुष्य भी दमनकोत्सवके दर्शन करनेसे निःपाप हो जाते हैं । जो मनुष्य मञ्जरीसे दमनककी पूजा करता है उसका सब तीर्थोंके करनेका फल लाभ हो जाता है । चैत्र और वैशाखमें दमनकके उत्सव करनेवाले मनुष्यको हजार गोदानका फल मिलता है । (भविष्यपुराण—

उत्तरार्द्धके १२१ वें अध्यायमें दमनकोत्सव और दोलोत्सवका और १२२ वें अध्यायमें रथयात्राका विधान है)।

(८५ वाँ अध्याय) वैष्णवोंको उचित है कि वैशाखकी पूर्णिमाको जलमें स्थित भगवान्‌की पूजा; एकादशीमें बड़े उत्साहसे भगवान्‌का दर्शन करे। वह सोना चाँदी, तांबे यर मट्टीके वर्तनमें ठण्ढे सुगन्ध युक्त जलमें विशेष करके गोपालजी अथवा शालिग्राम-शिलाको स्थापन करे। मनुष्य ज्येष्ठ मासमें जलमें स्थित भगवान्‌के दर्शन करनेसे प्रलय पर्यन्त ताप रहित हो जाता है। मिथुन और कर्क राशिके सूर्यमें अर्थात् चान्द्र मासके आषाढ़ और श्रावणमें विशेष करके द्वादशी तिथिमें जलमें स्थित भगवान्‌की पूजा करनेसे सौ किरोड़ यज्ञ करनेका फल लाभ होता है।

(८६ वाँ अध्याय) सावन मासमें पवित्रारोपण विधि करना चाहिये। विष्णुजीके पवित्रारोपण करनेसे आत्माको सुख होता है; इत्यादि।

अग्निपुराण—(८० वाँ अध्याय) दमनकारोहण विधि इस भाँति जगतमें प्रचलित हुई,—पूर्व कालमें शंकरजीके क्रोधसे भैरवकी उत्पत्ति हुई। जब वह देवताओंका दमन करने लगे तब महादेवजीने उनको शाप दिया कि तुम वृक्ष हो जाओ। पीछे भैरवजीकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर शिवजीने कहा कि हे भैरव ! जो मनुष्य सप्तमी और त्रयोदशीको दमनक वृक्षका पूजन करेगा, उसको सम्पूर्ण फल प्राप्त होगा। पूजाके अन्तमें प्रार्थना करनी चाहिये कि हे हरप्रसादसम्भूत ! तुम इस स्थानपर सन्निहित हो। अपने गृहपरभी दमनकको आह्वान करके पूजनके उपरान्त सायंकालमें विसर्जनकर देना उचित है।

आदि ब्रह्मपुराण—(४१ वाँ अध्याय) उत्कल देशमें पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं। उस देशमें बसनेवाले मनुष्य धन्य हैं। पुरुषोत्तम पुरीमें निवास करनेवालेका जन्म सुफल हो जाता है। जो पुरुष तीर्थराजके जलमें स्नान करके पुरुषोत्तम भगवान्‌का दर्शन करता है, उसका सदा स्वर्गमें निवास होता है। जो उस क्षेत्रमें शरीर छोड़ता है, उसका जीवन सफल है।

(४२ वाँ और ४३ वाँ अध्याय) पृथ्वीमें सब नगरियोंमें उत्तम अवन्ती नामक नगरी है। कृतयुगमें उस नगरीका राजा इन्द्रद्युम्न था। वह एक समय विष्णुकी आराधनाकी इच्छासे बहुतसी सेना, भृत्य और पुरोहितोंको संगले अवन्तीपुरीसे चलकर लवणोदक समुद्रके तीरपर पहुँचा। राजाने दश योजन लम्बा और ५ योजन चौड़ा बहुत आश्चर्योंसे युक्त तीन लोकसे पूजित उस दुर्लभ क्षेत्रको देखकर वहाँ निवास किया।

(४४ वाँ अध्याय) पुरुषोत्तमके दहिने एक बटका वृक्ष है, जो कल्पान्तरमेंभी विनाश नहीं होता। बटको देखने और उसकी छायामें प्राप्त होनेसे ब्रह्महत्या भी दूर होजाती है। उस वृक्षकी प्रदक्षिणा और उसको नमस्कार करनेसे सम्पूर्ण पाप छूट जाते हैं। बटके उत्तर दिशामें केशवके प्रासाद अर्थात् धर्ममय स्थानमें भगवान्‌की रची हुई मूर्त्ति है। एक समय सूर्य्यके पुत्र धर्मराजने बटके समीप विष्णु भगवान्‌की स्तुति की और प्रणाम करके उनसे कहा कि हे नाथ ! इस विख्यात और पवित्र पुरुषोत्तम स्थानमें सब कामना देनेवाली एक मूर्त्ति है। उसके दर्शन और उसमें श्रद्धा करनेवाले सम्पूर्ण मनुष्य श्वेतभुवनको चले जाते हैं, इस कारणसे यमपुरी शून्य हुई जाती है; हे देव ! तुम मुझ पर प्रसन्न होकर इस प्रतिमाको

हर लो। धर्मराजका ऐसा वचन सुन विष्णुने उस इन्द्रनीलकी मूर्त्तिको पुरुषोत्तम क्षेत्रके बालूमें गुप्त कर दिया। उसके पश्चात् इन्द्रद्युम्नका आगमन हुआ।

(४५ वाँ अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न पुरुषोत्तम क्षेत्रमें जाकर विचार करने लगा कि विष्णु भगवान्का मनरूपी पुरुषोत्तम क्षेत्र है। कल्पवृक्षके समान यहाँ वटवृक्ष स्थित है। इन्द्रनील प्रतिमाको भगवान्ने गुप्त कर दिया है; विष्णु भगवान्की अन्य कोई सुन्दर मूर्त्ति यहाँ नहीं देख पड़ती, इस लिये जिससे भगवान् प्रत्यक्ष मुझको दर्शन दें. मैं प्रयत्न करता हूँ। (४६ वाँ अध्याय) ऐसा कह राजाने उत्तम शास्त्रके जानने वाले गणकोंको बुलाकर यत्नसे भूमिका शोधन करवाया और उस पर सोने और रत्नोंसे सुशोभित और सुन्दर भीतों तथा सोनेके स्तम्भोंसे युक्त भगवान्का मन्दिर बनवाया। (४७ वाँ अध्याय) उसके उपरान्त राजा इन्द्रद्युम्नने भगवान्की प्राप्तिके लिये बड़े विधानसे अश्वमेध यज्ञ समाप्त किया।

(४८ वाँ अध्याय) राजाकी स्तुतिसे प्रसन्न हो वासुदेव भगवान्ने उन्हें स्वप्नमें दर्शन दिया और उसने कहा कि हे राजन्! जो तू सनातनी राज पूज्य प्रतिमाको यहाँ स्थापित करनेकी इच्छा करता है तो मैं उसका उपाय तुझसे कहता हूं; जब रात्रि व्यतीत होजावेगी और निर्मल सूर्य्योदय होगा, तब अनेक प्रकारके वृक्षोंसे सुशोभित समुद्रके तटके समीप लवणोदधि समुद्रसे जल बहेगा। उस समय कोलालंधी नामक महावृक्ष समुद्रकी वेलासे हन्यमान होनेपर भी न काँपेगा; उस समय जब तू हाथमें कुल्हाड़ा लेकर वहां अकेले गमन करेगा तब उस वृक्षको देखेगा; निदान तुम इन चिह्नोंको देखकर अशंकित हो उस वृक्षसे दिव्य प्रतिमा बनाना। राजा इन्द्रद्युम्न प्रभात होनेपर समुद्रमें स्नानकर ब्राह्मणोंको दान दे अकेला समुद्रके तटपर गया और अति तेजमान महान शाखोंवाला करड़ा मंजीठके वरणके समान कांतिवाला विष्णुके उस पुण्यवृक्षको जलमें स्थित देखकर प्रसन्न हुआ। जब वह कुल्हाड़ेसे उसे छेदन करने लगा और उसने बीचसे छेदन करनेकी इच्छा की तब उस निरीक्ष्यमान काष्ठमें उसको अद्भुत दर्शन हुए। उस समय प्रकाशमान हो महात्मा लोग राजाके पास आकर उससे बोले कि तू किसलिये इस वृक्षको काटता है। राजाने कहा कि हे ब्राह्मणो! मैं जगत्के पति देवदेवके आराधनाके लिये इससे मूर्ति बनाऊंगा। यह सुनकर उनमेंसे एक बोला कि, हे महाभाग! तू इस वृक्षकी छायामें हमारे संग स्थित हो; शिल्प कर्मवालोंमें श्रेष्ठ यह दूसरा ब्राह्मण, जो सब कर्म्मोंमें विश्वकर्माके समान है. तेरे उद्देशके अनुसार प्रतिमा बना देगा। यह सुन राजाने वृक्षकी छायामें बैठकर उस ब्राह्मणसे कहा कि तुम कृष्ण, बलदेव और सुभद्रा इन तीनोंकी तीन प्रतिमा बनाओ। शिल्प कर्म्मोंमें निपुण ब्राह्मण वेषधारी विश्वकर्माने शुभ लक्षणोंसे युक्त दिव्य वस्त्रोंको पहिनी हुई अनेक रत्नोंसे अलंकृत मनोहर प्रतिमाओंको बनाया। यह देखकर राजा परम विस्मयको प्राप्त हो बोला कि तुम दोनों देवताओंके समान आचरण करनेवाले कौन हो। (४९ वां अध्याय) ब्राह्मणोंमेंसे एक पुरुष बोला कि तुम मुझको पुरुषोत्तम भगवान् जानो; जब तक समुद्र, पर्व्वत और स्वर्गमें देवता रहेंगे, तबतक इन्द्रद्युम्न नामवाला और यज्ञांगसे संभव यह तीर्थ रहेगा। मनुष्य एक बार यहां स्नान करनेसे इन्द्रलोकमें प्राप्त होजावेंगे। जो मनुष्य इस सरोवरके तटपर पिंडदान करेगा उसके २१ कुलोंका उद्धार होजावेगा। इस सरोवरके दक्षिण भागके नैर्ऋत्य कोनमें एक वटका वृक्ष है; उसके समीप एक सुन्दर मण्डप बना है। ऐसा कह विश्वकर्मा समेत

हरि भगवान अन्तर्द्धान होगये। राजा श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्राको विमानके समान रथमें बैठाकर लाया और शुभ तिथि तथा सुन्दर मुहूर्तमें ब्राह्मणोंके सहित अपने उत्तम मन्दिरमें इनकी प्रतिष्ठा की। (५० वां अध्याय) मार्कण्डेय मुनि महाप्रलयके समय महा-वह्निको देखकर भयसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें भ्रमता फिरा। जब उसे कहीं विश्राम न मिला तब वह पुरुषेशके पास सनातन वटराजके समीप जाकर उसके मूलमें स्थित हुआ, जहां न कालाग्निकाही भय था और न शरीरको खेद होता था। (५१ वां अध्याय) जब पृथ्वी जलार्णव होगई तब डूबते हुए मार्कण्डेय मुनिने उस वटकी शाखापर पलंगके ऊपर बालरूप कृष्ण भगवानको देखा। उस बालकके कहने पर मुनि उसके मुखमें प्रवेश कर गया। (५२ वां अध्याय) और बालकके मुखमें सम्पूर्ण ब्रह्मांडको देखकर अन्तमें बाहर निकला। (५३ वां अध्याय) उसने बाहर निकल वटवृक्षके ऊपर पलंगपर स्थित उस बालकको फिर देखा। बालक बोला कि हे मुने! सुखसे यहां विश्राम कर; जब ब्रह्मा उत्पन्न होंगे, तब मैं पृथ्वी, आकाश और सब जीवोंको रचूंगा। मार्कण्डेय बोले कि हे भगवन्! मैं परमात्मा शंकरको स्थापन करूंगा; तुम कहो मैं किस स्थानमें उनको स्थित करूं। जग-न्नाथजी बोले कि हे मुने! तुम शीघ्रही शिवालय बनाकर शिवकी स्थापना करो। शिवके स्थापनासे मेराही स्थापन होजावेगा; क्योंकि हमारे और शिवमें कुछ अन्तर नहीं है। हे विप्र! पुरुषोत्तम देवके उत्तर दिशामें अपने नामसे चिह्नित शिवालय बनाओ। यह मार्क-ण्डेय नामक तीर्थ करके लोकमें विख्यात होगा।

(५५ वां अध्याय) मनुष्योंको उचित है कि मार्कण्डेय ह्रदमें स्नान कर शिवालयमें जाकर तीन बार शिवकी प्रदक्षिणा करे और मार्कण्डेय तथा केशव भगवान्के पूजन करके उनकी स्तुति और उनको प्रणाम करैं और कल्पवृक्षके समीप जाकर तीन प्रदक्षिणा करके उस वटवृक्षका पूजन करैं। जो मनुष्य कृष्णके आगे स्थित गरुड़का दर्शन करता है वह विष्णुलो-कमें प्राप्त होता है और जो वट, गरुड़, पुरुषोत्तम, बलदेव, और सुभद्राका दर्शन करता है; उसको परम गति लाभ होती है। (५६ वाँ अध्याय) जहाँ इन्द्रनील मग्न विष्णु भगवान् रेतसे आवृत होकर छिपे हैं, उस स्थानके दर्शन करनेसे मनुष्य विष्णुपुरमें जाता है। जिस भगवान्ने नृसिंह रूप धर हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा था वही वहाँ स्थित हैं।

(५७ वाँ अध्याय) सतयुगमें श्वेत नामसे विख्यात एक राजा था। वह कई हजार वर्षोंतक राज्य करके अन्त कालमें इस लोककी कामनाओंसे विरत हो दक्षिण दिशाके समुद्रके तटपर गया। वहाँ उसने एक अति उत्तम देवमन्दिर बनवाकर उसमें चन्द्रमाके समान कान्ति-वाली माधवकी मूर्त्तिको स्थापित किया। राजाकी स्तुतिसे प्रसन्न हो विष्णु भगवान् प्रगट होकर बोले कि हे राजन्! तेरी यह कीर्त्ति तीनों लोकोंमें प्रकाशित होगी और श्वेत गङ्गाका यश सम्पूर्ण नर तथा देवता गान करेंगे। जो मनुष्य श्वेतगङ्गाके जलको कुशाके अग्रभागसे स्पर्श करेगा उसका निवास स्वर्गमें होगा। जो कोई माधवकी प्रतिमाका दर्शन करेगा; वह मेरे लोकमें जायगा।

(५८ वाँ अध्याय) चतुर्दशीको मार्कण्डेय ह्रदमें और पूर्णिमाको समुद्रमें स्नानका बड़ा पुण्य है। मार्कण्डेय वट, रोहिण्याह्रद, कृष्ण, महोदधि और इन्द्रद्युम्न सरोवर ये पांच पञ्च-तीर्थ हैं। ज्येष्ठ मासकी पूर्णिमाको जो ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तीर्थराजमें स्नान करनेसे महान

फल लाभ होता है। मनुष्योंको उचित है कि वटको नमस्कार करके उससे ३०० धनुष दक्षिण ओर समुद्रके निकट, जहाँ मनको रमण करनेवाला स्वर्गके द्वारका चिह्न देख पड़ता है, गमन करे। वह पहले उग्रसेनको देखकर स्वर्ग द्वारसे समुद्रपर जाय और (६१ वाँ अध्याय) पश्चात् यज्ञाङ्ग सम्भव तीर्थमें जाकर इन्द्रद्युम्न नामक पवित्र सरोवरमें आचमन कर मन्त्रका उच्चारण करे। जो एकादशीके दिन व्रतकर ज्येष्ठकी पूर्णिमाके दिन पुरुषोत्तमको देखता है वह भगवान्के लोकमें जाता है। पृथ्वीपर जितने तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाव, वावली, कुंये और ह्रद हैं, वे सब ज्येष्ठके महीनेमें पुरुषोत्तम तीर्थमें शयन करते हैं और ज्येष्ठ शुक्ला दशमीके दिन प्रत्यक्ष होते हैं। यह दशमी दश पापोंका नाश करती है, इस लिये इसका नाम दशहरा पड़ा है। वैशाख शुक्ला तृतोयाके दिन जो मनुष्य चन्दनसे विभूषित श्रीकृष्णका दर्शन करता है वह भगवान्के स्थानमें प्राप्त होता है। (६३ वाँ अध्याय) ज्येष्ठके महीनेमें ज्येष्ठा नक्षत्र सहित पूर्णिमासीके दिन सदा हरिको स्नान कराया जाता है। (६४ वाँ अध्याय) जो मनुष्य "गुड़िच क्षेत्र" में जाते हुए रथमें स्थित श्रीकृष्ण, वलदेव, सुभद्राके दर्शन करते हैं, वे हरिके भवनमें प्राप्त होते हैं। जो पुरुष वहाँ ७ दिन तक मण्डपमें स्थित श्रीकृष्ण, वलदेव और सुभद्राका दर्शन करते हैं, व विष्णुलोकमें जाते हैं। पूर्व कालमें राजा इन्द्रद्युम्नने हरिकी प्रार्थना करके उनसे कहा कि हे प्रभो! मेरी इच्छा है कि सरोवरके तीर आपकी यात्रा हो। तव पुरुषोत्तम भगवान्ने उसको वरदिया कि "गुड़िच क्षेत्र" में सरोवरके तीर ७ दिन तक मेरी यात्रा रहेगी। आषाढ़ शुक्लमें गुड़िचा नामवाली यात्राके समय श्रीकृष्ण, वलदेव और सुभद्राके दर्शन करनेसे अश्वमेध यज्ञसे भी अधिक फल होता है (आगे ७० वाँ अध्याय तक पुरुषोत्तमक्षेत्रकी कथा है)।

पुरुषोत्तम माहात्म्य—(चौरासी हजार वाला स्कन्दपुराण, उत्तर खण्ड, पहिला अध्याय) समुद्रके किनारे पर पुरुषोत्तमक्षेत्र १० योजनमें विस्तृत है। उसके मध्यमें नीलाचल नामक वड़ा पर्वत सुशोभित है। सृष्टिके आदिमें ब्रह्माने विष्णु भगवान्की स्तुति की; तव भगवान्ने प्रगट होकर ब्रह्माजीसे कहा कि समुद्रके उत्तर और महानदीके दक्षिणका प्रदेश सब तीर्थोंके फलको देनेवाला है। उस देशमें वड़े पुण्यवान् मनुष्य जन्म लेते हैं और निवास करते हैं। एकाम्रक बनसे दक्षिण समुद्रके तीर तककी भूमि पद पदमें श्रेष्ठ और पवित्र है। समुद्रके तीरपर पृथ्वीमें अत्यन्त गुप्त नील पर्वत विराजमान है। मैं वहाँ सर्वदा निवास करता हूँ। उस स्थानकी कभी सृष्टि अथवा लय नहीं होता है। नीलगिरिपर वटवृक्षके मूलसे पश्चिम सुप्रसिद्ध रोहिणीकुण्डके तीरपर मैं स्थित रहता हूँ। जो मनुष्य उस कुण्डमें स्नान करके मेरा दर्शन करता है; उसको मुक्ति मिलती है। तुम वहाँही जाकर मेरा ध्यान करो। हमारी प्रसन्नतासे गुप्त और प्रकट सम्पूर्ण विषय तुमको ज्ञात हो जायगा।

(दूसरा अध्याय) ब्रह्माने पुरुषोत्तम क्षेत्रमें जाकर भगवान्का दर्शन किया। उसी समय एक काकने रोहिणीकुण्डमें गोता मारा और नीलमाधव अर्थात् नीलमणिकी भगवान्की मूर्त्तिका दर्शन कर अपने शरीरको छोड चतुर्भुज होकर भगवान्के पास चला गया। काककी ऐसी गति देखकर ब्रह्मा विस्मित हो गये। उसी समय यमराजने श्वास लेते हुये वहाँ आकर माधव और लक्ष्मीकी स्तुति की और उसने कहा कि मैं अपने अधिकारसे रहित हुआ जाता हूँ, अर्थात सवलोग तुम्हारे दर्शन करनेसे स्वर्गको चले जाते हैं। लक्ष्मीने

कहा कि जिस लिये तुम मेरी स्तुति करते हो वह नहीं हो सकेगा। हम दोनों पुरुषोत्तम क्षेत्रको नहीं छोड़ सकते हैं। यहाँके बसे हुए मनुष्य तुम्हारे वशमें कभी नहीं हो सकेंगे। नीलेंद्रमणिके नारायणकी मूर्त्तिके दर्शन करनेवाले बन्धनसे छूट जाते हैं।

(तीसरा अध्याय)—लक्ष्मीजी कहने लगीं कि जिस समय प्रलयसे सब चराचर लीन हो रहा था, यह क्षेत्र और भगवान्‌के वक्षस्थलमें मैं शेष रह गई थी। उस समय सप्त-कल्प जीनेवाला मार्कण्डेय मुनि प्रलयके समुद्रमें बहता हुआ पुरुषोत्तम क्षेत्रमें आया। उसने यहाँ एक बट वृक्ष और उसके ऊपर पत्रके दोनेमें मेरे सहित बालरूप चतुर्भुज भगवान्‌को देखा। बालकने कहा कि हे मुने! तुम हमारे मुखमें पैठकर बैठ जावो। मार्कण्डेयने बालकके मुखद्वारा उसके उदरमें जाकर भीतर ब्रह्मादिक देवता और नदी पर्वत समुद्र इत्यादि वस्तुओंको देखा। पीछे वह बाहर आकर भगवान्‌की बड़ी स्तुति करके उनसे बोला कि आप ऐसा उपाय करें जिससे मैं मृत्युको न प्राप्त होऊँ। भगवान्‌ने मुनिके मनोरथ सिद्ध करनेके लिये बटवृक्षके वायुकोणमें अपने चक्रसे एक तालाब खोदा। मार्कण्डेय मुनिने उस तालाबके समीप महादेवजीकी आराधना करके मृत्युको जीत लिया। उसी मुनिके नामसे सरोवरका नाम मार्कण्डेय तालाब हुआ, जिसमें स्नान करके मार्कण्डेयश्वर शिवके दर्शन करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। पुरुषोत्तम क्षेत्र समुद्रके तटपर पाँच कोसमें विस्तृत है। समुद्रके निकट यमेश्वर शिव स्थित हैं, जिनके दर्शन और पूजन करनेसे कोटि लिङ्गके दर्शन और पूजनका फल मिलता है।

(चौथा और पाँचवाँ अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्र शंखके आकारका है। इसकी पश्चिम सीमा अर्थात् मस्तक स्थानपर वृषभध्वज महादेव और अग्रभागमें (अर्थात् पूर्व) नीलकण्ठ महादेव हैं। समुद्रसे लेकरके बटके मूल तक शंखका उदर भाग है। शंखके दूसरे भागमें कपालमोचन शिव हैं। जब महादेवजीने ब्रह्माका पाँचवाँ सिर काट लिया था; उस समय वह सिर उनके हाथमें लपट गया। तब शिवजी पृथ्वीपर भ्रमण करते हुए पुरुषोत्तम क्षेत्रमें आये। यहाँ आनेपर वह सिर इनके हाथसे छूट गया, तबसे इस स्थानका नाम कपालमोचन पड़ा। कपालमोचन शिवके दर्शन करनेसे ब्रह्महत्यादिक पाप छूट जाते हैं। शंखके तीसरे चक्रमें विमला देवीकी मूर्त्तिकी पूजा करनेसे मुक्ति हो जाती है। कपालमोचनसे अर्द्धाशनी देवी तक शंखका मध्य भाग है। यह देवी महाप्रलयके समय समुद्रके आधे जलको पी जाती है। समुद्रके किनारेसे बटवृक्ष तककी भूमिमें जितने कीट पर्यन्त जीव मरते हैं; सबकी मुक्ति होजाती है। इस अन्तर्वेदीको देवतालोगभी इच्छा करते हैं। रोहिणीकुण्डके जल स्पर्श करनेसे प्राणीमात्रकी मुक्ति होजाती है। जगन्नाथजीके दक्षिण ब्रह्मस्वरूप नरसिंह भगवान् विराजते हैं, जिनके दर्शन करनेसे मुक्ति मिलती है। समुद्रमें स्नान करने और कल्पवृक्ष अर्थात् बटकी छायामें जानेवाला मनुष्य किसी स्थानमें मरे; उसकी मुक्ति होजाती है। गौरीकी आठ मूर्त्तियाँ इस क्षेत्रकी रक्षा करती हैं;—बटके मूलमें मङ्गला, पश्चिममें विमला, शंखके पृष्ठभागमें सर्वमङ्गला, उत्तर दिशामें अर्द्धाशिनी और लम्बा, दक्षिणमें कालरात्रि, पूर्वमें मरीचिका और कालरात्रिके पीछे चण्डरूपा। शिवजीभी रुद्राणीके आठ रूप देखकर आठरूप धारण कर यहाँ स्थित हुए;—कपालमोचन क्षेत्रपाल, यमेश्वर, मार्कण्डेये-श्वर, ईशान, बिल्वेश, नीलकण्ठ, और बटके मूलमें बटेश।

(६ वाँ अध्याय)—दक्षिणके समुद्रके तीरपर ऋषिकुल्यासे लेकरके दक्षिणके समुद्रमें जाने वाली स्वर्णरेखा अर्थात् सुवर्णरेखा नदी तक परम पवित्र उत्कल देश है, जिसमें वहुतसे तीर्थ विद्यमान हैं।

(७ वा अध्याय) सतयुगमें ब्रह्माके पाँचवीं पीढ़ीमें इन्द्रद्युम्न नामक सूर्यवंशी राजा मालवदेशके अवन्ती नगरीमें निवास करता था एक समय उसने अपनी सभामें लोगों से पूँछा कि ऐसा कौन उत्तम क्षेत्र है, जिसमें हम साक्षात् भगवान्का दर्शन कर सकेंगे। एक ब्राह्मण, जिसने बहुतेरे तीर्थोंमें भ्रमण किया था राजासे बोला कि महाराज! भारत वर्षमें विख्यात ओंड्र देशमें दक्षिण समुद्रके निकट पुरुषोत्तम क्षेत्र है। वहाँ नीलगिरि पर्वतके ऊपर चारों ओरसे १ कोसमें विस्तृत कल्पवृक्ष है, जिसके पश्चिम दिशामें रोहिणी कुण्ड है उसके पूर्व तट पर नीलेन्द्रमणिकी वासुदेवकी प्रतिमा है। जो मनुष्य उस कुण्डमें स्नान करके पुरुषोत्तमका दर्शन करता है उसको १००० अश्वमेधका फल मिलता है और मुक्ति मिलजाती है। तुम विष्णुके भक्त हो इसलिए यह वात कहनेको मैं तुम्हारे पास आया हूँ ऐसा सुन राजा इन्द्रद्युम्नने अपने पुरोहितको वहाँ भेजा। वह अपने भाईके साथ महानदीको पार करके एकाम्रक वनमें पहुँचा और आगे जाकर नीलाचल पर चढ़कर भगवान्को ढूँढने लगा जब उसको मार्ग नहीं मिला, तव वह कुशोंको विछाकर वहाँही सो गया; किन्तु उसका छोटा भाई विद्यापति ऊपर चढ़कर एक स्थानमें चुप चाप बैठ गया। उस समय विश्वावसु नामक एक शवर पुरुषोत्तमकी पूजा करके उस स्थान पर आया। उसने ब्राह्मणसे पूँछा कि तुम कहाँसे आये हो। ब्राह्मणने अपने आनेका सब वृत्तान्त सुनाकर उससे कहा कि तुम मुझको भगवान्का दर्शन करावो।

(८ वां अध्याय)—शवर ब्राह्मणका हाथ पकड़कर विषम अन्धकार मार्गसे ऊपर जाकर रोहिणीकुण्ड और कल्पवृक्षके वीचके कुञ्जमें पुरुषोत्तम भगवान्के पास पहुँचा और ब्राह्मणके साथ भगवान्का दर्शन करके सायंकाल अपने घर लौट आया। उसने अपने घरमें ब्राह्मणको राजदुर्लभ भोग भोजन करवाया और ब्राह्मणके विस्मित होने पर उसने कहा कि इन्द्रादि देवता नित्यही दिव्य पदार्थ लाकर जगन्नाथजीको अर्पण करते हैं; इसीको हम ले आते हैं। विष्णुके निर्माल्य भोजन करनेसे हम लोगोंकी जरा और रोग नष्ट होगया है हमने सुना है कि राजा इन्द्रद्युम्न यहां आवेगा; किन्तु उसको भगवान्का दर्शन नहीं होगा। भगवान्की मूर्ति सुवर्णकी वालुकामें ढपकर अन्तर्द्धान होजायगी। यह वृत्तान्त तुम राजासे मत कहना। भोर होने पर शवर और ब्राह्मणने समुद्रमें स्नान और भगवान्का दर्शन करके इन्द्रद्युम्नके रहनेका स्थान निर्णय किया। ब्राह्मण रथ पर चढ़ अवन्तिका पुरीमें लौट आया।

(९ वां अध्याय)—ब्राह्मणके चले जाने पर सायंकालमें जिस समय देवता लोग पूजा करने आये थे वड़ी आँधी चली, जिससे भगवान्की मूर्ति और रोहिणीकुण्ड वालूके राशिमें ढप गया।

विद्यापति ब्राह्मणने अवन्तीपुरीमें आकर राजासे वहाँका सव वृत्तान्त कह सुनाया।

(१० वां अध्याय) उसने कहा कि पुरुषोत्तमक्षेत्रका विस्तार ५ कोस का है। वहाँ १ कोसका लम्बा चौड़ा एकवट वृक्ष सुशोभित है; जिसमें फल फूल कुछ नहीं लगता

पूर्वकी वेदीके मध्यमें वटवृक्षके नीचे पीत वस्त्र पहने हुए बहु मूल्य भूषणोंसे भूषित ८१ अंगुल परिमित इन्द्रनील पत्थरकी भगवान्‌की प्रतिमा है उनके वाम पार्श्वमें लक्ष्मीजी पीछे छत्राकार शेषजी और आगे सुदर्शन चक्र है और पीछे हाथ जोड़े हुए गरुड़ खड़े हैं। उसी समय महर्षि नारद राजाके पास आ गये।

(११ वां अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्नने नारद और सब पुर जनों तथा चतुरङ्गिनी सेनाके सहित ज्येष्ठ शुक्ला पञ्चमी बुधवारके पुष्य नक्षत्रमें पुरुषोत्तम क्षेत्रको प्रस्थान किया। अवन्तिकापुरी जनोंसे शून्य होगई। राजाने उत्कल देशकी सीमा पर चर्चिका देवीको देख कर रथसे उतर उसकी स्तुति की और वहाँसे चल चित्रोत्पला नदीके तीर पहुँचकर धातु कन्दरमें अपनी सेनाको विश्राम कराया उत्कल देशका राजा, जिसको ओंड्रदेशपति कहते हैं, वहाँ आकर इन्द्रद्युम्नसे मिला इन्द्रद्युम्नने ओंड्रपतिसे क्षेत्रका वृत्तान्त पूँछा। ओंड्रपतिने कहा कि दक्षिण समुद्रके पासका नीलाद्रि पर्वत और उसपरके देवता नहीं देख पड़ते हैं। मैंने सुना है कि पवनके चलनेसे वे वालूमें ढप गये हैं। इसी कारणसे हमारे राज्यमें दुर्भिक्ष पड़ गया है। यह वृत्तांत सुनकर इन्द्रद्युम्न वहुत दुःखी हुए नारदने कहा कि हे राजन! भगवान् तुम्हारे लिये पृथ्वीमें फिर अवतार लेंगे। ब्रह्माजीने इसी कामके लिये मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

(१२ वाँ अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न प्रातःकाल होनेपर आगे चले। ओंड्र देशका राजा आगे २ मार्ग बताने लगा। इन्द्रद्युम्नने वेगवती शीततोया नदकि पार हो एकाम्रक क्षेत्रमें पहुँचकर नारदसे पूँछा कि यह कौन सा क्षेत्र है। नारदने कहा कि यहाँसे ३ योजन आगे नीलगिरी है। यह गौरीपतिका एकाम्रक नामक क्षेत्र है।

राजाके पूँछनेपर मुनि कहने लगे कि पूर्व कालमें महादेवजी गौरीसे विवाह करके अपने श्वशुर हिमालयके गृह रहने लगे। एक समय गौरीकी माताने परिहाससे उससे कहा कि हे पुत्रि! तुमने महत् तपस्या करके ऐसा निष्कुल और निर्गुण वृद्ध वरको प्राप्त किया; तुमने कौनसा गुण अपने पतिमें देखा था; वह तो हमारे ही यहाँ रहते हैं। पार्वतीने शिवके पास जाकर उनसे कहा कि श्वसुरके घरमें रहना उचित नहीं है; तुम किसी दूसरे स्थानमें चलकर निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी पार्वतीके साथ बैलपर सवार हो वहाँसे चल दिये और गङ्गाके उत्तर तटपर वाराणसीपुरी वसाकर उसमें रहने लगे। बहुत काल वीतनेपर वह कैलासपर चले गये। द्वापर युगमें काशीके राजाने महादेवको प्रसन्न किया। शिवजीने कहा कि समय आनेपर मैं युद्धमें तुम्हारी सहायता करूंगा। विष्णुकी आज्ञासे सुदर्शनचक्रने काशिराजका सिर काट डाला। महादेवजीने अपने गणों सहित वहाँ आकर अपना पाशुपत अस्त्र चलाया। जब उनका अस्त्र विफल होगया और काशी जलने लगी तब शिवजी विष्णुकी स्तुति करने लगे। विष्णु भगवान् प्रगट होकर बोले कि हे महादेव! तुम काशीको बचाने चाहते हो तो दक्षिण समुद्रके पास नीलाचलसे उत्तर एकाम्रक बनमें जाकर कोटि लिङ्गोंके राजा बनो; ब्रह्मा तुमको स्थापित करेंगे। ऐसा सुन पार्वतीके साथ शिवजी वहाँ चले गये। राजा इन्द्रद्युम्नने एकाम्रक क्षेत्रके विन्दु तीर्थमें स्नान करके उसके तीरपर स्थित पुरुषोत्तमका पूजन किया और कोटिलिङ्गेश्वरके द्वारपर ब्राह्मणोंको बहुतसा धन दिया।

राजा इन्द्रद्युम्नने वहाँसे दूसरे दिन कपोतस्थलीमें आकर समुद्रकी पूर्व सीमापर बिल्वेश और कपोतेशका पूजन किया।

(१४ वाँ अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न विद्यापति पुरोहितके साथ नीलकण्ठ क्षेत्रके समीप आये। (१५ वाँ अध्याय) उन्होंने वहाँ नीलकण्ठ और दुर्गाका पूजन किया और नीलपर्वतपर चढ़कर नीलचन्दनके वृक्षके नीचे नृसिंहजीकी दिव्य मूर्त्तिको देखा। इस समय राजाने भगवान्को दण्डवत करके बड़ी स्तुतिकी। तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! तुम चिन्ता मत करो; हम तुमको दर्शन देंगे; तुम नारदके उपदेशसे चलो।

(१६ वाँ अध्याय) नारदकी आज्ञासे विश्वकर्मांके पुत्र सुवटकने चन्दनके वृक्षके नीचे ४ दिनोंमें नृसिंहजीके लिये पत्थरका मन्दिर तैयारकर दिया। ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशीको स्वाति नक्षत्रमें पृथ्वी और लक्ष्मीकी मूर्त्तिके साथ नृसिंहकी दूसरी मूर्त्ति स्थापित कीगई।

(१७ वाँ अध्याय) राजाने यज्ञकर्मके लिये अनेक देवता, ऋषि, ब्राह्मण, राजा और अन्य मनुष्योंको बुलाया। विश्वकर्माने यज्ञशाला बनाई। राजाने यज्ञ आरम्भ करके अश्वको छोड़ा। इन्द्रद्युम्नपुर स्वर्गसे भी अधिक मनोहर हो गया। ९९९ यज्ञ समाप्त हो जानेपर सहस्रवें यज्ञके समय राजाकी दिव्य गति हो गई। उसने सात दिनके पीछे रात्रिके चतुर्थ प्रहरके स्वप्नमें स्फटिकका बना हुआ श्वेतद्वीप देखा, जिसको चारोंओरसे क्षीरसागर घेरे हुए था। उसने वहाँ भगवान्को देखकर उनकी स्तुतिकी।

(१८ वाँ अध्याय) राजाके सेवकोंने आकर उनसे कहा कि मंजिष्ठ वर्णका एक बड़ा वृक्ष समुद्रके तीरमें पड़ा है। उसका मूल जलमें तैरता है नारदने कहा कि हे राजन्! तुमने श्वेतद्वीपमें विष्णुकी जिस मूर्त्तिको देखा था उसीके अङ्गका गिरा हुआ १ रोमसे यह वृक्ष हुआ है। तुम यज्ञान्त स्नान करके बड़ी वेदीके ऊपर वृक्षरूपी यज्ञ भगवान्का स्थापन करो। राजाने समुद्रके किनारे आकर ४ शाखाओंसे युक्त उस वृक्षको देखा; तब ब्राह्मणोंको बुलाकर मंगल पूर्वक उसको बाहर निकलवाया और माला, गन्ध, तथा चन्दनसे भूपितकर उसको महावेदीपर रक्खा। उस समय आकाशवाणी हुई कि वेदीमें भगवान आप उतर आवेंगे, तुम पन्द्रह दिनों तक वेदीको ढाँककर गुप्त रक्खो। इस वृद्ध बढ़ईको भीतर रखकर द्वार बन्दकर दो। बाहर बाजा बजवावो जिसमें कोई मूर्त्ति बननेका शब्द न सुने। कोई मनुष्य घेरके भीतर न जावें। जब भगवान् बन जायँगे तब अपने आप सम्पूर्ण कामकी आज्ञा देंगे। उसी समय एक बढ़ईने आकर राजासे कहा कि तुमने जिनको स्वप्नमें देखा था हम उन्हीको दिव्य रूपी काष्ठसे बनावेंगे। ऐसा कह वह वेदीपर अन्तर्द्धान हो गया। (१९ वाँ अध्याय) राजा आकाशवाणीके आज्ञानुसार सब कार्य करने लगा। दिन २ दिव्य गन्धका अनुभव होने लगा। १५ दिन बीत जानेपर बलदेव सुभद्रा और सुदर्शन-चक्रके साथ दिव्य सिंहासन पर बैठी हुई भगवान्की मूर्त्ति प्रगट हुई। भगवान्के हाथमें शंख, चक्र, गदा और पद्म और बलभद्रके हाथमें गदा, मूसल, चक्र और कमल और ऊपर ७ फन फैलाये हुए सर्पका मुकुट था सुभद्राके हाथोंमें वर, अभय और कमल था। इनके पास सुदर्शनचक्र बना हुआ था। इस भाँति वृद्ध बढ़ई द्वारा चार मूर्त्तियाँ प्रकाशित हुई। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! नीलपर्वतपर कल्प वृक्षके वायव्य दिशामें १०० हाथ आगे और नृसिंहजीसे १००० हाथ उत्तर ऊँचे स्थानपर एक दृढ़ मन्दिर बनवाकर उसमें

इन मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा करो। तुम्हारे पुरोहित और विश्वावसु शवरकी सन्तान सर्वदा इनके लेप संस्कार कर्म करैंगी।

(२० वाँ अध्याय)—राजा इन्द्रद्युम्नके दान देनेके जलसे जो स्थान भर गया वही इन्द्रद्युम्नसरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। मनुष्य उसमें पितरोंको पिण्डदान देते हैं। उसकी महिमा गङ्गाके समान है।

(२१ वाँ अध्याय)—इन्द्रद्युम्नने असंख्य धन लगाकर अद्वितीय बृहत् मन्दिर वनवाया और मन्दिरके काम पूर्ण होनेके पहलेही नारदके साथ विमानपर चढकर वह ब्रह्मलोकमें गये। (२३ वाँ अध्याय) राजाने ब्रह्मासे कहा कि काष्ठकी देह धारणकर भगवान् प्रकट हुए हैं; तुम चलकर उनकी प्रतिष्ठा करो। ब्रह्माने कहा कि ७१ मन्वन्तर बीत गये; तुम्हारे करोड़ों वंशका नाश होगया, किन्तु तुम्हारा वनवाया हुआ मन्दिर विद्यमान है; चलो मैं तुम्हारे पीछे आऊँगा। (२४ वाँ अध्याय) राजा ब्रह्मलोकसे पुरुषोत्तम पुरीमें आये। उनके पीछे देवता लोगभी आकर उपस्थित हुए। राजाने मन्दिरका काम पूरा हुआ देखकर विचार किया। मेरे स्वर्गके जानेके समय मन्दिर आधा वना था; किन्तु भगवान्के प्रसादसे अब पूरा होगया है। (२५ वाँ अध्याय) विश्वकर्माने एकही दिनमें ३ रथोंको वनाया;—जिनमेंसे भगवान्का रथ १६ पहिये का, सुभद्राका वाहर पहियेका औ वलभद्रका १४ पहियेका था। जिस रथमें जितने पहिये थे उसका विस्तार उतनेही हाथका था। (२६ वाँ अध्याय) विश्वकर्माने राजाकी आज्ञासे एक बड़ी सभा वनाई। प्रतिष्ठाकी सम्पूर्ण सामग्री एकत्र की गई। ब्राह्मण लोग प्रतिष्ठाकार्यमें नियुक्त हुए। राजाके ब्रह्मलोकमें जाने पर गाल नामक एक राजाने माधवकी पाषाणमयी प्रतिमाको वनाकर उसी बड़े मन्दिरमें स्थापितकर दिया था। पीछे इन्द्रद्युम्नने एक छोटा मन्दिर वनवाकर उस मूर्त्तिको मन्दिरसे निकालकर उसमें स्थापित कर दिया। (२७ वाँ अध्याय) ब्रह्माजी ब्रह्मलोकसे आकर तीनों मूर्त्तियों और सुदर्शनचक्रको देखकर नीलाचल पर्वतपर मन्दिर और यज्ञशालाके पास चले गये। प्रतिष्ठाका काम प्रारंभ हुआ। वैशाखके शुक्ल पक्षकी अष्टमीको पुष्य नक्षत्रमें ब्रह्माने मूर्त्तियोंको मन्दिरमें स्थापित किया। जो मनुष्य उस तिथिमें जगन्नाथजीकी पूजा करता है उसके कोटि जन्मका पाप छूट जाता है।

(२९ वाँ अध्याय) भगवान्की काष्ठ प्रतिमा राजासे वोली कि तुम्हारी भक्तिसे मैं प्रसन्न हूँ। मन्दिरके भङ्ग होजाने परभी मैं इस स्थानको नहीं त्याग करूंगा। कालान्तरमें दूसरा मन्दिर वन जानेपरभी उसमें तुम्हाराही नाम चलैगा। बटके उत्तरका कूप मट्टीसे ढप गया है, उसको तुम प्रकट करो। जो मनुष्य ज्येष्ठकी पूर्णिमाको उस कूपके जलसे हम लोगोंको स्नान करावैगा, उसको हमारा लोक मिलैगा। ईशान दिशामें एक मण्डप वनाकर वहाँ हम लोगोंको स्नान कराकर ले चलो। उसके वाद १५ दिनों तक मुझको कोई न देखै। गुड़िच नामक महायात्राको करो। माघ शुक्ला पञ्चमी और चैत्र शुक्ला अष्टमीको गुड़िच यात्राका उत्तम समय है; किन्तु पुष्य नक्षत्रसे युक्त आषाढ़ शुक्ला द्वितीया इस यात्राका सर्व प्रधान दिन है। उस दिन हम लोगोंको रथमें वैठाकर गुड़िच क्षेत्रमें, जहां हम लोगोंकी उत्पत्ति हुई है, लेजाना चाहिये। वह स्थान मुझको अत्यन्त प्रिय है। उत्थान परिवर्तन, मार्गप्रावरण, पुष्पाभिषेक, और फाल्गुनमें दोलोत्सवका उत्सव करना उचित है। चैत्र शुक्ला १४ को दमनोंसे मेरी

पूजा करनी चाहिये। वैशाखकी अक्षय ३ को जो मनुष्य गन्धसे मेरा लेपन करैगा उसको चारो वर्ग मिलैगा । ऐसा कह जगन्नाथजी मौन होगये । ब्रह्मादिक देवता अपने २ लोकको चले गये ।

(३० वां अध्याय) मनुष्योंको उचित है कि ज्येष्ठ शुक्ला १० को पञ्चतीर्थीका विधान करें। मार्कण्डेय स्थानमें शिवकी पूजाकर नारायणके पास जावें। उससे दक्षिणके वटका दर्शन और प्रदक्षिणा करके भगवान्के आगेके गरुड़को प्रणाम करें। उसके पश्चात् मन्दिरमें जाकर भगवान्की तीन प्रदक्षिणा और पूजा करें। उससे पीछे समुद्रमें स्नानकरके स्वर्गद्वारपर जावें, जिस स्थानसे देवता लोग भगवान्के दर्शनके लिये नित्य आते हैं। वहां समुद्रमें पितरोंको तिलोदक देवें। (३१ वां अध्याय) उसके अनन्तर नृसिंह तीर्थ और इन्द्रद्युम्न तीर्थमें क्रमसे जाकर पितरोंका तर्पण करें। (३३ वां अध्याय) एकादशीको कमलकी माला और खीरके नैवेद्यसे चतुर्भुज भगवान्का पूजन करें। १२ को यज्ञवाराहकी, १३ को प्रद्युम्नकी और १४ को नृसिंह भगवान्की पूजा करके पांच दिनका ज्येष्ठपञ्चकव्रत समाप्त करें।

(३७ वां अध्याय) भगवान्के नैवेद्य खानेसे मद्य पानादिक महापातक नष्ट होजाते हैं। नैवेद्यसे पितरोंके कर्म करनेसे पितर तृप्त होकर विष्णुलोकमें चले जाते हैं। प्रसादसे बढकर कोई वस्तु पवित्र नहीं है।

त्रेतायुगमें श्वेत नामक राजाने पुरुषोत्तमपुरीमें १०० वर्ष पर्य्यन्त घोर तप किया। नृसिंह भगवान्ने प्रगट होकर राजासे कहा कि तुम वर मांगो। राजा बोले कि हे भगवन्! मैं आपके सारूप्यको प्राप्त होऊं और मेरे राज्यमें अकाल मृत्यु न हो। भगवान् बोले कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त राज्य करके दक्षिण भागमें मेरे रूपको प्राप्त होगे और वटवृक्ष और समुद्रके मध्यमें मत्स्यावतारके सम्मुख तुम स्फटिक प्रतिमा रूपसे श्वेतमाधवके नामसे विख्यात होगे । तुम्हारे उत्तरके तालाबमें स्नान और तुम्हारा दर्शन करनेसे मनुष्योंकी मुक्ति होगी।

(३८ वां अध्याय) भगवान्का उच्छिष्ट सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला है। विष्णुके मन्दिरमें भोग लगे हुए निर्माल्यको पतित लोग भी स्पर्श करें तो वह अशुद्ध नहीं होता। व्रती लोग भी प्रसादको भोजन कर सकते हैं। किसी यात्रीको विष्णुके निर्माल्यके खानेमें अभिमान नहीं करना चाहिये। किसी प्रकारसे निर्माल्य भोजन करनेसे पातक छूट जाते हैं। जो मनुष्य उसकी निन्दा करता है उसको भगवान् स्वयं दण्ड देते हैं। बहुत कालका सूखा हुआ, बहुत दूर लेगया हुआ, सब निर्माल्य उपकारी है। कुत्तेके मुखसे गिरा हुआ भी प्रसादको यदि ब्राह्मणभी भोजन करले तो दोष नहीं है।

(४५ वाँ अध्याय) बारह यात्राओंमें एक दमनभञ्जिका यात्रा है मनुष्योंको उचित है कि चैत्र शुक्ला १३ को मूल सहित दमनक तृणको लाकर मण्डपमें रखकर उसकी पूजा करें और अर्द्ध रात्रिमें लक्ष्मी और सत्यभामाको पूजें। पूर्वकालमें भगवान्ने इसी तिथिकी अर्द्धरात्रिमें दमनासुरको मारा था और उसके अङ्गसे निकला हुआ दमनक तृणको खाकर वह प्रसन्न हुए थे। उस तिथिमें उस तृणको दैत्य समझना चाहिये और उसके वध करनेके लिये भगवान्के हाथमें उसको देना चाहिये।

(४८ वाँ अध्याय) राजा इन्द्रद्युम्न नारदके साथ ब्रह्मलोकमें चले गये।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वाँ अध्याय) पूर्वदिशामें, जहाँ महानदी और विरजा नदी हैं, पुरुषोत्तम तीर्थमें पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं। वहाँ तीर्थमें स्नान करके पुरुषोत्तमजीकी पूजा करनेसे मनुष्य विष्णुलोकको प्राप्त करता है।

भविष्यपुराण—(१२५ वाँ अध्याय सब देवताओंकी प्रतिमा ७ प्रकारकी होती है;— सुवर्णकी, चाँदीकी, ताम्रकी, पाषाणकी, मृत्तिकाकी, काष्ठकी और चित्रमें लिखी हुई।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्म खण्ड, ३७ वाँ अध्याय) विष्णु निवेदित समस्त वस्तु शुद्ध रहती हैं। पंडितगणोंको उचित है कि विष्णुनिवेदित अन्नसे समस्त देव और पितरोंकी पूजा तथा अतिथियोंका सत्कार करें। (७५ वाँ अध्याय) जो पुरुष विष्णुका प्रसाद भोजन करता है उसके १०० पूर्व पुरुषे पवित्र हो जाते हैं। जो मनुष्य रथमें स्थित जगन्नाथजीका दर्शन और पूजन करता है वह भववन्धनसे विमुक्त हो जाता है।

नरसिंहपुराण—(१० वाँ अध्याय) मार्कण्डेय मुनिने पुरुषोत्तमपुरीमें जाकर स्नान करनेके उपरान्त गन्ध पुष्पादिकोंसे पुरुषोत्तमजीकी पूजा करके उनकी बड़ी स्तुतिकी। विष्णु भगवान् प्रकट हो कर वोले कि हे मुनीश्वर ! तुम चिरजीवी हो; यह तीर्थ आजसे तुम्हारे ही नामसे (मार्कण्डेयक्षेत्र) प्रसिद्ध होगा।

इतिहास—इतिहासोंमें लिखा है कि सन् ३१८ ई० में जगन्नाथजीकी मूर्त्ति प्रगट हुई। उड़ीसेके राजा ययाति केसरीने, जो सन् ४७४ में उड़ीसेका राजा वना, जगन्नाथजीकी मूर्त्तिको जंगलसे ढूँढकर पुरीमें स्थापित किया। धार्मिक हिन्दुओंने कई वार विधर्मियोंसे उस मूर्त्तिको वँचाया। उड़ीसेके गङ्गावंशके पाँचवें राजा अनङ्गभीमदेवने, जिसका राज्य सन् ११७४ से १२०२ ई० तक था, जगन्नाथजीके वर्तमान मन्दिरको वनवाया। मन्दिरका काम सन् ११८४ से आरम्भ होकर सन् ११९८ ई० में समाप्त हुआ। उस राजाका राज्य उत्तरमें हुगली नदीसे दक्षिणमें गोदावरी तक और पश्चिममें मध्य देशके सोनपुरके जंगलसे पूर्व और वंगालकी खाड़ी तक फैला हुआ था। राजासे प्रारव्धवश एक ब्रह्महत्या हो गई; अर्थात् उसने एक ब्राह्मणको मारडाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसने जगन्नाथजीके मन्दिरके अलावे वहुतेरे देवमन्दिर, १० चौड़ी नदियोंपर पुल और १५२ घाटोंको वनवाया था। सन् १५३२ ई० में गङ्गावंशके राजाकी मृत्यु हो जानेपर उसका दीवान गङ्गावंशके लोगोंको मारकर उड़ीसेका राजा वन गया। वाद उड़ीसा कई आदमियोंके आधीन हुआ। सन् १८०३में पुरी जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार हुआ। सन् १८०४ ई० में जब खुरदाका स्वाधीन राजा बागी हुआ, तब अङ्गरेजी सरकारने उसका राज्य छीन लिया; किन्तु मन्दिरका प्रवन्ध अव तक खुरदाके राजाके, जिनका महल अब पुरी कसबेमें है, आधीन है। वर्तमान राजाके पिता निर्दयतासे खून करनेके अपराधमें दण्डित होकर सन् १८७८ ई० में कालापानी भेजे गये। हिन्दूलोग पुरीके राजाओंको मन्दिरका प्रवन्धकर्त्ता समझकर उनका बड़ा मान करते हैं। वहुतेरे यात्री राजाका दर्शन करते हैं और उनके निकट भेंट रखते हैं।

पुरी जिला—उसके उत्तर वाँकी सरकारी मिलकियत और अठगढ़का मालगुजार राज्य, पूर्व और पूर्वोत्तर कटक जिला; पूर्व-दक्षिण और दक्षिण बङ्गालकी खाड़ी और पश्चिम मदरासहातेमें गञ्जाम जिला और उड़ीसेके रानापुरका मालगुजार राज्य है। जिलेका सदर-स्थान सन् १८२८ से पुरी कसबा है पुरी जिलेमें भार्गवी, दया और नूर ये तीन नदियाँ

प्रधान हैं, जो चिलका झीलमें मिल गई हैं। ये वरसातमें भयंकर प्रवाहको धारण करती हैं; किन्तु सूखी ऋतुओंमें स्थान स्थानपर सूखकर पानीके कुण्ड बन जाती हैं। गवर्नमेन्टने बाढ़से देशको बचानेके लिये बहुत रुपये खर्च करके अनेक बाँध बनवाये हैं।

पुरी कसबेसे पंद्रह बीस मील दक्षिण-पश्चिम सूबे उड़ीसेके दक्षिण पश्चिमके कोनमें समुद्रके निकट प्रसिद्ध चिलका झील है, जो तङ्ग ऊँची जमीन द्वारा समुद्रसे अलग हुई है। झीलके पश्चिम ऊँची पहाड़ियाँ हैं। झीलकी लम्बाई ४४ मील और इसके उत्तरी भागकी औसत चौड़ाई २० मील और दक्षिणीय भागकी औसत चौड़ाई ५ मील है। इसका क्षेत्रफल सूखी ऋतुओंमें ३४४ वर्गमील और वर्षा कालमें लगभग ४५० वर्गमील रहता है। इसकी औसत गहराई ३ फीटसे ५ फीट तक रहती है। प्रतिवर्ष झीलसे लगभग २००१०० मन नमक बनता है।

पुरी जिलेमें सरकारको मालगुजारी मिलने योग्य कोई जङ्गल नहीं है; किन्तु मधू, मोम, गूण्डी नामक रङ्ग, रेशम और अनेक भाँतिकी दवा बूटी बहुत होती हैं। पुरी और कटक कसबेके बीचमें खण्डगिरि और उदयगिरि पहाड़ीपर बहुत बौद्ध गुफायें और पुरी कसबेसे पूर्वोत्तर ओर समुद्रके किनारेपर कोणार्कका पुराना मन्दिर है। जिलेके पश्चिमोत्तर भागमें भुवनेश्वरके मन्दिरोंके झुण्ड और उससे सीधे दक्षिण जगन्नाथपुरी है। पुरी जिलेके साधारण निवासी गरीब हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पुरी जिलेके २४७३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८८८४८७ मनुष्य थे; अर्थात् ८७३६६४ हिन्दू, १४००३ मुसलमान, ८१९ क्रस्तान और १ सिक्ख। हिन्दुओंमें २१७४०६ चासा, ८८६९२ ब्राह्मण, ६९३०७ वाउरी, ६६६६२ ग्वाला, ३८९१६ तेली, २९३५७ शूद्र, २८७३८ कान, २८४७६ केवट, २००९४ नापित, १८७४२ खण्डाईत, १६७३९ खण्डारा, १४०५४ वनियाँ, ३८९८ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। पुरी जिलेमें पुरी कसबेको छोड़ करके किसी कसबेमें ५००० से अधिक मनुष्य नहीं थे।

कोणार्क।

पुरी कसबेसे १८ मील पूर्वोत्तर पुरी जिलेमें समुद्रसे २ मील दूर सूर्यनारायणका तीर्थ कोणार्क है, जिसको सर्वसाधारण लोग कनारक कहते हैं। कोणार्कका अर्थ (उड़ीसेके) कोनेका सूर्य्य है। यह १९ अंश, ५३ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, ८ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। बैलगाड़ी, पालकी और टट्टू वहाँ जा सक्ते हैं; रास्ता पहले दो मील उत्तर तब दहिने फिर कर घासके मैदान हो कर सीधा पूर्व जाता है। मार्गमें पुरीसे १३¾ मील पर कुशभद्रा नामक छोटी नदीके पास केवल एक झोपड़ा मिलता है। खानेकी सामग्री साथले जाना चाहिये। माघ शुक्लासप्तमीको कोणार्कका मेला होता है। वह सप्तमी रविवारको पड़े तब यात्रियोंकी अधिक भीड़ होती है। चन्द्रभागा नदी, जिसको चनाब कहते हैं; काश्मीर और पञ्जाबमें वहती है, किन्तु कोणार्कका एक खाल चन्द्रभागा करके प्रसिद्ध है। यात्री लोग प्राची सरस्वती और खालमें स्नान करते हैं।

कोणार्कमें सूर्य्यका विचित्र और प्रसिद्ध एक पुराना मन्दिर है। उड़ीसेके लेखसे जान पड़ता है कि राजा नृसिंहदेव लंगोरेने उड़ीसेकी १२ वर्षकी आमदनी खर्च करके सन् १२३७

और सन् १२८२ ई०के बीचमें वर्तमान मन्दिरको बनवाया था । मन्दिरका शिखर गिरगया है । जो बाकी है । वह बाहरसे ९० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा तथा १२४ फीट ऊँचा है । याने उसकी खड़ी दीवार ६० फीट और उसका शिखर ६४ फीट है । उसकी दीवारें सुन्दर स्त्रियों, हाथी, घोड़सवारों और दूसरी मूर्त्तियोंसे पूर्ण हैं और उसका शिखर भी हाथी, घोड़े, घोड़सवार, और पैदल सेनासे छिपा हुआ है । यह मन्दिर भीतरी ४० फीट लम्बा तथा चौड़ा है । मन्दिरका जगमोहन ६० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है । इसकी दीवारें बीस बीस फीट तक मोटी हैं । मन्दिर खाली पत्थरसे बना है । पत्थरके टुकड़े लोहेसे एक दूसरेमें जड़ दिये गये हैं । यह इस समय अतिशय हीन दशामें पड़ा हुआ है । मन्दिरके उजाड़ स्थानोंपर जङ्गल लग गया है । मन्दिरके पीछे ४५ फीट ऊँचा और करीब ७० फीट लम्बा मन्दिरके तबाहियोंका ढेर है । मन्दिरके बाहरके हातेकी दीवार अब नहीं है। उसके पत्थरोंको महाराष्ट्रोंके अफसर लोग पुरीमें ले गये ।

जगमोहनके दक्षिण एक बहुत बड़ा वृक्ष, जिसके पास बहुतेरे छोटे दरख्त और खजूर का कुञ्ज है और एक बागमें एक मठ और बिना मूर्त्तिका एक मन्दिर है ।

कोणार्कके पासके समुद्रमें पानी बहुत कम है । वहाँ बहुतेरे जहाज डूब गये हैं; परन्तु गँवईके लोग इसका कारण ऐसा कहते हैं कि मन्दिरके शिखरके ऊपर बड़े चुम्बककी एक तह थी, जो जहाजोंको बालूपर खैंच लेती थी । जब एक मुसलमान मल्लाहने मन्दिर पर चढ़कर चुम्बकको उतार लिया तब पुजारी लोग अपने देवताके सङ्ग पुरीमें चले गये ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–आदिब्रह्मपुराण–(२७ वाँ अध्याय) दक्षिणके समुद्रके समीपमें ओंड्र देश विख्यात है, जिसमें कोणादित्य नामसे विख्यात सूर्य्य निवास करते हैं । वह क्षेत्र समुद्रके तटपर ७ योजन विस्तारमें है । मनुष्योंको उचित है कि प्रति मासके शुक्लपक्षकी सप्तमीमें वहाँ समुद्रमें स्नानकर सूर्य्यका स्मरण और पितर आदिका तर्पण करें । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और स्त्रियाँ सबलोग सूर्य्यको अर्घ देकर परम गतिको प्राप्त होवेंगे । जब तक सूर्य्यको अर्घ निवेदन न करें तब तक विष्णु और महादेवका पूजन न करना चाहिये । सूर्य्यगङ्गाके जलमें स्नान करनेसे मनुष्यको स्वर्ग मिलता है । परम भक्तिसे कोणार्ककी पूजा करनी चाहिये । चैत्र मासके शुक्लपक्षमें, सूर्य्यके शयनमें, स्थापनमें, संक्रान्तिमें, अयनमें, रविवारमें और सप्तमी तिथिमें सूर्य्यकी यात्राका विशेष दिन है समुद्रके तीरपर वामदेव नामसे विख्यात महादेव स्थित हैं ।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण––(कृष्णजन्म खण्ड, ७६ वाँ अध्याय) जो व्यक्ति उत्तरायण सूर्य्यके समय सूर्य्यका दर्शन और पूजन करेगा, उसका जन्म संसारमें फिर नहीं होगा ।

भविष्य पुराण––(पूर्वार्द्ध ६८ वाँ अध्याय) जम्बूद्वीपमें सूर्य्यनारायणके ३ स्थान मुख्य हैं;––इन्द्रवन, मुण्डार और कालप्रिय । इस द्वीपमें और भी एक स्थान चन्द्रभागा नदीके तटपर साम्बपुर है,जहाँ साम्बकी भक्तिसे लोकानुग्रहके लिये सूर्य्यनारायण मित्ररूपसे निवास करते हैं । जो भक्तिसे उनका पूजन करता है, उसको वह ग्रहण करते हैं ।

राजा शतानीकके प्रश्न करनेपर सुमंतु मुनि कहने लगे कि श्रीकृष्णकी जाम्बवती नाम भार्य्यासे साम्ब नामक पुत्र हुआ । वह पिताके शापसे जब कुष्ठी होगया तब सूर्य्यनारायणके

आराधन करके रोगसे मुक्त हुआ उसीने अपने नामसे नगर बसाकर उसमें सूर्य्यनारायणको स्थापन किया है ।

(१२१ वाँ अध्याय) साम्ब चन्द्रभागा नदीके तटपर मित्रबन नामक सूर्य्यके क्षेत्रमें जाकर तप करने लगा। सूर्य्यने प्रकट होकर साम्बका रोग दूर किया और चन्द्रभागाके तटपर अपनी प्रतिमा स्थापन करनेके लिये उसको आज्ञा दी। (१२३ वाँ अध्याय) साम्बने नदीमें बही जाती हुई सूर्य्यकी प्रतिमाको पाया, जिसको विश्वकर्म्माने कल्पवृक्षके काष्ठसे बनाकर नदीमें बहाया था साम्बने मित्रबनमें मन्दिर बनाकर विधिपूर्वक प्रतिमाको स्थापन किया। (१३३ वाँ अध्याय) उसने शाकद्वीपसे मग ब्राह्मणोंके कुमारोंको लाकर सूर्य्यका पूजक (पुजारी) बना दिया।

(६९) राजाके प्रश्न करनेपर सुमन्तु मुनि पूर्वका वृत्तान्त कहने लगे कि एक समय नारदजीने श्रीकृष्णचन्द्रके पासजाकर कहा कि आपका पुत्र साम्ब अति रूपवान है, इस लिये आपकी सोलहों हजार रानी इसपर मोहित हैं । कृष्णचन्द्रकी स्त्रियोंके समीप जब साम्ब बुलाया गया तब उसका रूप देख स्त्रियोंका चित्त चलायमान होगया । उस समय श्रीकृष्णभगवान्‌ने स्त्रियोंको शाप दिया कि तुमको पतिलोक और स्वर्गकी प्राप्ति न होगी और अन्तमें तुम लोग चोरोंके वशमें पड़ोगी। इसी शापसे श्रीकृष्णके वैकुण्ठ जानेके पीछे अर्जुनके देखते देखते सब स्त्रियोंको चोर हर लेगये। इसके पीछे श्रीकृष्णचन्द्रने साम्बको भी शाप दिया कि तू कुष्ठी होजा । वाराहपुराणके १७१ वें अध्याय, पद्मपुराण, सृष्टिखण्डके २३ वें अध्याय और मत्स्यपुराणके ६९ वें अध्यायमें भी शापकी कथा है)।

(७० वाँ अध्याय) चन्द्रभागा नदीके तटपर सूर्य्यनारायणका सनातन स्थान है। साम्बने पीछे वहाँ सूर्य्यको स्थापित किया। उस स्थानमें परब्रह्म स्वरूप जगत्‌के स्वामी सूर्य्यनारायणने मित्र रूपसे तप किया था। वह सब देवता तथा मनुष्योंकी सृष्टिकर आप १२ रूप धर अदितीके गर्भसे उत्पन्न हुए, जिनमेंसे मित्र नामक बारहवें सूर्य्यकी मूर्ति चन्द्रभागा नदीके तटपर विराजमान है। साम्बपुर और साम्बके शापकी कथा साम्बपुराणके तीसरे अध्यायमें है ।

(११८ वाँ अध्याय) प्रलयके समय जब सब जीव नष्ट होगये और सर्वत्र अन्धकार व्याप्त होरहा था उस समय पहिले बुद्धि उत्पन्न हुई, बुद्धिसे अहंकार, अहंकारसे महाभूत और महाभूतोंसे अण्ड उत्पन्न हुआ, जिसमें सातों समुद्रों सहित सात लोक स्थित हैं । उसी अण्डमें ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्थित थे; परन्तु वे सब अन्धकारसे व्याकुल होरहे थे। उस समय जब वे परमेश्वरका ध्यान करने लगे तब अन्धकारको हरनेवाला एक तेज उत्पन्न हुआ जिसको देख वे सब स्तुति करके कहने लगे कि आपके इस प्रचण्डरूपको कोई देख नहीं सकता इस लिए आप सौम्यरूप धारण करें। ऐसा सुन सूर्य्यनारायणने सब लोकोंको सुखदेनेवाला उत्तम रूप धारण किया ।

(वाराहपुराण २६ वें अध्याय), मत्स्यपुराण (२ रे अध्याय) और मार्कण्डेय पुराण (१०२रे अध्याय)में भी सृष्टिके आदिमें सूर्य्यकी उत्पत्तिकी कथा है भविष्यपुराणके ४२ वें अध्याय और वाराहपुराणमें लिखा है कि सूर्य्यभगवान सप्तमी तिथिमें प्रगट हुए इस

लिए जो पुरुष वा स्त्रियां सप्तमी व्रत करके सूर्य्यकी पूजा करती हैं वे अन्तमें सूर्य्य लोकको जाती हैं।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध.४६ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमीको अचला सप्तमीका व्रत होता है।

पद्मपुराण—(स्वर्गखण्ड, ४५ वां अध्याय) ब्रह्माकी आज्ञासे सूर्य्यके कहने पर विश्वकर्माने सूर्य्यके किरणोंका वहुतसा भाग काटडाला (यह कथा भविष्यपुराणके ४२ वें अध्यायमें भी है)।

आदित्रह्मपुराण—(३१ वां अध्याय) अदितीने दैत्योंसे देवताओंका पराजय देख कर सूर्य्य भगवानकी स्तुतिकी जिससे सूर्य्यनारायण अदितीको वरदान देनेके उपरांत उसके गर्भमें स्थित हुए। सूर्य्यके जन्म होने पर इन्द्रने युद्धके लिए दैत्य और दानवोंको बुलाया असुर और देवताओंका घोर युद्ध हुआ। उस समय सूर्य्यने अपने तेजसे दैत्योंको भस्म करदिया। सब देवता अपने अधिकारको प्राप्त हुए। मार्तण्डने भी अपने अधिकारको पाया (सूर्य्यके कश्यप मुनिसे उत्पन्न होनेकी कथा मत्स्यपुराणके ६ वें अध्यायमें, मार्कण्डेय पुराणके १०५ वें अध्यायमें और पद्मपुराण–स्वर्गखण्डके ४५ वें अध्यायमें भी लिखी हुई है।

(पद्मपुराणमें लिखा है कि सूर्य्य बारहों मासमें बारह राशियों पर जाते हैं, इसीसे इनका द्वादशात्मा नाम है; क्योंकि वारहों पर बारह नामसे सूर्य्य रहते हैं)

मत्स्यपुराण—(१७ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमी मन्वन्तरादि तिथि है. उसमें सूर्य्य रथमें वैठते हैं। इसीसे वह रथसप्तमी कहलाती है।

महाभारत—(वन पर्व, ३ रा अध्याय) युधिष्ठिरने कहा कि हे सूर्य्य ! जो मनुष्य सप्तमी वा छठको तुम्हारी पूजा करता है उसकी सेवा लक्ष्मी करती हैं।

(शांति पर्व्व २०८ वाँ अध्याय) द्वादशादित्य कश्यपके पुत्र हैं; उनके नाम ये हैं;—भग, अँशु, अर्य्यमा, मित्र, वरुण, सविता, धाता, विवस्वान्, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु। (अनुशासन पर्व्व १५० वाँ अध्याय) द्वादशादित्यके नाम ये हैं,—अंशु, भग, मित्र, जलेश्वर, वरुण, धाता, अर्य्यमा, वैजयंत, भास्कर, त्वष्टा, पूपा, इन्द्र और विष्णु

सूतसंहिता—(पुरुषोत्तम माहात्म्य, प्रथम अध्याय) जो मनुष्य कोणार्क तीर्थमें चन्द्रभागा नदीके जलसे स्नान करके सूर्य्यका दर्शन करता है उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है।

सत्रहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसेमें) जाजपुर, बालेश्वर, और (सूबे बङ्गालमें) मेदनीपुर।

जाजपुर।

एक सड़क कटक शहरसे पूर्वोत्तर जाजपुर, भद्रक और वालेश्वर होकर मेदनीपुरको और मेदनीपुरसे उत्तर बाँकुड़ा कसबा होकर रानीगञ्जको और दक्षिण कलकत्तेको गई है। उस सड़कसे जगन्नाथजीके बहुतसे यात्री आते जाते हैं। स्थान स्थान पर सड़कके निकट

यात्रियोंके टिकनेके लिये मोदियोंकी दूकानें बनी हुई हैं। सम्वत् १९२० में मेरे बड़े भाई बाबू मेवालालजी उसी मार्गसे बाँकुड़ा, मेदिनीपुर, बालेश्वर, जाजपुर, और कटक होकर जगन्नाथपुरीमें गए थे। मैं कटकसे पूर्वोत्तर कलकत्तेकी ओर चला।

कटक शहरसे ४४ मील पूर्वोत्तर (२० अंश ५० कला ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश २२ कला ५६ विकला पूर्व देशान्तरमें) वैतरनी नदीके दहिने किनारे पर कटक जिलेमें एक तीर्थ स्नान और उस जिलेके सबडिवीजनका सदर स्थान जाजपुर एक छोटा कसवा है। जो एक समय बड़ा प्रसिद्ध शहर था। कटक और जाजपुरके बीचमें ब्राह्मणी नदीके पार उतरना होता है। जाजपुरसे १२ कोश पूर्व चाँदवाली है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय जाजपुरमें ११९९२ मनुष्य थे; अर्थात् ११३१२ हिन्दू, ६६९ मुसलमान, १ क्रस्तान और १० अन्य।

जाजपुरमें मामूली सरकारी इमारतें, एक खैराती अस्पताल, बहुतेरे शैवमन्दिर, जिनमें अधिकांश हीनदशामें पड़े हैं, और बहुतसे शैव ब्राह्मण हैं। जाजपुर पार्वतीजीका स्थान है। पुराणोंमें उस स्थानका नाम विरज क्षेत्र लिखा है। उड़ीसेके ४ पवित्र स्थानोंमेंसे वह एक है, उसके अतिरिक्त उड़ीसेमें पुरी, भुवनेश्वर और कोणार्क ये ३ तीर्थस्थान हैं।

जाजपुरके पास वैतरनी नदीके सुप्रसिद्ध घाटपर पादगया तीर्थमें यात्री लोग स्नान और पिंडदान करते हैं। वहाँ बहुत पण्डे रहते हैं। घाटपर सीढ़ियाँ बनी हैं। विष्णुस्वामी और वाराहजीका मन्दिर है। फाटकोंपर सूर्यकी प्रतिमा बनी हुई हैं। नदीके निकट एक दालानमें ६ फीट ऊँची ७ पुरानी मूर्तियाँ हैं; जिनमेंसे एक नृसिंहजी और ६ चतुर्भुजी देवियोंकी मूर्तियाँ हैं। उसके पास एक मन्दिरमें गणपतिजीकी बड़ी मूर्ति है। उसके सामने जंगल लगा हुआ नदीके टापूमें वाराहजी [illegible] और अन्य बहुतेरे छोटे मन्दिर हैं। मजिस्टरकी कोठीके हातेमें हाथीपर चढ़ी हुई चतुर्भुजी इन्द्राणी, वाराही और चामुण्डाकी नक्कासीदार सुन्दर ३ मूर्तियाँ हैं। घाटसे १¾ मील दक्षिण एकही पत्थरका ३२ फीट ऊँचा गरुडस्तंभ है। ब्रह्मकुण्ड तालाबके समीप विरजादेवीका शिखरदार मन्दिर बना है। उस तालाबका घाट पत्थरसे बना हुआ है। जाजपुरमें वर्षमें एक मेला होता है, उस समय वैतरनीमें स्नान करनेके लिये बहुतसे यात्री वहाँ एकत्रित होते हैं।

इतिहास—राजा ययातिकेशरीने, जिसने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसेमें राज्य किया था, बिहारसे आते समय जाजपुरको प्रसिद्ध स्थान पाया और कुछ समयके लिये उसको अपनी राजधानी बनाया। वह ११ वीं सदी तक केशरी वंशके राजाओंके आधीन उड़ीसेका प्रधान कसवा था। १६ वीं सदीमें हिन्दू और मुसलमानोंके परस्पर झगड़ेके कारण जाजपुरकी दशा हीन होगई।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ११४ वाँ अध्याय) युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण महर्षि लोमशके सहित पर्यटन करते हुए गङ्गासागरमें स्नान करके समुद्रके तीर तीर चले। उन्होंने कलिङ्ग देशमें वैतरनी नदीके पार उतरकर वहाँ पितरोंका तर्पण किया।

आदिब्रह्मपुराण—(४१ वाँ अध्याय) विरजक्षेत्रमें ब्रह्माकी प्रतिष्ठा की हुई विरजा माता है, जिसके दर्शन करनेसे दर्शकजनोंके ७ पुश्त पवित्र होजाते हैं। एक बार उनके दर्शन, पूजन तथा प्रणाम करनेसे मनुष्य अपने कुलका उद्धार करके ब्रह्मलोकमें निवास

करता है। उस क्षेत्रमें सब पापोंके हरनेवाली और वरको देनेवाली अन्य भी अनेक देवी स्थित हैं और सम्पूर्ण पापोंको विनाश करनेवाली वैतरणी नदी बहती है। वहाँ क्रोडरूपी हरि हैं, जिनके दर्शन और प्रणाम करनेसे विष्णुपद प्राप्त होता है। कपिल, गोगृह, सोम, क्रोड, वासुक और सिद्धेश्वर इन तीर्थोंमें जितेन्द्रिय होकर स्नान करके वहाँके देवताओंको नमस्कार करनेसे मनुष्य सब पापोंसे विमुक्त होकर ब्रह्मलोकमें जाता है। विरजक्षेत्रमें पिण्डदान करनेसे पितरोंकी उत्तम तृप्ति होती है। ब्रह्माके विरजक्षेत्रमें शरीर त्याग करनेसे मोक्ष मिलती है। समुद्रमें स्नान करके कपिल हरि भगवान और वाराही देवीके दर्शन करनेसे देवलोकमें निवास होता है। वह गुह्य क्षेत्र समुद्रके उत्तर भागमें १० योजन विस्तारका है, जिसमें जानेसे पापोंका नाश होजाता है और मुक्ति मिलती है। उस पवित्र उत्कल देशमें पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं और अन्य भी अनेक तीर्थ हैं। उत्कल देशमें निवास करनेवाले मनुष्य धन्य हैं।

बालेश्वर।

जाजपुरसे ५६ मील (कटक शहरसे १०० मील) पूर्वोत्तर (२१ अंश, ३० कला, ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, ५८ कला, ११ विकला पूर्व देशान्तरमें) बूढ़ीबलंग नदीके दहिने किनारे पर समुद्रसे सीधा ७ मील और नदीके मार्गसे लगभग १६ मील पश्चिम सूबे उड़ीसेमें जिलेका सदरस्थान और प्रधान बंदरगाह बालेश्वर कसबा है, जिसको बालासोरभी कहते हैं। जाजपुरसे लगभग २० मील पूर्वोत्तर भद्रक नामक बड़ी वस्ती मिलती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बालेश्वर कसबेमें २०७७५ मनुष्य थे; अर्थात् १६९१२ हिन्दू, ३३६२ मुसलमान और ५०१ क्रस्तान।

बालेश्वरमें मामूली सरकारी इमारतें हैं। जेवर और पीतल आदि धातुके बर्तन अच्छे बनते हैं। तम्बाकू, तेल, चीनी, गल्ले इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंसे बालेश्वरमें आते हैं और चावल इत्यादि रकम बालेश्वरसे दूसरे स्थानोंमें भेजे जाते हैं। बंदरगाहकी आमदनी, रफतनी बढ़ती जाती है। बालेश्वरमें प्रतिवर्ष चड़क पूजा होती है।

बालेश्वर जिला—इसके उत्तर मेदनीपुर जिला और मोरभंजका देशी राज्य, पूर्व बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण वैतरनी नदी, बाद कटक जिला और पश्चिम क्योंझोर, नीलगिरि और मोरभंजका राज्य। जिलेका सदर स्थान बालेश्वर कसबा है। समुद्रके किनारेकी नमकदार भूमिपर बहुत नमक तैयार किया जाता है। सुवर्णरेखा, पंचपाड़ा, बूढ़ाबलङ्ग, काँस बाँस और वैतरनी जिलेकी प्रधान नदियाँ हैं। और बालेश्वर, चुरामन्न, ढमरा इत्यादि उस जिलेमें ७ प्रधान बंदरगाह हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बालेश्वर जिलेका क्षेत्रफल २०६६ वर्गमील था, जिसमें ९४५२८० मनुष्य थे, अर्थात् ९१५७९२ हिन्दू, २३८०४ मुसलमान, ८१५ क्रस्तान, ४७ सिक्ख, ४ बौद्ध, १ यहूदी और ४८१७ अन्य। जातियोंके खानेमें १८२९४८ खण्डाइत, ११९३७३ ब्राह्मण, ४८१९२ पान; २४४५५ कण्डारा, ८४४४ चमार, ६२९० गोंड, २७६७ भूमिज और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

इतिहास—बालेश्वर एक समय प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। सन् १६४२ ई० में वहाँ अङ्गरेजी कोठी नियत हुई। डचकी कोठीभी यहाँ थी। फरांसीसी लोग अब तक बालेश्वरके पास १०० एकड़ भूमि अपने कब्जेमें रक्खे हुए हैं।

सन् १८०३ में उड़ीसेके दूसरे जिलोंके साथ अङ्गरेजोंने बालेश्वरको अपने अधिकारमें किया। सन् १८०५ से १८२१ तक कटकसे बालेश्वरका प्रबन्ध होता था। सन् १८२७ में यह स्वाधीन कलक्टरके आधीन हुआ।

मेदनीपुर।

बालेश्वरसे लगभग ८० मील (कटकसे १८० मील) पूर्वोत्तर (२२ अंश, २४ कला, ४८ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, २१ कला १२ विकला पूर्व देशान्तरमें) कसाई नदीके बाँये अर्थात् उत्तर किनारेपर सूबे बङ्गालके वर्दवान विभागमें जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा मेदनीपुर है। बालेश्वर और मेदनीपुरके मार्गमें सुवर्ण-रेखा नदीको लाँघना पड़ता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मेदनीपुर कसबेमें ३२२६४ मनुष्य थे, अर्थात् १६२५३ पुरुष और १६०११ स्त्रियां। इनमें २४७१५ हिन्दू; ६७६५ मुसलमान, ३९३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जङ्गली लोग, ३६९ क्रस्तान और २२ बौद्ध थे।

मेदनीपुर कसबेमें सरकारी कचहरियाँ और यूरोपियन लोगोंके रहनेके लिये सुन्दर मकान बने हुए हैं। एक सरकारी और दूसरा एडेड स्कूल; सन् १८५१ का बना हुआ एक गिरजा; सन् १८३५ का बना एक अस्पताल; बड़ा बाजार और यात्रियोंके टिकनेके लिये मकान हैं। वहाँ पीतल तथा लोहेके बर्तन इत्यादि चीजें तैयार होती हैं।

मेदनीपुर सड़कोंका केंद्र है। वहाँसे दक्षिण पश्चिम बालेश्वर और जाजपुर होकर कटकको; पश्चिम कुछ दक्षिण क्योंझोर, सम्भलपुर, रायपुर, राजनन्दगाँव, और भण्डाराको और भण्डाराके आगेसे पूर्वोत्तर जबलपुर, कटनी, रींवा और मिर्जापुर तक और दक्षिण-पश्चिम पैठन, अहमदनगर और बम्बई तक, मेदनीपुरसे पूर्व ६८ मीलका मार्ग उलबड़िया होकर कलकत्तेको; और उत्तर अप्रसिद्ध सड़क बाँकुड़ा होकर रानीगञ्जको गई है। आगबोट मेदनीपुरसे उलुवड़िया तक नहरमें और उलबड़ियासे १५ मील कलकत्तेके आरमेनियन घाट तक भागीरथी गङ्गामें नित्य आते जाते हैं। रेलवेका काम आरम्भ होगया है; मेदनीपुरसे रेलवेकी लाइन कई तरफ निकलेंगी;—एक लाइन पूर्व ओर उलबड़िया होकर हवड़ेको; दूसरी दक्षिण पश्चिम बालेश्वर, भद्रक कटक भुवनेश्वर इत्यादि होकर पुरीको और तीसरी लाईन पश्चिम ओर आसनसोल और नागपुरकी लैनके सीनी स्टेशनको जायगी।

मेदिनीपुर जिला—यह वर्दवान विभागके दक्षिणका जिला है। इसके उत्तर बाँकुड़ा और वर्दवान जिला; पूर्व हुगली और हवड़ा जिला और भागीरथी नदी; दक्षिण बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर जिला; पश्चिम मोरभञ्जका राज्य और सिंहभूमि जिला और पश्चिमोत्तर मानभूमि जिला है। जिलेकी प्रधान नदी भागीरथी है, जिसकी सहायक रूपनारायण, रसूलपुर और हलदी नदी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मेदिनीपुर जिलेके ५०८२ वर्गमील क्षेत्रफलमें २५१७८०२ मनुष्य थे; अर्थात् २२३५५३५ हिन्दू, १६४००३ मुसलमान, ११७४३६ पहाड़ी और जङ्गली; जिनमें ११२०६२ संथाल थे, ७४० क्रस्तान ४४ सिक्ख ३६ बाद्ध ६ ब्राह्मो और २ पारसी। हिन्दुओंमें ७५३४३५ कैबर्त, ११७४१४ ब्राह्मण, १२६२६० सद्गोप, ९२१७८ कायस्थ, ७४४९७ बागड़ी, ६८२३९ तेली; ५७५६२ ताँती, ५३९९४ ग्वाला, ४६०७२ नापित, ४५१९० कुर्मी; ४१६०७ धोबी, २३५०७ बनियाँ १९५७३ राजपूत, १२७४६ बाउरी, और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मेदनीपुर जिलेके कसबे मेदनीपुरमें ३२२६४, घटालमें १३९४२, चन्द्रकोनामें ११३०९ और खरवारमें १००८३ मनुष्य और सन् १८८१ में रामजीवनपुरमें १०९०९ और तमलूकमें ६०४४ मनुष्य थे।

अठारहवां अध्याय।

(सूबे बंगालमें) श्रीरामपुर, तारकेश्वर, चन्दरनगर, हुगली, बर्द्दवान, खानाजंक्शन, सिउड़ी, रानीगञ्ज, (सूबे छोटानागपुरमें) पुरुलिया (सूबे बंगालमें) बाँकुड़ा, (छोटानागपुरमें) राँची हजारीबाग, पारसनाथ और (सूबे विहारमें) वैद्यनाथ।

श्रीरामपुर।

मैं नहर और भागीरथीके मार्गसे आगबोट द्वारा मेदनीपुरसे लगभग ७० मील पूर्व कलकत्तेमें आया और हवड़ेसे इष्टइन्डियन रेलवेकी गाड़ीमें सवार हो आगे चला। कलकत्तेके पासके हवड़ेसे १२ मील उत्तर श्रीरामपुरका रेलवे स्टेशन है। सूबे वङ्गालके हुगली जिलेमें हुगली नदीके पश्चिम किनारे पर बारकपुरके सामने (२२ अंश, ४५ कला, २६ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २३ कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमें) सब डिवीजनका सदर स्थान श्रीरामपुर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय श्रीरामपुरकी म्युनिसिपल्टीमें ३५९५२ मनुष्य थे; अर्थात् २०२०० पुरुष और १५७५२ स्त्रियाँ। इनमें ३०१८१ हिन्दू, ५४५५ मुसलमान, ३०४ क्रस्तान ११ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध थे।

श्रीरामपुरमें डेनमार्कवालोंका एक चर्च है, जो सन् १८०५ ई० में १८ हजार रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था। हुगली अर्थात् भागीरथीके किनारेपर सुन्दर कालिज बना हुआ है, जिसकी डेवढ़ीमें ६० फीट ऊँचे ६ स्तम्भ लगे हैं उसके ऊपर प्रधान कमरा १०३ फीट लम्बा और ६६ फीट चौड़ा है। इनके अतिरिक्त श्रीरामपुरमें स्कूल, अस्पताल, बाग, एक जूटका पेच और उसके पास जूट आदिके कई कल कारखाने हैं और कागज बहुत तैयार होता है। कसबे होकर बहुतेरी सड़क गई हैं।

इतिहास—श्रीरामपुर सन् १७५५ ई० से डेनमार्कवालोंके अधिकारमें था। सन् १७९९ ई० में श्रीरामपुरके पादड़ियोंने पहले पहल महाभारत और रामायण छपवाकर एक बंगला अखबार भी निकाला; पीछे बंगला पुस्तकें भी छपने लगीं। सन् १८४५ ई० में ईष्ट इण्डियन कम्पनी और डेनमार्कके बादशाहकी एक सन्धि हुई। उसके अनुसार डेनमार्कके बादशाहने हिन्दुस्तानके अपने आधीनकी सम्पूर्ण भूमि अर्थात् ट्रांकूवार फ्रेडारिक्स नगर और बालासोरके पासके छोटे टुकड़ेके साथ श्रीरामपुरको १२५००० पाउण्ड लेकर ईष्ट इण्डियन कम्पनीके हाथ बेंच दिया।

तारकेश्वर।

श्रीरामपुरसे २ मील (हवड़ेसे १४ मील) उत्तर सेवड़ाफूलीका रेलवे स्टेशन है। वहाँसे २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे शाखा तारकेश्वरको गई है।

तारकेश्वर हुगली जिलेमें टट्टी और फूसके मकानोंकी बस्ती है, किन्तु तारकेश्वर शिवके मन्दिरके अधिकारी महन्त माधवचन्द्र गिरिका मकान दो मञ्जिला पक्का बना हुआ है। यात्री लोग पण्डे या मोदियोंके मकानोंमें टिकते हैं। बहुतेरे मोदी रेलवे स्टेशनसे यात्रियोंको लेजाते हैं; पूजाकी सामग्री भी वही लोग देते हैं। पूजाके समय ब्राह्मण जाकर यात्रियोंको पूजा करवाते हैं। सब लोग पोखरेका जल पीते हैं तारकेश्वरमें कई एक कच्चे पोखरे हैं जिनमेंसे तारकेश्वरके मन्दिरके निकटका दूधगङ्गा नामक पोखरा प्रधान है। मन्दिरसे दक्षिण पश्चिम छोटा बाजार, दूधगङ्गासे दक्षिण और पश्चिम बाग और दक्षिण-पश्चिमके कोनेके समीप महन्तका मकान है।

दूधगङ्गाके पूर्व किनारेपर घेरेके भीतर तारकेश्वर शिवका शिखरदार मन्दिर दक्षिण मुखसे स्थित है। मन्दिरके जगमोहनसे दक्षिण एक सुन्दर मण्डप बना है, जिसके दो ओर पाँच पाँच और दो ओर तीन तीन मेहराबियाँ बनी हुई हैं। मण्डपमें सङ्गमर्मरका फर्श लगा है और दक्षिण भागमें नन्दीश्वरकी सुन्दर मूर्ति है। मन्दिर और मण्डपसे पूर्व महन्तोंके आठ दश समाधि मन्दिर, पूर्वोत्तर कालीजीका मन्दिर और पश्चिमोत्तर पाकशाला है, जिसमें तारकेश्वरजीके भोगकी सामग्री तैयार होती है। बहुतेरे रोगग्रस्त लोग, जिनमें मुसलमान भी होते हैं, अपना दुःख छूटनेके लिये तारकेश्वरके मन्दिरके आस पास धरना बैठते हैं।

मन्दिरका प्रबंध तारकेश्वरके महन्तके आधीन है। जमीन्दारीकी आमदनीसे मन्दिरका खर्च चलता है और यात्री लोग भी बहुत पूजा चढ़ाते हैं। वहाँ सालमें दो बड़े मेले होते हैं। फाल्गुनकी शिवरात्रीके मेलेका जमाव तीन दिनोंतक रहता है उस समय लगभग बीस पचीस हजार आदमी वहाँ आते हैं और मेषकी संक्रान्तिका मेला, जो चड़क पूजाका मेला कहलाता है, छः सात दिनोंतक रहता है, उस मेलेमें लगभग १५ हजार मनुष्य आते हैं।

चन्दरनगर।

सेवड़ाफुली जंक्शनसे ७ मील (हवड़ासे ३१ मील) उत्तर चन्दरनगरका रेलवे स्टेशन है। फ्रांसीसियोंके राज्यमें (२२ अंश, ५१ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २४ कला, ५० विकला, पूर्व देशान्तरमें) हुगलीनदीके दहिने किनारेपर चन्दर-

नगर एक सुन्दर छोटा शहर है। वहाँ फ्रांसींसी गवर्नरकी उत्तम कोठी बनी है। गङ्गाके किनारेपर सन् १७२६ ई० का बना हुआ इटलीके मिशनरीका चर्च अर्थात् गिर्जा है। फ्रांसीसी राज्यकी सीमाके पासही बाहर हुगली जिलेमें रेलवे स्टेशन बना है।

फ्रांसीसियोंका गवर्नर जनरल मद्रास हातेके पाण्डीचरीमें रहता है उसीके आधीन चन्द्रनगरका सब गवर्नर है (फ्रांसीसियोंके हिन्दुस्तानके राज्यका विवरण भारत-भ्रमणके चौथे खण्डमें पांडीचरीके वृत्तान्तमें देखो)। अङ्गरेजी गवर्नमेंट इस शरतपर चन्द्र-नगरके गवर्नरको प्रतिवर्ष ३०० सन्दूक अफियून देती है कि फ्रांसीसियोंकी प्रजा पोस्तेका काम न करें।

इतिहास—फ्राँसीसी लोग सन् १६७३ ई० में चन्द्रनगर आये और सन् १६८८ में उन्होंने इसको पाया। फ्राँसीसियोंके गवर्नर डुप्लेके समय (१७३१—१७४१) चन्द्रनगरमें २००० से अधिक ईटोंके मकान बनाये गये। उस समय वहाँ भारी सौदागरी होती थी। सन् १७४० में चन्द्रनगर उस समयके कलकत्तेसे अधिक मालदार और रवनकदार था। सन् १७५७ में अङ्गरेजोंने चन्द्रनगरको जीतकर किले वन्दीको तोड़ दिया; किन्तु सन् १७६३ की सन्धिके अनुसार वह फिर फ्राँसीसियोंको मिला। सन् १७९४ में फिर ईष्ट इंडियन कम्पनीने चन्द्रनगरको फ्राँसीसियोंसे छीन लिया; परन्तु सन्धि होजानेपर सन् १८१६ में यह फिर फ्राँसीसियोंको मिल गया; तबसे अब तक वह उनके अधिकारमें है।

हुगली।

चन्द्रनगरके रेलवे स्टेशनसे ३ मील (हवड़ेसे २४ मील) उत्तर हुगलीका रेलवे जंक्शन है। सूबे बंगालके वर्द्धवान विभागमें रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर हुगलीनदीके दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर जिलेका सदर स्थान हुगली एक कसबा है उसके दक्षिण चिंसुरा बस्ती है। दोनों मिलकर एक म्युनिसिपल्टी बनती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हुगली और चिंसुरामें ३३०६० मनुष्य थे, अर्थात् १७०१८ पुरुष और १६०४२ स्त्रियाँ। इनमें २६९३६ हिन्दू, ५९०२ मुसलमान, १९८ कृस्तान, १८ एनिमिष्टिक, ३ जैन और २ बौद्ध थे।

हुगली कसबेमें देखनेकी प्रधान वस्तु इमामबाड़ा है, जिसको करामत अलीने महम्मद मुशिनके धनसे, जो सन् १८१४ ई० में मरा, ३ लाख रुपये खर्च करके बनवाया था। इमामबाड़ेका अगवास २७७ फीट लम्बा और ३६ फीट चौड़ा है। बीचमें फाटक लगा है। ऊपर ११४ फीट ऊँचे दो मीनार खड़े हैं। इमामबाड़ेका आङ्गन १५० फीट लम्बा और ८० फीट चौड़ा है; फर्श मार्बुलका लगा है, प्रधान कमरा बहुत सुन्दर है और चारोंओर कोठरियाँ बनी हुई हैं। इमामबाड़ेके पास सड़कके दूसरे बगलपर सन् १७७६—१७७७ इ०का बना हुआ एक पुराना इमामवाड़ा है।

चिन्सुरामें ईटोंका एक पुराना गिर्जा है, जिसको सन् १७६८ में डचके गवर्नरने बनवाया था। गिर्जासे दक्षिण सन् १८३६ ई० का बना हुआ हुगली-कालिज है, जिसके बनानेमें ८ लाख रुपयेसे अधिक खर्च पड़े थे। यह हिन्दुस्तानके अधिक प्रसिद्ध कालिजोंमेंसे एक है; इसमें लगभग ६०० विद्यार्थी पढ़ते हैं।

हुगलीका पुल—५ मीलकी रेलवे शाखा हुगली नदीके पुलको लाँघकर हुगलीसे नइहाटीमें जाकर "ईष्टर्न वङ्गाल स्टेट रेलवे" से मिली है,जहाँसे दक्षिण २४ मील कलकत्ताका सियालदह स्टेशन और उत्तर ओर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जिलिङ्ग है। हुगली गङ्गा, जिसको भागीरथी भी कहते हैं, गङ्गाजीकी पश्चिमी शाखा है। हुगली कसबे और नइहाटीके बीचमें हुगली नदीपर १२१३ फीट लम्बा और (पायाओंके नीचेके छोरोंसे) ९८$\frac{1}{3}$ फीट ऊँचा जुबली पुल है। उसपर २ लाइन बनी हैं। पुलके दूसरे भागकी लम्बाई ३२७८ फीट है। इस पुलको सन् १८८७ ई०में जुबलीके समय भारतवर्षके गवर्नर-जनरल लार्ड डफरिनने खोला, इसके बनानेमें ५२ लाख रुपये खर्च पड़े थे।

हुगली जिला—इसके उत्तर वर्द्दवान् जिला; पूर्व हुगली नदी, जो नदियाँ और चौबीस परगना जिलेसे इसको अलग करती है, दक्षिण हवड़ा जिला और पश्चिम वर्द्दवान जिला है। जिलेका सदर-स्थान हुगली कसबा है। इस जिलेमें हुगली, दामोदर इत्यादि नदियाँ और राजापुर, डांकुनी, सामती इत्यादि झीलें हैं। इनमेंसे सामती झीलका क्षेत्रफल ३० वर्गमीलमें है। इस जिलेसे होकर उलबड़िया और मेदनीपुर नहर गई है और जिलेमें दूसरी कई एक छोटी नहर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हुगली जिलेका क्षेत्रफल १२२३ वर्गमील था, जिसमें १०१२७६८ मनुष्य बसते थे; अर्थात् ८२२९७२ हिन्दू, १८८७९८ मुसलमान, ६५५ कृस्तान, २९० बौद्ध, १६ ब्राह्म और ३७ दूसरे। जातियोंके खानेमें १४२५२६ कैवर्त, १३५१३५ बागड़ी, ७६२७१ ब्राह्मण, ६१०२१ सदगोप, ४६१३४ ग्वाला, ३८७५७ तेली, २५४८४ कायस्थ, १७३५२ बनियाँ, ५५३० राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके कसबे श्रीरामपुरमें ३५९५२, हुगली और चिंसुरामें ३३०६०, और वैद्यबटीमें १८३८० मनुष्य थे। इनके अलावे हुगली जिलेमें कई छोटे कसबे हैं। इसी जिलेके भीतर फ्रांसीसियोंके चन्दरनगरका राज्य है।

हुगली कसबेसे १ मील उत्तर बुन्देल गाँवमें पोर्चुगीजोंका १ पुराना मठ सन् १५९९ का बना हुआ, एक गिर्जा और हिन्दुओंका पवित्र स्थान त्रिवेणी है।

हुगली कसबेसे ३ मील उत्तर बाँसवड़िया बस्तीमें एक जमीदारकी स्त्री रानी शंकरीदासीका बनवाया हुआ देवी हुँसेश्वरीका एक प्रसिद्ध मन्दिर है, जिसमें १३ कलश और १३ शिव स्थापित हैं। मन्दिरकी रक्षाके लिये एक किला और खाँई बनी थी, जिसमें वहाँके लोगोंने महाराष्ट्रोंकी चढ़ाईके समय शरण लिया था।

इतिहास—पोर्चुगीजोंने सन् १५३७ ई० में हुगली कसबेको बसाया और पीछे हुगली के वर्त्तमान जेलखानेके निकट एक किला बनवाया, जिसके चिह्न अब तक विद्यमान हैं। सन् १६३२ ई० में दिल्लीके बादशाह शाहजहाँने पोर्चुगीजोंकी शिकायत सुनकर हुगलीमें एक बड़ी सेना भेजी। किला तोपोंसे उड़ादिया गया, १००० से अधिक पोर्चुगीज मारे गये और लगभग ४००० पुरुष, स्त्री, और लड़के पकड़ कर आगरा भेजे गये, जो बरजोरीसे वहाँ मुसलमान बनाये गये। "सातगाँव" से, जो हुगलीसे ६ मील दूर है, आफिस और दफ्तर हुगलीमें लाये गये। हुगली बङ्गालका शाही बन्दरगाह हुई।

सन् १६४० ई० में ईष्टइंडियन कम्पनीने शाहजहाँके पुत्र सुलतान शुजासे, जो वङ्गालका गवर्नर था, फरमान हासिल करके हुगलीमें एक कोठी कायम की। सन् १६६९में कम्पनीको हुगलीमें जहाज बोझनेकी आज्ञा मिली। सन् १६८५ में वङ्गालके नव्वाव शाइस्ताखाँ और कम्पनीके कर्मचारियोंमें झगड़ा खड़ा हुआ। उस समय अङ्गरेजोंने इङ्गलैंड और मद्रासके हुगलीमें अपनी फौज भेजी, किन्तु मोगलोंके बलके सामने उनसे क्या होसकता था; सन् १६८६ में अङ्गरेजोंको हुगली छोड़कर वहाँसे २६ मील दूर सतानतीको, जो नीची जगहमें एक गाँव था, चला जाना पड़ा। वह जगह अब कलकत्तेके उत्तरीय विभागमें शामिल है। सन् १७४२ में महाराष्ट्रोंने हुगली कसबेको लूटा।

लगभग सन् १६४६ ई० में चिन्सुरा डचके आधीन हुआ। सन् १८२६ ई० में अङ्गरेजी सरकारने चिन्सुराके बदलेमें उसको जावाका टापू देकर उससे चिन्सुराको लेलिया।

बर्दवान।

हुगली कसबेसे ४३ मील (कलकत्तेसे ६७ मील) पश्चिमोत्तर और खाना जंक्शनसे ८ मील दक्षिण वर्दवानका रेलवे स्टेशन है। सूबे वङ्गालमें दामोदर नदीसे २ मील उत्तर बाँका नदीके निकट किस्मत और जिलेका सदर-स्थान वर्दवान एक सुन्दर कसबा है; जिसका शुद्ध नाम वर्द्धमान है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय बर्दवान कसबेमें ३४४७७ मनुष्य थे; अर्थात् १८५२७ पुरुष और १५९५० स्त्रियाँ। इनमें २४१७९ हिन्दू, १००८१ मुसलमान, २०७ क्रस्तान, ६ बौद्ध और ४ जैन थे।

वर्दवानमें महाराजका महल, गुलाबबाग, अष्टोत्तर शत शिवालय और पीर बहरामका दरगाह इत्यादि बहुतेरी दर्शनीय वस्तु हैं। महाराजके महलके दक्षिण वाले फाटकसे पश्चिम नवतूनगञ्ज नामक सुन्दर चौक बना हुआ है। उसके चारों बगलोंपर पक्की कोठरियाँ, जिनके आगे ओसारे हैं, बनी हैं और मध्य भागमें ४ कोठरी और टीनसे छाई हुई ८ चाँदनी और चारों बगलोंपर ४ फाटक हैं। महाराजकी कचहरीसे पूर्व बड़ा बाजार है, जिसमें कपड़े और चाँदी, सोने आदिकी बड़ी बड़ी दूकानें रहती हैं। बर्दवानमें कई सदावर्त लगे हैं और जलकल बनी हुई है। कसबेसे २ मील दक्षिण-पश्चिम कंचननगरसे कलका पानी आता है। कसबेके निकट कृष्णसागर नामक तालाब और एक शिवमन्दिर और जेलखानेके पास रानीसागर नामक एक बड़ा तालाब है। रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दक्षिण कमिश्नर, जज, मजिष्टर आदिकी कचहरियाँ बनी हुई हैं।

राजाका महल—रेलवे स्टेशनसे १ मीलसे अधिक पश्चिम-दक्षिण वर्दवानमें राजाका उत्तम महल है। दरखास्त करनेपर महल देखनेका हुक्म मिलता है। राजवाड़ीके बड़े घेरेके अन्दर पश्चिम तरफ महलके दरवाजेके पास पूर्व और पश्चिम दो कमरे हैं, जिनमें मार्बुलका फर्श लगा है और मार्बुलकी बहुतेरी मूर्त्तियाँ रक्खी हैं। पूर्व वाले कमरेसे पूर्व एक बड़े कमरेमें मार्बुलका फर्श लगा है, बड़े बड़े झाड़ लटके हैं और उत्तम कुर्सियाँ रक्खी हुई हैं। बड़े कमरेसे पूर्व एक बारहदरीके मध्यमें बालरूम अर्थात् अङ्गरेजी नाचघर है, जिसके ऊपरके मञ्जिलपर लाइब्रेरी है और कई एक उत्तम कमरे तस्वीर इत्यादि उत्तम असबाबोंसे सजे हैं।

बारहदरीके पूर्व महताव: मञ्जिलके दक्षिण दिलाराम और दिलारामके पूर्व आईनामहल है। बारहदरीसे थोड़ेही दूरपर ऐसमञ्जिलमें अनेक भाँतिके बहुतेरे हथियार रक्खे हुए हैं और बहुतेरी तस्वीरें टङ्गी हैं। आईनामहलसे पूर्व राजाकी कचहरी है आँगनके चारों बगलोंपर दो मञ्जिले दालान और दो मञ्जिले कमरें वने हुए हैं।

लक्ष्मीनारायणका मन्दिर—राजमहलके पास लक्ष्मीनारायणका सुन्दर मन्दिर है, जिसको लोग लक्खीनारायणका मन्दिर कहते हैं। मन्दिरके आगेके दालानमें मार्वुलका फर्श लगा है और चाँदी जड़े हुए ३ सिंहासन रक्खे हुए हैं, जिनपर समय समयमें मन्दिरकी देवमूर्त्तियाँ बैठाई जाती हैं।

मन्दिरसे थोड़ी दूरपर एक सुन्दर पूजावाड़ी है, जिसमें खम्भाओंकी पांच छः पंक्तियाँ हैं और सफेद तथा काले मार्वुलके तख्तोंसे फर्श वना है।

वड़े वाजारसे दक्षिण-पूर्व मंगला महारानीका मन्दिर और एक शिवाला है।

गुलाववाग—रेलवे स्टेशनसे करीव २ मील और राजवाड़ीसे १ मील दूर वर्द्वानके महाराजका गुलाववाग है। राजवाड़ी और गुलावबागके बीचमें सड़कके पास श्यामसागर नामक एक वड़ा तालाव है। गुलावबागमें भाँति भाँतिके फल फूलोंके वृक्ष लगे हैं, जगह जगह सड़कें वनी हैं और स्थान स्थानपर जंगली जानवरों, जलचरों और पक्षियोंके रहनेके लिये अनेक मकान, हौज, कुण्ड और घेरे वनाए गये हैं। यद्यपि यह चिड़ियाखाना पहलेके समान नहीं है, तिसपर भी यहाँ देखने योग्य वहुतेरे जीव जन्तु हैं। इसमें थोड़े थोड़े सर्व प्रकारके पशुपक्षी और वहुतेरे वाघ तथा हरिन देखनेमें आते हैं। वागके घेरेके भीतर कई तालाव हैं। वागके मध्यमें एक उत्तम तालावके चारों तरफ पत्थरकी सीढ़ियाँ और उसके चारों कोनोंके पास मार्वुलकी ४ प्रतिमा हैं। तालावके उत्तर और दक्षिण गुलावकी फूलवाड़ी हैं, जिनमें क्यारियोंके बगलोंपर गचके रास्ते बने हैं। तालावके पश्चिम किनारे पर रसोईघर, जनाना, अंटाघर, वैठकखाना आदि कई सुन्दर इमारतें वनी हैं। गुलाववागके वगलोंमें नहर बनाई गई है।

अष्टोत्तरशत शिवालय—राजवाड़ीसे २ मील पश्चिमोत्तर एक चौगानके चारों वगलोंपर एकही प्रकारके १०८ शिखरदार शिवमन्दिर हैं, अर्थात् ३८ पूर्व, ३८ पश्चिम, १४ उत्तर, १४ दक्षिण और ४ चारों कोनोंपर। प्रत्येक मन्दिर वाहरसे ३ गज लम्बा और इतनाहीं चौड़ा है। चौगानके पूर्व और पश्चिम वगलमें दो फाटक और उसके भीतर २ कच्ची दिग्गी हैं।

वर्द्वान जिला—इसका क्षेत्रफल २६९७ वर्ग मील है। इसके उत्तर संथालपरगना, वीरभूमि और मुर्शिदाबाद जिले, पूर्व नदियाँ जिला, दक्षिण हुगली, मेदनीपुर और वाकुड़ा जिले और पश्चिम मानभूमि जिला है। वर्द्वान जिला भारतवर्षके सबसे अधिक उपज होनेवाले जिलोंमेंसे एक है। इस जिलेमें केवल पश्चिमोत्तर कोनेमें, संथाल परगने जिलेस लगी हुई नीची ऊँची भूमि है, जहाँ जङ्गलोंमें कुछ भालू, तेंदुये, भेड़िया इत्यादि वनजन्तु रहते हैं; नहीं तो सर्वत्र समतल भूमिपर धानकी वड़ी खेती होती है। जगह जगह ताड़, केला और आमके वागोंमें झोपड़ियोंकी वस्तियाँ देखनेमें आती हैं। जिलेमें कोई पहाड़ी नहीं

है। दामोदर, खारी, बाँका इत्यादि बहुतेरी नदियाँ जो भागीरथीमें मिल गई हैं, बहती हैं। उस जिलेमें तशर बहुत होता है और जहरीले सर्प बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय बर्दवान जिलेमें १३९१८२३ मनुष्य थे; अर्थात् ११२०६७६ हिन्दू, २६६८१६ मुसलमान, ६४१८ संथाल, ९१० क्रस्तान और ३ यहूदी। जातियोंके खानेमें १४८७८८ भङ्गी, ११२१११ सद्गोप, १०७६८४ ब्राह्मण, ८२३५४ बाउरी, ७०२६३ ग्वाला, ४५२२९ चमार, ३९०३० डोम, ३५३०५ बनियाँ, ३३०६९ कायस्थ, ३१५९२ कैवर्त, २८९७८ तेली, ७२१८ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके मनुष्य थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस जिलेके कसबे बर्दवानमें ३४४७७ और रानीगञ्जमें १३३७३ और सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कलनामें १०४६३ और कतवामें ६८२० मनुष्य थे। बर्दवान जिलेमें भागीरथीके किनारेपर जिलेमें सौदागरीका प्रधान स्थान कलना है, जो मुसलमानोंके राज्यके समय एक प्रसिद्ध स्थान था। वहाँ मुसलमानोंके एक बड़े किलेका चिह्न अवतक विद्यमान है और बर्दवानके महाराजका एक महल बना हुआ है। रानीगञ्ज सबडिवीजनमें कोयलेकी बहुतसी खानियाँ हैं। भागीरथी और अजयनदीके संगमके निकट कतवा एक तिजारती स्थान है; उसी स्थानपर चैतन्य महाप्रभुने तप किया था; इस लिये वैष्णव लोग उसको पवित्र समझते हैं।

इतिहास—राजमहलमें दाउदखाँके परास्त होनेके पीछे सन् १५७४ ई० में बादशाह अकबरकी सेनाने उसके वंशधरोंको बर्दवानमें पकड़ा। सन् १६२४ में शाहजादे खुर्रमने जो पीछे शाहजहाँके नामसे बादशाह बना; बर्दवान कसबे और उसके किलेको लेलिया। उसके थोड़ेही पीछे बर्दवान राजवंशके नियत करने वाले आबूराय खत्री पञ्जाबसे बङ्गालमें आकर बर्दवानमें बस गये। वह सन् १६५७ में चौधरी हुए और उसके पीछे मुसलमानी गवर्नमेन्टके आधीन फौजके कमाण्डर होगये। उनकी मिलकियत बहुत शीघ्र बढ़ गई। आबूरायके पोते कृष्णरामरायने बादशाह औरंगजेबसे एक फरमान हासिल किया। सन् १६९५ में बर्दवानके एक तालुकदार सूबासिंहने अफगान प्रधान रहीमखांकी सहायतासे बर्दवानके राजाको रण-भूमिमें मारडाला और राजाके पुत्र जगतरामरायको छोड़कर राज-वंशके सब लोगोंको पकड़ लिया। उसके थोड़ेही दिनोंके पश्चात् राजाकी पुत्रीने सूबासिंहको मारडाला। जगतरामराय उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने अठारहवीं सदीके आरम्भमें महाराष्ट्रों के आक्रमणके समय नवाबकी सहायता की थी। उनके पीछे उनके पुत्र कीर्तिचन्द्रराय बर्दवानके राजसिंहासनपर बैठे। उन्होंने चन्द्रकोना, बरदा और बेलगछाके राजाओंको परास्त करके उनकी मिलकियतोंको अपनी जमीदारीमें मिला लिया। कीर्तिचन्द्ररायके पश्चात् महाराज तिलकचन्द्ररायने सन् १७४४ से सन् १७७० तक राज्य किया। उनके समयमें आक्रमण करनेवालोंने बर्दवानको लूटा और उस देशको नष्टभ्रष्ट कर दिया सन् १७७० के बड़े अकालके समय महाराज तिलकचन्द्र मरगये। उस समय उनके घर वालोंको श्राद्धके खर्चके लिये घरका जेवर बेचना और सरकारसे कर्ज लेना पड़ा। उनके उत्तराधिकारी महाराज तेज-चन्द्र सन् १७९३ के दायमी बन्दोबस्तके पीछे कुछ अच्छी हालतमें हुए। वर्तमान सदीमें बर्दवान राज्यकी उन्नति हुई है। सन् १८३३ ई० में महाराज महतावचन्द्र राजसिंहासनपर

बैठे, जिन्होंने सन् १८५५ में संथालोंकी बगावतके समय और सन् १८५७ के बलवेमें भारत गवर्नमेन्टकी बड़ी सहायता की। सन् १८७९ में महाराज महताबचन्द्रका देहान्त हो गया। उनके गोद लिया हुआ लड़का महारानीका भतीज़ा महाराज आफताबचन्द्र माहताब बहादुरने सन् १८८१ में बालिग होनेपर राज्यका सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त किया। इस समय बर्दवानके महाराजकी मिलकियतकी वार्षिक आमदनी ३० लाख रुपयेसे अधिक है।

खाना जंक्शन।

खाना जंक्शनसे "ईष्टइण्डियन रेलवे" की लाईन ३ तरफ गई है। तीसरे दरजेका महसूल फी मील २½ पाई लगता है।

(१) खाना जंक्शनसे पश्चिमोत्तर कार्ड लाईन पर।

मील प्रसिद्ध स्टेशन—

४१ अण्डाल जंक्शन।

४६ रानीगञ्ज।

५७ आसनसोल जंक्शन।

६३ सीतारामपुर जंक्शन।

१०८ मधुपुर जंक्शन।

१२६ वैद्यनाथ जंक्शन।

१६० गिद्धौर।

१६९ जमुई।

१८७ लक्षीसराय जंक्शन।

अण्डाल जंक्शनसे २४ मील पश्चिमोत्तर गौरागद्दी।

आसनसोल जंक्शनसे पश्चिम दक्षिण बंगाल नागपुर रेलवे पर ४७ मील पुरुलिया, २२१ मील वामरा और २४४ मील झारसूगढ़ जंक्शन।

सीतारामपुर जंक्शनसे पश्चिम ५ मील बराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

मधुपुर जंक्शनसे २३ मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण गिरिड़ी।

वैद्यनाथ जंक्शनसे ४ मील पूर्व-दक्षिण देवघर।

(२) लूपलाईनपर खाना जंक्शनसे उत्तर साहबगञ्ज और साहबगञ्जसे पश्चिम लक्षीसराय—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

४४ साँईथिया।

६१ रामपुरहाट सबडिवीजन।

७० नलहाटी जंक्शन।

८० मुराडोई।

९४ पकउड़।

१२० तीनपहाड़ जंक्शन।

१४४ साहबगंज।

१७० कहलगाँव।

१९० भागलपुर।

२०५ सुलतानगञ्ज।

२२३ जमालपुर जंक्शन।

२४१ कजरा।

२४८ लक्षीसराय जंक्शन।

नलहाटी जंक्शनसे २७ मील पूर्व मुर्शिदाबादके पास अजीमगञ्ज।

तीनपहाड़ जंक्शनसे ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल।

साहबगञ्जके उसपारके मनिहारीघाटसे उत्तर ओर प- श्चि

मोत्तरको झुकता हुआ 'ईष्टर्न वङ्गाल स्टेट रेलवे' पर ७ मील मनिहारी, ३३ मील कठिहर जंक्शन, ४० मील पूर्निया, ८३ मील फार्विसगञ्ज और ९६ मील कोशीनदीके बायें किनारे पर अञ्चराघाट।

जमालपुर जंक्शनसे ५ मील पश्चिमोत्तर मुंगेर।

(१) खाना जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

८ वर्द्वान।

४६ मगरा।

५१ हुगली जंक्शन।।

५४ चन्द्रनगर।

६१ सेवड़ाफूली जंक्शन।

६३ श्रीरामपुर।

७५ हवड़ा।

हुगली जंक्शनसे ५ मील पूर्व-दक्षिण हुगली अर्थात् भागीरथी नदीके बायें नइहाटी जंक्शन।

नइहाटीसे दक्षिण २४ मील सियालदह और उत्तर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जिलिङ्ग।

सेवड़ाफूली जंक्शनसे २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर।

सिउडी।

खाना जंक्शनसे ४४ मील उत्तर लूपलाइन पर साँइथियाका रेलवे स्टेशन है। साँइथियासे वारह चौदह मील पश्चिम सूबे वङ्गालके बर्द्वान विभागमें मोर नदीसे लगभग ३ मील दक्षिण एक सड़कके पास (२३ अंश, ५४ कला, २३ विकला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ३४ कला, १४ विकला, पूर्व देशान्तरमें) वीरभूमि जिलेका सदर-स्थान सिउड़ी एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिउड़ीमें ७८४८ मनुष्य थे; अर्थात् ५८३८ हिन्दू, १९९१ मुसलमान और १९ दूसरे।

वीरभूमि जिला—जिलेका क्षेत्रफल १७५६ वर्गमील है। इसके पश्चिमोत्तर संथाल परगना जिला, पूर्व मुर्शिदावाद और बर्द्वान जिला और दक्षिण अजयनदी, जिसके वाद बर्द्वान जिला है। वीरभूमिका अर्थ जंगली भूमि है; संथाली भाषामें जङ्गलको वीर कहते हैं। इस जिलेका सदर-स्थान सिउड़ी कसवा है। इस जिलेमें कोई झील अथवा नहर या सर्वदा नाव चलने योग्य कोई नदी नहीं है। जिलेमें कोयले और लोहेकी खान हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वीरभूमि जिलेमें ७९४४२८ मनुष्य थे; अर्थात् ६१७३१० हिन्दू, १६२६२१ मुसलमान; १४४४९ पहाड़ी और जङ्गली इत्यादि और ४८ कृस्तान। जातियोंके खानेमें ७९६२१ सदगोप, ४००३२ बागड़ी, ३९७२४ ब्राह्मण, ३५३१६ डोम, ३०९७५ चमार, २७२५८ बाउरी, २३२८६ हाड़ी, २०७८३ कालु, १८१०३ बनियाँ, ८९०२ कायस्थ, ८३४४ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

बीरभूमि जिलेमें सिउड़ी, रामपुरहाट, नागोर, एलमवाजार और महमूदवाजार प्रसिद्ध गाँव हैं।

वाकेश्वर स्थान—बीरभूमि जिलेमें ताँतीपाड़ा गाँवसे लगभग १ मील दक्षिण वाकेश्वर नामक नालेके किनारे वाकेश्वर स्थानपर तप्त जलके कई एक झरने हैं। झरनोंके पास बहुतेरे शिवमन्दिर बनाए गए हैं; वहाँ वहुतसे यात्री जाते हैं।

जयदेवजीका जन्म स्थान—उपरोक्त सिउड़ी कसवेसे १८ मील दूर अजयनदीके उत्तर जयदेवजीका जन्म-स्थान केन्दुली गाँव है। पूर्व समय उस गाँवमें भोजदेव: ब्राह्मण वसता था। उसकी पत्नी रामादेवीके गर्भसे जयदेवजीने जन्म लिया। किस सम्वत्में उनका जन्म हुआ यह निश्चय नहीं है। किसी किसी प्रमाणसे सन् ईस्वीकी ग्यारहवीं सदीके आदिमें और किसीके मतसे बारहवीं सदीके मध्य भागमें उनका जन्म हुआ था। एक ब्राह्मणकी पद्मावती नामक पुत्रीसे जयदेवजीका विवाह हुआ। उन्होंने अपने जीवनका अर्द्धभाग उपासना और धर्मोपदेशमें विताया। जयदेवजीके रचे हुए गीतगोविन्दके सरस पदोंको देखकर बड़े बड़े कवि मोहित और विस्मित होते हैं। वास्तवमें उन्होंने इस काव्यमें अपनी रस शालिनी रचना शक्तिका एक अद्वितीयत्व प्रदर्शन किया है।

केंदुली गाँवमें जयदेवजीका सुन्दर समाधि मन्दिर बना हुआ है। उस स्थान पर अब तक जयदेवजीके स्मरणार्थ प्रतिवर्ष मकरकी संक्रांतिको एक बड़ा मेला होता है। उसमें लगभग ७५ हजार वैष्णव एकत्रित होते हैं और समाधि-मन्दिरके चारों ओर संकीर्तन करते हैं।

लगभग ३०० वर्ष हुए नाभाजीने पद्य भाषामें भक्तमाल ग्रन्थ बनाकर भक्तोंका यश वर्णन किया था। उसका ४४ वाँ छप्पै यह है;—जयदेव कवि नृप चक्कवै खण्डमण्डलेश्वर आनि कबि ॥ प्रचुर भयो तिहुलोक गीतगोविन्द उजागर। कोक काव्य नवरस सरस शृङ्गारको आगर॥ अष्टपदी अभ्यास करे तिहि बुद्धि वढ़ावैं। राधारमण प्रसन्न सुन तहँ निश्चय आवै। सन्तसरोरुह खण्डकोपदमावतिसुखजनकरवि। जयदेवकवि नृपचक्कवै खण्डमण्डलेश्वर आनि कवि॥ ४४॥ अर्थात् जयदेवजी कवियोंके महाराजा थे। उनका बनाया हुआ गीतगोविन्द तीनों लोकमें प्रसिद्ध हुआ, जो कोकशास्त्र काव्य और नवरसोंमें सरस शृङ्गारका भण्डार है। उसकी अष्टपदीमें अभ्यास करनेसे बुद्धिकी वृद्धि होती है और उसका गान सुनकर निश्चयकरके श्रीकृष्णभगवान् प्रसन्न होकर उस स्थान पर चले आते हैं। सन्त-रूपी कमलों और (अपनी पत्नी) पद्मावतीको सुखदेनेमें जयदेवजी सूर्यके तुल्य थे। भक्तमालके टीकामें (जो भाषापद्यमें बना है) लिखा है कि किन्दु बिल्वग्राममें जयदेवजीका जन्म हुआ। वह वृक्षके नीचे प्रतिदिन नये नये स्थानोंमें रहते थे। उनके पास एक गुदर्र और एक कमण्डलु था। एक दिन एक ब्राह्मणने अपनी कन्याके सहित जाकर जयदेवजीसे कहा कि जगन्नाथजीकी आज्ञासे मैं आया हूँ, तुम इस कन्यासे अपना व्याह करो; यदि उनकी आज्ञाका प्रतिपालन तुम नहीं करोगे तो तुमको दोष लगेगा। अनेक बातें करनेके पश्चात् जयदेवजीने जगन्नाथजीकी आज्ञासे बिवश होकर उस कन्याको स्वीकार किया और

अपने रहनेको एक झोपड़ी बनाई। उसके पश्चात् उन्होंने सुप्रसिद्ध गीतगोविन्द बनाया। जयदेवजी अपने स्थानसे १८ कोस दूर गङ्गाजीकी धारामें नित्य जाकर स्नान करते थे। वृद्ध होनेपर भी उन्होंने अपना नित्यनेम नहीं छोड़ा, तब गङ्गाजीने उनसे स्वप्नमें कहा कि अब तुम यहाँ मत आवो, मैंहीं तुम्हारे लिये वहाँ चली आऊँगी। उसके उपरान्त गङ्गाजी जयदेवजीके आश्रममें चली आई, जो अब तक (अजयनदीके नामसे) वहाँ विद्यमान है।

रानीगञ्ज।

खाना जंक्शनसे४६ मील पश्चिमोत्तर (हवड़ासे१२१ मील) कार्डलाइनपर रानीगंजका रेलवे स्टेशन है। सूबे बङ्गालके बर्दवान जिलेमें दामोदर नदीके उत्तर किनारेपर सबडिवीजनका सदर–स्थान रानीगञ्ज एक कसबा है। प्रथम यह स्थान बर्दवानकी रानीका था, इस लिये कसबेका नाम रानीगञ्ज पड़ा।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रानीगञ्जमें १३७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ११३६४ हिन्दू, २१४७ मुसलमान, १८३ क्रस्तान, ६४ एनिमिष्टिक, १३ जैन और १ यहूदी।

रानीगञ्ज अब बर्दवान जिलेकी सौदागरीके प्रधान स्थानोंमेंसे एक हुआ है वहाँ 'बर्नकम्पनी' का कारखाना, बङ्गाल पेपर मिल्स, एक अस्पताल और सरकारी कचहरियाँ हैं।

कोयलेकी खान—रानीगञ्ज कोयलेकी खानोंके लिये प्रसिद्ध है। वहाँके कोयलेका मैदान भारतवर्षके सम्पूर्ण कोयलेके मैदानोंसे बड़ा और सबसे अधिक प्रसिद्ध है। सन् १८२० ई० में मिष्टर जोन्सने अकस्मात् वहाँ कोयलेके खानोंको पाया, तबसे सरगर्मीसे खानोंसे कोयला निकाला जाता है। रानगिञ्ज सबडिवीजनमें रानीगञ्ज, माधवपुर, शंखतरिया, धौसाल, नियामतपुर, देसागढ़, धदका, बेलरोई, बरिया, आसनसोल, चाँदपुर, लक्खीपुर, शिवपुर इत्यादिके पास कोयलेकी खान हैं। कोयलेके मैदान रानगिञ्जके चन्द-मील पूर्वसे बराकर नदीके कई एक मील पश्चिम तक नीचे ऊँचे सतहपर फैलते हैं। बर्दवान जिलेमें कोयलेके मैदानोंका क्षेत्रफल लगभग ५०० वर्गमील है। उसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग ३९ मील और सबसे अधिक चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको लगभग १८ मील है। भूमिके सतहसे नीचे कोयला है। कूपके समान कुण्ड बनाकर भूगर्भसे काटकर कोयला निकाला जाता है। नीचे स्थानें स्थानपर स्तम्भोंके तुल्य मोटे मोटे पाये छोड़ दिये जाते हैं। ऊपर खेती होती है। सन् १८८३ ई० में वहाँके कोयलेकी ५० खानोंमें लग भग १२००० पुरुष, स्त्रियाँ और लड़के काम करते थे। कोयला दामोदर नदी तथा रेलवे द्वारा कलकत्ता तथा दूसरे स्थानोंमें भेजा जाता है।

पिञ्जरापोल—कलकत्तेके मारवाड़ियोंने सोदपुरके समान रानीगञ्जके निकटके बारिया बस्तीमें भी पिञ्जरापोल स्थापित किया है, जिसमें सन् १८९० ई० में ९११ गौ, बैल और बछड़े; और १० घोड़े रक्षित थे।

जगन्नाथजीका मार्ग—जगन्नाथपुरीमें पैदल जानेवाले यात्रियोंकी प्रधान सड़क रानीगञ्जसे दक्षिण बाँकुड़ा, और मेदनीपुर और मेदनीपुरसे दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर, जाजपुर, वैतरनी और कटक होकर पुरीको गई है। सड़कके पास स्थान स्थानपर चट्टियाँ बनी हुई ह

पुरुलिया।

रानीगञ्जसे ११ मील (खाना जंक्शनसे ५७ मील) पश्चिमोत्तर और लक्षीसराय जंक्शनसे १३० मील दक्षिण-पूर्व बर्दवान जिलेके रानीगञ्ज सबडिवीजनमें कार्डलाइनपर आसनसोल रेलवेका जंक्शन है। वहाँ "बङ्गाल नागपुर रेलवे" आकर "ईष्टइंडियन रेलवे" से मिली है और कोयलेकी बड़ी खान तथा एंजिनका बड़ा कारखाना है।

बङ्गाल नागपुर रेलवके निकट आसनसोलसे ५ मील पश्चिम दामोदर स्टेशनके समीप दामोदर नदीपर रेलवेका पुल और ४७ मील पश्चिम-दक्षिण पुरुलियाका रेलवे स्टेशन है। छोटा नागपुर विभागमें (२३ अंश, १९ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, २४ कला, ३५ विकला पूर्व देशान्तरमें) मानभूमि जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा पुरुलिया है। वहाँ रेलगाड़ी देरतक ठहरती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुरुलियामें १२१२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९८८२ हिन्दू, १६२५ मुसलमान, ५०८ क्रस्तान और ११३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जातियाँ।

पुरुलियामें डिपोटीकमिश्नरका आफिस, कचहरियोंके मकान, थाना, जेलखाना, गिरजा, अस्पताल और स्कूल हैं। वहाँके बाजारमें गल्ले, नमक इत्यादि वस्तुओंकी सौदागरी होती है। पुरुलियासे पश्चिम एक अच्छी सड़क राँचीको गई है।

मानभूमि जिला—यह छोटा नागपुर विभागके पूर्व भागमें ४१४७ वर्गमीलमें फैला हुआ है। इसके पूर्व बर्दवान और बांकुडा जिला, दक्षिण सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पश्चिम लोहारडागा और हजारीबाग जिला और उत्तर हजारीबाग और संथाल परगना जिला है। जिलेके पश्चिम और दक्षिण लोहारडागा और सिंहभूमिकी सीमापर सुवर्णरेख नदी और उत्तर तथा पूर्वोत्तरकी सीमाके बड़े हिस्सेपर बराकर और दामोदर नदी बहती है। इस जिलेका सदर-स्थान पुरुलिया है। जिलेमें बहुतेरी पहाड़ियाँ हैं, जिनमेंसे प्रधान पहाड़ियाँ लगभग ३४००, २२०० और १६०० फीट ऊंची हैं। कसाई नदी जिके होकर बहती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मानभूमि जिलेमें १०५८२२८ मनुष्य थे, अर्थात् ९४६२४७ हिन्दू, ६५९४८ पहाड़ी और जङ्गली जातियाँ, ४५४५३ मुसलमान ५५२ क्रस्तान, २३ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी। इस जिलेमें सम्पूर्ण आदि निवासी अर्थात पहाड़ी और जङ्गली कौमें ३०७५९२ थीं; जिनमेंसे बहुत लोग हिन्दुओंमें लिखे गये थे। उनमें १३९१०३ संथाल, ६९२०७ बाउरी, ५७६९५ कोल, २६१६४ भुइया, ९०१७ खरवार थे। हिन्दुओंमें ४९१९० ब्राह्मण, ३९०८१ ग्वाला, ३१५६९ कुम्भार, २६९१५ लोहार, २६८३८ बनियाँ, २४१६४ काल्ह, १९१२५ राजवाड़, १८९३३ डोम; १८४५० मदक, १७७३७ सूण्डी, १५९४२ राजपूत और बाकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे। इस जिलेके रघुनाथपुर कसबेमें ५६१५ मनुष्य थे।

बाँकुड़ा।

पुरुलियाके रेलवे स्टेशनसे ५० मीलसे अधिक पूर्व कुछ दक्षिण (२३ अंश, १४ कला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ६ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें) दलकिशोर नदीके बाँये

अर्थात् उत्तर सूबे बङ्गालके बर्दवान विभागमें जिलेका सदर स्थान बाँकुड़ा एक कसबा है। पुरुलियासे बाँकुड़ा कसबेको एक सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकुड़ा कसबेमें १८७४३ मनुष्य थे; अर्थात् १७९३१ हिन्दू, ६९२ मुसलमान, ७७ क्रस्तान, और ४३ एनिमिष्टिक।

बाँकुड़ामें एक सराय और मामूली सरकारी इमारतें हैं। सौदागरी बहुत होती है। रेशमी कपड़े अच्छे बुने जाते हैं। रेशमके कपड़े लोह, चावल; अनेक भाँतिके तेलके बीज इत्यादि बस्तु बाँकुड़ासे अन्य स्थानोंमें भेजी जाती हैं और नमक, तम्बाकू, मसाले, अङ्गरेजी चीजें दूसरी जगहोंसे वहाँ आती हैं।

जगन्नाथजीके पैदल जानेवाले यात्री रानीगञ्जसे बाँकुड़ा, विष्णुपुर, मेदनीपुर, बालेश्वर, जाजपुर और कटक होकर पुरीमें जाते हैं।

बाँकुड़ा जिला—यह जिला त्रिभुजाकार है। इसके उत्तर और पूर्व बर्दवान जिला और दामोदर नदी; दक्षिण मेदनीपुर जिला और पश्चिम मानभूमि जिला है। जिलेमें दामोदर और दलकिशोर इत्यादि नदियाँ बहती हैं। कोई झील या नहर नहीं है। पहाड़ियोंसे लोहेका और और मकान बनानेके लिये पत्थर निकाले जाते हैं। पश्चिमकी सीमाके पास बाघ, तेंदुये भालू, भेड़िये इत्यादि बनैले जन्तु होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकुड़ा जिलेका क्षेत्रफल २६२१ वर्गमील था, जिसमें १०४१७५२ मनुष्योंकी गिनती हुई थी, जिनमें ९१०८६५ हिन्दू, ८४५५७ आदि निवासी इत्यादि, ४६२७४ मुसलमान, और ५६ क्रस्तान, थे। जातियोंके खानेमें ११७५४८ बाउरी, ८४३२३ ब्राह्मण, ७४१२७ तेली, ५९६५२ ग्वाला, ४७१४६ बागड़ी, ४५२१६ सदगोप, ३७८३५ लोहार, ३१३३७ बनियाँ, २९३२० तांती, २५२५० कैबर्त, २१३०८ काल्ह, २१३५० सूण्डी, २०५७५ कायस्थ, २०३२५ वैष्णव, १३९८७ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाँकुड़ा जिलेके बाँकुड़ा कसबेमें १८७४३ विष्णुपुरमें १८१९० और सोनामुखीमें १३४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—पहले बाँकुडाके चारोंओरका देश विष्णुपुर कहलाता था। बाँकुड़ा कसबेसे लगभग २५ मील पूर्व दक्षिण पुराने समय की राजधानी विष्णुपुर है। विष्णुपुरके एक राजाने कई तालाब और दूसरेने कई मन्दिर बनवाये। ग्यारहवीं सदीके आरम्भमें विष्णुपुर प्रसिद्ध शहर था। १८ वीं सदीमें विष्णुपुरके राजघरानेका ऐश्वर्य घट गया। राजा इतना निर्धन हो गया कि उसने अपने घरके इष्टदेव मदनमोहनजीकी प्रतिमाको कलकत्तेके गोकुलचन्द्र मित्रके पास बंधक रक्खा। कुछ दिनोंके पश्चात् राजाने रुपये इकट्ठे करके गोकुलचन्द्रके पास भेजा गोकुलचन्द्रने रुपया लेकर मूर्तिको देनेसे इन्कार किया। मुकदमा दायर होनेपर राजाकी डिगरी हुई, तब गोकुलचन्द्रने उसी भांतिकी एक मूर्ति बनवाकर राजाको देदी। विष्णुपुर-का राजमहल अब नहीं है। पुराने किलेके भीतर जंगल लग गया है। बीचमें एक तोप पड़ी है। सन् १८३५—१८३६ में बांकुड़ा एक जिला बनाया गया।

रांची।

पुरुलियासे लगभग ८० मील पश्चिम रांचीको एक अच्छी सड़क गई है "छोटा नागपुर" विभाग और लोहारडागा जिलेका सदर-स्थान और उस जिलेमें प्रधान कसबा

रांची है। (यह २३ अंश, २२ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २२ कला ६ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे २१०० फीट ऊपर स्थित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रांचीमें २०३०६ मनुष्य थे; अथात् ९९९१ हिन्दू, ५०४२ मुसलमान, २८९५ क्रस्तान, और २३७८ एनिमिष्टिक।

रांचीकी प्रधान इमारतें कमिश्नर साहब और डिपुटीकमिश्नरकी आफिसें, कचहरीके अनेक मकान, स्कूल, एक खैराती अस्पताल और २ गिरजें हैं। कसबेकी छोटी छोटी वस्ती अलग अलग वसी है। वहाँ थोड़ी तिजारत होती है, क्रस्तान लोग वहुत रहते हैं। रांचीसे कई एक देहाती मार्ग कई तरफ गये हैं।

रांचीसे ६ मील दूर जगन्नाथपुर वस्तीके निकट एक पहाड़ी पर जगन्नाथजीका मन्दिर है। प्रतिवर्ष आपाढसुदी २ को वहाँ मेला होता है।

लोहारडांगा—रांचीसे ४५ मील पश्चिम लोहारडागाको एक सड़क गई है। लोहारडागा एक छोटा म्यूनिस्पल कसवा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३४६१ मनुष्य थे। वह सन् १८४० ई० तक लोहारडागा जिलेका सदर स्थान था। लोहारडागासे लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर पालामऊ है, जिसको पलासू भी कहते हैं।

लोहारडागा जिला—इसका क्षेत्रफल १२४५ वर्ग मील है। इसके उत्तर सोन नदी जो हजारीवाग, गया और शाहावाद जिलेसे इसको अलग करती है; पश्चिमोत्तर और पश्चिम मिर्जापुर जिला और सरगुजा, जशपुर, और गाङ्गपुरके देशी राज्य और दक्षिण-पूर्व और पूर्व सिंहभूमि और मानभूमि जिला है। जिलेका सदर-स्थान रांची है। उस जिलेकी पहाड़ियोंमें सबसे ऊँची पहाड़ी रांचीसे पश्चिम ३६५० फीट ऊँची है। जिलेकी नदियोंमें सुवर्णरेखा और कोयल नदी प्रधान हैं। खानोंसे लोहेके ओर और कुछ कुछ ताँवा निकलता है। जिलेके दक्षिण भागमें दरिद्र लोग नदियोंके वालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं। जिलेमें एक प्रसिद्ध कोयलेका मैदान २०० वर्ग मीलमें फैला है और २ सुन्दर जलप्रपात अर्थात् झरने हैं—एक रांचीसे लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर जशपुर परगनेमें, जिसकी ऊँचाइ ३२० फीट है और दूसरा रांचीसे लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व। जिलेके जंगल और पहाड़ियोंमें वाघ, तेंदुये, वनैले, सूअर, भालू इत्यादि वनजंतू रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय लोहारडागा जिलेमें १६०९२४४ मनुष्य थे; अर्थात् ८६८८४२ हिन्दू, ६२६६६१ आदि निवासी (जिनमें ५९१८५८ कोल थे), ७७४०२ मुसलमान, ३६३८१ क्रस्तान, ५६ जैन और १ वौद्ध। जातियोंके खानेमें ५९१८५८ कोल, ७८६७७ अहीर, ७७३४१ खरवार, ५८४१९ भुँइया, ४७४७१ राजपूत, ४३७६६ कुर्मी ४२४३९ ब्राह्मण, ३७०३४ दुसांध, ३४७०० कहार, ३४३४१ लोहार, ३२८३५ तेली, और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। लोहारडागा जिलेके कसबे रांचीमें १८४४३, पालामऊ सबडिवीजनके सदर-स्थान डलटोनगञ्जमें ७४४०, गरवामें ६०४३ और लोहारडागामें ३४६१ मनुष्य थे।

सूबे छोटानागपुर—इसको लोग चटियानागपुर भी कहते हैं। वङ्गालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके आधीन विहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये ४ सूबे हैं। इनमेंसे सूबे छोटा नागपुरका सदर-स्थान राँची है। सूबे छोटेनागपुरके उत्तर मिर्जापुर, शाहाबाद और गया

जिला, पूर्व मुंगेर, संथालपरगना, बाँकुडा और मेदनीपुर जिला दक्षिण उड़ीसाके मालगुजार राज्य और पश्चिम सम्भलपुर जिला और रीवांका राज्य है। इस सूवेमें हजारीबाग, लोहारडागा, सिंहभूमि और मानभूमि ये चार अङ्गरेजी जिले और ९ छोटे देशी राज्य हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस सूवेके अङ्गरेजी जिलों और देशी राज्योंका क्षेत्रफल ४३०२० वर्गमील था, जिसमें ४९०३९९१ मनुष्य थे, अर्थात् २४३८८०७ पुरुष और २४६५१८४ स्त्रियाँ। इनमें ३८५८८३६ हिन्दू, ७६८८०६ पहाड़ी और जङ्गली, (जिनमें ६०१६८८ कोल और १००२५७ संथाल थे), २३५७८६ मुसलमान, ४०४७८ कृस्तान, ५६ जैन, २४ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस सूवेके नीचे लिखे हुए कसवोंमें १०००० से अधिक मनुष्य थे,—लोहारडागा जिलेके रांचीमें २०३०६, हजारीबाग जिलेके हजारीबाग कसवेमें १६६७२ और चतरामें १०७८३ और मानभूमि जिलेके पुरुलियामें १२१२८।

इस सूवेके पश्चिमी भागमें छोटे छोटे ९ देशी राज्य हैं। इनके उत्तर रीवाँका राज्य और मिर्जापुर जिला; पूर्व लोहारडागा और सिंहभूमि जिला; दक्षिण उड़ीसेके देशी राज्य और मध्यदेशका सम्भलपुर जिला और पश्चिम विलासपुर जिला और रीवाँका राज्य है। इस देशमें ऊँची भूमि है और पहाड़ियाँ बहुत हैं। पश्चिममें गोंड और पूर्वमें कोल अधिक वसते हैं। इनके अलावे भुँइया और संथाल आदि पहाड़ी जातियाँ भी हैं।

छोटेनागपुरके देशी राज्योंका त्रिज;—

नंबर	देशीराज्य,	क्षेत्रफल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	मालगुजारी रुपया
१	सरगुजा	६१०३	३७०३३६	६११४७
२	गाङ्गपुर	२४८४	१०७९६५	२००००
३	यशपुर	१९६३	९०२४०	१२०००
४	कोरिया	१६२५	२९८४६	
५	वोनाई	१३४९	२४०३०	
६	छोटाउदयपुर	१०५५	३३९५५	
७	चंगभकर	९०६	१३४६६	
८	सरायकाला	४३८	७७०६२	
९	खरसवान	१४५	३११२७	
	जोड़	१६०६८	६७८०२७	

हजारीबाग।

राँचीसे लगभग ५० मील उत्तर हजारीवागको अच्छी सड़क गई है। छोटानागपुर विभागमें (१३ अंश, ५९ कला, २१ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २४ कला, ३२ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे लगभग २००० फीट ऊपर जिलेका सदर-स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा हजारीवाग है। कई एक छोटे गाँव मिलकर यह एक कसवा बना है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हजारीवाग कसवेमें १६६७२ मनुष्य थे; अर्थात् १२१२९ हिन्दू, ४०९९ मुसलमान, २२९ कृस्तान, १६३ एनिमिष्टिक, ४३ जैन और ९ बौद्ध।

हजारीवागमें सरकारी कचहरियाँ, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, और स्कूल है। वहाँ सन् १७८० में फौजी छावनी और सन् १८३४ में दीवानी कचहरी नियत हुई। कसवेके दक्षिण-पूर्व फौजी छावनीमें थोडीसी अङ्गरेजी सेना रहती है। पहिले उसमें वहुत फौज रहती थी, किन्तु सन् १८७४ में वोखारसे वहुत लोगोंके मरनेके कारण वहाँसे फौज हटा दी गई।

हजारीवाग जिला—इसका क्षेत्रफल ७०२१ वर्गमील है। इसके पूर्व संथालपरगना और मानभूमि जिला; दक्षिण लोहारडागा जिला; पश्चिम लोहारडागा और गया और उत्तर गया और मुङ्गेर जिला है। जिलेमें वहुतेरी पहाड़ियाँ हैं। सबसे ऊँची पहाड़ी समुद्रके जलसे ४५०० फीटसे अधिक ऊँची नहीं है। इस जिलेमें कई एक अवरककी खानियाँ हैं, डिवौर, कोदमा, चीरकुण्डी इत्यादि वस्तियोंके पास खानोंसे अवरक निकाला जाता है; प्रतिवर्ष हजारीवागसे आठ दस लाख रुपयेका अवरक वाहर जाता है। सूबे छोटा नागपुरमें हजारीवागका जल वायु अच्छा है। जिलेकी प्रधान नदी दामोदर है। इस जिलेके पाँच सात स्थानोंमें पवित्र झरने हैं, जहाँ कुछ कुछ यात्री जाते हैं। जङ्गलोंमें वाघ, तेंदुये, भालू इत्यादि वनजन्तु पाये जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हजारीवाग जिलेमें ११०४७४२ मनुष्य थे; अर्थात् ९२४८११ हिन्दू, १०६०९७ मुसलमान; ७२२८२ आदिनिवासी और ५५२ कृस्तान। इनमेंसे लगभग ५००० जैन हिन्दुओंमें लिखे गये थे। जातियोंके खानेमें १२९४४५ ग्वाला, ९२८४९ भुइयां; ६२७६१ कुर्मी, ५६५९८ संथाल, ४३६०३ कोइरी, ४२५७४ चमार, ४२३१९ तेली, ३८४४१ घाटवाल और भोगता, ३७४०४ राजपूत आर वण्डावत, ३६८९३ खरवार, ३३४१९ कहार, २९५४० भूमिहार, २८४२२ ब्राह्मण, २७२७७ वनिया २४८२७ दुसाध, २३६७१ नापित, ९२३२ कायस्थ, ८८१५ कोल और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके हजारीवाग कसवेमें १६६७२, चतरामें १०७८३, और इचाकमें दस हजारसे कम मनुष्य थे।

पारसनाथ।

हजारीवाग कसवेसे लगभग ७० मील पूर्व कुछ उत्तर गिरिडीका रेलवे स्टेशन है। इष्टइण्डियन रेलवेके मधुपुर जंक्शनसे दक्षिण-पश्चिम २३ मील की रेलवे लाइन गिरिडीको

गई है। आसनसोल जंक्शनसे ५१ मील पश्चिमोत्तर मधुपुर जंक्शन है। गिरिडीसे पश्चिम दक्षिण पारसनाथ पहाड़ीके पादमूलके पास तक १८ मीलकी पक्की सड़क बनी है।

छोटे नागपुर विभागके हजारीबाग जिलेके पूर्वीभागमें (२३ अंश, ५७ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, १० कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) जैन लोगोंका पवित्र तीर्थ-स्थान पारसनाथ नामक पहाड़ीहै पहाड़ीके सिरोभाग तक एक अच्छी पगडण्डी गईहै। पहाड़ी जङ्गलसे हरीभरी है। वहाँका जल वायु ठण्डा और साफ है। स्लेटके चट्टानोंपर बाँसके जङ्गल होकर मार्ग निकला है। ऊपर साल इत्यादि वृक्षोंके सघन वन होकर पगडण्डी निकली है। राहमें जलके कई एक झरने देखनेमें आते हैं।

पारसनाथ पहाड़ीकी ऊपर वाली चोटी, जिसको जैन लोग "अस्मिद शिखर" कहते हैं; समुद्रके जलसे ४४८८ फीट ऊँची है। उसके ऊपर छोटे छोटे २० जैन मन्दिर बने हैं, जिनमें कई एक बहुत सुन्दर हैं। खास करके उजले मार्बुलका एक छोटा स्थान है: जिसके बनानेमें ८०००० रुपयां खर्च पड़ा था।

जैन लोगोंके २४ सन्त हैं, जिनमेंसे १० सन्तोंने इसी पहाड़ीपर निर्वाणपद पाया और १९ सन्तोंकी इसीपर समाधि दी गई; २३ वें सन्त पारसनाथकी भी समाधि इसीपर दी गई थी। उन्हीके नामसे इस पहाड़ीका नाम पारसनाथ पड़ा। पारसनाथका जन्म काशी-जीमें हुआ था। वह १०० वर्ष तक रहे। प्रति वर्ष लगभग १० हजार जैन यात्री पारसनाथ पहाड़ी पर जाते हैं।

भारतवर्षमें जैन लोगोंकी ५ पवित्र पहाड़ी हैं;–काठियावारमें शत्रुंजय और गिरनार राजपूतानेमें आबू; मध्य भारतमें ग्वालियर और छोटा नागपुरके हजारीबाग जिलेमें पारसनाथकी पहाड़ी। इन पाँचोंमें शत्रुंजय पहाड़ी सबसे अधिक पवित्र समझी जाती है। जैन लोगोंके मत और उन लोगोंकी रीतिका बयान भारत-भ्रमणके चौथे खण्डके शत्रुंजयके वृत्तान्तमें मिलेगा।

जैन मत बहुत पुराना है; क्योंकि पुराणोंमें इस मतके बहुत वृत्तान्त मिलते हैं। मत्स्य-पुराणके २४ वें अध्यायमें लिखा है कि बृहस्पतिजीने रजिके पुत्रोंके पास जाकर उनको मोहा और उनको आज्ञा दी कि तुम सब जैनधर्मके आश्रय हो जाओ और पद्मपुराणके सृष्टिखण्डके १३ वें अध्यायमें भी सरावगियोंका वृत्तान्त है।

वैद्यनाथ।

मधुपुर जंक्शनसे १८ मील (खाना जंक्शनसे १३६ मील) पश्चिमोत्तर और लक्खी-सराय जंक्शनसे ६१ मील (पटनासे १३१ मील) पूर्व-दक्षिण कार्ड लाइनपर वैद्यनाथ जंक्शन है। जंक्शनसे ४ मील पूर्व कुछ दक्षिण एक रेलवे शाखा देवगढ़को गई है। रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दूर सूबे बिहारके भागलपुर विभागके संथाल परगना नामक जिलेमें सब-डिवीजनका सदर-स्थान और पवित्र तीर्थ स्थान देवगढ़ कसबा है, जिसको देवघर और वैद्यनाथ भी कहते हैं। पण्डे लोग स्टेशनसे यात्रियोंको ले जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वैद्यनाथमें ८००५ मनुष्य थे; अर्थात् ७७०४ हिन्दू, २९७ मुसंलमान और ४ दूसरे। मनुष्य–गणनाके अनुसार यह उस जिलेमें सबसे बड़ा कसवा है।

कसबेसे पश्चिम सड़कके निकट वैजूका मन्दिर, कसबेसे बाहर सबडिवीजनकी कच-हरियाँ और कसबेके आस पास जगह २ जङ्गल और कई छोटी पहाड़ियाँ हैं। कसबेके पास राजा मदनपाल शिविरके उजड़े पुजड़े अनेक मीनार और मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं। वैद्यनाथमें कोढ़ियोंका बड़ा जमाव रहता है वे लोग रोगसे मुक्ति होनेकी आशा करके वहाँ पड़े रहते हैं। वहाँ गिद्धोरके महाराज रावणेश्वरप्रसादसिंहकी जमीन्दारी है।

कसबेमें एक बड़े घेरेके भीतर पत्थरसे पाटा हुआ बड़ा आङ्गन है। लोग कहते हैं कि इसको पाटनेमें मिर्जापुरके एक धनी महाजनका एक लाख रुपया खर्च पड़ा था। आङ्गनके बीचमें वैद्यनाथ शिवका शिखरदार पूर्व मुखका बड़ा मन्दिर और बगलोंमें छोटे बड़े २१ मन्दिर हैं। मन्दिरोंमेंसे सन्ध्या, गौरी, गायत्री, सूर्य लक्ष्मीनारायण,गणेश, और भैरव आदि, के मन्दिर हैं; बाकी बहुतेरे मन्दिरोंमें शिवलिङ्ग स्थापित हैं।

वैद्यनाथ शिवलिङ्ग शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक है। लगभग ३०० वर्ष हुए इनके वर्तमान मन्दिरको पूर्णमलने बनवाया था। वैद्यनाथ शिव लिङ्ग ११ अँगुल ऊँचा है; लिङ्गके सिरपर थोड़ा गहड़ा है। नित्य समय समयपर वैद्यनाथजीके शृङ्गार और पूजन होते हैं। बहुतेरे यात्री लोग गङ्गोत्तरी हरिद्वार, प्रयाग, बक्सर, जहाँगिरा इत्यादि स्थानोंसे गङ्गाजल लाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाते हैं, और बहुतेरे लोग शिवपर चढ़ानेके लिये वहाँके पण्डाओंसे गङ्गाजल मोल लेते हैं। माघ और फागुनमें सैकड़ों कोससे हजारों यात्री काँवरोंमें गङ्गाजल लाकर वैद्यनाथजीपर चढ़ाते हैं। श्रीपंचमी और फाल्गुनकी शिवरात्रिको वैद्यनाथजीपर जल चढ़नेकी बड़ी भीड़ होती है। मन्दिरसे उत्तर कसबेसे बाहर शिवगङ्गा नामक एक बड़ा सरोवर है; उसके किनारोंपर पत्थरके घाट बने हैं, और एक मन्दिर है। सरोवरमें यात्री–गण स्नान करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं—(१) सौराष्ट्रदेशमें सोमनाथ,(२) श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैनमें महाकालेश्वर, (४) ओंकारमें अमरेश्वर, (५) हिमालयमें केदार, (६) डाँकिनोमें भीम-शंकर, (७) वाराणसीमें विश्वेश, (८) गोदावरीके तटमें त्र्यम्बक, (९) चिताभूमिमें वैद्यनाथ (१०) दारुकावनमें नागेश, (११) सेतुबन्धमें रामेश्वर, और (१२) शिवालयमें घुश्मेश्वर स्थित हैं। इन लिङ्गोंके दर्शन करनेसे शिवलोक प्राप्त होता है। इनकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंको है। इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सम्पूर्ण पापका नाश होता है, इस लिये इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिये। नीच जातियोंमें उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममें शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होताहै और उस जन्मके पश्चात् मुक्ति लाभ करता है।

(५५ वाँ अध्याय) एक समय लंकापति रावण कैलास पर्वतपर जाकर शिवजीकी आराधना करने लगा। उसके पश्चात् शिवजीके प्रसन्न होनेपर वह हिमालय पर्वतके दक्षिण भागके वृक्षखण्ड नामक देशमें पृथ्वीमें गढ़ा करके उसमें अग्निस्थापन कर और उसके निकट शिवजीको स्थापित करके हवन करने लगा। जब हवनसे शिवजी प्रसन्न न हुए तब उसने अपने सिरोंको काटकर उससे हवन करना प्रारम्भ किया जब वह अपने नव सिर हवन कर चुका तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे राक्षसोंमें श्रेष्ठ! तुम अपना मनोवाञ्छित वरदान माँगो। रावण बोला हे कि भगवन्! मेरा अतुल पराक्रम होवे और मेरे सिर पूर्ववत होजावें शिवजीने एवमस्तु कहा और रावणके सम्पूर्ण शिर पूर्ववत् होगये। तब वह अपने गृहका जाने लगा। देवताओंको दुःखी देखकर महर्षि नारदने मार्गमें रावणसे पूछा कि तुम किस कार्य्यके लिये कहाँ गये थे। रावणने कहा कि मेरे तपसे प्रसन्न होकर शिवजीने मुझको अतुल बलवान होनेका वरदान दिया है और हमारे प्रार्थनासे हिमवानसे दक्षिण वृक्षखण्डमें वह वैद्यनाथ नामसे प्रसिद्ध हुए हैं मैं उनको नमस्कार कर भुवनके जय करनेके लिये जाता हूं। (५६वाँ अध्याय) नारदजी हँसकर बोले कि हे रावण! शिवजी भङ्ग आदि खाकर कुछका कुछ कह देते हैं; उनके वचनका प्रमाण नहीं है। तुम जाकर कैलाश पर्वतको उठावो यदि उनके वरदानसे तुम महाबली हुए होगे तो पर्वत तुमसे उठ जायगा। नारदके ऐसे बचन सुनकर बलदर्पित रावणने जाकर कैलासगिरिको उठाया जिससे पर्वत पर रहने वाले, सब जीव जन्तु व्याकुल होगये। तब शिवजीने रावणको शाप दिया कि अब शीघ्रही तुम्हारे बलका ह्रास हो जावेगा। उसके उपरान्त रावण पर्वतको रखकर लौट आया। रावणका शाप सुनकर नारद और देव गण हर्षित हुए। इस भाँति रावण वैद्यनाथ महादेवसे वर लाभ कर बलवान हुआ। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक वैद्यनाथ शिवका पूजन करते हैं; उनको सम्पूर्ण मनोवाञ्छित फल मिलता है।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ८ वाँ खण्ड, ४३ वाँ अध्याय) एक समय रावणने हिमालय पर्वत पर शिवलिङ्ग स्थापित करके शिवका बड़ा तप किया जब शिव प्रसन्न न हुए तब अपने ९ सिर काटकर शिवलिङ्ग पर चढ़ादिया; जब वह अपना १० वाँ सिर चढ़ानेको उद्यत हुआ तब शिवजीने प्रगट होकर उसके सिरोंको उसके धड़ोंमें जोड़ दिया और उससे कहा कि हे रावण! वरदान माँगो। रावणने कहा कि मैं बड़ा बलवान होऊँ और तुमको अपने नगरमें ले जाकर स्थापित करूं। शिवजी बोले कि तुम मेरे लिङ्गोंको लेजाव; किन्तु मार्गमें किसी स्थान पर तुम रक्खोगे तो लिङ्ग वहीं रह जावेंगे। ऐसा कह वह दो लिङ्ग रूप हो गए। रावण दोनों लिङ्गोंको मंजूषोंमें करके काँवर पर ले चला। शिवकी मायासे रावणको मार्गमें चड़े वेगसे लघुशंका लगी। वह एक मुहूर्तके लिये एक गोपको काँवर थँभाकर मूत्र करने लगा और दोघड़ीतक मूत्र करता रहा। (४४ वाँ अध्याय) जब उसका मूत्र न रुका तब अहीरने थककर काँवरको धरती पर रख दिया। तब दोनों लिङ्ग पृथ्वीमें स्थितहोगये। रावणके बहुत बल करने परजब लिङ्ग न उठे तब वह अपने अँगूठेसे दोनों लिङ्गोंको दबाकर अपने घर चला गया। जो लिङ्ग काँवरमें रावणके आगे था, वह गोकर्णमें चन्द्रभालके नामसे विख्यात हुआ और जो पीछे था वह वैद्यनाथके नामसे प्रसिद्ध होकर चिताभूमिमें विराजमान

हुआ। तब विष्णु आदि देवताओंने वहाँ जाकर वैद्यनाथका पूजन किया और ऐसा कहा कि तुम वैद्यके समान मनुष्योंको आनन्द देने वाले हो इससे तुम्हारा नाम वैद्यनाथ होगा। जो तुम पर गङ्गाजल लाकर चढ़ावेगा, वह परम पद लाभ करेगा।

कॉंवर थाँभनेवाला ग्वालाका नाम वैजू था। उसका यह नियम था कि विना शिवलिङ्गके पूजन किये भोजन नहीं करता। एक दिन एक उत्सवमें उसको शिवपूजाकी सुधि बिसरगई। जव वह अपने वन्धुवर्गोंके सहित भोजन करने बैठा तब उसको शिवपूजा याद पड़ी। उसने शीघ्र भोजन छोड़कर बैद्यनाथके पास जाकर उनकी पूजा की। शिवजी बैजूकी ऐसी भक्ति और नियम देखकर गिरजा सहित उस स्थानमें प्रकट हुए और बैजूसे बोले कि तुम अपना इच्छित वर माँगो। बैजूने कहा कि हे महादेव! तुम बैजनाथ नामसे प्रसिद्ध हो जाओ। शिवजी एवमस्तु कहकर उसी लिङ्गमें प्रवेश कर गये और बैजनाथ नामसे प्रसिद्ध हुए।

संथाल परगना जिला–यह जिला भागलपुर विभागके दक्षिण भागमें ५४५६ वर्ग मील क्षेत्रफलमें फैला है। इसके उत्तर भागलपुर और पुर्निया जिला; पूर्व मालदह, मुर्शिदाबाद और वीरभूमि जिला; दक्षिण वर्दवान और मानभूमि जिला और पश्चिम हजारी बाग, मुंगेर और भागलपुर जिले हैं। इस जिलेका सदर स्थान दुमका है; किन्तु आवादीमें जिलेमें सवसे वड़ा देवगढ़ अर्थात् वैद्यनाथ कसवा है। राजमहलकी पहाड़ियाँ जो गङ्गाकी घाटीसे आरम्भ होती हैं, २००० वर्गमील फैली हैं; उनमेंसे १३६६ वर्गमील धामनीकोहके गवर्नमेण्ट मिलकियतमें है। वे किसी जगह २००० फीटसे अधिक ऊँची नहीं हैं। उनकी औसत ऊँचाई वहुत कम है। धामनीकोहके वाहर राजमहल पहाड़ियोंके सिलसिलेमें वहुतेरी पहाड़ियोंके ऊपर सघन वन लगे हैं और उनपर चढ़ना कठिन है।

जिलेके उत्तर और कुछ दूर पूर्वकी सीमापर गङ्गा हैं। जिलेमें ब्राह्मणी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियाँ बहतीं हैं। नीचा ऊँचा देशके बहुतेरे भागोंमें जङ्गल लगा है। किन्तु उसमें कीमती लकड़ियाँ नहीं होती हैं। गवर्नमेन्ट दामिनीकोहमें जलानेके लिये लकड़ी काटनेका ठीका देकर थोड़ी मालगुजारी प्राप्त करती है। जिलेके जङ्गलोंमें खासकर शालके वृक्ष हैं। इस जिलेका प्रधान जङ्गली पैदावार लाही है, जो पलाश, बेर और पीपलके वृक्षोंसे निकाली जाती है और महाराजपुरके रेलवे स्टेशनसे दूसरी जगह भेजी जाती है। संथाल और पहाड़ी लोग बहुत रेशमके कीड़ोंको पालते हैं। इस परगनेमें कोयले और लोहेकी खानियाँ हैं। जिलेमें कई एक पहाड़ी झरने हैं और बाघ, तेंदुय, भालू, हरिन, जङ्गली सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। पहले हाथी और गड़े थे किन्तु अब प्रायः सब मर गये।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १७४३७६३ और सन् १८८१ में १५६८०९२ मनुष्य थे अर्थात्; ८४७५९० हिन्दू, ६०८३५३ आदिनिवासी, १०८८९९ मुसलमान, ३०५७ कृस्तान, १३२ वौद्ध ५४ सिक्ख, ६ यहूदी, और २ जैन, जातियोंके खानेमें ८८५४४ ग्वाला, ३८०३२ घाटवाल, ३६०७५ ब्राह्मण, ३५७२३ डोम, ३३५४६ चमार, २८१२४ राजपूत, २८१२४ बनियाँ, २६४३३ लोहार, शेषमें बाउरी, धानुक, कालू, कैवर्त, हाड़ी ताँती इत्यादि जातियोंके लोग थे। आदि निवासियोंमें ५५९६०२ संथाल ११९९५

कोल और शेषमें दूसरे थे। जिलेके कसबे देवगढ़में ८००५, साहबगञ्जमें ६५१२, राज महलमें ३८३९, और दुमकामें ३०७५ मनुष्य थे साहबगञ्ज उन्नति करता हुआ तिजारती कसबा है; उसमें बढ़ते बढ़ते सन् १८९१ में ११२९७ मनुष्य होगये।

वैद्यनाथ जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ६१ मील लक्षीसराय जंक्शन और लक्षीसरायसे पश्चिम २० मील मोकामा जंक्शन, ७० मील पटना, ७६ मील बाँकी जंक्शन, १०६ मील आरा और १२० मील बिहियाका रेलवे स्टेशन है। मैं बिहियामें रेलगाड़ीसे उतर कर उससे १२ मील उत्तर गङ्गाके दूसरे पार अपने जन्म स्थान चरजपुरा चला आया।

साधुचरणप्रसाद।

॥ भारत भ्रमण, तीसरा खण्ड समाप्त ॥
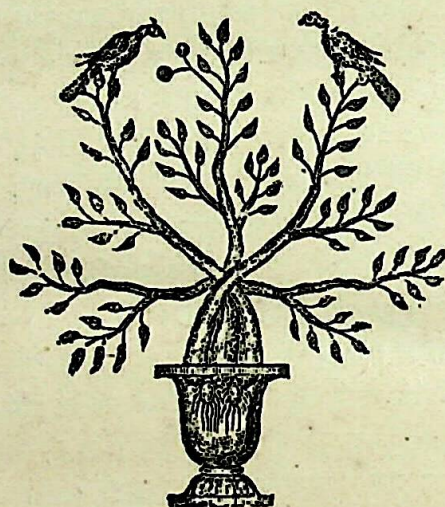
पुस्तक मिलनेका पता—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बम्बई.